अनिल
सलूजा
रेड अलर्ट

रेड अलर्ट

अनिल सलूजा

रवि पॉकेट बुक्स

rcz202016@gmail.com

AJ SCAN

प्रस्तुत उपन्यास के सभी पात्र एवं घटनायें काल्पनिक हैं। किसी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से इनका कतई कोई सम्बन्ध नहीं है। समानता संयोग से हो सकती है। उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है। प्रस्तुत उपन्यास में दिए गए हिंसक दृश्यों, धूम्रपान, मधपान अथवा किसी अन्य मादक पदार्थों के सेवन का प्रकाशक या लेखक कत्तई समर्थन नहीं करते। इस प्रकार के दृश्य पाठकों को इन कृत्यों को प्रेरित करने के लिए नहीं बल्कि कथानक को वास्तविक रूप में दर्शाने के लिए दिए गए हैं। पाठकों से अनुरोध है की इन कृत्यों वे दुर्व्यसनों को दूर ही रखें। यह उपन्यास मात्र 18 + की आयु के लिए ही प्रकाशित किया गया है। उपन्यासब आगे पड़ने से पाठक अपनी सहमति दर्ज कर रहा है की वह 18 + है। प्रूफ संशोधन कार्य यद्यपि पूर्ण योग्यता व सावधानीपूर्वक किया गया है, तथापि मानवीय त्रुटि रह सकती है, अत: किसी भी तथ्य सम्बन्धी त्रुटि के लिए लेखक, प्रकाशक व मुद्रक उत्तरदायी नहीं होंगे। किसी भी कानूनी विवाद का निपटारा न्याय क्षेत्र मेरठ में होगा।

rcz202016@gmail.com

भेड़िया सीरीज
रेड अलर्ट
अनिल सलूजा

टेलीविजन पर समाचार चल रहे थे।

समाचार वाचक कैमरे की तरफ देखते हुए कह रहा था—

“सरकार को खुफिया सूत्रों से पता चला है कि गंगानगर में हथियारों की बहुत बड़ी खेप पहुंच चुकी है। यह हथियार आतंकवादियों को गणतन्त्र दिवस पर गड़बड़ी फैलाने के इरादे से पाकिस्तान की तरफ से भेजे गये हैं। सरकार ने गंगानगर और आसपास के शहरों में चौकसी बढ़ा दी है...और रेड अलर्ट जारी कर दिया है।”

tcz202015@gmail.com

¶¶

उस फ्रेंच-कट दाढ़ी वाले ने रिमोट उठाकर टी०वी० बन्द किया और मुस्कुराते हुए अपने बायीं तरफ बैठे कुर्ता-पायजामा पहने व्यक्ति की तरफ देखा।

“लीजिये...रेड अलर्ट जारी कर दिया है सरकार ने।”

“अरे भैया...सरकार तो हम हैं.....रेड अलर्ट सिर्फ जनता के लिये होता है। सरकार के लिये भला रेड अलर्ट क्या होगा? हा-हा-हा...।”

“अब तो जगह-जगह पड़ने दो छापे... होने दो तलाशी...। कोई फर्क नहीं पड़ता...। नेताओं के घर छापे नहीं पड़ा करते और न ही उनकी तलाशी ली जाती है...। क्योंकि इलेक्शन जीतने के बाद नेता के माथे पर देशभक्त होने का लेबल लग जाता है। अन्दर से वह चाहे पूरे देश को ही क्यों न खा जाये।”

AJ SCAN

“फिर भी सावधानी जरूरी है नेताजी! सारा गोला-बारूद आपकी कोठी में पड़ा है, जबकि आज ही रात को सारा सामान पूरे शहर में वितरित करना है। ऐसे में अगर हमारे व्हीकलों की तलाशी हो गई तो सारा गुड़गोबर हो जायेगा।”

“तुमसे ज्यादा फिक्र तो मुझे होनी चाहिये रहमान खान...। सी०एम० बनना है मुझे...और यह तभी होगा जब वर्तमान सी०एम० मरेगा... जिसे कि तुमने खत्म करना है।”

“पाकिस्तान भी यही चाहता है कि सी०एम० आप ही बनें।” फ्रैंच-कट दाढ़ी वाला जिसका नाम रहमान खान था, बोला—“आपके सी०एम० बनने से हमें फायदा ही होगा। गंगानगर सरहदी शहर है। आपके सी०एम० बनने के बाद मह बड़े आराम से हिन्दुस्तान में असलाह और दहशत गर्द भेज सकेंगे।”

“तुम फिक्र मत करो... सारा माल सप्लाई हो जायेगा। तुम वह खास जगह बताओ जहां पर कि तुम्हें सबसे ज्यादा माल पहुंचाना है।”

“क्यों...?”

“उस जगह पर सामान मेरी गाड़ी में जायेगा...और मेरी गाड़ी की तलाशी न तो पुलिस ले सकती है और न बी०एस०एफ०।”

“पांच किलो आर०डी०एक्स० और चार टाइमर केतवाली के पास पहुंचाने हैं।”

"जहांगीर के घर.....पहुंच जायेंगे...।"

"साथ में दो ए०के० सैंतालीस...।"

नेता हरि सिंह गहलौत ने सिर हिला दिया।

"बाकी के हथियार वगैरह हम खुद पहुंचा लेंगे।" रहमान खान बोला।

"ठीक है—आज रात को माल जहांगीर के पास पहुंच जायेगा।"कहते हुए हरि सिंह गहलौत खड़ा हो गया।

rcz202016@gmail.com

"क्या बात है...? चल भी दिये... बैठिए। दो-दो पैग लगाते हैं।"

"नहीं... आज पार्टी ने मीटिंग बुलाई है...मेरा वहां पहुंचना बहुत जरूरी है। पीने-पिलाने का काम फिर हो जायेगा।"

रहमान खान ने मुस्कुराते हुए सिर हिला दिया।"

¶¶

"क्यों मेरा घर बर्बाद करने पर तुले हुए हो...? मेरी एक भूल की इतनी बड़ी सजा मत दो मुझे, विवेक...। अब मैं बाल—बच्चेदार औरत हूं...। मेरा एक लड़का है। प्लीज विवेक मुझ पर तरस खाओ।"

AJ SCAN

"तरस ही तो खा रहा हूं तुझ पर मेरी जान...। तभी तो हर साल सिर्फ दो लाख ही ले रहा हूं...। अगर तरस न खा रहा होता तो बढ़ती हुई महंगाई के हिसाब से अब तक पांच लाख रुपया हो चुका होता...।

रही बात तुम्हारी भूल की तो उस वक्त वो तुम्हारी भूल नहीं थी। मैं तुमसे सच्चा प्यार करता था। तुम भी तो मुझे दिलो-जान से चाहती थीं। तभी तो हमारे जिस्म एक हुए थे। एक बार नहीं... चार-पांच दफा हमने एक-दूसरे की प्यास बुझाई थी... और मैं हर बार अपने प्यार की निशानी के तौर पर तुम्हारी कुछ नंगी तस्वीरें ऑटोमैतिक कैमरे से ले लेता था, ताकि जब तुम करीब न होवो तो मैं तुम्हारी तस्वीरों को देखकर ही तुमसे प्यार कर लूं। लेकिन तुमने मुझे धोखा दिया। दौलत के लालच में तुमने एक लखपति से शादी कर ली।"

"मैं... मैं मजबूर हो गई थी...।"

"बकवास...।"

"मैं सच कहती हूं, विवेक...! मेरे पापा ने तब धमकी दी थी कि अगर मैंने अश्वनी से शादी नहीं की तो वे सचमुच आत्महत्या कर लेंगे।"

"और तूने अपने बाप की खातिर उससे शादी कर ली।"

"और कर भी क्या सकती थी मैं!"
"कर ही तो रही हो। तीन साल हो गये हैं तेरी शादी को....मुझे छः लाख दे चुकी हो.....आज छः से आठ हो जायेंगे।"

"नहीं....मैं अब तुम्हें एक पैसा भी नहीं दूंगी।"

"बेशक मत दो... लेकिन इतना याद रखना...अगर तुमने मुझे दो लाख नहीं दिया तो कल सुबह सारे गंगानगर की दीवारों पर तेरे हुस्न के दीदार कराती तस्वीरें चिपकी होंगी...जिनके नीचे तेरा नाम...तेरे घरवाले का नाम और तेरा पूरा पता लिखा होगा।"

"नहीं...।"

"ऐसा ही होगा।"

"तु....तुम ऐसा नहीं कर सकते।"

rcz202016@gmail.com

"मुझे अच्छी तरह से जानती है न शिवांगी... मैं जिस चीज को ठान लेता हूं, उसे करके ही रहता हूं...।

"नहीं...।"

"मुझे यकीन है कि तेरी तस्वीरें देखकर अश्वनी तुझे गले से लगा लेगा। उसे इतनी खुशी होगी कि खुशी के मारे उसका हार्टफेल हो जायेगा।"

"मुझ पर तरस खाओ विवेक...।"

"तेरी तस्वीरें किसी और को नहीं दिखा रहा...यह तरस नहीं तो क्या है? बस तुम हर साल दो लाख मेरे मुंह पर मारती रहो...मैं किसी के आगे जुबान तक नहीं खोलूंगा।"

"नहीं...तुम...।"

AJ SCAN

“बस... अब और बात नहीं...। रात आठ बजे मेरा एक आदमी तेरे घर आयेगा...उसे दो लाख दे देना... अगर नहीं दोगी तो... तुम्हें बता ही चुका हूं कि मैं क्या करूंगा?”

क.....कौन आयेगा...?

“रमेश बतरा होगा उसका नाम...उसने सफेद पैंट-शर्ट पहन रखी होगी...और लाल रंग का कोट पहन रखा होगा। तुम उससे उसका नाम पूछना और रुपया दे देना।”

¶¶

सतीश रावण के होठों पर क्रूर मुस्कान नाच उठी।

“रण्डी को रण्डवे मिल ही जाते हैं।” वह बड़बड़ाया। मुम्बई से भागकर वह सीधा दिल्ली पहूंचा था और दिल्ली से उसे जो भी ट्रेन का मिली, वह उस पर सवार हो गया। ट्रेन का आखिरी स्टॉप गंगानगर था, सो मजबूरन उसे वहां उतरना पड़ा। हालांकि वह दिल्ली में भी रूक सकता था...वह रुका नहीं. कारण था रीमा राठौर और बलराज गोगिया। पाकिस्तान में उसने फार्मूले की खातिर अपनी आदत के अनुसार उन्हें जबरदस्त धोखे दिये थे। उन्हें खत्म करने की भी कोशिशें की थीं। यह तो अनकी खुशकिस्मती थी कि वे उसके हाथों से बच निकले थे।

पाकिस्तान से मुम्बई में आकर उसने बलराज गोगिया को तो लगभग मार ही डाला था। वो तो ऐन वक्त पर राघव वहां पहुंच गया था...वरना उसने तो बलराज गोगिया को मार ही डाला था। राघव के आने की वजह से मजबूरन उसे दुम दबाकर वहां से भागना पड़ा था। वह जानता था कि रीमा राठौर और बलराज गोगिया उसे देखते ही खत्म कर देंगे... इसी वजह से उसने किसी ऐसे शहर में जाने का फैसला किया, जिसके बारे में वे सोच भी न सके कि वह वहां भी हो सकता है।

और वह गंगानगर पहुंच गया। गंगानगर में घूमने और उसे समझने के इरादे से वह उस वक्त शहर की गलियों की...सड़कों की खाक छान रहा था, जब उसके कानों में एक आदमी और औरत की बातें पड़ी। उस वक्त वह भी गंगाराम चौक के बायीं तरफ वाली सड़क की तीसरी गली में था और एक मकान के आगे से गुजर रहा था। मकान के बाहरी कमरे की खिड़की में से आवाजें आई थीं उसे और उसके कदम वहीं थमक गये थे। दीवार से सटकर उसने पूरी बात सुनी और फिर गली के सिरे की तरफ तेजी से बढ़ गया। बातों से वह जान चुका था कि औरत का नाम शिवांगी है और आदमी का नाम विवेक है। गली से बाहर आकर वह उस मकान की तरफ देखने लगा। करीब दस मिनट बाद आंसू पोंछती एक औरत उस मकान में से निकली और उसकी तरफ बढ़ी। सतीश रावण ने गौर से उस औरत को देखा। बेपनाह खूबसूरत और यौवन से भरपूर थी वह औरत जिसका नाम शिवांगी था। उसने नीले रंग की सितारों जड़ी साड़ी और उसी से मैच करता ब्लाऊज पहन रखा था। बेशक उस वक्त शिवांगी का चेहरा सूजा हुआ था...जिसके पीछे वजह यही थी कि वह मकान के भीतर काफी रोती रही थी...फिर भी वह तौबा शिकन लग रही थी। शिवांगी गर्दन झुकाये सतीश रावण के करीब से निकली और दायीं सड़क किनारे खड़ी मारुति की तरफ बढ़ गई। उसके देखते-ही-देखते मारुति की तरफ बढ़ गई। उसके देखते-ही-देखते मारुति आगे बढ़ी और श्री गंगाराम चौक को पार करती सीधी निकल गई। सतीश रावण ने गहरी सांस

rc2202016@gmail.com

AJ SCAN

छोड़ी और गर्दन पुनः गली की तरफ मोड़ी। गली में उस वक्त कोई भी नहीं था। वह आगे बढ़ा और उस मकान के दरवाजे के सामने आ खड़ा हुआ...जिसमें से कि शिवांगी निकली थी। क्या मजाल जो उसके चेहरे पर जरा-सी भी घबराहट या उत्तेजना नजर आई हो! बिल्कुल सामान्य नजर आ रहा था वह। उसने मकान के लोहे के दरवाजे के करीब दीवार में लगे पुश बटन को दबाया और इन्तजार करने लगा।

"कौन...?"

थोड़ी देर बाद भीतर से आवाज आई। वह वही आवाज थी, जो कि सतीश रावण खिड़की में से सुन चुका था।

"विवेक...।" वह मन-ही-मन मुस्कुराया...जबकि प्रत्यक्ष में वह ऊंचे स्वर में बोला-"दरवाजा खोलिये।"

अपनी आवाज में उसने जैसे शहद का पूरा छत्ता उंड़ेल दिया था। भीतर से कुण्डा खोले जाने की आवाज आई...फिर दरवाजा खुला। सामने करीब छब्बीस साल का गोरा-चिट्टा और स्मार्ट दिखने वाला युवक खड़ा ता।

"कहिये...?" उसने प्रश्नभरी निगाहों से उसकी तरफ देखा।

"मिस्टर विवेक से बात करनी है मुझे।" सतीश रावण बोला।
"मैं ही विवेक हूं...आप...?"
"मेरा नाम सतीश कुमार है। दिल्ली से आया हूं मैं।"

"दिल्ली से ...।"उलझे स्वर में बोला विवेक।

"जी हां... ।"

"कहिये...?

"क्या यहीं दरवाजे पर बात करेंगे आप मिस्टर विवेक?"

विवेक एक तरफ हट गया। उसका चेरा साफ बता रहा था कि वह उस अजनबी को सिर्फ मजबूरी में ही अन्दर आने दे रहा है। सतीश रावण भीतर प्रवेश कर गया। भीतर प्रवेश करते ही सामने टाइलों का बना आंगन नजर आया उसे...जिसके दायीं तरफ लम्बा बरामदा था और उसमें तीन कमरे थे। चौथा कमरा दरवाजे के ऐन दायीं तरफ था...उसी कमरे की बाहरी खिड़की में से सतीश रावण ने उसकी और शिवांगी की बातें सुनी थीं। विवेक उसे उसी कमरे में ले गया। ड्राइंगरूम था वह, जो कि साधारण ढंग से सजा हुआ था। कमरे के बीचो-बीच सनमाइका की साधारण-सी टेबल के दायीं तरफ लम बा सोफा हुआ था...तथा बायीं तरफ साथ-साथ दो सोफा चेयर्स थीं। सोफों पर सफेद रंग के गिलाफ चढ़े हुए थे। सामने दीवार के साथ सटा तख्तपोश लगा था, जिस पर कि रूई के गद्दे के ऊपर सफेद रंग की चादर बिछी हुई थी। कोने में रंगीन टी०वी० एक टेबल पर पड़ा ता, जिसके ऊपर विवेक की फ्रेम जड़ी तस्वीर लगी हुई थी।

rcz202016@gmail.com

"बैठिये...।" विवेक बोला। सतीश रावण लम्बे सोफे पर बैठ गया। विवेक उसके सामने एक सोफा चेयर पर बैठा और उसके चेहरे पर निगाहें जमाते हुए बोला-

"कहिये...?"

सतीश रावण ने पहलू बदला... साथ ही उसके होठों पर क्रूर मुस्कान फैल गई।

"शिवांगी की कुछ नंगी तस्वीरें हैं तुम्हारे पास... मुझे वो तस्वीरें चाहियें...।"

AJ SCAN

बुरी तरह से उछल पड़ा विवेक...साथ ही उसके चेहरे पर एक साथ कई रंग आकर लौट गये।

"क...कौन शिवांगी...?"

"वही जो अभी दस मिनट पहले ही तुम्हारे इस मकान से निकलकर गई है। मैं उसी शिवांगी की बात कर रहा हूं।"

विवेक झटके से खड़ा हो गया और कहरभरी निगाहों से देखते हुए गुर्राया-

"न तो मेरा किसी शिवांगी से कोई सम्बन्ध है...और न ही मेरे पास कोई तस्वीरें हैं। नाऊ गेट अप एण्ड गेट आउट।"

गहरी सांस छोड़ी सतीश रावण ने और मुस्कुराते हुए खड़ा हो गया।

"तो तुम शिवांगी को नहीं जानते?"

"गेट आउट...।" गुर्राया विवेक।

"और न ही तुम्हारे पास उसकी नंगी तस्वीरें हैं...?"

"तुम जाते हो या मैं पुलिस को फोन करूं...।"

"फिर तो तुम यह भी कहोगे कि तुमने उससे दो लाख भी नहीं मांगा?"

विवेक ने घूरकर उसे देखा।

"कौन हो तुम...?"

"सतीश...।" घूर्तता से मुस्कुराया सतीश रावण—"सतीश रावण...।"

"सतीश रावण...।"

माथे पर बल पड़े विवेक के।

"पहली बार आया हूं गंगानगर में...वरना दिल्ली...मुम्बई...अशोक नगर...राजनगर में तो मुझे बच्चा-बच्चा जानता है...और पूरे हिन्दुस्तान की पुलिस मुझसे वाकिफ हैं।"

विवेक के चेहरे पर उलझन उभरी। सतीश रावण बड़े इत्मीनान से टेबल के पहलू से निकलकर उसके सामने आ खड़ा हुआ-

“अब बोलो...कहां हैं वे तस्वीरें...?”

“फिर बकवास...। मैंने कहा न कि मैं किसी शिवांगी को नहीं जानता और अब अगर तुम यहां से फौरन दफा नहीं हुए तो मैं शोर मचाकर पूरे मौहल्ले को इकट्ठा कर लूंगा।”

सतीश रावण ने अपना दायां हाथ इस तरह ऊपर उठाया, जैसे वह अपनी पीठ पर गर्दन के नीचे कोरिश करने जा रहा हो। लेकिन ऐसा नहीं था। उसका हाथ अपनी पीठ पर चिपकी फेवरिट आरी के हत्थे पर पड़ा और अगले ही पल आरी विवेक की गर्दन से लगी नजर आने लगी। आरी को अपनी गर्दन से लगी देख विवेक की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। आंखों में दहशत के भाव ऊपर आये।

rcz202016@gmail.com

“तो तू शोर मचाकर मौहल्ले को इकट्ठा करेगा?”गुर्राया सतीश रावण। विवेक ने जोरों से थूक सटकी। मुंह से बोल तक नहीं फूटा उसके।

“यह आरी पचासों गर्दनें काट चुकी है...और गर्दन काटने के बाद इसकी धार और भी तेज हो जाती है...कहे तो आजमाकर दिखाऊं...?”

“न...नहीं...ए...ऐसा गजब मत करना।” घिघियाया विवेक।

“तो फिर कबूल कर कि शिवांगी की नंगी तस्वीरें तेरे पास हैं।”

“क—बूल...।”

AJ SCAN

"कहां हैं?"

"म...मेरे बैडरूम में...।"

"खड़ा हो।"

विवेक कांपते हुए खड़ा हो गया।

"अपने बैडरूम में चल।"

विवेक कमरे से निकला और बैडरूम में आ गया। इस बीच सतीश रावण लगातार आरी उसकी गर्दन पर टिकाये उसके पीछ-पीछे रहा।

"कहां हैं तस्वीरें...?" गुर्राया सतीश रावण। विवेक ने सामने पड़े डबल बैड की ऊंची पुश्त की तरफ इशारा किया

"निकाल...।"

विवेक बैड की पुश्त की तरफ बढ़ा।

"एक बात अपने भेजे में अभी डाल ले...।"तभी पीछे से गुर्राया सतीश रावण-"जहां कहीं भी तूने चालाकी दिखाने की कोशिश भी की...तेरी गर्दन घड़ से जुदा हो जायेगी।"

विवेक ने सिर हिलाया और बैड की पुश्त की ऊपरी प्लाई को सिरे से पकड़कर ऊपर उठाया...और भीतर हाथ डालकर एक लिफाफा बाहर निकाला। जिसे सतीश रावण ने तुरन्त हाथ लम्बा करके झपट लिया।

तस्वीरें इसी में हैं?"

"ह-हां...।" थूक सटकते हुए विवेक फंसे स्वर में बोला।

rcz202016@gmail.com

"किसी और की तस्वीरें भी हैं तेरे पास...?"

"न...नहीं...।"

थर्राये स्वर में बोला विवेक।

"बैड पर बैठ जा।"

विवेक बैड पर बैठ गया और सहमी निगाहों से उसे देखने लगा। सतीश रावण थोड़ा पीछे हटा और एक कुर्सी पर बैठते हुए आरी गोद में रखी और लिफाफे को खोलकर भीतर झांका। भीतर कुछ तस्वीर के साथ कुछ नेगेटिव रखे हुए थे। तस्वीरों को वह देख तो नहीं पाया...मगर उसे पता था कि तस्वीरें कैसी होंगी। लिफाफे को जेब में डालते हुए उसने आरी पकड़ी और खड़ा होकर विवेक के सामने आ गया।

AJ SCAN

"शिवांगी का पता बोल...।" वह उसकी आंखों में झांकते हुए गुर्राया।

"छ...छोटू राम कॉलोनी। क... कोठी नम्बर एक सौ सत्रह।"

"फोन नम्बर बोल...।"

"467325...।"

"उस आदमी के बारे में बोल जिसे तूने रात आठ बजे शिवांगी से दो लाख वसूलने के लिये भेजना है।"

बुरी तरह से उछल पड़ा विवेक। उसकी खौफभरी आंखों में आश्चर्य उमड़ आया।

"उछल मत।" मुस्कुराया सतीश रावण—"तेरे मकान के बाहर खड़े होकर मैंने सारी बातें सुन ली थीं।"

वोवेक मन-ही-मन अपनी बेवकूफी पर खुद को लानतें देने लगा जो उसने बाहरी कमरे में शिवांगी से बातें करके की थीं।

"बोल...किसे भेजने जा रहा था तू...?"

"र ... रमेश बतरा को ...।"

"नाम सुन चुका हूं मैं ... पता बोल उसका...।"

"क... कोतवाली के पीछे रहता है...।" उसने रमेश बतरा का पता बताया।

"तेरा पार्टनर है वो...?"

"न...नहीं...दोस्त है।"

"यानी दोस्त को आगे लगा रहा है तू...?"

rcz202016@gmail.com

"द...दस हजार रुपये भी तो वही कमायेगा।"

"अकेला रहता है वो अपने फ्लैट में...?"

"हां...।"

"तुने उसे सूचित कर दिया है कि वह शिवांगी के घर से दो लाख रुपये रात को आठ बजे लाये?"

"अभी नहीं किया।"

"किसे मानता है तू...?"

"क...क्या...?" हड़बड़ाया विवेक।

AJ SCAN

“तेरा ईष्टदेव जो भी है उसका उच्चारण कर...।”

“म...मगर क्यों...?”

“उससे तेरे सारे पाप नष्ट हो जायेंगे...और तेरी आत्मा को शान्ति मिलेगी...। तुझे स्वर्ग में इन्द्र का सिंहासन भी हासिल हो सकता है।”

विवेक की रंगत और भी ज्यादा पीली पड़ गई।

“म... मगर मैंने तो तुम्हें तस्वीरें दे दी हैं।”

“तभी तो मार रहा हूं तुझे।”

“क...क्या मतलब... ?”

“तेरे लिये इतना जानना ही बहुत है कि तू इस वक्त दुनिया के सबसे बड़े हरामी के सामने है और हरामियों की आदत होती है कि वे जिधर से भी गुजरते हैं...किसी को सुखी नहीं देखे सकते वे, और तेरे जैसों को जिन्दा छोड़ देना उनकी आदत में शुमार नहीं...।”

कहने के साथ ही उसने पूरे वेग से आरी को लहराया।

‘खचाक्...।‘

एक ही झटके में विवेक की आधी से ज्यादा गर्दन् कटकर एक तरफ लटक गई। खून का फव्वारा उबल पड़ा कन्धों के बीच से और वह बैड पर गिरकर पुरी तरह से छटपटाने लगा। सतीश रावण क्रूरता से मुस्कुराया और बैड की चादर के कोने को उठाकर उससे आरी साफ की...उसे अपनी पीठ पर पैंट की बैल्ट में फंसाया और बैड की पुश्त में उस जगह हाथ डाला जिसमें से कि विवेक ने तस्वीरों वाला लिफाफा निकाला था। कुछ क्षणों बाद जब उसका हाथ बाहर निकला तो उसमें सौ-सौ के नोटों की एक गड्डी दबी हुई थी। उसने नोटों को अपनी जेब के हवाले किया और विवेक की तरफ देखा। शांत हो चुका था वह। पुनः मुस्कुराया सतीश रावण और पीछे हटकर कुर्सी पर बैठते हुए जेब से तस्वीरों वाला लिफाफा निकालकर उसमें रखी तस्वीरें निकालकर उन्हें देखने लगा। तस्वीरों में शिवांगी सिर से पांव तक बेलिबास बैड पर बड़ी ही उत्तेजक मुद्रा में लेटी नजर आ रही थी। एक तस्वीर में वह घुठनों के बल बैठी आंखें बन्द किये अपनी छातियों को खुद ही भींच रही थी। दो तस्वीरों में वह विवेक के नीचे बिछी उससे संसर्ग कर रही थी। तस्वीरों देखते हुए ही सतीश रावण की नसों में गर्मी भरने लगी थी। उसकी कनपटी पर ठोकरे बजने लगी थीं और चेहरा उत्तेजना से सुर्ख हो गया था। अपने होठों पर जुबान फेरते हुए उसने तस्वीरें वापिस लिफाफें में रखीं और लिफाफा जेब में रखाकर लम्बी-लम्बी सांसें छोड़ने लगा। निश्चय ही वह अपने आपको नॉर्मल करने की कोशिश कर रहा था। थोड़ी देर बाद वह कुर्सी से उठा और बैड के परली तरफ साइड स्टूल पर रखें फोन की तरफ बढ़ा। बैड के किनारे पर बैठकर उसने रिसीवर उठाया और शिवांगी का नम्बर मिलाने लगा।

rcz202016@gmail.com

"हैलो...!" थोड़ी देर बाद उसके कान में किसी आदमी की आवाज पड़ी।

AJ SCAN

“मुझे शिवांगी जी से बात करनी है।” सतीश रावण बड़े ही सभ्य ढंग से बोला।

“आप..?”

“मेरा नाम सतीश कुमार है...।”

“होल्ड कीजिए...।”

सतीश रावण इन्तजार करने लगा। थोड़ी देर बाद उसके कान में शिवांगी की आवाज पड़ी।

“हैलो...।”

“नमस्कार शिवांगी जी!”

“नमस्कार... आप...?”

“मेरा नाम सतीश है... और मैं आपका शुभचिन्तक हूं।”

“मगर मैं तो आप को जानती तक नहीं।”

“आपने मुझे कभी देखा ही नहीं...फिर पहचानेंगी कैसे?”

"मगर...!"

"आपके करीब इस वक्त कोई खड़ा तो नहीं...?"

rcz202016@gmail.com

"नहीं तो...क्यों...?"

"दरअसल मैं नहीं चाहता कि आपकी बदनामी हो...आपका घर खराब हो।"

"क्या मतलब...?"

"मतलब यह मोहतरमा कि मिस्टर विवेक की लाश इस वक्त मेरे सामने उसी के बैड पर पड़ी है।"

AJ SCAN

"क्या ?" बुरी तरह से कांपती आवाज।

"इसकी गर्दन कट गई है...।"

"न-हीं...!

"मरने से पहले उसने एक लिफाफा दिया था मुझे, जिसमें कि आपके और उसके प्यार की कुछ निशानियां हैं। लिफाफा देते वक्त उसने मुझे पावर ऑफ अटरनी दे दी थी कि मैं उन तस्वीरों का कुछ भी करने के लिये आजाद हूं...।"

"क्या चाहते हो तुम...?"

"मैंने पहले ही कहा था कि मैं आपका शुभचिन्तक हूं...। मैं नहीं चाहता कि सारी उम्र आपके सिर पर तलवार लटकी रहे...अगर आप चाहें तो एक ही बारी में सारा मामला रफा-दफा कर सकती हैं।"

"क...कैसे...?"

"मेरी झोली में दस लाख फेंक दीजिये... मैं आपको आपकी तस्वीरें और तमाम नेगेटिव्ज लौटा दूंगा।"

दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया।

"आपने जवाब नहीं दिया मोहतरमा...?"

"म...मेरे पास इतना पैसा नहीं है।" दूसरी तरफ से कांपती आवाज आई।

"कोई बात नहीं ...मैं दस लाख आपके पतिदेव से वसूल कर लूंगा।"

"न...नहीं...त...तुम उनके पास नहीं जाओगे।"

AJ SCAN

“मगर आप तो रुपया देने से इन्कार कर रही हैं।”

“म...मेरा यकीन मानो...मेरे पास सिर्फ पांच लाख रुपये हैं। तुम पांच लाख ले लो और मुझे मेरी तस्वीरें और उनके नेगेटिव्ज दे दो... प्लीज...।”

“ठीक है।” गहरी सांस छोड़ी सतीश रावण ने—“मुझे यह सौदा मंजूर है, लेकिन...।”

“लेकिन क्या...?”

“बाकी के पांच लाख मैं तुम से वसूलना चाहूंगा।”

“म...मैंने कहा तो कि मेरे पास सिर्फ पांच लाख हैं।”

“मैं सुन चुका हूं।”

“फिर...?”

rcz202016@gmail.com

“तस्वीरों में तुम बहुत ही हसीन लग रही हो...। तस्वीरें देखकर मेरी हालत इस कदर खराब हो गई है कि मैं बयान नहीं कर सकता। ज्यादा वक्त नहीं लूंगा मैं तुम्हारा...बस दो-तीन घण्टे तुम्हें मेरी बीवी का रोल निभाना पड़ेगा... वो भी सिर्फ बैड पर...। उसके बाद मैं पांच लाख रुपया लेकर और तुम्हें तुम्हारी अमानत देकर चुपचाप दफा हो जाऊंगा। तुम्हें कुछ फर्क भी नहीं पड़ेगा... और तुम्हारे पांच लाख भी बच जायेंगे...।”

“द...देखो...म...मैं एक ब्याहता औरत हूं...मेरा एक बच्चा भी है।”

“मुझे मालूम है। मरने से पहले विवेक ने तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दिया था मुझे।”

AJ SCAN

"म...मेरी इज्जत से मत खेलो प्लीज...।" दूसरी तरफ से आ रही आवाज में रूलाई फूट पड़ी।

"इज्जत तो तुम कुंवारे होते ही गंवा चुका थी...।"

"वो मेरी भूल थी... जिसका खामियाजा मैं आज तक भुगत रही हूं।"

"तो एक भूल और कर लो... और यकीन मानो इसका खामियाजा तुम्हें बिल्कुल भी नहीं भुगतना पड़ेगा।"

"मैं बर्बाद हो जाऊंगी।"

"बर्बाद नहीं आजाद हो जाओगी...बर्बाद तो तब होगी, जब इन्कार करोगी।"

दूसरी तरफ से रोने की आवाज आने लगी।

"तुमने जवाब नहीं दिया डार्लिंग...क्या चाहती हो...?"

rcz202016@gmail.com

"म...मुझे मंजूर है।" रोती आवाज। सतीश रावण के होठों पर विजयी मुस्कान नाच उठी।

"तो बन्दा कब तशरीफ लाये?"

"त...तुम मुझे जगह बता दो...मैं वहां पहुंच जाऊंगी।"

"मैं तो इस शहर में आज ही आया हूं...।"

AJ SCAN

दूसरी तरफ खामोंशी छा गई।

“बोलो...।”

“त...तुम नौ बजे आ जाना।”

“तुम्हारे घर...”

“ह...हां...।”

“तुम्हारे पतिदेव...?”

“वो बाहर गये हैं...कल शाम को लौटेंगे।”

"ओ०के० मैडम...बन्दा आपकी खिदमत में ठीक नौ बजे हाजिर हो जायेगा...।"

कहकर उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और मुस्कुराते हुए विवेक की लाश की तरफ गर्दन मोड़ी।

rcz202016@gmail.com

"मुझे उम्मीद है कि इस वक्त तुम्हारी आत्मा खुश हो रही होगी...आखिर मैं वही काम ही तो कर रहा हूं, जो कि तुम कर रहे थे।"

वह हौले से हंसा और बैड से खड़ा होकर दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

¶¶

शिवांगी की रंगत पीली जर्द पड़ी थी।।

AJ SCAN

उसका कलेजा शताब्दी एक्सप्रेस को भी मात देता धाड़-धाड़ करता उसकी पसलियों से टकरा रहा था। विवेक का खून हो गया था... और उसकी तस्वीरें सतीश नाम के ब्लैकमेलर के पास पहुंच गई थी। अब उसका असली नाम सतीश या कोई और... इसके बारे में कहना मुहाल था, मगर इतना जरूर यकीनी था कि विवेक का कत्ल उस कथित सतीश ने ही किया था।

“हो सकता है विवेक का खून हुआ ही न हो...।”

सहसा ही एक नया ख्याल उसके जेहन में उभरा।

“सतीश नाम के उस कथित ब्लैकमेलर को बाई चांस उन तस्वीरों का पता चल गया हो और उसने मौके का फायदा उठाने के लिये चाल चली हो।”

“और अगर उसकी बात सही हुई तो...?”

उसके मन ने सवाल किया।

“तो मजबूरन मुझे सतीश को पांच लाख देने के साथ-साथ खुद को सौंपना पड़ेगा।” वह स्वयं से ही बोली—“मगर उससे पहले मुझे तसल्ली कर लेनी चाहिये...कि कही मैं ठगी तो नहीं जा रही।”

rcz202016@gmail.com

अपनी सोच को अंजाम देने के लिये उसने तुरन्त रिसीवर उठाया और कोतवाली का नम्बर डायल करने लगी।

“हैलो...।” थोड़ी देर बाद दूसरी तरफ से आवाज आई—“कोतवाली शहर...।”

शिवांगी ने तुरन्त रूमाल निकालकर माउथपीस पर रखा, ताकि उसकी आवाज में बदलाव आ जाये और बोली-

AJ SCAN

“हैलो... एक इन्फॉरमेशन नोट कीजिये...श्री गंगाराम चौक से रेलवे स्टेशन की तरफ जाती सड़क की बायीं तरफ तीसरी गली में एक खून हो गया है।”

“खू...न...।” बुरी तरह से चौंकती आवाज।

“मृतक का नाम विवेक है और मकान नम्बर है चार सौ पचास...।”

“आप कौन बोल रही हैं...?”

शिवांगी ने बिना उधर की बात सुने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और लम्बी-लम्बी सांसें छोड़ने लगी।

पसीने से उसका चेहरा तर-बतर हो गया। इतनी-सी बात करने में ही उसकी कितनी ऊर्जा नष्ट हो गई थी, यह वही जानती थी। रुमाल से उसने अपने खूबसूरत

गुलाबी चेहरे को पोंछा और दरवाजे की तरफ बढ़ गई। अब वह यह तसल्ली करना चाहती थी कि क्या सचमुच ही विवेक का कत्ल हुआ है। कुछ ही देर में वह अपनी मारुति में बैठी कोठी से निकल रही थी। करीब पन्द्रह मिनट बाद वह विवेक के मकान वाली गली के सामने से गुजरी तो मकान के सामने भीड़ देखी उसने मारुति को थोड़ा आगे ले जाकर रोका...बाहर निकली और वापिस गली के मुहाने पर आ खड़ी हुई। अब भीड़ काफी ज्यादा हो गई थी।

rcz202016@gmail.com

“क्या हुआ...?”

उसने गली में से निकलते एक आदमी से पूछा।

“खून हो गया है।”

“ओह नो... किसका खून हुआ...?”

AJ SCAN

“विवेक का ... बड़ा ही भला लड़का था।”

“ओह...!”

शिवांगी ने अफसोस जाहिर किया और वहां से हट गई। उसने जो तसल्ली करनी थी...कर ली थी... अब वहां उसका रुकना बेकार था। सो वह अपनी कार की तरफ बढ़ गई।

¶¶

रात ठीक नौ बजे सतीश रावण सर छोटू राम स्थित शिवांगी की कोठी के सामने एक टैक्सी से उतरा। कोठी के बन्द फाटक के सामने खड़े होकर उसने उस दोमंजिला सफेद पत्थर से लकदक करती कोठी को निहारा...फिर गेट के दायीं तरफ पिलर में फिट पुश बटन को दबा दिया। करीब तीन मिनट बाद गेट थोड़ा-सा खुला और शिवांगी का चेहरा नमूदार हुआ। सतीश रावण ने अपनी मुस्कान इस कान से उस कान तक खींची और सीने पर हाथ रखकर सिर को बड़ी अदा से झुकाया—।

“बन्दा आपका शुभचिन्तक...इस नाचीज ने ही आपको फोन किया था।”

शिवांगी बुरा मुंह बनाते हुए एक तरफ हट गई। सतीश रावण भीतर प्रवेश कर गया।।

rcz202016@gmail.com

“कमाल है...इतनी बड़ी कोठी और नौकर एक भी नहीं...।” वह बोला।

शिवांगी ने गेट बन्द कर कुण्डा लगाया और बिना उसकी बात का जवाब दिये ड्राइव-वे पर आगे बढ़ने लगी।

“तुमने मेरी बात का जवाब नहीं दिया।” सतीश रावण उसके साथ-साथ चलते हुए मुस्कुराया।

“नौकरों की छुट्टी कर दी मैंने...।” शिवांगी बोली

AJ SCAN

“ताकि हमारे प्यार में बाधा न पड़े।” बेशर्मी से हंसा सतीश रावण। जवाब नहीं दिया शिवांगी ने और उसे लिये अपने बैडरूम में आ गई। बैडरूम बड़े ही शानदार ढंग से सजा हुआ था।

“तस्वीरें कहां हैं?” बैडरूम में आते ही शिवांगी उसे कहरभरी निगाहों से घूरते हुए बोली।

“कमाल है...अभी तो मैं बैठा भी नहीं...और तुम तस्वीरों का जिक्र छेड़ बैठीं...कुछ अपना हुस्न दिखाओ...कुछ नोटों के दर्शन कराओ...तस्वीरें भी मिल जायेंगी।”

शिवांगी के चेहरे पर बेचैनी उभरी। वह बायीं तरफ वार्डरोब की तरफ बढ़ी ...उसे खोला और भीतर से एक बैग निकालकर उसके सामने वह बैग उसकी तरफ बढ़ाया।

"पूरे पांच लाख हैं... गिन लो।"

सतीश रावण ने बैग लेकर उसे अपने बायें हाथ पर रखा और दायें हाथ से उसे खोला। सौ-सौ के नोटों की गडिड्यों से भरा हुआ था बैग। इत्मीनान से उस ने सिर हिलाया और बैग बन्द कर एक तरफ रखकर जेब से एक लिफाफा निकालकर शिवांगी की तरफ बढ़ा दिया। शिवांगी ने लिफाफा लेकर उसे खोला और भीतर से तस्वीरें निकालकर देखने लगी। अपनी ही नंगी तस्वीरें देखकर उसके चेहरे पर शर्मसारी के भाव उभरे। उसने लिफाफे में झांका...फिर सतीश रावण की तरफ देखा।

"नेगेटिव्ज कहां हैं?"

"अभी पूरी कीमत कहां मिली है मुझे, मोहतरमा...।"

कहते हुए उसने शिवांगी की नाइटी में से झांकते उसके उभारों पर निगाहें गड़ा दीं।

AJ SCAN

शिवांगी ने जोरों से थूक सटकी।

“द...देखो...मैं बाल-बच्चेदार औरत हूं...।”

“मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता ...।”

“मैं किसी की अमानत हूं...।”

“मैं तुम्हें साथ नहीं ले जा रहा...तुम ऐसे-की-ऐसे ही यहीं रहोगी...।”

शिवांगी ने बेचैनी से होंठ काटे।

“जल्दी करो...देर करके तुम अपना भी वक्त बर्बाद कर रही हो और मेरा भी।”

मजबूरी से शिवांगी की आंखों से आसूं बह निकले। मगर उस हैवान पर भला आसुंओं का क्या असर होना था...उसका ध्यान तो उस वक्त उसी तरफ था, जो उसे मिलने जा रही थी। शिवांगी आंसू बहाती हुई अपनी नाइटी की डोरी खोलने लगी। और अगले हरी पल वह सिर से पैर तक बेलिबास उसके सामने सिर झुकाये खड़ी थी। शर्म और आत्मग्लानि से वह धरती में गड़ी जा रही थी। इधर सतीश रावण ने उसके बेपनाह हुस्न के दीदार किये तो उसकी हालत बिगड़ने लगी। बाज की तरह वह उस पर झपटा और उसे उठाकर बैड पर पटक अपने कपड़ों से मुक्ति पाने लगा। शिवांगी एक मुर्दे की तरह बैड पर आंखें बन्द किये पड़ी रही। सतीश रावण ने उसकी बन्द आंखों का फायदा उठाया और पीठ पर चिपकी आरी को अपनी शर्ट के नीटे रख, पैंट के हुक खोलने लगा।

rcz2020l6@gmail.com

¶¶

"सारा सामान जहांगीर के घर पहुंचाना है...। कहीं भी गाड़ी नहीं रोकनी ...कोई अफसर पूछे तो कह देना कि स्टेशन जा रहा हूं। मेरा लड़का आ रहा है दिल्ली से। समझ गया?"

AJ SCAN

“सब समझ गया मन्त्रीजी... !”वह क्रूर चेहरे बोला सिर हिलाते हुए बोला—“आप निश्चिंत रहिये...सारा मान सही-सलामत जहांगीर के घर पहुंच जायेगा।”

कहते हुए उसने अपने पैरों कै करीब रखे एक लम्बे तथा एक वर्गाकार डिब्बे की तरफ देखा। वर्गाकार डिब्बे में आर०डी०एक्स० था, जबकि लम्बे डिब्बे में ए०के० सैंतालीस थी।

“सामान उठाकर रखो गाड़ी में।”

हरि सिंह गहलौत बोला। क्रूर चेहरे वाले ने लम्बा डिब्बा वर्गाकार डिब्बे के ऊपर रखा और दोनों डिब्बे उठाकर कोठी के दरवाजे की तरफ बढ़ गया। ठीक तभी साथ वाले कमरे में दीवार से कान लगाये हरि सिंह गहलौत का नौकर एक तरफ हटा और कमरे के पिछले दरवाजे की तरफ बढ़ गया। उस वक्त उसके चेहरे पर घृणा छाई हुई थी, जो कि निश्चय ही हरि सिंह गहलौत कि लिये थी।

“गद्दार...कमीना...देशद्रोही...अपने स्वार्थ के लिये अपने ही देश को नर्क की आग में झोंक रहा है। लेकिन मैं ऐसा नहीं होने दूंगा...तेरा असली चेहरा दुनिया के

सामने नंगा कर दूंगा...ताकि लोगों को पता चले कि किस कुत्ते को उन्होंने अपना प्रतिनिधि बनाया है।"

पिछले रास्ते से वह सामने आया और कोठी के फाटक की तरफ बढ़ने लगा। हरि सिंह की कार माल लेकर चली गई थी।

rcz202016@gmail.com

"कहां जा रहे हो शुम्भूनाथ...?" गेट पर खड़े गार्ड ने उसे टोका। शम्भूनाथ जबरदस्ती मुस्कुराया और बिना कोई जवाब दिये बाहर निकल गया। शम्भूनाथ पिछले तीन साल से हरि सिंह गहलौत की कोठी में नौकरी कर रहा...और आज तक कभी भी उसकी कोई शिकायत दर्ज नहीं हुई थी। वह कई बार कोठी से बाहर आ जा चुका था... वो भी बिना किसी से कुछ कहे। ऐसे में आज गार्ड उसे कैसे रोकते? शम्भूनाथ कोठी से निकलकर कुछ दूर एक पी०सी०ओ० बूथ में घूसा और एस०एस०पी० का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

"ट्रिन...ट्रिन...।"

AJ SCAN

फोन...की घण्टी घनघनाई। एस०एस०पी० कुवंर सिंह रावत ने हाथ में थमा कॉफी का मग टेबल पर रखा और रिसीवर उठाकर कान से लगाते हुए बोला—

“यस...।”

“सर...मन्त्री हरि सिंह गहलौत का नौकर शम्भूनाथ आपसे बात करना चाहता है। ”

ऑपरेटर की आवाज आई। सुनकर चौंका कुंवर सिंह रावत...साथ ही आंखों में गम्भीरता उभर आई।

“लाईन दो...।”वह बोला।”

“कहो...।”

"हमारा मन्त्री देशद्रोही है, साहब।"

"क्या बकते हो?"

rcz202016@gmail.com

"मैं ठीक कह रहा हूं, साहब ...। पाकिस्तान से जो गोला-बारुद यहां आया है, उसमें से आधे से ज्यादा मन्त्री की कोठी में पहुंचा था।"

"क्या ...?" उछल पड़ा कुंवर सिंह रावत।

"इसका पता मुझे आज ही लगा है, साहब ...और अब मैं आपको इत्तला दे रहा हूं। इस शहर को बचा लीजिए साहब...मन्त्री ने सारा असलाह आज कई स्थानों पर वितरित कर दिया है...और अभी थोड़ी देर पहले ही मन्त्री की अपनी कार में पांच किलो आर०डी० एक्स० और दो ए०के० सैंतालीस राइफलें कोतवाली के पास किसी जहांगीर के मकान की तरफ रवाना हुई हैं।"

AJ SCAN

कुंवर सिंह रावत के चेहरे पर उत्तेजना और अविश्बास के भाव उभर आये।

“तुम ठीक कह रहे हो...?”

“बिल्कुल ठीक कह रहा हूं, साहब।”

“ठीक है...मैं अभी एक्शन लेता हूं और तुम यह बात किसी और को मत बताना...।”

“मैं समझ रहा हूं, साहब....यह बात लीक नहीं होगी, क्योंकि कई गद्दार भरे पड़े हैं यहां...।”

“तुम वाकई समझदार हो....अब देखो मैं क्या करता हूं...।”

कहकर उस ने रिसीवर रखा...तेजी से कुछ सोचा और फिर कोतवाली का नम्बर मिलाने लगा।

¶¶

rcz202016@gmail.com

पूरी तरह से तृप्त होकर सतीश रावण शिवांगी के ऊपर से उतरा और अपने कपड़े उठाकर पहनने लगा। निगाहें झुकाते हुए शिवांगी भी बैठी और अपनी नाइटी उठा ली। बेशक उस वक्त उसके चेहरे पर नाराजगी के भाव थे...मगर उसके खिले हुए गाल और आंखों की चमक बता रही थी कि उसने पूरी संतुष्टि आज पहली बार ही पाई है। यह सच ही था। उसका दिल सतीश रावण की मर्दानगी पर मर मिटा था। उसका दिल तो कर रहा था कि वह उससे कहे कि ज्यादा नहीं तो हफ्ते में एक बार वह अवश्य ही उसके साथ सोये...वो भी पूरी रात के लिये। मगर लज्जा और नेगेटिव्ज की खातिर वह ऐसा कर नहीं पायी। नाइटी की डोरी बांधकर उसने बनावटी गुस्से से सतीश रावण की तरफ देखा और बोली—

"तुम्हारी मनमानी पूरी हो गई...अब निकालो नेगेटिव्ज ...।"

AJ SCAN

सतीश रावण ने पैंट के हुक बन्द किये और शर्ट उठाकर पहनने लगा।

"कपड़े पहन लूं...फिर देता हूं ...।" वह बोला।

तभी शिवांगी की निगाहें बैड पर पड़ी आरी पर पड़ी। आरी देखकर आंखों में दहशत के भाव उभरे।

"य...यह...!"

"तुम्हारे भूतपूर्व प्रेमी की गर्दन इसी से कटी थी।"

सतीश रावण आरी उठाते हुए बोला। शिवांगी ने जोरों से झुरझुरी ली। आंखों में दहशत के भाव उभर आये। कुछे देर पहले जहां वह सतीश रावण के संसर्ग के नशे में डूबी हुई थी...वह सारा नशा पलभर में ही हवा हो गया। जोरों से थूक सटका उसने।

“त...तुम्हारा बैग...।” वह बैग की तरफ इशारा करते हुए थर्राये स्वर में बोली। सतीश रावण ने बैग की तरफ देखा...मुस्कुराया और बोला—

“कल को जब तुम्हारा पति तुमसे इन पांच लाख के बारे में पूछेगा तो क्या जवाब दोगी...?”

rcz202016@gmail.com

“त...तुमने अपनी कीमत वसूल ली...अब मेरे नेगेटिव्ज निकगालो और दफा हो जाओ यहां से। अपने पति को मैं क्या जवाब दूंगी...यह सोचना मेरी सिरदर्दी है...तुम्हारी नहीं।”

“मेरी सिरदर्दी क्यों नहीं? आखिर कुछ देर के लिये ही सही...मैंने तुम्हारे पति का रोल निभाया है...। ऐसे में तुम्हारी चिंता से चिंतित तो होऊंगा न मैं।”

AJ SCAN

“अगर मेरी इतनी ही चिन्ता है तो यह बैग लिये बिना ही यहां से चले जाओ...।”

“यह तो होना मुमकिन नहीं। हां...एक दूसरा रास्ता बता सकता हूं। जिस पर चलकर तुम अपने पति के सामने पाक-साफ भी बनी रहोगी...और वह तुमसे कुछ पूछेगा भी नहीं।”

“क...क्या...?” न चाहते हुए भी शिवांगी के मुंह से निकल गया।

“तम्हारे घर में जितनी भी नकदी...जेवरात पड़ा है...वो सब मुझे दे दो...तेरा पति यही समझेगा कि कोई उसके घर को लूट ले गया है।”

शिवांगी की रंगत एकदम से पीली पड़ गई। आंखों में आतंक उभर आया। अपने सामने खड़े उस नरपिशाच के इरादों को वह समझ गई थी।

"म...मेरे पास कुछ भी नहीं...।"बुरी तरह से कांप उठा था उसका स्वर। सतीश रावण ने कदम आगे बढ़ाया और आरी उसकी गर्दन से लगा दी।

"य...यह क्या कर रहे हो...?"

rcz2020010@gmail.com

"यह आरी तेरे भूतपूर्व यार की गर्दन रेत चुकी है और अब इसकी जद में तेरी गर्दन है...।"

"न...हीं...ऐसा जुल्म मत करना...। म...मेरा एक छोटा-सा बच्चा है...साथ वाले कमरे में सो रहा है। अभी तो उसने मां का दूध भी नहीं छोड़ा...।"

"जिन्दा बचने का रास्ता तेरे हाथ में है। यह तुझे सोचना है कि तू जिन्दा रहना चाहती है या नहीं। अगर तू चाहती है कि तेरा बच्चा तेरा दूध पिये तो अपने घर की सारी दौलत समेट कर मेरी झोली में डाल दे...वरना तेरा बच्चा भूख से बिलख-बिलख कर जान दे देगा, क्योंकि उसकी खुराक तो तेरी मौत के साथ ही खत्म हो जायेगी।"

AJ SCAN

“न...हीं...।” रो पड़ी शिवांगी।

“जल्दी कर... वक्त का बहुत टोटा है मेरे पास।”

शिवांगी मजबूर हो चुकी थी, उस शैतान के सामने जिसके दिल में रहम नाम की कोई चीज नहीं थी।

“द...देती हूं...।”

“वाकई तू एक समझदार पत्नी और एक ममतामयी मां है।”

सतीश रावण क्रूरता से हंसा। शिवांगी वहां से हटी और वार्डरोब की तरफ बढ़ गई। वार्डरोब खोलकर उसने उसके भीतर बने एक खाने में से पांच-पांच सौ की तीन और सौ-सौ की दो गड्डियां निकालीं...फिर उसने जेवर निकाले जिनमें कि एक

चेन...एक हार...एक नेकलस और दस सोने की चूड़ियां थीं। सारा सामान उसने बैड पर रखा और आंसू बहाते हुए सतीश रावण की तरफ देखा।

"और कुछ है...?"

"सारी तिजोरी खाली हो चुकी है...खुद देख लो।"

"बैग में डाल दे सारा सामान...।"

शिवांगी ने नोट और जेवर बैग में डाल दिये।

"शाबाश...अब ठीक है।"

"म...मेरे नेगेटिव्ज...?"

AJ SCAN

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और बोला-—

“तुझे क्या जरूरत है नेगेटिव्ज की...?”

“क्या मतलब...?” बुरी तरह से चौंकी शिवांगी।

“मतलब यह कि तू मरने जा रही है...और मुर्दों को भला इज्जत-बेइज्जती से क्या लेना-देना...?”

कहने के साथ ही उसकी आरी पूरे वेग से लहराई।

“खचाक...।”

शिवांगी की गर्दन एक ही वार में धड़ से जुदा हो गई। उसका धड़ कटे वृक्ष की तरह फर्श पर गिरा और झटके लेने लगा। सिर उसके कूल्हे के पास गिरा पड़ा था। सतीश रावण ने झुककर उसकी नाइटी से आरी साफ की और अपनी पीठ पर चिपकाकर बैड पर पड़े बैग उठा लिया। मुस्कुराते हुए उसने शिवांगी के धड़ की तरफ देखा और फिर गहरी सांस छोड़ते हुए बोला—

"पराय पुरुष से सम्पर्क रखने वाली औरत का यही हश्र होता है।"

rcz202016@gmail.com

फिर अपनी ही बात पर वह हंस पड़ा और दरवाजे की तरफ कदम बढ़ा दिये। शिवांगी की कोठी से निकलकर वह पैदल ही चलता हुआ सर छोटू राम कॉलोनी से बाहर निकलकर एक तरफ पैदल चलने लगा। किसी टैक्सी या थ्री व्हीलर की तलाश थी उसे जो कि उसे स्टेशन तक पहुंचा सके। यहां आते ही दो कत्ल कर दिये थे उसने और आठ-दस लाख रुपये कमा लिये थे...और वह इन नोटों को खोना नहीं चाहता था...इसी वजह से उसने फौरन गंगानगर को छोड़ने का फैसला कर लिया था। काफी दूरी तक निकल आया वह...मगर टैक्सी या ऑटोरिक्शा तो दूर...उसे रिक्शा तक नहीं मिली। ऊपर से उसे स्टेशन का रास्ता भी मालूम नहीं था। और वह यह भी नहीं जानता था कि शहर में रेड अलर्ट जारी किया हुआ है सरकार ने। यह तो उसकी किस्मत साथ दे रही थी कि अभी तक उससे कोई पुलिससिया नहीं टकराया था। तभी उससे थोड़ी दूर एक मोड़ से एक कार निकली और थोड़ा आगे चलकर रुक गई। रुकते ही कार की हैडलाइट्स बन्द हुईं और ड्राइविंग डोर खोलकर एक आदमी जो कि

AJ SCAN

ड्राइवर की वर्दी पहने था। बाहर निकला और पैंट की जिप खोलते हुए सड़क से नीचे उतर कर आगे बढ़ा। सतीश रावण की आंखें पहले तो सिकुड़ीं ...फिर एकाएक ही उसके चेहरे पर शैतानियत उभर आई।

¶¶

वह कार हरि सिंह गहलौत की थी, जिसमें उसका ड्राइवर आर०डी०एक्स० तथा स्टेशगनें लादे जहांगीर के घर की तरफ जा रहा था। उस वक्त वह आधा रास्ता पार कर चुका था, जब उसे पेशाब का प्रैशर पड़ा। प्रैशर इतना ज्यादा हो गया था कि अब उसके लिये उसे रोकना मुहाल हो गया था। बेहद मजबूर होकर उसने कार को रोका...वरना वह किसी भी सूरत में उसे नहीं रोकता...आखिर हरि सिंह गहलौत का हुक्म था कि कार को रास्ते में कहीं भी खड़ा नहीं करना। दरवाजा खोलकर वह सड़क से नीचे उतरा और एक दुकान के बन्द शटर के आगे खड़ा होकर पेशाब करने लगा। हल्का होने पर उसकी जान में जान आई। जिप बन्द करते हुए वह जैसे ही मुड़ा...सामने एक अजनबी को देखकर वह बुरी तरह से चौंका। उसकी आंखों में सन्देह के भाव उभर आये। वह अजनबी और कोई नहीं...सतीश रावण था।

“मुझे स्टेशन जाना है।” वह मीठे स्वर में बोला-“प्लीज...क्या आप मुझे रास्ता बतायेंगे?”

ड्राइवर के चेहरे पर छाया संदेह फौरन खत्म हो गया।

"सीधे चले जाओ...।" उसने उधर इशारा किया जिधर से कि सतीश रावण आया था—"दो किलोमीटर बाद एक चौक आयेगा...वहां से बायीं तरफ मुड़ना...एक किलोमिटर बाद श्री गंगाराम चौक आयेगा...बस उसी के पास है स्टेशन।"

rcz202016@gmail.com

"थैंक्यू...!"

कहते हुए सतीश रावण एक तरफ हट गया। ड्राइवर उसके करीब से निकलकर कार की तरफ बढ़ा। अभी उसने दो-तीन कदम ही बढ़ाये थे कि उसे अपने पीछे हल्की-सी आहट सुनाई दी। तुरन्त वह पलटा। मगर तब तक देर हो चुकी थी। सतीश रावण की आरी उसकी गर्दन पर चल चुकी थी। ड्राइवर कटे वृक्ष की तरह नीचे गिरा और छटपटाने लगा। सतीश रावण ने पहले आरी उसके कपड़ों से पोंछ कर पीठ से चिपकाई...फिर ड्राइवर की तलाशी लेने लगा। तलाशी के दौरान उसे ड्राइवर की जेब से एक रिवाल्वर मिली तो वह बुरी तरह से चौंक पड़ा। फिर एकाएक ही उसके होठों पर मुस्कान फैल गई।

AJ SCAN

"अपनी ही बिरादरी का लगता है तू।" वह बड़बड़ाया—"मुझे भी एक अदद रिवाल्वर की जरूरत थी...इसलिये थैंक्यू...।

कहकर वह सीधा हुआ...रिवाल्वर जेब में डाली और कार की तरफ बढ़ गया। कार के करीब पहुंचकर भी...उसके बोनेट पर लगा झण्डा देखर वह यह भी नहीं समझ सका कि कार किसी मन्त्री की है। दरवाजा खोलकर वह ड्राइविंग सीट पर बैठा और इंजन स्टार्ट करके ड्राइवर की लाश की तरफ देखकर हौले से हंसा।

"बाय...।" उसने हाथ हिलाया और कार आगे बढ़ा दी। स्टेशन जाने का रास्ता तो उसे पता चल ही चुका था...सो वह चौक की तरफ बढ़ने लगा।

जैसे ही वह चौक करीब आया...।

उसकी सारी खुशी काफूर हो गई। कलेजा जोरों से धड़क उठा। सामने चौक पर पुलिस की तीन गाड़ियां खड़ी थीं...और बीस-बाइस सिपाही तथा पांच-छः बड़े

अफसर खड़े थे वहां। तभी एक सिपाही ने हाथ देकर कार को रोकने का इशारा किया। मजबूर था सतीश रावण। उसे कार रोकनी पड़ी।। कार के रूकते ही उसे सिपाहियों ने चारों तरफ से घेर लिया। तभी एक डी०एस०पी० सतीश रावण के करीब आया और बोला—

"ऊपर से आदेश आया है कि मन्त्रीजी की कार की तलाशी ली जाये।"

rcz202016@gmail.com

एक जबरदस्त झटका लगा सतीश रावण को। एक मन्त्री की कार को चुराया था उसने!

"अब नहीं बचूंगा...।" मन-ही-मन बड़बड़ाया वह।

"तुम ड्राइवर हो मन्त्रीजी के ...?"

AJ SCAN

सतीश रावण ने हां में सिर हिला दिया। इन्कार कर नहीं सकता था वह ...उस सूरत में उसे यह भी बताना पड़ता कि असली ड्राइवर कहां है।

“बाहर निकल...।”

सतीश रावण ने एक हसरतभरी निगाह अपने करीब सीट पर रखे बैग पर डाली जिसमें कि उसकी पूरे दिन की कमाई पड़ी थी... फिर दरवाजा खोलकर बाहर आ गया।

“तलाशी लो...।” डी०एस०पी० बोला।

तुरन्त एक सिपाही ने सतीश रावण की तलाशी ली और रिवाल्वर निकालकर डी. एस०पी० की तरफ बढ़ाई।

“यह रिवाल्वर मिली है सर...।”

सतीश रावण्ने शुक्र मनाया कि सिपाही ने उसकी पीठ पर हाथ नहीं फेरा ...जहां पर कि उसकी आरी चिपकी हुई थी।

“यह रिवाल्वर...।”

rcz202016@gmail.com

डी०एस०पी० बोला।

“मन्त्रीजी ने दी हुई है।” बोला सतीश रावण।

“लाइसेंस है तुम्हारे पास...?”

“है...मन्त्रीजी के पास है।” सतीश रावण खुद को नॉर्मल करते हुए बोला।

AJ SCAN

“गाड़ी की तलाशी ली जाये।”

डी०एस०पी० ने आदेश दिया। तलाशी शुरू हुई। सबसे पहले वह बैग बाहर निकाला जो कि सतीश रावण का था...फिर डिक्की में दो डिब्बे निकले। सिपाहियों ने जैसे ही लम्बे डिब्बे को खोला-सतीश रावण का कलेजा मुंह को आ गया। आंखें फट पढ़ी। दो ए०के० सैंतालीस राइफलें उसके सामने पड़ी थीं....और साथ में गोलियां। दूसरा डिब्बा खोला गया तो उसमें आर०डी०एक्स० के दर्शन हुए। सतीश रावण को आर०डी०एक्स० की पहचान नहीं थी। यह तो डी०एस०पी० ने जब चौंकते हुए आर०डी०एक्स० कहा था, तभी उसे पता चला था कि वह आर०डी०एक्स० है। और फिर जब बैग को खोला गया तो सतीश रावण का चेहरा रोने जैसा हो गया। अपनी मेहनत की कमाई में से उसने अभी तक एक पैसा भी खर्च नहीं किया था और सारा माल पुलिस के हत्थे चढ़ गया। मन-ही-मन वह उस घड़ी को कोसने लगा जब उसने मन्त्री की कार चुराई थी।

“गिरफ्तार कर लो इसे।” डी०एस०पी० बोला।

तुरन्त एक सिपाही ने उसकी कलाई में हथकड़ी डाल दी और उसका दूसरा सिरा अपनी पैंट की बैल्ट में पिरों लिया।

"अब नहीं बचूंगा...।" वह मन-ही-मन बड़ाबड़ाया- "आर०डी०एक्स० और ए०के० सैंतालीस अब मुझे सीधे जेल में ही पहुंचायेंगी।"

"ले जाओ इसे...मैं एस०एस०पी० साहब से बात करता हूं।"

rcz202016@gmail.com

कहकर डी०एस०पी० अपनी कार की तरफ बढ़ गया।

¶¶

"ट्रिन..ट्रिन...।"

AJ SCAN

फोन की घण्टी घनघना उठी। हरि सिंह गहलौत ने रिसीवर उठाया और कान से लगाया। तीन फोन आ चुके थे तब तक उसे कि माल सकुशल अपने ठिकानों पर पहुंच गये हैं। अब चौथा फोन आ रहा था और इसके बाद तीन फोन और आने थे। कुल सात स्थानों पर गोला-बारूद बेजा था हरि सिंह गहलौत ने।

"हैलो...।" वह माउथपीस में बोला।

"नमस्कार मन्त्रीजी...मैं एस०एस०पी० कुंबर सिंह रावत बोल रहा हूं...।"

"गड़बड़...।" हरि सिंह गहलौत मन-ही-मन बड़बड़ाया...साथ ही उसका कलेजा धड़क उठा।

"कहो...।" प्रत्याक्षतया वह बोला।

"आपका ड्राइवर हवालात में है।"

“क...क्या...?”

“जी हां...उसके कब्जे से पांच किलो आर०डी०एक्स०...दो ए०के० सैंतालीस और दस लाख का कैस और जेवर मिले हैं...और यह सारा सामान आपकी कार से आपकी कोठी से निकला था।”

rcz202016@gmail.com

“क्या बकते हो...?” गुस्से में गुर्राया हरि सिंह गहलौत—“तुम यह कहना चाहते हो कि सारा असलाह मेरी कोठी में था।”

“जी हां...।”

“बकवास...।”

AJ SCAN

“इस वक्त तो आप बकवास कह रहे हैं...मगर जब गवाह सामने आयेगा तो आप झुठला नहीं पायेंगे...।”

“क्या मतलब...?”

“फिलहाल तो आप कोतवाली पहुंचिये...बाकी बातें आपसे वहीं होंगी।”

“क्या कहा? मैं मन्त्री कोतवाली पहुंचूं...मैं...।”

“ठीक है...मत पहुंचिये...।” गहरी सांस छोड़ी गई दूसरी तरफ से—“सुबह होने तक आपके खिलाफ मुकदमा दर्ज हो जायेगा...और यह खबर अखबारों में छप जायेगी।”

हरि सिंह गहलौत की आंखों के आगे उसका अन्धकार में डूबा भविष्य तैर गया। अगर यह खबर गंगानगर में फैल गई कि उग्रवादियों का साथी है तो उसकी

हालत उस कुत्ते के समान हो जायेगी जिसे हर तरफ से पत्थर मारकर भगा दिया जाता है। उसने तेजी से कुछ सोचा और बोला—

"मैं आ रहा हूं...।"

"मुझे विश्वास था कि आप इन्कार नहीं करेंगे...। मैं कोतवाली में आपका इन्तजार कर रहा हूं...।"

उसी के साथ दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया। हरि सिंह ने धड़कते कलेजे के साथ रिसीवर क्रेडिल पर रखा और सोफे की पुश्त से टेक लगाकर बैठ गया। चिंता की लकीरें उसके चेहरे पर साफ नजर आ रही थीं। कहां वह मुख्यमन्त्री की कुर्सी के ख्वाब ले रहा था...कहां अब उसे अपने मन्त्री पद के भी लाले पड़ते नजर आने लगे थे। उसके ड्राइवर की भूल की वजह से उसके सारे किये-कराये पर पानी फिर गया था। आर०डी०एक्स० और ए०के० सैंतालीस पकड़ी गई थीं...साथ में कैश और गहने...। कैश और गहने की सोच दिमाग में उभरते ही वह बुरी तरह से उछल पड़ा। उसने तो सिर्फ आर०डी०एक्स० और ए०के० सैंतालीस भेजी थीं...फिर इतना कैश और गहने पुलिस के हत्थे कैसे लग गये...वो भी मेरी कार में से। जबकि उसने भैरो सिंह को कोई कैश यह गहने नहीं दिये थे। अवश्य ही कोई राज है इसमें। या तो

AJ SCAN

भैरोसिंह ने कोई गड़बड़ी की है...या कोई बहुत बड़ी गड़बड़ है। और इसका पता अब थाने चलकर ही लग सकता है। तुरन्त वह खड़ा हुआ और कमरे से बाहर निकल गया।

¶¶

कोतवाली के लम्बे ऊंचे फाटक के सामने आगे-पीछे तीन गाड़ियां खड़ी गुईं। बीच वाली गाड़ी 'फोर्ड सिटी' थी तथा उसके आगे-पीछे ओपन जिप्सियां थीं। जिप्सियों में स्टेनगनों से लैस गार्ड थे...जो कि गाड़ियों के रुकते ही जिप्सियों से उतर कर फोर्ड सिटी को घेर कर खड़े हो गये थे। तत्पश्चात् फोर्ड सिटी के ड्राइवर, ने बाहर आकर पिछला दरवाजा खोला और एक तरफ खड़ा हो गया। फोर्ड में से हरि सिंह गहलौत बाहर निकला और गार्डों के बीच चलता हुआ कोतवाली में प्रवेश कर गया। तुरन्त दो अफसर जो कि डी०एस०पी० रैंक के थे...एक तरफ से आये और हरि सिंह गहलौत को अगुवाई करते हुए उसे एस०एच०ओ० के ऑफिस में ले गये। जहां पर कि इन्सपेक्टर की कुर्सी पर एस०एस०पी० कुंवर सिंह रावत बैठा हुआ था। हरि सिंह गहलौत को देखकर वह तुरन्त खड़ा और बोला—

“बैठिये, मन्त्रीजी।”

हरि सिहं गहलौत एक कुर्सी पर बैठ गया। उसने अपने बॉडीगार्ड को बाहर जाने का इशारा किया...कुछ ही देर बाद ऑफिस में सिर्फ कुंवर सिंह रावत और हरि सिंह गहलौत ही दिखाई दे रहे थे।

"तुम्हें गलतफहमी हुई है, एस०एस०पी०.... मैंने अपने ड्राइवर को स्टेशन भेजा था...आज मेरा बेटा दिल्ली से आ रहा है...उसी को लेने जा रहा था ड्रिवर।"

rcz202016@gmail.com

हरि सिंह गहलौत गम्भीरता से बोला। मुस्कुरा पड़ा कुंवर सिंह रावत।

"मैं आई०पी०एस० करके एस०एस०पी० नहीं बना हूं मन्त्रीजी...।" वह बोला—"सब-इंस्पेक्टर से सीढ़ी-दर-सीढ़ी पार करता हुआ यहां तक पहुंचा हूं। ऐसे में आप खुद सोच सकते हैं कि मैंने कितनी दुनिया देखी हैं।"

"मुझे तुम्हारी काबलियत पर कोई शक नहीं...मगर यह भी तो हो सकता है कि भैरोसिंह ही दुश्मन देश का एजेन्ट हो।"

AJ SCAN

“आप अपने ड्राइवर का नाम ले रहे हैं?”

“हां...।”

कुंवर सिंह रावत पुनः मुस्कुराया।

“राजनीतिज्ञों की यह आदत होती है कि अपने सबसे विश्वसनीय साथी को फंसाने में भी देर नहीं करते। जरा भी नही हिचकिचाते वे।”

“मैं सच कह रहा हूं...भला मेरा आर०डी०एक्स० से क्या सम्बन्ध...।”

“सम्बन्ध है...तभी तो आप भागे-भागे यहां आये हैं।” कुंवर सिंह रावत बोला—“और इसका एक मजबूत गवाह भी है मेरे पास...जिसने अपनी आंखों से आपको अपनी देख-रेख में आपकी कार में आर०डी०एक्स० और ए०के० सैंतालीस रखवाते

देखा था...और अपने कानों से सुना था कि यह सामान जहांगीर के पास पहुंचाया जाये।"

हरि सिंह गहलौत का कलेजा धड़क उठा।

"किसने देखा था मुझे...?"

जवाब देने की बजाय मुस्कुरा पड़ा कुंवर सिंह रावत। हरि सिंह गहलौत ने बेचैनी से पहलू बदला। उसके चेहरे पर पसीने की छोटी-छोटी बूंदें जमा हो गईं।

"मु...मुझ पर झूठा इल्जाम लगाया जा रहा है। यह मेरे किसी विरोधी की मेरे खिलाफ सोची-समझी चाल है।"

हंसा कुंवर सिंह रावत।

AJ SCAN

“तुम हंस रहे हो?”

“हंसू नहीं तो और क्या करूं...? आप जैसे राजनीतिज्ञ जब भी फंसने को होते हैं तो अरना पैंतरा बदल कर विपक्ष पर बरसना शुरू कर देते हैं...और सारे मामले को राजनैतिक रंग में रंग देते हैं, मगर यहां आपका यह रंग नहीं चढ़ेगा। आपका ड्राइवर खुद कबूलेगा कि आर०डी०एक्स० और ए०के० सैंतालीस आप ही ने उसे जहांगीर को देने के लिये भेजी थे। जहांगीर भी कबूलेगा कि उसके आपके साथ सम्बन्ध हैं...और अदालत में वह व्यक्ति भी बयान देगा जिसने आपके खिलाफ मुखबिरी की थी। जहांगीर को पुलिस गिरफ्तार करने गई है... बाकी भैरोसिंह को अभी आपके सामने पेश किये देता हूं जो आपके मुंह पर कहेगा कि सारा सामान आप ही ने उसे दिया था।”

कहकर उसने बैल पर हाथ मारा। तुरन्त एक सब-इंस्पेक्टर भीतर प्रविष्ट हुआ।

“ड्राइवर को लेकर आओ।” कुंवर सिंह रावत ने आदेश दिया। सब-इंस्पेक्टर तुरन्त वापिस मुड़ा और बाहर निकल गया। इधर हरि सिंह गहलौत का कलेजा धाड़-धाड़ करता उसकी पसलियों से टकरा रहा था। खुद को बुरी तरह से फंसा हुआ महसूस कर रहा था वह। अब तो इज्जत बचाने का बस एक ही रास्ता बचा था...कि

वह कुंवर सिंह रावत के सामने दौलत की दीवार खड़ी कर दे जिसके पीछे कि वह खुद को छुपा सके। मगर अभी उसने इस रास्ते पर चलने का फैसला नहीं लिया था। उससे पहले वह भैरोसिंह से मिल लेना चाहता था। वह उससे जानना चाहता था कि उसके पास इतनी मोटी रकम कहां से आई थी। उसके बाद ही उसने कोई कदम उठाने का फैसला किया था। थोड़ी देर बाद सब-इंस्पेक्टर ने हथकड़ियों में जकड़े सतीश रावण के साथ ऑफिस में प्रवेश किया। जैसे ही हरि सिंह गहलौत की नजर उस पर पड़ी...वह बुरी तरह से उछल पड़ा।

rcz202016@gmail.com

"य...यह कौन है...?" वह सतीश रावण पर से निगाहें हटाये बिना कुंवर सिंह रावत की तरफ देखते हुए हैरानी से बोला।

"आपका गुलाम... आपका ड्राइवर...भैरोसिंह...।"

"यह मेरा ड्राइवर नहीं है...।"

अब चौंकने की बारी कुंवर सिंह रावत की थी।

AJ SCAN

“लेकिन यह तो कह रहा है कि यह आप ही का ड्राइवर है।”

“बकवास करता है यह...यह भैरोसिंह नहीं कोई और है।”

कुंवर सिंह रावत की खोपड़ी चकरा कर रह गई।

“अगर यह भैरोसिंह नहीं है तो कौन है...?” वह हैरानी से बोला।

“ट्रिन...ट्रिन।”

तभी फोन की घण्टी घनघनाई। कुंवर सिंह रावत ने उलझी निगाहों से सतीश रावण की तरफ देखते हुए रिसीवर उठाया।

“हैलो...।” वह माउथपीस में बोला।

“ए०एस०आई० राघवेन्द्र बोल रहा हूं सर...।” दूसरी तरफ से आवाज आई।

“एस०एस०पी० बोल रहा हूं...।”

rcz202016@gmail.com

“सर...।”

“बोलो...?”

“हनुमान गढ़ रोड के पास एक लाश मिली है सर जिसकी गर्दन आधी से ज्यादा कटी हुई है।”

“पता लगा किसकी लाश है...?”

AJ SCAN

“मन्त्री हरि सिंह गहलौत के ड्राइवर भैरोसिंह की लाश है सर।”

बुरी तरह से उछल पड़ा कुंवर सिंह रावत।

“व्हाट...?”

“यस सर...उसकी ऊपरी जेब में से उसका आई कार्ड मिला हैं..उसी से उसकी पहचान हुई है।”

“तुम कहां से बोल रहे हो...?”

“मै लाश के पास से ही एक पी०सी०ओ० से बोल रहा हूं।”

“लाश का पंचनामा भरके पोस्टमार्टम के लिये भेज दो।”

“यस, सर...!”

कुंवर सिंह रावत ने रिसीवर रखा और गहरी निगाहों से सतीश रावण को देखा। सतीश रावण ने उसके मुंह से लाश का पंचनामा भरके पोस्टमार्टम के लिये भेजने की बात सुन ली थी...सो उसे समझते देर नहीं लगी कि लाश उसी ड्राइवर की ही होगी जिसे उसने खत्म किया था।

“किस लाश का जिक्र हो रहा था ऑफिसर...?” तभी बोला हरि सिंह गहलौत। कुंवर सिंह रावत ने उसकी तरफ देखा...फिर गहरी सांस छोड़ते हुए बोला—

“आप ठीक कह रहे हैं मन्त्रीजी...यह भैरोसिंह नहीं कोई और है। भैरोसिंह तो लाश में तब्दील हो चुका है।”

AJ SCAN

“क्या?” बुरी तरह से चौंका हरि सिंह गहलौत।

“जी हां...अभी-अभी भैरोसिंह की हत्या की ही खबर मिली है। हनुमान गढ़ रोड के मोड़ पर उसकी किसी ने गर्दन काट दी है और वह इसके अलावा कौन हो सकता है?”

भैरोसिंह की मौत का फौरन फायदा उठाया हरि सिंह गहलौत ने।

“अब समझा...।” वह बोला—“कि मेरी कार में आर०डी०एक्स० कहां से आया।”

“क्या मतलब...?” चौंका कुंवर सिंह रावत।

“आर०डी०एक्स० स्टेनगनें और कैश इसी का था...इसी ने भैरोसिंह की हत्या कर सारा माल मेरी कार में रखा और रवाना हो गया। इसे पता नहीं था कि शहर

में रेड अलर्ट है...तभी तो पकड़ा गया यह।"

कुंवर सिंह रावत ने गहरी सांस छोड़ी।

"अपना पल्ला झाड़ने की आपने अच्छी चाल चली है, मन्त्रीजी।"

rcz202016@gmail.com

"क्या मतलब...क्या मतलब...?" हड़बड़ा गया हरि सिंह गहलौत।

"आपकी मुखबिरी आपकी कार के कोठी से निकलते ही हो गई थी...और अब चूंकि भैरोसिंह मर चुका है...आपने अपना गुनाह भी इसके माथे जड़ दिया है।"

हरि सिंह गहलौत पुनः हड़बड़ाया...फिर सब-इंस्पेक्टर की तरफ देखा-

"इसे वापिस हवालात में डाल दो।"

AJ SCAN

सब-इंस्पेक्टर सतीश रावण को लेकर चला गया। हरि सिंह गहलौत ने कुर्सी पर बैठे-पैठे ही पहलू बदला और बोला—

“मेरे खिलाफ मुखबिरी किसने की थी?”

“क्यों...दूसरी दुनिया में भेजने का इरादा है क्या उसे?”

“देखो एस०एस०पी०.....हकीकत यह है कि अब तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मेरे ड्राइवर का खून...और खूनी का पकड़ा जाना अदालत में यह साबित कर देगा कि अपराधी खूनी है। तुम बेशक मुखबिर को बतौर गवाह अदालत में पेश कर दो...मेरा कुछ नहीं बिगड़ने वाला।”

“बदनाम तो हो जायेंगे न आप।”

“तभी तो तुमसे बात कर रहा हूं।”

“क्या मतलब?”

“पचास लाख कमाना चाहोगे...?”

rcz202016@gmail.com

कुंवर सिंह रावत का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

“प...पचास लाख...।”फंसे स्वर में बोला वह।

“छोटी रकम नहीं होती पचास लाख। पुश्तें तर जायेंगी तुम्हारी...।”

कुंवर सिंह रावत के गले की घण्टी जोरों से उछली। पचास लाख के नाम ने ही उसकी हालत खराब कर दी थी।

AJ SCAN

“बस मुखबिर का नाम बता दो मुझे...और इस सारे मामले से मुझे बाहर कर दो।”

“यानी आप कबूल करते हैं कि आर०डी०एक्स० और स्टेनगनें आप ही की कोठी से निकली हैं।”

“बेकार की बातें मत करो, ऑफिसर...सिर्फ मतलब की बात करो।”

“कब मिलेगा पैसा...?”

“तुम बोलो...कहां पहुंचाना है...तुम्हारे वहां पहुंचने से पहले ही पचास लाख वहां पहुंच जायेगा।।”

कुंवर सिंह रावत ने कुछ देर सोचा, फिर बोला—

"भरतपुर में मेरा भाई रहता है...पचास लाख उसके पास पहुंचा दो।"

"पता बोलो...।"

rcz202016@gmail.com

कुंवर सिंह रावत ने पता बताया।

"एक घण्टे बाद अपने भाई से फोन करके बात कर लेना।"

कुंवर सिंह रावत ने मुस्कुराते हुए सिर हिला दिया।

"अब मैं जाऊं...?" मुस्कुराया हरि सिंह गहलौत-"मेरे बेटे के आने का वक्त हो गया है।"

AJ SCAN

“यानी यहां से सीधे स्टेशन जायेंगे आप...?”

“नहीं...मेरा लड़का तो अब तक घर पहुंचने वाला होगा...।”

कहते हुए उसने अपनी घड़ी पर निगाह डाली। कुंवर सिंह रावत ने सिर हिला दिया।

“आपकी कार सुबह मिल जायेगी...।” वह बोला।

“कोई बात नहीं...।”

मुस्कुराया हरि सिंह गहलौत और खड़ा हो गया।

"अब आप देखना...कैसे भौंकता है वो...असली अपराधी—कि उसने आर०डी०एक्स० कहां से लिया था।"

rcz202016@gmail.com

हरि सिंह गहलौत हौले से हंसा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया। उसके जाने के करीब पांच मिनट बाद कुंवर सिंह रावत ने बैल पर हाथ मारा। तुरन्त सब-इंस्पेक्टर ऑफिस में दाखिल हुआ। डी०एस०पी० चौधरी को बुलाओ...और एस०एच०ओ० को भी।"

कुछ ही देर में ही एस०पी० ज्ञानचन्द्र चौधरी और इंस्पेक्टर किशन सिंह शर्मा उसके सामने कुर्सियों पर बैठे थे। कुंवर सिंह रावत ने कुछ पलों तक सोचा और फिर डी०एस०पी० ज्ञानचन्द्र चौधरी की तरफ देखते हुए बोला—"सुबह एक बजे श्रीगंगा राम चौक के पास विवेक नगर के एक व्यक्ति की लाश मिली थी।"

"यस, सर...।" जवाब किशन सिंह शर्मा ने दिया-"मैं खुद गया था वहां।"

AJ SCAN

“कैसे हुआ था कत्ल...?”

“किसी तेजधार हथियार से गर्दन काट दी गई थी उसकी।”

“भैरोसिंह का कत्ल भी ऐसे ही हुआ है।”

“भैरोसिंह ...?”

“मन्त्रीजी का ड्राइवर।”

बुरी तरह से उछल पड़े दोनों।

"य...यह आप क्या कह रहे हैं, सर...?" डी०एस०पी० ज्ञानचन्द्र चौधरी बोला-"वो तो हवालात में है...और ठीक-ठाक है।"

"अभी थोड़ी देर पहले मुझे ए०एस०आई० राघवेन्द्र ने फोन पर भैरोसिंह के कत्ल की सूचना दी है।"

rcz202016@gmail.com

एक और झटका लगा दोनों को।

"अगर भैरासिंह मर गया है तो फिर हवालात में पड़ा शख्स कौन है...?"

"असली अपराधी...साथ में आतंकवादी।"

डी०एस०पी० और इंस्पेक्टर हैरानी से एक-दूसरे को देखने लगे।

AJ SCAN

“तो फिर मन्त्रीजी की कार बीच में कहां से आ गई...?और आपने कहा था कि मन्त्रीजी की कार को रोकना है...और उसकी तलाशी लेनी है” ज्ञानचन्द्र चौधरी बोला।

“मुझे इन्फॉरमैशन देने वाले को पता नहीं था कि भैरोसिंह का खून हो गया है। दरअसल मन्त्रीजी ने अपने लड़के को लेने के लिये भैरोसिंह को स्टेशन भेजा था, मगर बीच रास्ते में ही कातिल ने उसे खत्म कर दिया और कार हथिया कर सारा सामान उसमें डाला और वहां से भाग निकला।”

“और जहांगीर ...उसके बारे में आप क्या कहेंगे, सर?” इंस्पेक्टर किशन सिंह शर्मा बोला। कुंवर सिंह रावत का चेहरा कानों तक लाल हो उठा।

“शटअप...।” वह फुंफकारा। हड़बड़ा उठा किशन सिंह शर्मा।

“कातिल से पूछताछ करो...इन्टैरोगेट करो उसे और पता लगाओ कि शहर में और कहां-कहां आतंकवादी छुपे हुए हैं।”

“यस, सर...।” हड़बड़ाते हुए बोला किशन सिंह शर्मा। इतना तो वह समझ ही गया था कि मन्त्री और एस०एस०पी० में अन्दरखाने कोई सौदा हो चुका है।

“सुबह तक मुझे रिपोर्ट मिलनी चाहिये कि अपराधी ने क्या कबूल किया है?”

rcz202016@gmail.com

गुर्राया कुंवर सिंह रावत।

“और उसके पास से जो कैश का बैग मिला है...उसे तुम आपस में बांट लेना जिक्र करने की जरूरत नहीं...।”

दोनों के चेहरे खिल उठे। आंखों में लालच से भरी चमक जाग उठी।

¶¶

AJ SCAN

कोतवाली के टॉर्चल सैल में सतीश रावण पैरों के भार पर बैठा हुआ था। उसकी कलाई में बंधी हथकड़ी का दूसरा सिरा दीवार में फिट कुण्डे में फंसा हुआ था। टॉर्चर सैल में पहुंचते ही सतीश रावण समझ गया कि अब उसकी खुलकर ठुकाई होगी और ऐसी ठुकाई होगी कि उसे कई दिनों दवाई कराने की जरूरत होगी।उसके सामने एक खाली कुर्सी पड़ी थी तथा दो सिपाही उसके पीछे खड़े थे। तभी डी०एस०पी० ज्ञानचन्द्र चौधरी इंस्पेक्टर किशन सिंह शर्मा के साथ भीतर दाखिल हुआ। ज्ञानचन्द्र चौधरी खाली पड़ी कुर्सी पर बैठ गया, जबकि किशन सिंह शर्मा एक तरफ खड़ा हो गया।

"क्या नाम है तेरा...?" ज्ञानचन्द्र चौधरी गुर्राया। सतीश रावण चुप रहा। बोला कुछ नहीं वह।

"सुबह विवेक का खून तूने ही किया था?"

सतीश रावण ने होंठ सख्ती से भींच लिये।

“आर०डी०एक्स० कहां से आया तेरे पास...स्टेनगनें कहां से लीं?”

सतीश रावण इस सवाल से ही समझ गया कि उस मन्त्री का गुनाह उसके सिर मढा जा रहा है। यानी अब उसकी हालत बद से भी बदतर होगी। आतंकवादी बनाया जा रहा था उसे।यूं भी वह कौन-सा आतंकवादी से कम था, बल्कि वह तो उससे भी पचास कदम आगे था।

rcz202016@gmail.com

“तू ऐसे जुबान नहीं खोलेगा।” गुर्राया ज्ञानचन्द्र चौधरी- “शुरू हो जाओ। मैं भी देखता हूं कब तक चुप रहता है यह?”

हुक्म मिलते ही सतीश रावण के पीछ खड़े दोनों सिपाही उस पर टूट पड़े। लातों-घूंसों की बरसात होने लगी उस पर। जब तक बर्दाश्त कर सकता था...सतीश रावण बर्दाश्त करता रहा और जब पीड़ा बर्दाश्त से बाहर हो गई तो उसके होठों से चीखें उबलने लगीं। मगर सिपाहियों के हाथ-पैर नहीं रुके।बदस्तूर चलते रहे। आखिर कब तक सहता सतीश रावण। पीड़ा जब हद पार कर गई तो वह बेहोश हो गया।

AJ SCAN

“होश में लाओ इसे और फिर से शुरू हो जाओ...।” ज्ञानचन्द्र चौधरी ने हुक्म सुनाया। सतीश रावण को होश में लाने की कोशिशें शुरू हो गईं।

¶¶

“बैठे-बिठाये पचास लाख का चूना लग गया।”

हरि सिंह गहलौत बुरा मुंह बनाते हुए बोला। थाने से निकलकर वह सीधा रहमान खान के मकान की तरफ गया था। रहमान खान का मकान संतोष कॉलोनी में था। संतोष कॉलोनी बस अड्डे के ऐन पीछे बनी हुई थी। जिस वक्त वह थाने से बाहर निकला था... उसने अपने बॉडीगार्डों को वापिस भेज दिया ता, ताकि उन्हें सन्देह न हो कि वह पाकिस्तान का एजेन्ट हैं। रहमान खान के सामने बैठकर उसने उसे सारी बात बताई...फिर पचास लाख का अफसोस जाहिर किया।

“पचास लाख की तो कोई बात नहीं नेताजी...वो हमसे मिल जायेंगे आपको...। सवाल तो इस बात का है कि भैरोसिंह कार से निकला क्यों...?”

“क्या मतलब...?”

“आपने खुद ही कहा था कि आपने भैरोसिंह को हुक्म दिया था कि रास्ते में कहीं भी नहीं रुकना...सीधा जहांगीर के घर के सामने जाकर गाड़ी रोकनी है।”

rcz202016@gmail.com

“हां...कहा था।”

“फिर वह रुका क्यों...? सड़क से नीचे उसकी गर्दन कटी लाश मिली थी। जाहिर था कि वह गाड़ी रोककर बाहर निकला था।”

“तुम कहना क्या चाहते हो...?”

“कहीं ऐसा तो नहीं कि भैरोसिंह उससे मिला हुआ हो। एक मोटी रकम कैश की भी मिली है पुलिस को। ऐसे में तो यही लगता है कि भैरोसिंह आपकी कोठी से

AJ SCAN

गोला-बारूद या कुछ और चुराकर उसे बेचा करता था...यह भी हो सकता है कि वह आपके भेद भी उसे बेचता हो।"

"तो फिर उसने भैरोसिंह का कत्ल क्यों किया...?"

"हो सकता है कि किसी बात पर उनमें आपस में बिगड़ गई हो... और उसने भैरोसिंह का कत्ल कर दिया...बाकी हकीकत का पता तो उसी को ही है।"

"ओह!"

"अगर मेरी सोच सही है तो वह हरामी हमारे लिये खतरनाक हो सकता है। भैरोसिंह की मार्फत वह हम सबको जानता हो सकता है और अगर उसने पुलिस के सामने मुंह खोल दिया तो आपका सी०एम० बनने का ख्वाब मिट्टी में मिल जायेगा...और हमारी प्लानिंग भी बुरी तरह पिट जायेगी।"

“त...तुम बहुत खतरनाक बात कर रहे हो।”

हड़बड़ाते हुए बोला हरि सिंह गहलौत।

“खतरनाक तो होगी ही।”

rcz202016@gmail.com

“फिर क्या किया जाये...?”

“क्या उसे हवालात से निकाला जा सकता है?”

“हरगिज नहीं।”

“क्यों...?”

AJ SCAN

“पचास के लगभग सिपाहियों को उसकी गिरफ्तारी और उस के पास से बरामद हुए सामान का पता है। कोई भी किसी अखबार नवीस के आगे मुंह फांड़ सकता है और अगर यह खबर छप गई तो पूरे थाने तो जवाब देना पड़ेगा कि वह हवालात से छूटा कैसे...?”

“ओह...!” रहमान खान के मुंह से निकला...फिर वह बोला- “यह तो पता चल सकता है कि उसने कुछ बताया है या नहीं...?”

“अभी उससे पूछताछ शुरू ही कहां की होगी। अभी तो एस०एस०पी० पचास लाख का जश्न मना रहा होगा और बाकी अफसर उसके पास से बरामद हुए कैश को आपस में बांट रहे होंगे।”

“तो फिर सुबह फोन करना थाने में ...और पूछना कि उसने कुछ बताया है या नहीं...अगर बताया है तो क्या बताया है?”

“और अगर जवाब न में मिला तो...?”

“तो फिर उसे हवालात से निकालकर हम पूछताछ करेंगे उससे।”

“फिर वही बात...मैंने कहा न कि ...।”

rcz202016@gmail.com

“बाहर निकालने के और भी तो रास्ते हैं, नेताजी!” कहते हुए भेदभरी मुस्कान फैल गई रहमान खान के होठों पर।

“क्या मतलब...?” चौंका हरि सिंह गहलौत। और जब रहमान खान ने उसे मतलब समझाया तो हरि सिंह गहलौत की आंखें फट पड़ीं। चेहरे पर एक साथ कई रंग आकर लौट गये।

“क्या हुआ...? रास्ता अच्छा नहीं लगा क्या...?”

AJ SCAN

हौले से हंसते हुए बोला रहमान खान।

“न ...नहीं...रास्ता तो ए-वन है।”

“फिर हड़बड़ाये क्यों...?”

“यह सोचकर कि तुम्हारे शैतानी दिमाग में हर समस्या का हल कैसे आ जाता है?”

रहमान खान हंसा, फिर बोला-

“अब आप अपने घर जायेंगे। वहां जाकर क्या करेंगे...?”

"सबसे पहले तो उस हरामजादे शम्भूनाथ को गोली मारुंगा। हरामी ने पचास लाख का नुकसान तो कराया ही...ऊपर से कुंवर सिंह रावत को मेरी हकीकत का पता चल गया।"

"उसे खत्म करने की जरूरत नहीं।"

rcz202016@gmail.com

"क्यों...?"

"उसका काम तमाम हम कर देंगे। आपने उसे बताना भी नहीं कि आपको उसकी हकीकत का पता चल गया है...।"

"वो तो नहीं बताऊंगा...मगर तुम उसका काम कैसे तमाम करोगे?"

प्रत्युत्तर में रहमान खान ने उसे बताया तो हरि सिंह गहलौत के होठों पर मुस्कान नाच उठी।

AJ SCAN

¶¶

खतरनाक आतंकवादी गिरफ्तार। पांच किलो आर०डी०एक्स० और दो ए०के० सैंतालीस बरामद...असलाह ले जाने के लिये मन्त्री की कार का इस्तेमान किया। पुलिस की सतर्कता से रात ग्यारह बजे एक खूंखार आतंकवादी पकड़ा गया। वरिष्ठ पुलिस अधिक्षक के पास एक गुप्त सूचना पहुंची कि एक खूंकार आतंकवीदी आर०डी०एक्स० और स्टेनगनें लेकर शहर में प्रविष्ट हुआ है। इस पर वरिष्ट पुलिस अधिक्षक श्री कुंवर सिंह रावत ने पुलिस फोर्स हिदायत दी थी कि कोई भी वाहन चाहे वह किसी का भी हो बिना तलाशी के नहीं निकला चाहिये। उधर आतंकवादी भी चालाक था...उसने शहर में प्रवेश करने के लिये मन्त्री हरि सिंह गहलौत की कार का प्रयोग किया। उसने मन्त्रीजी के ड्रिवर भैरोसिंह का कत्ल करके उसकी लाश को वहीं फेंका और सारा सामान कार में डाल लिया। भैरोसिंह मन्त्रीजी के लड़के को लेने स्टेशन जा रहा था, जब वह आतंकवादी मौत बनकर उस पर टूट पड़ा था। मगर पुलिस ने मन्त्रीजी की गाड़ी को भी तलाशी के लिये रोक लिया और तलाशी में पांच किलो आर०डी०एक्स० तथा दो स्टेनगनें पुलिस के हाथ लगीं। पूछताछ के दौरान पुलिस को आतंकवादियों के कई ठिकानों का पता चलने की उम्मीद है। ज्ञात रहे कि आतंकवादियों के गांगानगर में प्रवेश तथा गोला-बारूद के शहर में आने के कारण शहर में रेड अलर्ट जारी किया हुआ है। हरि सिंह गहलौत ने अखबार पर से निगाहें हटाईं और रिसीवर उठाकर कुंवर सिंह रावत का नम्बर मिलाने लगा। कुछ ही देर में वह उससे बात कर रहा था।

“पेपर में न्यूज कैसे छप गई, अफसर...?” वह बोला।

“मैंने नहीं बताया किसी रिपोर्टर को।” आवाज आई- “अवश्य ही किसी सिपाही ने अपने पत्रकार मित्र को खबर दी है और इतने सिपाहियों से पूछताछ नहीं की जा सकती।”

rcz202016@gmail.com

“मगर...।”

“खबर आपके लिये घबराने की नहीं है, मन्त्रीजी...बल्कि आपको तो इस खबर ने बेगुनाह साबित किया है।”

“मगर विरोधियों के तो मुंह बन्द नहीं किये जा सकते...वे कोई भी झूठी कहानी बनाकर मेरी मिट्टी खराब कर सकते हैं।”

AJ SCAN

“उनका इलाज मैं नहीं कर सकता...वो तो आपको ही करना पड़ेगा।”

“उस हरामी ने कुछ बताया...?”

पहलू बदलते हुए पूछा हरि सिंह गहलौत ने।

“बड़ा पहुंचा हुआ है वो। सुबह तीन बजे तक सिकाई होती रही उसकी...मगर सिवाय चीखों के उसके मुंह से कुछ भी नहीं निकाल...।”

“ओह!”

“उसके पास से बेकरी में काम आने वाली एक आरी भी बरामद हुई है जो कि उसने अपनी पीठ पर लगा रखी थी। निश्चय ही विवेक और भैरोसिंह के कत्ल उसने उसी आरी से ही किये थे।”

“ओह!”

“दो-तीन घण्टे बाद फिर से उसे ठोका जायेगा...हो सकता है, तब वह कुछ बता दे।”

“फोन किया था भरतपुर...?”

“हां...आपका इनाम पहुंच गया है।”

“ठीक है...।” कहा हरि सिंह गहलौत ने और रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया। दो मिनट तक उसने सोचा...फिर रहमान का नम्बर मिलाने लगा।

“हैलो...।” दूसरी तरफ से रहमान खान की आवाज उभरी।

AJ SCAN

“उसने अभी कुछ नहीं बताया।” हरि सिंह गहलौत बोला-“दो घण्टे बाद फिर से उससे पूछताछ शुरू हो जायेगी।”

“कोई बात नहीं...दो-तीन घण्टे बहुत हैं हमारे लिये। और कुछ...?”

“अखबार पढ़ा...?”

“हां...खबर छपी है।”

“किसी सिपाही ने दी है खबर ...अगर पूछताछ में उसने कुछ कबूला...और यह बात उसी सिपाही के कान में पड़ गई तो...।”

“मैंने कहा न दो-तीन घण्टों में सब कुछ हो जायेगा।”

"ठीक है...शम्भूनाथ को कब भेजूं...?"

"पहले यह काम निपटा लें...फिर उससे भी निपट लेंगे।"

"ठीक है...।?"

rcz202016@gmail.com

"बस इतना ही कहना था।"

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया. हरि सिंह गहलौत ने रिसीवर रखा और गहरी सोचों में डूब गया।

¶¶

"ट्रिन...ट्रिन...।"

AJ SCAN

फोन की घण्टी घनघना उठी। गंगानगर के करीबी शहर हनुमान गढ़ के विधायक माता प्रसाद चौरसिया ने चीख रहे फोन की तरफ देखा और अपने नौकर को आवाज लगाई।

“रामू...!”

तुरन्त एक नौकर कमरे में प्रविष्ट हुआ।

“किसका फोन है...कोई ऐरा-गैरा हो तो कह देना कि मैं घर में नहीं हूं...।”

रामू ने रिसीवर उठाकर कान से लगाया और माउथपीस में बोला-

“हैलो...!”

"हमें एम०एल०ए० साहब से बात करनी है।" दूसरी तरफ से शिष्टता से भरी आवाज आई।

"आप...?"

rcz202016@gmail.com

"मेरा नाम रहमान-उल-हक है।"

"मगर साहब तो घर में नहीं हैं...एक जरूरी मीटिंग में वे बाहर गये हुए हैं। मैं उनका नौकर बोल रहा हूं...आप जो भी मैसेज देना चाहें मुझे दे दीजिये...।"

"हमारा उन्हीं बात करना बेहद जरूरी है...। दरअसल, हमने हनुमान गढ़ की सीमा पर मन्दिर और मस्जिद एक ही परिसर में बनाये हैं। उनका उद्घाटन आज ग्यारह बजे होना तय हुआ था...पहले तो हमने खुद ही उद्घाटन करने का फैसला किया था...मगर कल रात मीटिंग में हमने फैसला किया कि साम्प्रदायिक सद्भाव को कायम

AJ SCAN

रखने के लिये एक हिन्दू और मुस्लिम नेता को बुलाकर दोनों से संयुक्त उद्धाटन कराया जाये...।”

“लीजिये...एम०एल०ए० साहब आ गये...आपका फोन है साहब...!”

कहते हुए नौकर ने रिसीवर माता प्रसाद की तरफ बढ़ाया...साथ ही माउथपीस पर हाथ रखकर बोला-

“उद्धाटन है। वो भी मन्दिर और मस्जिद का।”

माता प्रसाद ने तुरन्त रिसीवर पकड़ा और बोला-

“हैलो...!”

"मेरा नाम रहमान-उल-हक है साहब...। हम हिन्दू-मुस्लिम भाइयों ने मिलकर एक ही परिसर में मन्दिर और मस्जिद का निर्माण किया है...।"

दूसरी तरफ से सारी बात दोहराई गई, फिर आगे कहा गया—

"अगर आप उद्घाटन में शिरकत करेंगे को हमारे मुल्क में हिन्दू-मूस्लिम भाईचारे की जड़ों को और भी ज्यादा मजबूती मिलेगी।"

"दूसरा एम०एल०ए० कौन आरहा है।?" पूछा माता प्रसाद ने।

"जनाब अताउल्ला खान...भरतपुर से आ रहे हैं वो...वे बस पहुंचने ही वाले होंगे वे। उनके हाथों मन्दिर का उद्घङाटन होगा...और आपके हाथों मस्जिद का। आप आयेंगे न?"

AJ SCAN

नेता की सबसे बड़ी कमजोरी ही उद्घाटन होती है। एक बार इन्हें निमन्त्रित कर लो...फिर चाहे मौके पर इन्हें धक्के मार लो...यह उद्घाटन किये बिना जायेंगे नहीं...।

"हिन्दू-मुस्लिम एकता को बढ़ाने के लिये मैं अपने सहयोग से कैसे इन्कार कर सकत हूं...।"

"शुक्रिया...हम अभी आपके पास गाड़ी रवाना कर देते हैं।"

"उसकी कोई जरूरत नहीं...मैं खुद वहां पहुंच जाऊंगा...तुम बस पता और वक्त बता दो।"

"गीता कॉलोनी के खत्म होते ही आपको सड़क के दोनों तरफ खड़े लोग आपका स्वागत करते मिलेंगे...उद्घाटन का वक्त ठीक ग्यारह बजे मुकर्रर हुआ है।"

माता प्रसाद ने अपनी कलाई घड़ी में वक्त देखा। साढ़े नौ बज रहे थे।

“ठीक है...मैं पहुंच जाऊंगा।” वह बोला।

“खुदा आपको और ऊंचा औहदा तजवीज करे...आमीन...हम आपका इन्तजार कर रहे हैं जनाब।”

और सम्बन्ध विच्छेद हो गया। माता प्रसाद ने रिसीवर रखा और खड़ा हो गया। इस वक्त उसका दिल बल्लियों उछल रहा था। उद्घाटन करने जा रहा था वह। उसकी कोठी से गीता कॉलोनी तक का रास्ता पौन घण्टे का था...बाकी के पौन घण्टे में उसने तैयारी करनी थी। तुरन्त वह बाथरूम में गया और नहीं धोकर तैयार होकर बाहर निकला और अपने लिये नाश्ता मंगवाया। नाश्ता खत्म होने तक दस बजकर बीस मिनट हो चुके थे। उसने रामू की तरफ देखा और बोला-

“जुगल कहां है...?”

AJ SCAN

ठीक तभी एक दुबला-बतला-सा व्यक्ति भीतर दाखिल हुआ।

“बन्दा हाजिर है जनाब...।” वह बोला। माता प्रसाद ने उसे उद्घाटन के बारे में बताया...फिर बोला-

“हमारे वहां पहुंचने से पहले पचास-साठ आदमी लेकर वहां पहुंच जाओ।”

“मैं समझ गया जनाब...आप पहुंचिये...आपके वहां पहुंचते ही आपके जयकारों से आसमान गूंज उठेगा।”

“उसके नारे लगेंगे तो जरूर...मगर हमारे नारों में दब जायेंगे।”

“साथ में दो-तीन रिपोर्टर और फोटोग्राफर भी ले जाना।”

जुगल ने सिर हिला दिया। माता प्रसाद ने दस हजार की एक गड्डी निकालकर उसकी तरफ बढ़ा दी। जिसे जुगल ने इस तरह पकड़ा मानो डर हो कि कहीं माता प्रसाद अपनी इरादा न बदल ले।

¶¶

rcz202016@gmail.com

माता प्रसाद की मारुति एस्टीम हनुमान गढ़ की सीमा की तरफ बढ़ रही थी पिछली सीट पर बैठा था वह, जबकि अगली सीट पर ड्राइवर के साथ उसका बॉडीगार्ड बैठा था। गंगानगर रोड पर उड़ती हुई एस्टीम अभी गीता कॉलोनी से डेढ़-दो किलोमीटर दूर ही थी कि ड्राइवर को एक्सीलेटर से पैर हटाकर ब्रेक पर ले जाना पड़ा। सामने सड़क के बीचो-बीच एक ट्रक इस तरह आड़ा-तिरछा होकर खड़ा था कि कार को कच्चे पर उतारकर ही क्रॉस किरया जा सकता था। कार ट्रक के करीब पहुंची और बिल्कुल धीमा गति से चलती हुई जैसे ही ट्रक के करीब से गुजरने की कोशिश की...ठीक तभी...।

"धायं...।"

AJ SCAN

तभी दूसरा फायर हुआ और ड्राइवर को सीने में सुराख हो गया एस्टीम ने दो-तीन झटके खाये और रुक गई। माता प्रसाद को काटो तो खून नहीं। उसकी आंखों के सामने उसके बॉडीगार्ड की हत्या हो गई...ऐसे में एक आदमी पर जो गुजरती है...वही माता प्रसाद पर गुजर रही थी। अभी वह इस शॉक से उभर भी नहीं पाया था कि तभी पीछे का दरवाजा खुला और एक रिवाल्वर ने उसकी तरफ झंका। साथ ही एक गुर्राहट उसके कानों में पड़ी।

"बाहर निकल...।"

बुरी तरह से कांपते हुए माता प्रसाद ने रिवॉल्वरवरधारी की तरफ देखा। रुमाल से मुंह ढक रखा ता उसने।बुरी तरह से थूक सटकते हुए वह बाहर निकला तो खुद को पांच आदमियों से घिरा पाया। सभी ने अपने मुंह छुपा रखे थे। उनके पीछे एक टाटा सुमो खड़ी थी।

"उसमें बैठ जा।"

रिवाल्वर वाले ने सुमो की तरफ इशारा किया।

“क...कौन हो तुम...?”

थर्राये स्वर में बोला माता प्रसाद।

rcz202016@gmail.com

“तू बैठ...फिर तुझे यह भी बता देंगे कि हम कौन हैं।”

बुरी तरह से सहमा हुआ माता प्रसाद टाटा सुमो में जाक बैठ गया। पीछे-पीछे अन्य सभी भी बैठ गये।

“क...कौन हो तुम...?” उसने अपना प्रश्न दोहराया।

“रहमान-उल-हक...।”

AJ SCAN

बुरी तरह से चौंक उठा माता प्रसाद। इसी नाम के आदमी ने तो फोन किया था उसे...मन्दिर-मस्जिद के उद्घाटन का न्यौता दिया था। बस यहां तक सोच पाया वह। उससे आगे सोचने का मौका नहीं मिला उसे...क्योंकि उसके पीछे बैठे व्यक्ति ने रिवाल्वर का दस्ता उसकी खोपड़ी के पृष्ठ भाग पर दे मारा था। माता प्रसाद वहीं सीट पर लुढ़क गया।

"सीट के नीचे डाल दो इसे...।" उनका नेता मुंह से रूमाल हटाते हुए बोला। रूमाल के हटते ही पीछे से रहमान-उल-हक कुन का चेहरा नजर आने लगा। दूसरों ने भी अपने चेहरे नंगे कर दिये. दो ने माता प्रसाद को गाड़ी की फर्श पर गिराया...फिर सीट के नीचे धकेल दिया। टाटा सुमो तेजी से गंगानगर की तरफ बढ़ रही थी।

¶¶

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घण्टी घनघनाई। रामू ने कमरे में प्रवेश किया और फोन के करीब आकर रिसीवर उठाया। "हैलो...!"

“रहमान-उल-हक बोल रहा हूं।” दूसरी तरफ से आवाज आई।

“साहब तो एक घण्टे से ऊपर हो गया है...अब तक पहुंच गये होंगे...।” रामू बोला।

rcz202016@gmail.com

“हमने उन्हें बीच रास्ते से ही उठा लिया था।”

बुरी तरह से चौंका रामू—“क्या कहा...?”

“तुम्हारा साहब हमारे कब्जे में है। किसी मन्दिर-मस्जिद का कोई निर्माण नहीं हुआ। तेरे साहब को उसकी कोठी से बाहर निकालने की यह एक चाल थी हमारी।”

AJ SCAN

उसी के साथ दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया। उसने रिसीवर रखा और कुछ सोचकर जैसे ही पुनः रिसीवर उठाने को हुआ—

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन पुनः बज उठा। रिसीवर उठाकर कान से लगाया रामू ने।

"हैलो...!" वह बोला।

"जुगल बोल रहा हूं...।" आवाज आई—"मुझे अभी-अभी पता चला है कि यहां कहीं भी एक ही परिसर में मन्दिर-मस्जिद का निर्माण नहीं हुआ है...।"

"मुझे पता है।"

“पता है...?”

“दुश्मन चाल चल गया है। साहब का किडनैप कर लिया है उसने। अभी-अभी फोन आया है उसका।”

rcz2020018@gmail.com

“क्या...?”

“हां...तुम फौरन थाने फोन कर दो...मैं भी बड़े अफसरों को फोन कर देता हूं।”

¶¶

जुगल माता प्रसाद का प्रचारक था। सो जैसे ही उसे माता प्रसाद के किडनैप होने की खबर लगी...उसने पहले रिपोर्टरों को यह खबर बताई...फिर थाने फोन कर दिया। आधे घण्टे में ही पूरे हनुमान गढ़ में माता प्रसाद के अपहरण की कवर फैल

AJ SCAN

गई। तहसील हनुमान गढ़ जिला गंगानगर में आता था। सो यह खबर रामू ने फोन द्वारा एस०एस०पी० को कर दी। और एस०एस०पी० कुंवर सिंह रावत ने यह खबर आगे बढ़ा दी। कुल एक घण्टा लगा कि यह खबर टी०वी० न्यूज पर आ गई...और इस प्रकार माता प्रसाद के अपहरण का पता पूरे राज्य को ही नहीं, पूरे देश को चल गया। माता प्रसाद सत्तारूढ़ पार्टी का आदमी था। ऐसे में सरकार को उसकी चिन्ता को होनी ही थी। सो पूरी मशीनी अपहरणकर्त्ताओं के मैसेज का इन्तजार कर रही थी। एस०एस०पी० कुंवर सिंह रावत को भी सरकार की तरफ से आदेश मिल गया थी कि अगर अपहरचणकर्त्ताओं की तरफ से कोई उससे बात करता है तो फौरन गृहमन्त्री को सूचित किया जाये। आदेश मिलने के बीस मिनट बाद ही कुंवर सिंह रावत के फोन की घण्टी बज उठी। उसने रिसीवर उठाया।

"यस...!" वह बोला।

"सर...कोई रहमान-उल-हक आपसे बात करना चाहता है।"

ऑपरेटर की आवाज आई।

“लाइन दो।” तुरन्त बोला कुंवर सिंह राबत।

'क्लिक' की हल्की-सी आवाज हुई और कुंवर सिंह रावत के कान में एक नई आवाज पड़ी।

“सलाम वालेकुम एस०एस०पी० साहेब...!”

“वलेकुम सलाम...।” कुंवर सिंह रावत बोला—“कहिये?”

“आपके एम०एल०ए० साहेब हमारे कब्जे में हैं।”

बुरी तरह से चौंका कुंवर सिंह रावत...और फिर एकदम सीधा होकर बैठ गया।

AJ SCAN

“कौन बोल रहे हो तुम...?”

“रहमान-उल-हक...।”

“नाम तो बता दिया...यह तो बताओ कि तुम हो कौन...?”

“ज्यादा गहरा मत जाओ...मतलब की बात पूछो मियां कि हम चाहते क्या हैं...?”

“क्या चाहते हो...?”

“कोई लम्बी-चौड़ी डिमाण्ड नहीं हमारी। बस हमें हमारे साथी को दे दो। हम तुम्हारे एम०एल०ए० को दे देंगे।”

“किस साथी की बात कर रहे तो तुम...?”

“इमाम बख्श...। वहीं जिसे तुमने रात को आर०डी०एक्स० और ए०के० सैंतालीस के सात मन्त्री की कार में पकड़ा था।”

rcz2020 1@gmail.com
एक तेज झटका लगा कुंवर सिंह रावत को।

“अपनी सरकार को हमारी डिमाण्ड पहुंचा दो कि एक घण्टे में हमें इमाम बख्श चाहिये...वरना माता प्रसाद को हलाल करके हनुमान गढ़ के किसी चौराहे पर फेंक दिया जायेगा।”

बात खत्म होते ही दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया। कुंवर सिंह रावत ने तुरन्त पलंजर दबाया और गृहमन्त्री का नम्बर मिनाने लगा। यह सनसनीखेज पैगाम उस तक फौरन पहुंचाना बेहद जरूरी था।

AJ SCAN

“हैलो...।” थोड़ी देर बाद दूसरी तरफ से आवाज आई—“रिजीडेंस ऑफ होम मिनिस्टर...।”

“मैं गंगानगर से एस०एस०पी० कुंवर सिंह रावत बोल रहा हूं...।”

“कहिये...?”

“अभी-अभी एम०एल०ए० साहब के अपहरणकत्ताओं का फोन आया है मुझे...।”

“ओह! कोई डिमाण्ड रखी है उन्होंने...?”

“जी हां...।”

"क्या...?"

"इमाम बख्श की रिहाई...।"

"इमाम बख्श कौन...?"

rcz202016@gmail.com

प्रत्युत्तर में कुंवर सिंमह रावत ने सतीश रावण को पकड़ने का सारी बात बता दी।

"ओह! तो उसका नाम इमाम बख्श है...?"

"जी हां...एक घण्टे में उन्होंने उसकी रिहाई की मांग की है।"

AJ SCAN

"ठीक है...आप हमारे फोन का इन्तजार कीजिये...आधे घण्टे में हम आपको जवाब दे देंगे।"

"जी!"

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया। कुवर सिंह रावत रिसीवर रखकर सतीश रावण के बारे में सोचने लगा। वह तो उसे एक मामूली हत्यारा समझ रहा था...मगर वह तो बहुत बड़ा आतंकवादी निकला... तभी तो उसकी रिहाई के लिये उसके साथियों ने इतनी जल्दी एक्शन लिया। उसके साथ ही उसकी सोच हरि सिंह गहलौत की तरफ मुड़ गई। अगर इमाम बख्श आतंकवादी है तो उसने हरि सिंह गहलौत के ड्राइवर भैरोसिंह की हत्या क्यों की...? हरि सिंह गहलौत ने उसे पचास लाख देकर साबित कर दिया है कि वह भी आतंकवादियों का एक सदस्य है। तो फिर इमाम बख्श ने अपने ही साथी के ड्राइवर की हत्या क्यों की...?

उलझ कर रह गया वह। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था उसे। तभी सहसा ही एक नई सोच उसके जेहन में उभरी।

“कहीं गंगानगर में दो गुट तो सक्रिय नहीं हो रहे ...?” वह स्वयं से बड़बड़ाया।

“इमाम बख्श हो सकता है, दूसरे गुट का नेता हो और उसने हरि सिंह गहलौत वाले गुट के भैरोसिंह को मारकर उससे आर०डी०एक्स० वगैरह छीन लिये हों...।”

rcz202016@gmail.com

“हां...ऐसा ही सकता है...बल्कि ऐसा ही हुआ होगा।”

अभी वह इन्हीं सोचों में डूबा ही हुआ था कि फोन की घण्टी घनघना उठी।

“ट्रिन...ट्रिन...।”

कुंवर सिंह रावत सोचों से निकला और रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

AJ SCAN

“यस...!”

“सर...गृहमन्त्रीजी का फोन आया है।” ऑपरेटर की आवाज आई।

“लाइन दो।”

शीघ्र ही दूसरी तरफ से आवाज आई—“हैलो!”

“यस सर ....!” तुरन्त बोला कुंवर सिंह रावत।

“किस इल्जाम में पकड़ा था इमाम बख्श को...?” आवाज आई। कुंवर सिंह रावत ने बताया।

“एफ०आई०आर० दर्ज कर दी उसके खिलाफ...?”

“ नो सर...अभी नहीं की...।”

“उसकी जगह किसी दूसरे हत्यारे को पकड़ लिया जाये और इमाम बख्श को वो लोग जहां कहें पहुंचा दिया जाये।”

rcz202016@gmail.com

“यस सर...!”

“और माता प्रसाद जी को भी समझा देना कि वे आतंकवादियों की मेहरबानी से नहीं, बल्कि अपनी चालाकी से उनकी कैद से भागे हैं...।”

“मैं समझ गया सर।”

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया। कुंवर सिंह रावत ने एक अन्य नम्बर डायल किया।

AJ SCAN

“यस सर...।” तुरन्त उसके कान में ऑपरेटर की आवाज आई।

“मैं कोतवाली जा रहा हूं...अगर रहमान उलहक का फोन आये तो उससे कहना कि कोतवाली फोन कर ले...।”

“यस सर...।”

कुंवर सिंह रावत ने रिसीवर रखा और खड़ा हो गया।

¶¶

कोतवाली के टॉर्चर सैल में सतीश रावण फर्श पर पड़ा गहरी सांसे छोड़ रहा था। उसके बदन पर कपड़े का एक रेशा भी नहीं था। दोनों पैरों में बेड़ियां और हथकड़ियां बंधी हुई थीं उसके, जिनके सिरे दीवारों में लगे कुण्डों में फिट हो रहे थे।

जोड़-जोड़ दुख रहा था उसके बदन का। रात को सिपाहियों ने बड़ी बेरहमी से उसे टॉर्चर किया था...मगर उसने अभी तक जुबान नहीं खोली थी। वह जानता था कि अगर उसने पुलिस को अपना नाम भी बता दिया तो फिर शायद ही वह कभी बाहर की दुनिया देख पाये या फिर यह भी हो सकता था कि वह अपाहिज हो जाये। मौत का उसे डर नहीं था। वह जानता था कि उसे कैसी मौत मिलेगी। आखिर शैतान आत्मा था वह जिसे धर्मराज ने भेड़िया नाम दिया था। उसकी मौत कैसे होगी...यह वह चित्रगुप्त जी के मुंह से सुन चुका था और यहां थाने में उसके लिये ऐसी मौत नहीं थी। मगर लूला-लंगड़ा तो हो सकता था वह...अन्धा हो सकता था। और ऐसी जिन्दगी उसे मौत से भी बद्तर नजर आती। इसी वजह से उसने अभी तक अपने होठों को सी रखा था। सुबह तीन बजे तक उसकी खूब सिकाई हुई थी...फिर सुबह आने को कह, डी०एस०पी० वहां से चला गया था। और अब फर्श पर पड़ा वह उनके आने की प्रतीक्षा कर रहा था...साथ ही मार सहने के लिये खुद को दिमागी तौर पर मजबूत कर रहा था। तभी कुंवर सिंह रावत ने टॉर्चर सैल में प्रवेश किया। पीछे-पीछे डी०एस०पी० ज्ञानचन्द्र चौधरी था इंस्पेक्टर किशन लाल शर्मा थे।

rcz202016@gmail.com

"कैसे हो मियां इमाम बख्श...?" तभी कुंवर सिंह रावत मुस्कुराया। बुरी तरह से चौंका सतीश रावण। इमाम बख्श के नाम से एस०एस०पी० ने उसे ही सम्बोधित किया था, जबकि वह तो सतीश रावण था। अवश्य ही उसकी जुबान खुलवाने के लिये नया पैंतरा बरत रही है पुलिस। उसने मन-ही-मन सोचा और सावधान हो गया। तभी एक सिपाही ने एक कुर्सी लाकर उसके करीब रखी। फिर दो अन्य सिपाही आये...उन्होंने भी कुर्सियां उठा रखी थीं।

AJ SCAN

“खोलो इसे...।” कुंवर सिंह रावत बोला...साथ ही कुर्सी पर बैठ गया। दूसरी कुर्सी पर डी०एस०पी० बैठ गया। सिपाहियां ने जल्दी-जल्दी सतीश रावण को हथकड़ियों से आजाद किया।

“कपड़े दो इसके...।”

कुछ ही पलों में सतीश रावण के कपड़े खाली पड़ी कुर्सी पर पड़े थे। सतीश रावण ने सबके सामने ही कपड़े पहने और कुंवर सिंह रावत की तरफ देखा।

“बैठो।”

सतीश रावण कुर्सी पर बैठ गया।

“तुम तो बहुत पहुंचे हुए गुरु निकले...किस आतंकवादी संगठन से ताल्लुक रखते हो तुम...?”

सतीश रावण मन-ही-मन चौंका।

rcz2021@gmail.com

“ओह...तो मुझे आतंकवादी बनाया जा रहा है। अब समझा...खुद को जनता में मसीहा बनाने के लिये चाल चली जा रही है।”

“लगता है, कुछ भी न कहने की कसम खा रखी है तुमने...।”

उसे चुप देख बोला कुंवर सिंह रावत। सतीश रावण् फिर भी कुछ नहीं बोला।

“मगर हमें तुम्हारे बारे में पता चल गया है। तुम्हारा नाम इमाम बख्श है और तुम आतंकवादी हो...वो भी बेहद खूंखार आतंकवादी...।”

AJ SCAN

सतीश रावण ने उसकी बात का विरोध नहीं किया...बल्कि वह तो खुद को आने वाले वक्त के लिये तैयार कर रहा था।

“तभी तो तुम्हें आजाद कराने के लिये तुम्हारे साथियों ने इतनी जल्दी एक्शन लिया है। एम०एल०ए० साहब का अपहरण कर लिया है और फिरौती के रूप में तुम्हें आजाद करने की मांग रखी है।”

यह एक नया झटका था सतीश रावण के लिये। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि हो क्या रहा है? कौन हैं उसके साथी जिन्होंने उसे छुड़ाने के लिए एम०एल०ए० का अपहरण कर लिया? उसे अच्छी तरह से याद था कि उसका कोई भी दोस्त नहीं है। जिसे भी उसने अपना दोस्त बनाया...उसी की पीठ में उसने छुरा घोंपा है। कुंवर सिंह रावत ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

“अब मजबूरन हमें तुमको छोड़ना पड़ रहा है। ”

सतीश रावण चुप रहा...मगर मन-ही-मन वह उसके बारे में अवश्य सोच रहा था, जिसने उसे छुड़ाने के लिये विधायक का अपहरण किया है। तभी एक सिपाही

कार्डलैस फोन उठाये भीतर प्रविष्ट हुआ और बड़ी इज्जत से फोन कुंवर सिंह रावत को देते हबुए बोला-

“आपका फोन है, सर!”

फोन लेकर कुंवर सिंह रावत ने कान से लगाया।

“हैलो...!” वह बोला।

“सरकार से बात कर ली एस०एस०पी० साहेब...?” दूसरी तरफ से आवाज आई।

“हां...हम इमाम बख्श को छोड़ने को तैयार हैं।”

AJ SCAN

“मुझे सरकार से ऐसी ही अक्लमंदी की उम्मीद थी। ”

“कहां पहुंचाना है इमाम बख्श को ...?”

“हनुमान गढ़ की हद में पहुंचा दो। आगे हम सम्भाल लेंगे उसे।”

“और हमारे एम०अल०ए० साहब...?”

“उन्हें एक घण्टे बाद फोन कर लेना...अपने घर में मिलेंगे वे।”

“ठीक है...कोई चालाकी नहीं बरतनी...वरना तुम्हारे एम०एल०ए० की मौत की जिम्मेदारी हम पर नहीं होगी।”

“हम कोई चालाकी नहीं बरतेंगे।”

कहकर कुंवर सिंह रावत ने रिसीवर सिपाही को दिया और सतीश रावण की तरफ देखा।

“उठिये इमाम बख्श साहब...आपके साथी आपकी राह देख रहे हैं।”

rcz202016@gmail.com

कहते हुए वह स्वयं खड़ा हो गया। मगर सतीश रावण अपने स्थान से हिला तक नहीं। वह पूर्वत: ही कुर्सी पर बैठा रहा।

“उठिये...।”

“उठ जाऊंगा...मगर पहले मेरी अमानत तो मिले मुझे...।”

मुस्कुराया सतीश रावण। डी०एस०पी० तथा इंस्पेक्टर भी चौंके।

AJ SCAN

“कैसी अमानत...?” कुंवर सिंह रावत बोला।

“एक रिवाल्वर...एक आरी ...और एक बैग।”

“ल...लेकिन यह सामान तुम्हें नहीं दिया जा सकता...।”

“तो फिर मैं यहीं बैठा हूं। मुझे मारो-पीटो...उल्टा लटका दो. मैं यहां से नहीं जाऊंगा और यह तो तुम जानते ही हो कि अगर मैं नहीं गया तो क्या होगा?”

कुंवर सिंह रावत के चेहरे पर बेबसी उभरी।

“ठीक है।” आखिर वह बोला-“तुम्हें रिवाल्वर और आरी मिल जायेंगी।”

"और बैग...?"

"वो मालखाने में जाम हो चुका है। नहीं दिया जा सकता । हां, अगर तुम चाहो तो एक–डेढ़ लाख मैं अपने पल्ले से तुम्हें दे सकता हूं।"

rcz2012010@gmail.com

वह जानता था कि अगर उसने बैग के लिये हां कर दी तो सारा पैसा उसे अपने पल्ले से देना पड़ेगा...क्योंकि बैग को उसने डी०एस०पी० और इंस्पेक्टर को आपस में बांट लेने के लिये कह दिया था।

"ठीक है...डेढ़ लाख ही सही ...।" गहरी सांस छोड़ी सतीश रावण ने। मौके का जितना फायदा वह उठा सकता था, उठा रहा था। कुंवर सिंह रावत ने डी०एस०पी० की तरफ देखा-

"इसे डेढ़ लाख दे दो...मैं दे दूंगा तुम्हें ...।"

AJ SCAN

डी०एस०पी० फौरन खड़ा हो गया।

"साथ में इसकी रिवाल्वर और आरी भी दे देना।"

"यस सर...।"

और दस मिनय बाद ही सतीश रावण की पीठ से उसकी आरी चिपकी हुई थी...पेन्ट की जेब में रिवाल्वर पड़ी हुई थी और जैकेट की दोनों जेबें नोटों से भरी हुई थीं। हालांकि उसका बदन अभी भी दुख रहा था..मगर नोटों की गर्मी ने उसके दर्द को काफी कम कर दिया था। उसने मुस्कुराते हुए कुंवर सिंह रावत को देखा और सिर हिलाते हुए बोला-

"चलें...?"

कुंवर सिंह रावत ने फीकी मुस्कान के साथ सिर हिला दिया।

¶¶

गंगानगर की सीमा पार कर कुंवर सिंह रावत की कार हनुमान गढ़ की सीमा में दाखिल हुई और रुक गई। उसके पीछे चल रही उसके बॉडीगार्डों की जिप्सी भी खड़ी हो गई। और उसमें से छ: गार्ड जो कि स्टेनगनों से लैस थे, निकलकर कार के चारों तरफ खड़े हो गये। कार की पिछली सीट पर बैठे कुंवर सिंह रावत ने अपने करीब बैठे सतीश रावण की तरफ देखा और गहरी सांस छोड़ते हुए बोला—

"हमें तुम्हें यहां पर छोड़ने को कहा गया था। इससे आगे कहां जाना है...यह तुम्हें पता होगा। अब उतरो।"

सतीश रावण हौले से हंसा और दरवाजा खोलकर बाहर आ गया। गार्डों के बीच से निकलकर वह आगे बढ़ा ...ठिठका...मुड़ा और कार में बैठे कुंवर सिंह रावत की तरफ देखते हुए हाथ हिलाया, फिर सीधा ही एक तरफ बढ़ने लगा। इधर कुंवर सिंह रावत ने गहरी सांस ली और ड्राइवर से बोला—"वापिस चलो।"

AJ SCAN

कुछ ही पलों में वहो अपने बॉडीगार्ड्स के साथ गांगानगर की तरफ वापिस रवाना हो गया। सतीश रावण ने दोनों गाड़ियों को वापिस जाते देका तो एकदम से चौकन्ना हो उठा। वह जानता था कि बहुत ही जल्द कोई नहीं मुसीबत उस पर आने वाली है। उसी मुसीबत से बचने के लिए तो उसने रिवॉल्वर और आरी की डिमाण्ड की थी। मगर आने वाली मुसीबत को उसने बहुत कम करके आंका था। वह यही समझ रहा था कि अण्डरवर्ल्ड के किसी खलीफा ने उसे पहचान लिया है और वह उससे अपना कोई रुका हुआ काम निकलवाना चाहता है। इसीलिये उसने एम०एल०ए० का अपहरण किया और खुद को आतंकवादी बताकर सकी रिहाई के बदले एम०एल०ए० की रिहाई की शर्त लगी। कुवंर सिंह रावत की कार अभी थोड़ी दूर ही पहुंची थी कि एक मैटाडोर वैन सतीश रावण के करीब आकर खड़ी हुई। सतीश रावण ने रुककर गर्दन उधर मोड़ी तो मैटाडोर की खिड़कियों में से ए०के० सैंतालीस की नालें उसे अपनी तरफ उठी नजर आईं। तभी दरवाजा खुला और एक व्यक्ति ने उसे आवाज लगाई।

"अन्दर आ...।"

सतीश रावण मुड़ा और चुपचाप वैन में आ बैठा। वैन में बैठते ही उसने स्वयं को आठ व्यक्तियों से घिरा पाया और आठों के आठों ए०के० सैंतालीस राइफलों से लैस थे। सतीश रावण को बुलाने वाले ने दरवाजा बन्द किया और ड्राइवर को आदेश दिया।

"चलो...!"

ड्राइवर ने वैन आगे बढ़ाई और थोड़ी देर बाद ही एक दूसरे रास्ते से वह गंगानगर में प्रवेश कर रहा था।

rcz202016@gmail.com

¶¶

ड़ेढ़ घण्टे बाद मैटाडोर वैन एक दोमंजिला कोठी के सामने रुकी। ड्राइवर ने तीन बार वैन का हॉर्न बजाया। तुरन्त कोरिठी का बन्द फाटक खुला और वैन आगे बढ़ती हुई कोठी के गेट में प्रवेश कर गई। ड्राइव-वे के अन्त में मैटाडोर के रुकते ही सतीश रावण के पास बैठे व्यक्ति ने उसे टोका—

"नीचे उतर।"

AJ SCAN

सतीश रावण चुपचाप मैटाडोर से बाहर आ गया। पीछे-पीछे अन्य भी आ गये और सतीश रावण पर इस तरह गनें तान लीं जैसे उन्हें डर हो कि वह कहीं भाग न जाये।

“चल...।” एक उसकी पीठ पर गल की नाल का दबाव बढ़ाते हुए गुर्राया। सतीश रावण चुपचाप कम्पाउण्ड की तरफ बढ़ा। कुछ ही देर में वह लॉबी के दायीं तरफ बने एक बड़े कमरे में रहमान खान के सामने अपराधियों की तरह खड़ा था। रहमान खान के बराबर में एक और कुर्सी थी, जिस पर कि हरि सिंह गहलौत बैठा सतीश रावण को खा जाने वाली निगाहों से घूर रहा था। सतीश रावण के पीछे तथा दायें-बायें गनों से लैस व्यक्ति खड़े थे।

“कुछ बताया इसने...?” रहमान खान ने एक से पूछा।

“हमने अभी कुछ पूछा ही नहीं जनाबेआला...।” वह बोला।

“तलाशी ली इसकी...?”

“जी नहीं...।”

“लो...।”

rcz202016@gmail.com

तुरन्त एक आगे बढ़ा और सतीश रावण की जेबों से नोट और रिवाल्वर निकालकर अपने कब्जे में कर लिये।

“क्या नाम है तेरा...?” रहमान खान सतीश रावण को गहरी निगाहों से घूरते हुए बोला।

“सतीश कुमार...।” सतीश रावण बडी शराफत से बोला।

“भैरोसिंह के साथि तेरा क्या सम्बन्ध था?” हरि सिंह गहलौत बोल पड़ा।

AJ SCAN

“भैरोसिंह...?” हल्के से चौंका सतीश रावण।

“मैं उस भैरोंसिंह की बात कर रहा हूं जो मेरा ड्राइवर था...और जिसे तूने कत्ल किया था।”

चिढ़े स्वर में बोला हरि सिंह गहलौत। सतीश रावण फौरन समझ गया कि वह किसकी बात कर रहा है। सो वह बोला-

“मेरा कोई सम्बन्ध नहीं था उससे।”

“झूठ बोलता है रहाम खान...मन्त्री हरि सिंह के सामने झूठ बोलता है...अगर तेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं था तो फिर तूने उसे मारा क्यों?”

सतीश रावण ने बड़ी शराफत से सब कुछ सच बता दिया...उसने यह तक भी बता दिया कि उसे मालूम नहीं था कि वह कार किसी मन्त्री की थी। हरि सिंह गहलौत ने गहरी सांस छोड़ी और रहमान खान की तरफ देखा।

"यह तो मामला ही और निकला रहमान खान!"

rcz202016@gmail.com

"हां नेताजी!" रहमान खान ने भी गहर सांस छोड़ी—"खामखाह इसे छुड़ाने में इतनी मेहनत की। एम०एल०ए० का अपहरण किया। सोचा था, कोई बहुत बड़ी जानकारी हाथ लगेगी...मगर यहां तो चिड़ी का बच्चा भी हाथ नहीं लगा।"

"फिर...?"

"फिर क्या...हमारे लिये बेकार है यह...खत्म कर दो इसे...।"

AJ SCAN

रहमान खान ने जैसे ही अपने आदमियों को हुक्म दिया...सतीश रावण ने बिना कोई वक्त गवांये अपने स्थान से छलांग मारी और हरि सिंह गहलौत के सिर के ऊपर से होता हुआ उसकी कुर्सी के पीछे पहुंचा और अगले ही पल आरी हरि सिंमह गहलौत की गर्दन पर रख दी। यह सब कुछ इतनी तेजी और अकस्मात् ढंग से हुआ था कि किसी की समझ में नहीं आया कि हुआ क्या?

पता तो उन्हें तब लगा, जब आरी हरि सिंह गहलौत की गर्दन से लग चुकी थी।

“खबरदार...?” वह सांप की मानिन्द फुंफकारा—“अगर किसी ने भी गोली चलाने की जुर्रत की तो इस मन्त्री की गर्दन धड़ से जुदा हो जायेगी...।”

सभी की निगाहें रहमान खान पर जा टिकीं जो कि अचम्भित-सा बैठा सतीश रावण को देख रहा था। अपनी जिन्दगी में पहली बार वह ऐसा फुर्तीला और दुस्साहसी व्यक्ति देख रहा था।

“अपने कुत्तों को बोल कि गनें नीचे फेंक दें।”

सतीश रावण पुन: फुंफकारा। हड़बड़ाया रहमान खान! मन्त्री का मामला था...सो वह तुरन्त बोला-

"गनें फेंक दो।"

rcz202016@gmail.com

आठों व्यक्तियों ने आज्ञा का पालन करते हुए गनें नीचे फेंक दीं। सतीश रावण कुटिलता से मुस्कुराया।

"यह तो मैं जानता था कि मुसीबत आयेगी मुझ पर...तभी तो रिवाल्वर और आरी लेकर निकाल था मैं थाने से...मगर मेरा सामना आरतंकवादियों से होगा...यह सपने में भी नहीं सोचा था मैंने...।"

रहमान खान कुछ नहीं बोला...बस आग्नेय नेत्रों से उसे घूरता रहा। सतीश रावण ने हरि सिंह गहलौत के बालों को पकड़ा।

AJ SCAN

"प्रणाम गुरुदेव...!" वह हंसा—"आज तक मैं यही समझता रहा कि इस दुनिया में सबसे बड़ा हरामी मैं ही हूं...मगर तुझे देखते ही मेरी गलतफहमी दूर हो गई...तू तो मेरा भी गुरु निकला। मेरी मां पर तो सिर्फ हजार-दो हजार ही चढ़े थे...जिससे कि मैं पैदा हुआ था...मगर तुझे पैदा करने के लिये जरूर तेरी मां को पूरे शहर की मदद लेनी पड़ी होगी। पूरा गंगानगर तेरा बाप होगा...।"

हरि सिंह गहलौत का चेहरा कानों तक लाल हो उठा। इतने आदमियों के सामने उसने उसकी मां को इतनी घिनौनी गाली दी थी। गुस्सा तो चढ़ना ही था उसे। मगर कुछ बोल पाने की स्थिति में नहीं था वह ...सो खून का घूंट भरकर रह गया वह।

"और तुम पाकिस्तानी...।" सतीश रावण ने रहमान खान की तरफ देखा—"तुम तो हो ही हरामी...मैं पाकिस्तान का चक्कर लगा आया हूं...जितने भी आई०एस०आई० के एजेन्ट मुझे मिले...सभी की मायें चालू थीं।"

"त...तुम हद से आगे गुजर रहे हो।"

रहमान खान तड़प उठा। हंस पड़ा सतीश रावण-

"लगता है, तुझे अपनी मां की कारस्तानी का पता है। तेरा पड़ोसी आता होगा तेरी मां के पास...।"

rcz2020..@gmail.com
"जबान को लगाम दो।"

"अपनी तो जबान ही नहीं...लगाम किसे दूं?"

"बहुत फुदक रहे हो...अगर खुद को मर्द का बच्चा समझते हो तो हटाओ मन्त्रीजी की गर्दन से आरी...फिर पता लगेगा तुझे कि हम क्या हैं!"

"मेरी तो आदत ही नहीं है मजबूर करके मारने की । दूसरी बात, मैं मर्द का बच्चा हूं ही नहीं...तीसरी बात, मैं भी वैसे ही पैदा हुआ हूं जैसे तुम हुए हो...तभी तो इतने आदमियों को अपनी ताकत बना रहे हो...जबकि मैं अकेला तुम पर भारी हूं।

AJ SCAN

लगता है, तेरी मां मुजरा करने में ज्यादा वक्त बिताती थी और नीचे बिछने में कम वक्त...फिर जो भी तेरी मां पर सवार होते थे, वे ढीले-ढाले होते थे...।"

"बकवास बन्द करो अपनी।"

गुस्से से दहाड़ उठा रहमान खान।

"सच्चाई बहुत कड़वी होती है मियां...।" हंसा सतीश रावण। अगर रहमान मजबूर नहीं होता तो अवश्य ही अब तक वह सतीश रावण पर टूट चुका होता।

"खैर जाने दो...हमें क्या लेना-दाना तेरी मां से...वो जाने, उसके यार जाने...।" सतीश रावण बोला और हरि सिंह गहलौत के बालों को खींचा।

"खड़ा हो जा मन्त्री ....।" वह गुर्राया। थूक सटकते हुए हरि सिंह गहलौत खड़ा हो गया।

“तुम सभी दीवार से नाक लगाकर खड़े हो जाओ...।”

सभी ने रहमान खान कि तरफ देखा।

rcz202016@gmail.com

“तू भी इनके साथ ख़ड़ा हो जा और ध्यान रखना अगर किसी ने भी हीरो बनने की कोशिश की तो इस मन्त्री की गर्दन धड़ से अलग करने में मैं एक सेकण्ड भी नहीं लगाऊंगा।”

मन-ही-मन उसे हजारों गालियों से नवाजता रहमान खान कुर्सी से उठा और अपने साथियों के साथ दीवार से नाक लगाकर खड़ा हो गया।

“वह हरामी पलटे जिसने मेरी रिवाल्वर और रुपये हथियाये हैं।”

तुरन्त एक पलटा।

AJ SCAN

“मेरा सामान निकाल और यहां कुर्सी पर रख दे।”

सतीश रावण ने रहमान खान की कुर्सी की तरफ इशारा किया। उस आदमी ने बड़ी शराफत से रुपये तथा रिवाल्वर निकालकर कुर्सी पर रख दिये। सतीश रावण ने पूरी सावधानी बरतते हुए पहले रिवाल्वर उठाकर हरि सिंह गहलौत पर तानी...फिर आरी को अपनी पीठ पर चिपकाकर रुपये पहले की तरह जेबों में भर लिये। अपनी बायीं बाहं को उसने हरि सिंह गहलौत की गर्दन पर लपेटा और रिवॉल्वर उसकी कनपटी से लगाते हुए गुर्राया—

“उस बैग में मेरे बीस लाख रुपये थे...जो कि तेरी वजह से पुलिस के हाथ पड़े।”

“मेरी वजह से कैसे...?” हड़बड़ाया हरि सिंह गहलौत।

“अबे ढक्कन...अगर मैं तेरी कार नहीं हथियाता तो आराम से यहां से निकल जाता। तेरी मनहूस कार की वजह से ही मेरे रुपये डूबे। अब तू उन रुपयों की भरपाई करेगा...वो भी ब्याज के साथ।”

“क्या मतलब...?”

rcz202016@gmail.com

“पचास लाख देगा तू...।”

“ल...लेकिन उसमें तो दस लाख थे। तुम बीस कैसे कह रहे हो?”

“जब मैं बीस कह रहा हूं तो बीस ही थे, समझे...।”

हरि सिंह गहलौत ने जोरों से थूक सटकी।

AJ SCAN

“अब तू मेरे साथ जायेगा और तब तक मेरे पास रहेगा, जब तक कि मुझे पचास लाख नहीं मिल जाते।”

कहकर सतीश रावण ने उसके नितम्बों पर घुटना मारा।

“चल...।”

हरि सिंह गहलौत ने बेबसी से दीवार के साथ नाक लगाये खड़े रहमान खान की तरफ देखा...और अपने मन-मन वजनी हो रहे पैरों को किसी तरह उठाते हुए दरवाजे की तरफ बढ़ा। सतीश रावण पूरी तरह से सतर्क उसे अपने काबू में किये रिवाल्वर उसकी कनपटी से लगाये उसके पीछे चल रहा था। दरवाजे से निकलकर सतीश रावण लॉबी में पहुंचा और गुर्राया—

“घूम।”

हरि सिंह गहलौत दरवाजे की तरफ घूमा।

“दरवाजा बन्द कर और कुण्डा लगा।”

हरि सिंह गहलौत ने आज्ञा का पालन किया। दरवाजा बन्द हो जाने के पश्चात् सतीश रावण ने राहतभरी सांस छोड़ी और हरि सिंह गहलौत को कवर किये कम्पाउण्ड के दरवाजे की तरफ बढ़ा। वह यही समझ रहा था कि उसने कोठी के सभी लोगों को कमरे में बन्द कर दिया है। मगर यह उसकी भूल थी। इसी भूल की वजह से वह कुछ लापरवाह हो गया था और यहीं वह चूक गया। हरि सिंह गहलौत को कवर किये वह जैसे ही कम्पाउण्ड में आया...दायीं तरफ से उसके रिवाल्वर वाले हाथ पर जैसे पहाड़ टूट पड़ा। सतीश रावण के होठों से तेज कराह फूट पड़ी। उसी के साथ ही रिवाल्वर उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर पड़ी। उसे ऐसा लगा जैसे उसके हाथ की हड्डियों टूट गई हों। माहौल दर्द से चीखने का नहीं था और न ही हाथ पकड़कर बैठने का था। उसने दर्द की परवाह किये बिना उधर देखा, जिधर से कि उस पर वार हुआ था। एक पल भी नहीं लगाया सतीश रावण ने और आरी निकालकर उसकी गर्दन पर भरपूर वार किया।

“खचाक...।”

AJ SCAN

आधी के करीब गर्दन कटकर एक तरफ लटक गई और उसी के साथ ही वह औंधे मुंह नीचे फर्श पर गिर पड़ा। सतीश रावण अपनी रिवाल्वर की तरफ झपटा और उसे उठाकर तेजी से हरि सिंह गहलौत की तरफ पलटा। गहरी सांस छोड़कर रह गया वह। हरि सिंह गहलौत वापिस कोठी में न केवल प्रवेश कर चुका था...बल्कि उसने भीतर से दरवाजा भी बन्द कर लिया था। अब यहां रुकना खतरे से खाली नहीं था। सो सतीश रावण फौरन वहां से हटा और गेट की तरफ दौड़ लगा दी। कुछ ही देर में वह गेट से निकलकर करीब की एक गली में प्रवेश कर रहा था। आरी अभी भी उसके हाथ में थी...और रिवाल्वर भी उसके हाथ गनें थी। गली में पहुंचकर उसने एक कूड़े के ढेर में से फटा-पुराना गन्दा कपड़ा उठाया...उससे आरी साफ की और अपनी पीठ पर चिपका कर आगे बढ़ गया।

"हरामजादे...!" वह मन-ही-मन बड़बड़ाया-"पूरे पचास लाख तेरे से वसूल करके ही गंगानगर से दफा होऊंगा अब।"

¶¶

आरी पकड़े सतीश रावण जैसे ही उस आदमी कर तरफ झपटा था...हरि सिंह गहलौत ने मौके का फायदा उठाया और कोठी के खुले दरवाजे में प्रवेश कर फौरन दरवाजा बन्द कर सिटकनी चढ़ा ली। सिटकनी चढ़ाने के बाद जाकर उसकी जान में जान आई...मगर उसका कलेजा अब भी धाड़-धाड़ करता उसकी पसलीयों से टकरा रहा था। मौत के बेहद करीब पहुंचकर वह जिन्दा बच गया था। यह उसकी खुशकिस्मती थी। उसने दो-तीन गहरी सांसे छोड़ी और लॉबी पार कर उस दरवाजे की तरफ झपटा, जिसमें कि रहमान खान तथा अन्य कैद थे। कुण्डा खोलकर उसने दारवाजा खोला तो एक साथ कईं गनें उसकी तरफ तन गईं।

rcz202016@gmail.com

"ग....गोली मत चलाना...।"

दोनों हाथ आगे कर हरि सिंह गहलौत चीखा। रहमान खान तुरन्त उसके पास आया।

"कहां हैं वो?"

"बाहर...बड़ी मुश्किल से उसके चंगुल से निकल सका हूं मैं...।"

AJ SCAN

हरि सिंह गहलौत ने जल्दी-जल्दी उसे सब कुछ बताया। रहमान खान तेजी से दरवाजे की तरफ लपका। पीछे-पीछे गनों से लैस उसके साथी लपके...और उसके पीछे हरि सिंह गहलौत। सिटकनी गिराकर रहमान खान ने दरवाजा खोला और जैसे ही बाहर कदम रखा—

उसके कदम वहीं ठिठक गये। दायीं तरफ उसके आदमी की सिर कटी लाश पड़ी थी। उसके करीब ही उसका डण्डा पड़ा था, जिससे कि उसने सतीश रावण पर वार किया था। गहरी निराशाभरी सांस छोड़कर रह गया रहमान खान।

"अभी तो हमने इस शहर में कोई एक्शन भी नहीं लिया कि हमारा एक साथी कम हो गया।"

वह हरि सिंह गहलौत की तरफ देखते हुए बोला। हरि सिंह गहलौत क्या जवाब देता...बस थूक सटक कर रह गया वह। रहमान खान ने पुनः गहरी सांस छोड़ी और अपने आदमियों में से एक से बोला-

"लाश उठाकर किसी चौराहे पर फेंक दो।"

कहकर वह वापिस मुड़ा और कमरे में आकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया। उसके बाकी आदमी भी कमरे में आ गये। हरि सिंह गहलौत उसके करीब वाली कुर्सी पर बैठ गया। गहरी निराशा छाई थी उसके चेहरे पर। कुछ देर तक कमरे में चुप्पी छाई रही...फिर रहमान खान ने उस चुप्पी को तोड़ा।

rcz202016@gmail.com

"रिपब्लिकन-डे में अभी तीन दिन पड़े हैं। चौथे दिन छब्बीस जनवरी है और छब्बीस जनवरी के दिन ही जब सी०एम० बतौर मेहमान परेड ग्राउण्ड की तरफ बढ़ेगा...तभी हमने उसे खत्म करना है। उसे खत्म करने की पूरी प्लानिंग तैयार है। बस इन्जार है तो छब्बीस जनवरी का।"

"वो बात तो ठीक है...मगर सतीश का क्या किया जाये...?"हरि सिंह गहलसौत बोला।

"वो हमारा जितना नुकसान कर सकता था कर गया। उसे सिर्फ यही पता है कि हम पाकिस्तान के एजेन्ट हैं...इससे ज्यादा नहीं पता उसे कि हमारे इरादे क्या हैं

AJ SCAN

और फिर अब तक तो वह गंगानगर से बाहर जाने वाली बस में बैठ भी चुका होगा।”

“वो क्यों...?”

“अगर उसमें जरा-सी भी अक्ल है तो वह गंगानगर में एक मिनट भी नहीं टिकेगा, क्योंकि उसे मानूम है कि हम आतंकवादी हैं और आतंकवदियों से कोई भी पंगा लेना मुनासिब नहीं समझता। वह समझाता है कि अगर वह यहां रहा तो हर वक्त उसकी जान को खतरा बना रहेगा, फिर भी अगर उसने यहां रहने की बेवकूफी की भी तो बचेगा न्हीं। कहीं भी किसी की भी निगाह में चढ़ते ही चाहे वो हम हों या पुलिस उसे फौरन से पेश्तर गोली से उड़ा दिया जायेगा।”

“ओह!”

“अब आप जाइये नेताजी...और शम्भूनाथ को ठीक तीन घण्टे बाद रवाना कर दीजियेगा।”

हरि सिंह गहलौत सिर हिलाते हुए खड़ा हो गया।

¶¶

कितना गलत सोचा था रहमान खान ने सतीश रावण के बारे में कि वह जान बचाने के लिये फौरन से पेश्तर गंगानगर से कूच कर जायेगा। मगर ऐसा सोचने में उसका कसूर भी नहीं था। उसे यह तो मालूम था कि वह सतीश कुमार है, मगर यह मालूम नहीं था कि वह सतीश रावण है, जिसने पाकिस्तान में पहुंचकर आई०एस०आई० के पहले तलवे चाटे...फिर जैसे ही मौका मिला उनकी खटिया खड़ी कर दी। ऊपर से वह शैतान आत्मा था। भेड़िया था वह। और वह सतीश रावण की हकीकत जानता होता तो ऐसा हरगिज नहीं सोचता। सतीश रावण उसी शहर में था। और इस वक्त वह चौड़े बाजार में था। सड़क पर आगे बढ़ता वह इधर-उधर देख रहा था। निश्चय ही उसे अपने मतलब की किसी दुकान की तलाश थी। उसकी तलाश मेन बाजार में जाकर पूरी हुई जो कि चौड़ा बाजार खत्म होने के बाद आता था। वह उस दुकान में घुसा...उसने मतलब का सामान खरीदा और बाहर आ गया। अब उसे किसी सुनसान जगह की तलाश थी...जो कि उसे शीघ्र हासिल हो गई। वह सार्वजनिक शौचालय था, जिसके दरवाजे पर उस वक्त कोई नहीं था। बिना वक्त गंवाये वह उसमें प्रविष्ट हुआ और एक टायलेट में घुस गया। करीब बीस मिनट बाद टायलेट का दरवाजा खुला तो उसमें से सतीश रावण की बजाये अधेड़ उम्र का एक सरदार निकला। उसके दाढ़ी के बाल आधे से ज्यादा सफेद हो रहे थे...और दाढ़ी थी भी

AJ SCAN

बेतरतीब...उलझी हुई। इसी तरह उसने सिर पर पगड़ी बांध रखी थी-बेतरतीब...जिसमें से उसके उलझे हुए नकली बाल नजर आ रहे थे, जो कि दाढ़ी की तरह ही बेतरतीब थे और ब्लैक एण्ड व्हाइट थे। वह टायलेट से बाहर निकला तो उसे शौचालय के गेट पर खाकी वर्दी पहने एक व्यक्ति बैठा नजर आया। सतीश रावण ने बड़ी शराफत से दो रुपये निकालकर उसे दिये और बाहर आकर एक रिक्शा पकड़ी और बस अड्डे की तरफ रवाना हो गया। आधे घण्टे बाद वह एक बस में बैठा गंगानगर की तरफ जा रहा था।

¶¶

"आपने मुझे बुलाया मालिक...?"

शम्भूनाथ कमरे में प्रवेश कर हरि सिंह गहलौत के सामने खड़ा होते हुए बोला। हरि सिंह गहलौत को राजी-खुशी वापिस लौटने पर उसे हैरानी तो हुई ही थी...साथ ही उसका दिल भी धड़क उठा था। वह यही समझा था कि हरि सिंह गहलौत तो पता चल गया है कि उसकी मुखबिरी उसी ने की थी। मगर जब हरि सिंह गहलौत ने उससे इस बाबत कोई बात नहीं की तो उसका डर जाता रहा। पूरी रात बीत गई, अगला दिन भी आधे से ज्यादा बीत गया तो वह इसी निष्कर्ष पर पहुंचा कि उसने खुद को बचाने के लिये कोई राजनैतिक हथकण्डा अपनाया है, जिसमें कि वह पूरी

तरह से सफल रहा...अगर ऐसा नहीं होता तो अब तक वह पूरे देश में बदनाम हो चुका होता...साथ ही जेल भी पहुंच चुका होता। जो भी था अपनी तरफ से वह पूरी तरह से निश्चित हो चुका था।

"हां...।" हरि सिंह गहलौत गम्भीरता से उसे देखते हुए बोला।

rcz202016@gmail.com

"हुक्म कीजिये...।"

हरि सिंह गहलौत ने अपने दायीं तरफ पड़ा एक बैग उठाकर उसकी तरफ बढ़ाया।

"पकड़ो इसे...।"

शम्भूनाथ ने हुक्म का पालन किया।

AJ SCAN

“कैनरा बैंक चले जाओ...बैंक के मैनेजर को बैग दे देना। ”

शम्भूनाथ ने सिर हिला दिया।

“अब जाओ।”

शम्भूनाथ पलटा और कमरे से बाहर निकल गया। उसके निकलते ही हरि सिंह गहलौत के होठों पर क्रूर मुस्कान फैल गई।

“हरामखोर...!” वह शब्दों को चबाते हुए बोला-“मेरा खाकर मेरे से ही दगाबाजी....जानता नहीं कि हरि सिंह ऐसा नाग है जिसका डसा हुआ छटपटा भी नहीं पाता। ”

इधर शम्भूनाथ कोठी से निकला और थोड़ी दूर पैदल चलकर एक टैक्सी रोकी और उसमें सवार हो गया।

"कैनरा बैंक...।" वह बोला। टैक्सी आगे बढ़ी तो शम्भूनाथ का दिमाग भी चलने लगा।

"क्या है इस बैग में...?"

rcz202016@gmail.com

वह मन-ही-मन बड़बड़ाया।

"बैंक जा रहा हूं...अवश्य ही इसमें नोट होंगे...।"

"लेकिन मालिक का खाता तो स्टेट बैंक में है, फिर कैनरा बैंक क्यों भेजा मुझे...?"

"अवश्य ही इसमें रिश्वत के नोट होंगे जो किसी बड़े पुलिस अफसर के होंगे...जिसने इन नोटों के बदले उसे छोड़ दिया है, वरना अब तक वह जेल में होता। "

AJ SCAN

“कौन होगा वो पुलिस अफसर...?”

फौरन उसके जहन में कुंवर सिंमह रावत का नाम उभरा।

“हां...वही होगा...।” वह स्वयं के प्रश्न का उत्तर देते हुए बड़बड़ाया-“फोन उसी को ही तो किया था मैंने...।”

“अब तो भगवान ही इस देश का रक्षक है। ” वह गहरी सांस छोड़ते हुए बोला। करीब पन्द्रह मिनट बाद टैक्सी कैनरा बैंक के सामने रुकी। शम्भूनाथ ने भाड़ा चुकाया और दरवाजा खोलकर बैग उठाये बैंक की तरफ बढ़ा। ठीक तभी एक मोटर बाइक ऐन उसके करीब आकर रुकी। बाइक पर दो युवक बैठे हुए थे, जिसमें से पीछे वाले के हाथ में रिवाल्वर थी। रिवाल्वर देख शम्भूनाथ बुरी तरह से हड़बड़ाया और वापिस पलटा।

ठीक तभी-

"धांय...धांय...धांय...।"

तीन गोलियां उसकी पीठ में जा समाईं और वह वहीं सड़क पर औंधे मुंह गिर छटपटाने लगा। बाइक के पीछे बैठा युवक बाइक से उतरा...शम्भूनाथ की लाश के करीब पहुंचा...झुका और बैग उठाकर बाइक के पीछे आ बैठा। अगले ही पल बाइक वहां से तोप से छूटे गोले की तरह भाग निकली। हर कोई यही समझ रहा था बैग में नोट थे, जिन्हें लूटले के इरादे से लुटेरों ने उसकी हत्या कर दी थी। मगर हकीकत तो यह थी कि यह शम्भूनाथ का कत्ल करने की रहमान खान की योजना थी। यह योजना इसलिये बनाई गई थी कि डी०एस०पी०, एस०पी०, इंस्पेक्टर को सन्देह न हो कि मुखबिरी शम्भूनाथ ने की थी। ऐसी सूरत में कुंवर सिंह रावत के अलावा उन पर उसकी हकीकत खुल जाती और कोई बड़ी बात नहीं कि उनमें से कोई बखेड़ा खड़ा कर देता। अब इस योजना से कत्ल होने पर हर कोई यही सोचता कि नोट लूटने की खातिर शम्भूनाथ की हत्या हुई है। एक और सच्चे तथा देशभक्त की हत्या हो गई। एक बार फिर देशद्रोही देशभक्तों पर हावी हो गये।

¶¶

AJ SCAN

“खट...खट...खट...।”

दरवाजे पर दस्तक हुई। जहांगीर कुर्सी पर से उठा और दरवाजे की तरफ बढ़ा। जहांगीर करीब तीस वर्ष का लम्बा ऊंचा इकहरे जिस्म का नौजवान था। उसके बाल खिचड़ी थे तथा दाढ़ी बड़े करीने से कटी हुई थी। कमरे से निकलकर वह आंगन पार कर मेन डोर के करीब पहुंचा।

“कौन है...?”वह ऊंचे स्वर में बोला।

“मैं हूं भाईजान...दरवाजा खोलिये...।”

बाहर से एक अंजान आवाज आई, मगर आवाज में शिष्टता थी...सो उसे जरा भी शक नहीं हुआ। कुण्डा खोलकर उसने जैसे ही दरवाजा खोला-रिवाल्वर की नाल उसके सीने पर लगी। बुरी तरह से चौंका जहांगीर और अपने सामने खड़े मैले-कुचैले सरदार को देखा।

"कौन हो तुम...?"

वह बोला।

"हाथ ऊपर...।"

rcz202016@gmail.com

वह जो कि सतीश रावपण था फुंफकारा। जहांगीर ने बड़ी शराफत से हाथ सिर पर रख दिये।

"पीछे हट।"

कहते है सतीश रावण ने रिवाल्वर का दबाव उसके सीने पर बढ़ाया। जहांगीर के कदम पीछ हटे। सतीश रावण भीतर दाखिल हुआ...पैर से, बिना पीछे देखे ही दरवाजे को बन्द किया और टटोलकर कुण्डा लगा दिया।

AJ SCAN

“कौन हो तुम...?” जहांगीर ने अपना प्रश्न दोहराया।

“वो भी बताउंगा...पहले अन्दर तो चल...आराम से बैठकर बातें करेंगे।”

रिवाल्वर के आगे मजबूर था जहांगीर। वह पीछे को घूमा तो सतीश रावण फौरन थोड़ा पीछे हट गया। इधर उसकी फुर्ती और मुस्तैदी देख जहांगीर समझ गया कि सामने वाला खेला-खाया शख्स है। सो उसने फिलहाल कोई चालाकी नहीं दिखाई...चुपचाप आगे बढ़ा और उस कमरे में आ गया, जिसमें से कि वह निकला था। पीछे-पीछे रिवाल्वर ताने सतीश रावण था।

“बैठ जा...।”कमरे में तेजी से निगाहें दौड़ाने के बाद गुर्राया सतीश रावण। जहांगीर चुचाप कुर्सी पर बैठ गया।

“हाथ सिर पर ही रखे रख।”

जहांगीर के नीचे सरकते हाथ पुनः सिर पर पहुंच गये।

"हां...अब ठीक है...अब पूछ कि मैं कौन हूं...?"

कुटिलता से मुस्कुराया सतीश रावण।

rcz202016@gmail.com

"कौन हो तुम...?" जहांगीर उसे गहरी निगाहों से देखते हुए बोला।

"रात तेरे पास आर०डी०एक्स० और ए०के० सैंतालीस लेकर भैरोसिंह नाम का जो कुत्ता आ रहा था...उसकी गर्दन इसी नाचीज ने ही काटी थी।"

बुरी तरह से उछल पड़ा जहांगीर ...आंखों में हैरत के भाव उभर आये।

AJ SCAN

"लेकिन देख ले...मैं उसके भी चंगुल से बच गया और अब तेरे सामने बैठा हूं। "

"ल...लेकिन तुम यह सब मुझे क्यों सुना रहे हो...और यह तुम किस आर०डी०एक्स० की बात कर रहे हो...?"

"बल्ले ओय तेरे...हरामी के आगे हरामीपना दिखा रहा है।"

"द...देखो...तुम जो कोई भी हो...तुम्हें मेरे बारे में गलतफहमी हुई है। मेरा न तो किसी रहमान खान से कोई ताल्लुक है...न किसी आर०डी०एक्स० या ए०के० सैंतालीस से। मैं तो एक सीधा-सादा नौकरीपेश आदमी हूं।"

"अच्छा!" व्यंग्य से हंसा सतीश रावण।

"मैं सच कहता हूं...मैं वो नहीं हूं, जिसकी तलाश में तुम यहां आये हो."

"तो तू जहांगीर नहीं है?"

"जहांगीर तो हूं...लेकिन वो जहांगीर नहीं हूं जिसकी तुम्हें तलाश है।"

rcz202016@gmail.com

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी।

"फिर तो खामखाह तुम पर हाथ डाला...।"

"हां...।"

"मगर मेरी यह आदत है कि में अगर गलत आदमी पर भी हाथ डालता हूं, तो उसे खत्म किये बिना वापिस नहीं जाता।"

AJ SCAN

“क्या मतलब...?”

“मतलब यह कि अब तू मरने वाला है...अपने खुदा को याद कर ले...।”

जहांगीर के चेहरे की रंगत तेजी से बदली...आंखों में बदहवासी उभर आई। सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और बोला-

“सोचा था तुमसे पूछताछ करके छोड़ दूंगा...मगर तुम तो वो निकले ही नहीं...।”

“म...मगर मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?”

“कुछ भी नहीं।”

"तो फिर मुझे क्यों मार रहे हो?"

सतीश रावण हंसा।

"अण्डरवर्ल्ड में मुझे सबसे बड़ा हरामजादा कहकर पुकारते हैं...और हरामजादे जब जी करता है...किसी का भी कत्ल कर डालना है और उसके द्वारा किये गये कत्लों में से नब्बे परसेन्ट में कोई वजह नहीं होती। चल...अब आंखें बन्द कर ले और अपना कलमा भी खुद ही पढ़ ले। खुदा तेरी रूह को सुकून बख्शे...आमीन...।"

कहते हुए सतीश रावण ने रिवाल्वर का कुत्ता पीछे खींचा और ट्रेगर दबा दिया।

"धांय...।"

AJ SCAN

गोली जहांगीर की पसली को जख्मी करती कुर्सी की पुश्त को फाड़ती निकल गई। कराह उठा जहांगीर।

“ओह सॉरी ...निशाना चूक गया...अब की बार नहीं चूकेगा।”

कहते हुए सतीश रावण सम्भलकर बैठा उसकी छाती का निशाना लगाने लगा। इधर जहांगीर समझ गया कि उसके सामने बैठे सरदार का निशाना चूका नहीं, बल्कि उसने जानबूझकर उसकी पसलियों को घायल किया है, जबकि अगर वह चाहता तो आराम से उसके सीने में सुराख कर सकता था। रहमान खान से उसे इतना तो पता चल ही चुका था कि सतीश नाम का आदिमी उसकी कैद से न केवल भाग निकला...बल्कि उसने उनके एक साथी का बेरहमी से कत्ल भी कर दिया है। सतीश रावण ने रिवाल्वर का कुत्ता अंगूठे से पीछे खींचा और बोला-

“हिलना नहीं...अगर इस बार निशाना चूक गया तो अण्डरवर्ल्ड में मेरी मिट्टी-पलीत हो जायेगी।”

“न...नहीं...।” एकदम से चीख उठा जहांगीर-“ग....गोली मत चलाना...।”

"क...क्यों...?" सतीश रावण उसी के-से अन्दाज में हड़बड़ाया।

"मैं बताने को तैयार हूं।" कहकर उसने जोरों से थूक निगली। सतीश रावण ने मुंह बनाते हुए सिर को हिलाया।

rcz202016@gmail.com

"खामखाह मेरी एक गोली खराब की। खैर, देर आमद...दुरुस्त आमद। बोल...।"

AJ SCAN

“क्या...?”

“वो सबकुछ बोल जो तू जानता है।”

जहांगीर के गले की घण्टी जोरों से उछली। होंठ फड़फड़ाये...मगर शब्द नहीं निकले उसके होठों से।

“पाकिस्तानी कुत्ता है तू...?” सतीश रावण उसे गहरी निगाहों से घूरते हुए गुर्राया।

“न...नहीं...हिन्दुस्तानी हूं...।” थूक सटकते हुए बोला जहांगीर।

“और रहमान खान...?”

“वह पाकिस्तानी है।”

“कितने आतंकवादी आये हैं यहां उसके साथ...?”

“दो...।”

“लेकिन वहां तो सात-आठ थे!”

“वे सभी हिन्दुस्तानी हैं। रहमान खान ने उन्हें खरीद रखा है...।”

“और मन्त्री हरि सिंह गहलौत को भी खरीद रखा है उसने...?”

“उ...उसी ने ही तो न्यौता दिया था पाकिस्तान को यहां आतंकवाद फैलाने का।”

AJ SCAN

“बिल्कूल मेरा भाई है...लगता है हरि सिंह की और मेरी मां एक साथ धन्धा करती थीं...और दोनों ने एक ही संस्था में अपने यारों के बिस्तरों को गर्म किया था।”

मुस्कुराते हुए बड़बड़ाया सतीश रावण। उसकी बड़बड़ाहट जहांगीर ने भी सुन ली थी। तभी तो चौंक उठा था। पूरी दुनिया में सिर्फ एक मां ही ऐसा शब्द है जिसे सबसे पवित्र समझा जाता है...और जिसके आगे हर व्यक्ति ...मजहब नतमस्तक हो जाता है। मगर यहां तो मामला बिल्कुल उल्टा था। उसके सामने बैठा शख्स अपनी मां के लिये घिनौना शब्द इस्तेमाल कर रहा था। वैसा शब्द तो सचमुच की रण्डी का बेटा भी नहीं कर सकता था। तभी तो वह बुरी तरह से चौंका था।

“क...क्या कहा...?”

उसे जैसे अपने कानों पर विशवास नहीं हुआ था।

“कुछ नहीं...।” मुस्कुराया सतीश रावण-“तू यह बोल कि हरि सिंह गलहौत ने पाकिस्तान को न्यौता क्यों दिया था यहां आतंकवाद फैलाने के लिये...?”

“वह खुद सी०एम० बनना चाहता है। इलेक्शनों के बाद सी०एम० बनने के उसके चांस भी थे। उसकी पार्टी के ज्यादातर एम०एल०ए० उसके साथ थे...लेकिन मौजूदा सी०एम० ने पता नहीं कौन-सा जादू का डण्डा चलाया कि हरि सिंह गहलौत के आधे से ज्यादा साथी उसकी तरफ हो गये और हरि सिंह गहलौत का सी०एम० बनने का सपना मिट्टी में मिल गया...साथ ही उसकी जो किरकिरी हुई सो अलग।”

“फिर...?”

“हरि सिंह गहलौत को आई०एस०आई० भी सी०एम० बनाना चाहती थी, क्योंकि उसके हरि सिंह गहलौत के साथ अच्छे सम्बन्ध थे। ऐसे में आई०एस०आई० को भी झटका लगा। फिर हरि सिंह ने हिम्मत नहीं हारी और जोड़-तोड़ करके मन्त्री बन गया। मगर उसके दिल में अभी भी सी०एम० बनने की तमन्ना भरी हुई थी। छः महीने तक तो वहब चुप रहा...फिर उसने आई०एस०आई० के साथ सम्पर्क किया और उसे यहां आतंकवादी भेजने का न्यौता दे दिया। साथ ही यहां कई जगहों पर विस्फोट करके अफरा-तफरी मचाने को भी कहा...।”

AJ SCAN

"क्या इस अफरा-तफरी से सी०एम० अपने पद से इस्तीफा दे सकता है?"

"नहीं...।"

rcz202016@gmail.com

"पुलिस को बिखेरना ही इस अफरा-तफरी का मकसद है। चौथे दिन गणतन्त्र दिवस है। उस दिन परेड ग्राउण्ड म गवर्नर तिरंगा फहरायेगा...और सी०एम० बतौर मेहमान वहां पहुंचेगा...उसी दिन उसे खत्म करने का इरादा है, क्योंकि मौजूद सी०एम० अपनी शराफत और ईमानदारी के कारण पूरे राज्य में लोकप्रिय है...ऐसे में उसे सिवाय खत्म करने के किसी भी सूरत में गद्दी से नहीं उतारा जा सकता।"

"कमाल है...कत्ल मुख्यमन्त्री का करना है तो कर दो...इतनी हाय-तौबा मचाने की क्या जरूरत है?"

"विस्फोटों के पीछे सिर्फ यही मकसद है कि सरकार और आम आदमी यही समझें कि सी०एम० की हत्या आतंकवादियों की ही कार्यवाही है। तब पुलिस और

छान-बीन करने वाली दूसरी एजेन्सियां गहरी छान-बीन नहीं करेंगी...और इस तरह हरि सिंह गहलौत की तरफ किसी की आंख भी नहीं उठेगी, अगर-सीधे उसे कत्ल किया जाता है तो गहरी छान-बीन होगी और हरि सिंह गहलौत उस छान-बीन के घेरे में आ सकता है।"

सतीश रावण ने हैरानी से आंखें फैलाईं।

"बड़ी तगड़ी स्कीम बनाई है हरि सिंह गहलौत ने...!" वह बोला।

"राजनीति में ऐसी ही चालें चली जाती हैं।"

जहांगीर बोला।

"हाथ ऊपर...।"

AJ SCAN

जहांगीर के नीचे आते हाथ पुनः सिर पर पहुंच गये। साथ ही उसके चेहरे पर हड़हबड़ी उभरी।

“तू आई०एस०आई० का एजेन्ट है या हरि सिंह गहलौत का पालतू...?”

सतीश रावण उसे घूरते हुए बोला।

“अ...आई०एस०आई० का एजेन्ट हूं...।” फंसे स्वर में बोला जहांगीर।

“कब से रह रहा है गंगानगर में...?”

“छः साल हो गये हैं।”

“उससे पहले कहां था...?”

"पंजाब में।"

सतीश रावण ने पहलू बदला और बोला-

"तूने कहा था कि गणतन्त्र दिवस से पहले आई०एस०आई० पांच-छः जगहों पर विस्फोट करेगी...ताकि यहां अफरा-तफरी फैल जाये।"

"हां...।"

"फिर तो तुझे यह भी पता होगा कि विस्फोट कहां-कहां होंगे?"

"य...यह अभी तय नहीं किया गया है। इसके लिये रात को मीटिंग होगी।"

AJ SCAN

“कहां होगी मीटिंग...?”

“भाटिया कॉलोनी में...।”

“पता बोल...।”

rcz202016@gmail.com

जहांगीर ने पता बताया।

“पांच-छः जगह विस्फोट होंगे...यह तूने अभी-अभी कहा है...ऐसे में जाहिर है कि विस्फोटक कई ठिकानों पर पहुंच गये होंगे...क्योंकि ऐन वक्त पर एक ही स्थान से तो विस्फोटक ले जाये नहीं जा सकते...।”

“ह-हां...।”

"कहां-कहां है गोला-बारूद...?"

बुरी तरह से हड़बड़ाया जहांगीर।

"बोल...?" सतीश रावण गुर्राया...साथ ही रिवाल्वर का रुख उसके सीने की तरफ किया। बुरी तरह से थर्राते हुए जहांगीर ने बताया।

"अब रहमान खान और उसके तमाम साथियों के पते बोल।" इन्कार करने की सूरत में नहीं था जहांगीर। सो उसने सब-कुछ बता दिया। यहां तक कि हरि सिंह गहलौत का टेलीफोन नम्बर...उसका मोबाइल नम्बर भी बता दिया और यह भी बताया कि हरि सिंह गहलौत से एस०एस०पी० ने पचास लाख की रिश्वत ली थी...ताकि रात वाली घटना में उसका नाम उजागर नु हो।

सतीश रावण ने उससे कुछेक सवाल और किये फिर गहरी सांस छोड़ते हुए बोला-

AJ SCAN

"तुझे याद होगा...तेरे साथ बातों के दौरान मैंने कहा था कि मेरी मां धन्धा करती थी।"

जहांगीर कुछ नहीं बोला...बस थूक सटक नकर रह गया।

"बोल...याद है कि नहीं...?"

"य...याद है।"

"और रण्डी की औलाद को क्या कहा जाता है...वो भी बोल?"

"ह...हरामजादा...।"

“बिल्कुल ठीक कहा तूने। मैं वाकई हरामजादा हूं... और सबसे बड़ा हरामजादा हूं...क्योंकि मेरी मां का नाम गिनिज बुक में दर्ज है कि उसने एक ही बारी में सौ से ज्यादा आदमियों को खुद पर चढ़ाया था। ”

जहांगीर आंखें फाड़े उसे देखने लगा। जो खुद को ऐसी घिनौनी गाली देते हुए गौरवान्वित हो रहा था।

“अब हरामजादे क्या होते हैं...यह तो तुझे मालूम ही होगा।”

“न...नहीं...।”

“मैं बता देता हूं...। हरामजादे विश्वास के काबिल नहीं होते...वो जिस थाली में खाते हैं...उसी में छेद कर देते है....जिसका दूध पीते हैं...उसी को डस लेते हैं और जिसके तलवे चाटत हैं...उसी की टांग को चीर डालते हैं। यह तो मैंने एक आम हरामजादे की खूबी पेश की है। अब जरा अनुमान लगाओ कि सबसे बड़ा हरामजादा तो इन खूबियों से कितना आगे होगा।”

AJ SCAN

“त...तुम कहना क्या चाहते हो?”

हड़बड़ाते हुए बोला जहांगीर।

rcz202016@gmail.com

“तेरा बाप हरि सिंह गहलौत बेवकूफ था...अगर वह मेरी सेवायें लेता तो अब तक सी०एम० का क्रियाक्रम भी हो चुका होता।”

“अगर तुम कहो तो मैं हरि सिंह गहलौत से बात करूं...?”

“तुम कैसे करोगे बात...?”

“क्यों? क्या मैं बात नहीं कर सकता...?”

नहीं...।"

"मेरी उस तक पहुंच है...मैं उससे बात कर सकता हूं...।"

"नहीं कर सकते...।"

"मैं सच कह रहा हूं, मैं बात कर सकता हूं।"

"और मैं भी सच कह रहा हूं कि तुम उससे क्या किसी से भी बात नहीं कर सकते।"

"क्या मतलब...?"

"मतलब यह कि मुर्दे बोला नहीं करते ...न ही वे चल-फिर सकते हैं।"

AJ SCAN

जहांगीर के चेहरे की रंगत पीली पड़ गई।

“त...तुम मुझे मारोगे...?”

rcz202016@gmail.com

“हरामजादा हूं न... आदत से मजबूर हूं।”

धूर्तता से हंसा सतीश रावण और ट्रेगर दबा दिया। जहांगीर ने खुद को बचाने की पूरी कोशिश की...लेकिन गोली उसकी कोशिश से कहीं ज्यादा तेज निकली। सुराख हो गया उसके सीने में और वह वहीं कुर्सी पर ही एक तरफ को लटक गया। सतीश रावण ने रिवाल्वर की नाल में फूंक मारी...जहांगीर की लाश को देख हौले से हंसा और खड़ा होकर रिवाल्वर जेब में डाल कमरे की तलाशी लेने लगा। पूरे घर की तलाशी ली जहां उसे बस एक रिवाल्वर और तीस हजार रुपये ही मिल पाये।

“हरामी...बना फिरता है आतंकवादी और जेब में सिर्फ तीस हजार रुपये।”

वह लाश को घूरते हुए बड़बड़ाया और दरवाजे की तरफ पलटा। ठीक तभी फोन की घण्टी घनघना उठी।

"ट्रिन...ट्रिन...।"

सतीश रावण ठिठका...कुछ सोचा, फिर फोन की तरफ मुड़ गया।

"हैलो...।" रिसीवर उठाकर वह माउथपीस में बोला।

"जहांगीर से बात कराओ...।"

दूसरी तरफ से आई आवाज को सुन सतीश रावण के होठों पर कुटिल मुस्कान रेंग गई। रहमान खान की आवाज पहचानने में उसे एक पल भी नहीं लगा।

AJ SCAN

“वो बात करने की स्थिति में नही है।” वह बोला।

“क्या मतलब...?” चौकती आवाज।

rcz202016@gmail.com

“उसे मरे हुए दस मिनट से ज्यादा हो गये हैं। किसी ने उसके सीने में सुराख कर दिया है।”

“क्या बकते हो...?” दूसरी तरफ से दहाड़ती आवाज आई।

“मैं बक नहीं रहा हुजूर ...सच कह रहा हूं। मेरे सामने उसकी लाश पड़ी हैं।”

“तुम कौन बोल रहे हो...?”

“वही जो सुबह आपकी कैद से निकल भागा था। इमाम बख्श...उर्फ सतीश रावण।”

दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया।

“क्या बात है जनाब...रावण का नाम सुनकर लकवा मार गया या हवा निकल गई?”

“हरामजादे...तू अभी यहीं हैं।” गुर्राहट उभरी।

“बिल्कुल यही हूं...और हरामजादा तो हूं ही...और यकीन रखियेगा...जब तक मैं अपना घाटा पूरा नहीं कर लेता...मैं यहां से जाने वाला नहीं।”

“कैस घाटा...?”

AJ SCAN

“मेरा नोटों से भरा बैग पुलिस के कब्जे में पहुंच गया है...पता है कितनी मेहनत करनी पड़ी थी, मुझे वह नोट कमाने के लिये । दो-दो कत्ल करने पड़े थे। पूरे पचास लाख थे उस बैग में।”

“बकवास करता है तू...। दस लाख से ऊपर कुछ जेवर ही तो थे उसमें...और तू पचास लाख कह रहा है।”

rcz202016@gmail.com

“जब मैं कह रहा हूं कि पचास लाख थे...तो पचास ही लाख थे और मैं उन्हें वसूल किये बिना यहां से नहीं जाने वाला। अब आप मुझे ढूंढिये...मैं देखता हूं मैं क्या कर सकता हूं? फिलहाल तो जहांगीर मियां की लाश पर आकर फातिहा पढ़िये और इसे दफनाइए...खुदा हाफिज।”

कहकर सतीश रावण ने रिसीवर रखा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया। मकान से निकलकर वह अभी थोड़ी दूर ही पहुंचता था कि पुलिस की एक जीप मकान की सामने आकर रुकी। सतीश रावण के होठों पर मुस्कान फैल गई। उसने गर्दन सीधी की और आगे बढ़ गया।

¶¶

इंस्पेक्टर किशन लाल शर्मा ने जहांगीर की लाश देखी...फिर अपने दायें-बायें खड़े सिपाहियों से बोला।

"मकान की तलाशी लो।"

सिपाही फौरन कमरे से बाहर निकल आसपास के कमरों की तलाशी लेने में जुट गये। अभी थोड़ी देर पहले ही किशन लाल शर्मा को एक गुप्त फोन आया था कि सतीश रावण नाम के एक अपराधी ने जहांगीर का कत्ल कर दिया है। सो वह फौरन चार सिपाहियों के साथ वहां पहुंच गया। लेकिन अपराधी उसके वहां पहुंचने से पहले फरार हो चुका था। किशन लाल शर्मा कत्ल के नाम से इतना नहीं चौंका था, जितना वह सतीश रावण के नाम से चौंका था। फोन पर सतीश रावण का नाम सुनकर उसका चेहरा ऐसे हो गया था, जैसे उसने गंगानगर में प्लेग के आ जाने की खबहर सुनी हो। सतीश रावण का नाम वह पहले कई दफा अखबारों में पढ़ चुका था, मगर अभी तक उसका गंगानगर में आगमन नहीं हुआ था। उसके किस्से पढ़कर ही उसकी खूंखारता और उसकी दरियादिली का पता चला था उसे। ऐसे में अभी थोड़ी देर पहले

AJ SCAN

उसके गंगानगर मैं मौजूद होने की खबर ने उसे भीतर तक हिला दिया था। उसके किस्सों के आधार पर ही वह जान गया था कि वह जहां कहीं भी जाता हैं, वहां से अमन-चैन गायब हो जाता है और उसकी जगह मौत का रुदन शुरू हो जात हैं। इसी वजह से उसने कत्ल की बजाय सतीश रावण में ज्यादा दिलचस्पी दिखाई थी, मगर वह उसके वहां पहुंचने से पहले ही गायब हो गया था। थोड़ी देर बाद सिपाही लौटे। खाली हाथ। किशन लाल शर्मा ने तेजी से कुछ सोचा और फिर वहीं से थाने फोन करके एक सब-इंस्पेक्टर को वहां बुलाया और लाश का पंचनामा तैयार करके उसे पोस्टमार्टम के लिये भेजने का हुक्म दे स्वयं जीप द्वारा एस०एस०पी० के ऑफिस की तरफ रवाना हो गया। कुछ ही देर में वह पुलिस लाइन में बने कुंवर सिंह रावत के ऑफिस में उसके सामने खड़ा था। उसके चेहरे पर फैली उत्तेजना देखकर ही कुंवर सिंह रावत समझ गया था कि वह कोई सनसनीखेज खबर सुनाने के लिये मरा जा रहा है।

rcz2020106@gmail.com

"बैठो...।" गम्भीरता से बोला कुंवर सिंह रावत।

किशन् लाल शर्मा एक कुर्सी पर बैठ गया।

"कोई खास खबर है क्या...?"

“यस सर...।”

“क्या...?”

“एक बहुत बड़ी मुसीबत के पैर पड़ चुके हैं गंगालगर में।”

“किस मुसीबत की बात कर रहे हो तुम...?” माथे पर बल डालते हुए बोला कुवर सिंह रावत।

“सतीश रावण...।”

“सतीश रावण...?”

AJ SCAN

कुंवर सिंह रावत की पहले आंखें सिकुड़ी ...कि वह बुरी तरह से उछल पड़ा।

“कहीं तुम उस सतीश रावण की बात तो नहीं कर रहे जो बहुत बेरहम अपराधी है...?”

“यस सर...।”

कुंवर सिंह रावत की आंखें फैल गईं...साथ ही उसने बेचैनी से पहलू बदला।

“त...तुम्हें कैसे पता लगा?”

किशन लाल शर्मा ने बताया।

“ओह!”

कुंवर सिंह रावत के मुंह से निकला।

“सर...!” किशन लाल शर्मा हिचकिचाते हुए बोला-“यह वही जहांगीर है जिसके बारे में अपको फोन मिला था कि मन्त्री की ड्राइवर आर०डी०एक्स० और ए०के० सैंतालीस जहांगीर के पास ले जा रहा है और फिर मन्त्रीजी की कार में हमने गोला-बारूद के साथ एक व्यक्ति को पकड़ा था, जिसका नाम इमाम बख्श था। ”

“तुम कहना क्या चाहते हो...?”

कुंवर सिंह रावत उसे घूरते हुए बोला।

“मुझे तो लगता है सर कि वह इन्फॉरमेशन ठीक थी। जहांगीर के पास सचमुच असलाह ले जाया जा रहा था। ”

AJ SCAN

“और वह वही जहांगीर था, जिसका कत्ल हुआ है।”

“यस सर...।”

“नॉनसेंस...जब मैंने रात ही कह दिया था कि असलाह कहीं और ले जाया जा रहा था। तुम फिर उसी जहांगीर की रट शुरू कर रहे हो।”

किशन लाल शर्मा के चेहरे पर बेचैनी उभरी।

“मान लो अगर वह ही जहांगीर था तो फिर यह बात सामने आती है कि वह आतंकवादी था। ऐसे में भला सतीश रावण से उसकी क्या दुश्मनी...जो उसने उसका कत्ल कर डाला?”

किशन लाल शर्मा के पास इस बात का कोई जवाब नहीं था।

“सतीश रावण एक अपराधी है...खतरनाक अपराधी...आतंकवाद से उसका कुछ लेना-देना नहीं। वह जहां जाता है, वहां आतंक उससे पहले अपने आप ही पहुंच जाता है। उसकी तलाश में सतर्कता और ज्यादा कर दो।”

“यस सर!”

“नाऊ गो।”

किशन लाल शर्मा खड़ा हो गया।

¶¶

रहमान खान ने किशन लाल शर्मा को जहांगीर के कत्ल की गुप्त सूचना देने का बाद हरि सिंह गहलौत के मोबाइल का नम्बर मिलाया। थोड़ी देर बाद दूसरी तरफ से हरि सिंह गहलौत की आवाज आई—“हैलो!”

AJ SCAN

“मै बोल रहा हूं नेताजी!” रहमान खान बोला।

“हां बोलो!”

rcz202016@gmail.com

“आसपास कोई बैठा है क्या...?”

“नहीं...कोई खास बात है क्या....?”

“जहांगीर का खून हो गया है।”

“क्या ...?” बुरी तरह से चौंकती आवाज आई—“किसने किया...?”

“उसी सतीश रावण ने जिसे हमने पुलिस के पंजे से छुड़ाया था।”

“क...क्या...क्या कहा...सतीश रावण...?” दूसरी तरफ से आई आवाज में हड़बड़ी थी।

“जी हां...।”

“वह...सतीश रावण था?”

“जी हां...मगर आपकी आवाज को क्या हुआ...?” सतीश रावण का नाम ही आपकी आवाज में थर्राहट पैदा कर रहा है।

“बहुत बड़ा हरामी है वो। तुम नहीं जानते उसे...मगर पूरे हिन्दुस्तान की पुलिस उसे जानती है। पता नहीं कितने ही कत्ल कर चुका है वो और कितनों को धोखा दे चुका है...विश्वास नहीं होता कि वह यहां गंगानगर में है।”

AJ SCAN

दूसरी तरफ से गहरी सांसर छोड़ी गई।

“काश कि उसे उसी वक्त खत्म कर दिया होता, तो आने वाली सिरदर्दी हमेशा के लिये खत्म हो जाती।”

rcz202016@gmail.com

रहमान खान मुस्कुराया-

“आप उसके बारे में कुछ ज्यादा ही सहमे-से बोल रहे हैं। काफी डरे हुए लग रहे हैं आप उससे।”

“मैं उससे डर नहीं रहा।”

“तो फिर...?”

"मैं तो यह सोचकर घबरा रहा हूं कि वह किसी भी वक्त हमारे लिये कोई बखेड़ा कर सकता है। मेरी राह में रोड़े अटका सकता हैं। तुम नहीं जाने रहमान खान...वह हरामी जो न कर गुजरे...वही कम है।"

"ठीक है...।" गहरी सांस छोड़ी रहमान खान ने-"मैं अभी कुछ आदमियों को उसे ढूंढने पर लगाता हूं।"

उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और कुर्सी की पुश्त से टेक लगा ली। हरि सिंह गहलौत जिस तरह से सतीश रावण को ले रहा था। उससे साफ पता चल रहा था कि वह कोई छोटी-मोटी हस्ती नहीं...और अपनी हस्ती की पहचान उसने जहांगीर का कत्ल करके दे दी है। ऊपर से उसने फोन पर खुले तौर पर उसे चुनौती दे दी है कि वह उन सबको खत्म करके ही गंगानगर से रवाना होगा। अभी तो उसने यहां आतंक की शुरूआत भी नहीं की थी, यह नई मुसीबत उसके सिर आ पड़ी थी। जो भी था...अब इस मुसीबत को खत्म तो करना ही था। उसने गहरी सांस छोड़ी और आंखें बन्द किये हुए ही आवाज लगाई—

"अशरफ...!"

AJ SCAN

थोड़ी देर बाद करीब पच्चीस-छब्बीस साल का व्यक्ति कमरे में प्रविष्ट हुआ। रहमान खान ने आंखें खोलते हुए पहलू बदला और बोला-

“आज सुबह सतीश नाम का जो शख्स हमारे एक साथी का कत्ल करके फरार हो गया था...वह अभी गंगानगर में ही है और उसने जहांगीर का कत्ल कर दिया है।cz202016@gmail.com

“या खुदा...!” हैरानी से बोला अशरफ।

“और उसने फोन पर हमें चैलज किया है कि वह हमें भी खत्म कर देगा।”

“उसकी इतनी मजाल...।” दांत किटकिटाये अशरफ ने।

"इससे पहले कि उसके हौसले बुलन्द हों...उसे ढूंढो और खत्म कर दो।" गम्भीरता से बोला रहमान खान-"और इस काम के लिये तुम लोकल आदमियों को लगा देना।"

"जी जनाब...!"

सिर हिलाया अशरफ ने।

¶¶

रहमान खान से सतीश रावण के बारे में सुनकर हरि सिंह गहलौत के पैरों तले से धरती ही खिसक गई थी। सतीश रावण के बारे में उसने न केवल पढ़ रखा था...बल्कि काफी कुछ सुन भी रखा था उसने। रहमान खान का फोन आने के बाद वह उसी के ही बारे में सोच रहा था कि फोन की घंटी घनघना उठी। इस बार मोबाइल फोन बजा था। उसने रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए बोला—

AJ SCAN

"हैलो...!"

"नमस्कार मन्त्रीजी!" दूसरी तरफ से आवाज आई। बुरी तरह से चौंका हरि सिंह गहलौत। सतीश रावण की आवाज पहचानने में उससे जरा-सी भी भूल नहीं हुई।

"त...तुम...सतीश रावण...।" उसके होठों से अस्फुट स्वर निकला।

"बड़ी जल्दी खबर पहुंच गई तुम तक। रहमान ने किया होगा फोन?"

दूसरी तरफ से हंसी उभरी।

"फोन क्यों किया...?"

स्वयं को सम्भालते हुए बोल हरि सिंह गहलौत।

“मेरा पचास लाख का कर्जा है तुम पर....वही याद करा रहा हूं...।”

“पचास जूते जरूर मार सकता हूं तुम पर...।” गुर्राया हरि सिंह गहलौत।

“जूते तुम्हें मुबारक...मुझे तो पचास लाख से मतलब है।”

“एक धेला भी नहीं मिलेगा तुम्हें...।”

“क्या सी०एम० नहीं बनना चाहते तुम...?”

“क्या मतलब...?”

AJ SCAN

हड़बड़ाया हरि सिंह गहलौत।

“जहांगीर ने मरने से पहले मुझे तेरे बारे में बहुत कुछ बता दिया था।”

हरि सिंह गहलौत की रंगत फीकी पड़ गई। उसने जोरों से थूक सट्की और फंसे स्वर में बोला—

@gmail.com

“क्या बताया था...?”

“यही कि तू वर्तमान सी०एम० को खत्म कर खुद सी०एम० बनने की फिराक में है और यह काम छब्बीस जनवरी को होगा। यानी सी०एम० का कत्ल छब्बीस जनवरी को करने की प्लानिंग है तुम्हारी।”

“बकवास...कोरी बकवास...।”

“लेकिन सी०एम० से बकवास नहीं समझेगा।”

“क्या मतलब...?” पुनः हड़बड़ाया हरि सिंह गहलौत।

“अगर तू पचास लाख से इन्कार करेगा तो मैं यह खबर सी०एम० के कानों में डाल दूंगा। उसके बाद तेरा क्या होगा...इसका तू खुद अन्दाजा लगा सकता है। तब सी०एम० का तो कुछ नहीं बिगड़ेगा और तेरा कुछ भी नहीं बचेगा...।”

हरि सिंह गहलौत के गले की घण्टी उछल कर नीचे गिरी।

“त...तुम क्या समझते हो? सी०एम० तुम्हारे जैसे हरामी की बात पर विश्वास कर लेगा?”

“वो विश्वास करे न करे...मगर मेरी बात को गम्भीरता से जरूर लिया जायेगा...और सी०एम० की सुरक्षा-व्यवस्था इतनी मजबूत कर दी जायेगी कि तू और

AJ SCAN

तेरे आतंकवादी भाई चाहकर भी उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पायेंगे।”

दूसरी तरफ से सतीश रावण की आवाज आई...फिर आगे कहा गया।

“उसके साथ ही तुम पर जासूसों की नजर पड़ जायेगी...और फिर तुम कोई भी खेल नहीं खेल पाओगे...यहां तक कि किसी आंतकवादी से भी नहीं मिल पाओगे। यानी कुल मिलाकर कुछ भी नहीं कर पाओगे तुम...।”

हरि सिंह गहलौत के चेहरे पर पसीने की बूंदे चमकने लगीं।

“क...क्या चाहते हो...?” वह थर्राये स्वर में बोला। सतीश रावण की बातों ने ही उसके पसीने छुड़ा दिये थे।

“सिर्फ पचास लाख का सवाल है बाबा...!”

“ल...लेकिने इतना पैसा मेरा पास एक मुश्त नहीं है। ”

“तो इक्ट्ठा कर...इधर-उधर हाथ-पैर मार। वैसे एक बात बताऊं...?”

“क्या...?”

“तू झूठ बोल रहा है...पचास लाख क्या, तेरे पास पचास करोड़ भी हो सकते हैं।”

“म...मैं सच कह रहा हूं...।”

“तेरे जैसे अपनी मां के दलाल के पास पैसे की क्या कमी, गहलौत।”

हरि सिंह का चेहरा कानों तक लाल हो उठा।

AJ SCAN

“त...तुम हद से गुजर रहे हो सतीश रावण...!”

“मैं हमेशा हद से ही गुजरता हूं। हद से गुजरना मुझे विरासत में मिला है। मेरी मां ने लोगों के नीचे बिछने में हद पार की थी। पूरे दिन में अगर वह दस-पन्द्रह को खा नहीं लेती थी, तो उसे खुजली शुरू हो जाती थी। फिर मैंने हद पार की...नौ की बजाय मैं अट्ठारह महीने तक अपनी मां के पेट में रहा...सिर्फ इसलिये कि ज्यादा-से-ज्यादा आदमियों का खून अपनी रगों में भर सकूं...और फिर पैदा होते ही मैंने हद पार की। दाई की उंगलियों को काट खाया था मैंने...और उसके बाद तो मैं हमेशा ही हदें पार करता रहा।”

“बड़े अजीब शख्स हो...अपनी ही मां को गाली निकाल रहे हो।”

“ठीक है...अब तुम्हारी मां को निकाल देता हूं। कितने आदमी चढ़े थे तुम्हारी मां पर...?”

हरि सिंह गहलौत का पूरा बदन सुलग उठा। आंखों में अंगारे दहकने लगे।

"हरामजादे...।" वह फुंफकारा।

"वो तो हूं ही...।" दूसरी तरफ से हंसी उभरी।

"सूअर की औलाद...।"

"क्या तू भी चढ़ा था मेरी मां पर...?"

हरि सिंह गहलौत का दिमाग भिन्ना गया। सतीश रावण ने साफ-साफ उसे सूअर की संज्ञा दे दी थी।

"त...तुम...।"

AJ SCAN

“बातों में तू मुझसे नहीं जीत पायेगा हरि सिंह गहलौत...बल्कि हर बार एक नई गाली सुनेगा। इसलिये मतलब की बात कर ...पचास लाख देता है या नहीं...?”

दूसरी तरफ से गुर्राहट उभरी।

rcz202016@gmail.com

“म...मैंने कहा न इतनी मोटी रकम इकट्ठी करने के लिए वक्त चाहिये...।”

“और वक्त छब्बीस जनवरी के बाद पूरा होगा। सी०एम०के कत्ल के बाद।”

हरि सिंह गहरलौत ने जोरों से थूक सटकी।

“आज रात तक का वक्त है तेरे पास...अगर रात बारह बजे तक पचास लाख दे सकता है तो बोल...वरना मैं सी०एम० को फोन करता हूं।”

"म...मैं तैयार हूं।"

"कुछ हद तक समझदार है तू।" हंसी उभरी।

"कहां पहुंचाना है रुपया...?"

"रुपया लेकर मैं फौरन यहां से दफा हो जाना चाहता हूं।"

दूसरी तरफ से सतीश रावण की आवाज आई-"रात बारह बजकर दस मिनट पर यहां से दिल्ली के लिये ट्रेन रवाना होती है, तू पचास लाख लेकर स्टेशन पर पहुंच जाना...।"

"म...मैं वहां नहीं पहुंच सकता।"

AJ SCAN

“क्यों...?”

“समझने की कोशिश करो सतीश रावण...मैं मन्त्री हूं...साथ में स्थानीय विधायक भी हूं...पूरा गंगानगर जानता है मुझे...।ऐसे में अगर मैं पचास लाख लेकर वहां पहुंचा और किसी पत्रकार की निगाह में चढ़ गया तो मेरा तो कैरियर ही तबाह हो जायेगा।”

02016@gmail.com

“तू ठीक कह रहा है।”

“मैं अपने किसी आदमी को भेज दूंगा रुपया देकर। तुम उससे रुपया ले लेना और दफा हो जाना।”

“कौन होगा वह आदमी...?”

"माहेश्वरी होगा उसका नाम।" बोला हरि सिंह गहलौत।

"उसकी कोई खास निशानी बता...।"

"वह लम्बा और काले रंग का होगा।"

"ठीक है...।" दूसरी तरफ से सतीश रावण की आवाज आई—"मैं वहां इन्तजार करूंगा। गाड़ी छूटने से पहले-पहले रुपया पहुंच जाना चाहिये...।"

"पहुंच जायेगा।"

"और एक बात कान खोलकर सुन ले हरि सिंह गहलौत...!"

"क्या...?"

AJ SCAN

“बहुत बड़ा हरामजादा हूं मैं...अगर तूने भी मेरी कैटेगिरी में आने की कोशिशि की तो मैं क्या कर गुजरूंगा...इसका तू अंदाजा भी नहीं लगा सकता. इसलिये जैसा सीधा बोल रहा है, वैसा ही सीधा चलना।”

“मैं कोई चाल नहीं चलूंगा।”

rcz202016@gmail.com

“इसी में तेरी भलाई है। रात को बारह दस वाली ट्रेन छूटने से पहले...।”

“मुझे याद है।”

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया। हरि सिंह गहलौत ने रिसीवर रखा और जेब से मोबाइल फोन निकालकर रहमान खान का नम्बर मिलाने लगा।

“हैलो...।” तभी रहमान खान की आवाज उसके कान के परेदे से टकराई।

“मैं बोल रहा हूं...।”

“खैरियत तो है? अभी-अभी तो बात की आपसे फोन पर...।”

“उसका फोन आया था...।”

“किसका...?”

“सतीश रावण का।”

“क्या...?” चौंकती आवाज।

AJ SCAN

"पचास लाख मांग रहा था...। न देने की सूरत में उसने धमकी दी कि वह सी०एम० को मेरी हकीकत बता देगा।"

"फिर?"

"फिर क्या...मैंने हां कर दी और रात को बारह बजे स्टेशन पर पचास लाख पहुंचाने का वादा कर दिया।"

"यह आपने क्या किया...? पचास लाख देने का तैयार हो गये आप...वो भी एक टुच्चे अपराधी की धमकी पर।"

"वह टुच्चा अपराधी तो हरगिज नहीं...बड़ी पहुंच हुई शै है वो। रही बात वादा करने की तो मैंने सिर्फ वादा ही किया है, निभाया तो नहीं...।"

"क्या मतलब...?"

“काफी कुछ सुन रखा है मैंने उसके बारे में। पचास लाख से पेट भरने वाला नहीं उसका...अगर वह पचास लाख पर सब्र करके भागने वालों में होता तो भी मैं उसे एक फूटी कोड़ी नहीं देता। मैं जानता हूं कि एक बार खून मुंह लग जाने पर वह मुझे बार-बार खाने को दौड़ेगा..ऐसा कुत्ता है वो।”

“फिर भी वादा नहीं करना चाहिये था आपको...।”

“वादा मैंने बहुत सोच-विचार कर किया है।”

“क्या मतलब...?”

“पचास लाख की गंध सूंघता वह स्टेशन पर खिंचा आयेगा...और स्टेशन से सीधा ऊपर की तरफ रवाना हो जायेगा...समझे...?”

AJ SCAN

"मैं समझ गया...।" दूसरी तरफ से हंसीभरी आवाज आई-"वाकई आपने बहुत दूर की सोची है नेताजी!"

"तो फिर बन्दोबस्त कर लो। वहां पहुंचे और हमारे जाल में फंस जाये।"

"ऐसा ही होगा।"

rcz20 gmail.com

हरि सिंह गहलौत ने मोबाइल फोन ऑफ किया और उसे जेब में डालते हुए दांत पीसते हुए बड़बड़ाया-

"हरामजादे...मुझे हरामजादा कहा था तूने...सूअर कहा था मुझे...अब पता लगेगा तुझे कि हरि सिंह गहलौत क्या बला है...गीदड़ की जब मौत आती है तो वह शहर की तरफ भागता है। तेरी मौत तुझे यहां गंगानगर में खींच लाई है।"

अब उसे क्या पता था कि जिसे मौत देने के वह सपने संजो रहा है...वह हकीकत में एक शैतान आत्मा है। वो शैतान आत्मा जिसे पता है कि ऊपरवाले के खाते में उसकी मौत लिखी हुई है!

¶¶

सतीश रावण ठीक नौ बजे एक घटिया से ढाबे से निकला और एक रिक्शा पकड़कर रेलवे स्टेशन की तरफ रवाना हो गया। जहांगीर को खत्म करने का बाद वह गोल मार्केट पहुंचा... वहां उसने आशा गेस्ट हाउस में एक कमरा लिया और अपनी रिवाल्वर तथा जहांगीर से हाथ आई रिवाल्वर बैड तथा बाकी सारा रुपया भी गद्दे के नीचे रख दिया। अपने पास उसने सिर्फ पांच हजार रुपया ही रखा था। तत्पश्चात् वह बाहर निकला और एक पब्लिक टेलीफोन बूथ से हरि सिंह गहलौत को फोन किया और वापिस कमरे में आकर सो गया। तब का सोया वह शाम सात बजे जाकर उठा। अटैच्ड बाथरूम में नहा-धोकर वह बाहर निकला...कमरे को ताला लगाया और सीढ़ियां उतरकर नीचे आ गया, जहां काउण्टर के पीछे एक हसीन-तरीन युवती बैठी हुई थी। सतीश रावण चूंकि उस वक्त सरदार के वेश मैं था...इसलिये उसने उस बिना संवरे सरदार की तरफ तवज्जो नहीं दी। सतीश रावण ने एक भरपूर निगाह उसके ब्लाऊज में से झांकते उरोजों पर डाली और एक गहरी सांस छोड़कर दरवाजे की तरफ बढ़ गया। आठ बजे कर वह शहर की सड़कों को नापता रहा और फिर एक ढाबे में घुस गया। वह जानता था कि जिस मेकअप में वह है...उस मेकअप में किसी शानदार

AJ SCAN

होटल में नहीं जाया जा सकता। इसलिये उसने ढाब में ही खाना खाया। ढाबा बेशक मैला-कुचैला था, मगर वहां जो डिनर बना था वह बेहद लाजवाब था। अपनी भूख से कुछ ज्यादा खा गया था वह। और फिर ठीक नौ बजे वह स्टेशन की तरफ रवाना हो गया। सवा नौ बजे वह स्टेशन के सामने रिक्शा से उतरा...किराया चुकाया और गेट के पास फर्श पर ही इस तरह बैठ गया मानो बहुत थक गया हो। ठीक साढ़े नौ बजे एक टाटा सुमो उससे थोड़ी दूरी पर रुकी। सतीश रावण की निगाहें उस पर जम गईं। टाटा सुमों के दरवाजे खुले और उसमे से एक-के-पीछे-एक आठ आदमी बाहर निकले। सभी-के-सभी चेहरे से खूंखार नजर आ रहे थे। उन पर घूमती हुई सतीश रावण की निगाहें सबसे बायीं तरफ वाले व्यक्ति पर पड़ीं तो उसके होठों पर एक कुटिल मुस्कान आकर लुप्त हो गई। वह उनमें से था, जो उसे हनुमान गढ़ की सीमा से रहमान खान के पास लेकर गये थे। उसे पहचानने में सतीश रावण को जरा-सी भी देर नहीं लगी।

rc2202016@gmail.com

“मैं वहां रहूंगा।” वह व्यक्ति अन्यों से बोला—“चूंकि वह मुझे पहचान सकता है...इसलिये मेरा उसकी नजरों से दूर रहना ही बेहतर है...तुम यहां चारों तरफ फैल जाओ।”

सभी ने एक साथ सिर हिलाये।

"बहुत तेजतर्रार है वह। वह अवश्य ही बारह बजने से पहले यहां देखने आयेगा कि हमने कोई जाल तो नहीं बिछा रखा। इसलिये मैं तुम्हें वक्त से ढाई घण्टे पहले यहां ले आया, ताकि उसे कोई संदेह न हो।"

सभी ने एक बार फिर सिर हिलाये।

"कोई भी नया शख्स यहां पर पहुंचते ही तुम लोग मेरी तरफ जरूर देखना...और जिस पर भी मैं इशारा करूं...उसे फौरन गोलियों से भून देना। ओ०के०....?"

सभी ने सिर हिलाये।

"मैं जाऊं...?"

AJ SCAN

सभी के सिर फिर हिले। वह आदमी एक तरफ बढ़ गया, जबकि बाकी सात में से तीन स्टेशन के भीतर चले गये और बाकी के चार बाहर ही इधर-उधर फैल गये। सतीश रावण मन-ही-मन मुस्कुराया।

"तू डाल-डाल..मैं पात-पात...।" वह बड़बड़ाया—"यूं ही सबसे हरामी नहीं कहलाता मैं। अब देखना...क्या करता हूं मैं।"

rcz202016@gmail.com

थोड़ी देर वहीं बैठे रहने के पश्चात् वह उठा और एक तरफ चल पड़ा। कुछ दूर चलने के पश्चात् उसने एक ऑटोरिक्श पकड़ी और वापिस गेस्ट हाउस की तरफ बढ़ गया। रिसेप्शन पर अभी भी वही युवती बैठी थी। सतीश रावण ने उसके गले मैं निगाह डाली...एक ठण्डी आह भरी और अपने कमरे में चला गया। वहां से उसने दोनों रिवाल्वर बरामद कीं। एक रिवाल्वर को उसने अपनी पैंट की जेब में डाला, जबकि दूसरी पैंट की बैल्ट में फंसा कर ऊपर शर्ट कर ली। वह वापिस काउण्टर पर आया और चाबी चुवती की तरफ बढ़ाते हुए बोला—

"मैं दो-तीन घण्टे के लिये किसी काम से जा रहा हूं।"

"अगर आप डिनर करना चाहते हैं तो वो आपको यहीं मिल सकता है।"

"मैं वो वाला डिनर कर चुका हूं...अब दूसरा डिनर करने की तमन्ना है...उसी के लिये जा रहा हूं...।"

कहते हुए उसने धूर्तता से उसकी छातियों को घूरा और फिर दरवाजे की तरफ मुड़ गया। युवती ने घूरकर उसकी पीठ को देखा...फिर काउण्टर पर रखी पत्रिका उठाकर पढ़ने लगी।

¶¶

ग्यारह बजे सतीश रावण एक पुराने दो-मंजिला मकान के दरवाजे के सामने रुका। मकान की बाहरी दीवालों को प्लास्टर कई जगहों से उखड़ा हुआ था और उसके पीछे से छोटी ईंटें नजर आ रही थीं। दीवारों की ही तरह दरवाजा भी खस्ताहाल हो रहा था, मगर उसमें मजबूती अभी भी बरकरार थी। सतीश रावण ने बिना हिचकिचाहट के कुण्डे को पकड़ा और दरवाजे पर तीन-चार दफा मारा।

AJ SCAN

“खड़...खड़...खड़...।”

कुण्डा छोड़ उसने अपने कॉलर में हाथ डाला और आरी निकाल ली।

rcz202016@gmail.com

“कौन है...?” थोड़ी देर बाद भीतर से गुर्राती आवाज आई।

“मैं हूं...दरवाजा खोलो।” सतीश रावण बोला।

“मैं कौन?”

“मुस्तकीम...खान साहब ने भेजा है मुझे।”

खान के नाम ने असर किया। अन्दर से सांकल हटाये जाने की आवाज आई...और जैसे ही दरवाजा खुला-सतीश रावण की आरी बिजली की तरह चमकी। एक पल भी नहीं लगा कि दरवाजा खोलने वाले की गर्दन धड़ से अलग हो गई। गर्दन कटते ही वह जैसे ही सतीश रावण की तरफ गिरने को हुआ...सतीश रावण ने अपनी टांग उसके पेट में दे मारी। नतीजा... वह आगे की बजाय पीछे पीठ के बल जा गिरा। सतीश रावण भीतर दाखिल हुआ और दरवाजा बन्द करके सांकल चढ़ाकर सामने देखा। दायीं तरफ लम्बा बरामदा था, जिसमें कि तीन दरवाजे थे...उनमें से सबसे पीछे वाला दरवाजा खुला हुआ था और उसमें से रोशनी आ रही थी। खून से सनी आरी सम्भाले सतीश रावण उधर बढ़ा और दरवाजे के करीब पहुंचकर भीतर झांका। भीतर एक आदमी एक मोबाइल फोन खोले बैठा था। उसके करीब ही पांच वैसे ही मोबाइल को देखा तो मुस्कुरा पड़ा। बम फिट था उसमें। ठीक तभी उस व्यक्ति की गर्दन सतीश रावण की तरफ घूमी। एक अंजान आदमी को देख वह पहले तो चौंका...फिर उसने तेजी से अपनी जेब की तरफ हाथ बढ़ाया। इधर सतीश रावण पर रिवाल्वर तानी। उधर सतीश रावण की आरी लहराई।

"खचाक्!"

उस आदमी की रिवाल्वर वाली कलाई कट गई। रिवाल्वर उसके हाथ से छूट गई और उसने हौले से चीखते हुए अपनी बांह दबा ली तथा सतीश रावण को आतंकभरी निगाहों से देखने लगा।

AJ SCAN

"कौन हो तुम...?" वह कांपते स्वर में बोला।

"सतीश रावण...तेरे बाप रहमान खान का दुश्मन ....बाहर दरवाजे के पास तेरे साथी की लाश पड़ी है और अब तेरी बारी है। मरेगा न तू...!"

rcz202016@gmail.com

उस आदमी ने जोरों से थूक सटकी। सतीश रावण ने रिवाल्वर अपने कब्जे में की और एक मोबाइल फोन उठाकर उसकी तरफ देखा।

"बम फिट कर रहा है इसमें....?"

जवाब में उस व्यक्ति के गले की घण्टी पुनः उछली।

"जवाब दे...।"

“ह...हां...।”

“यह पांचों मोबाइल बम तैयार हैं....?”

“हां...।”

“विस्फोट कैसे होगा इसमें....?”

“इ...इसका ऑन का बटन दबते ही यह फट पड़ेगा।”

“पावर कितनी है इसमें...?”

AJ SCAN

“अ...आस-पास के दस गज के इलाके को मटियामेट कर सकता है यह।”

“और कितने बम तैयार हैं...?”

“ब...बस....यही पांच तैयार हैं...छठा यह कर रहा हूं...।”

rcz202016@gmail.com

“नाम क्या है तेरा...?”

“र...रहीम...।”

“कितने बम तैयार करने हैं तूने...?”

“बस...यही छः बम ही तैयार होंगे...।”

"फिर...?"

"कल सुबह इन्हें अलग-अलग स्थानों पर रख देना था। ऐसे कि देखने वाला यही समझे कि किसी का मोबाइल फोन गिर गया है...।"

"और वह इसे उठाकर वैसे ही ऑन करेगा...बम फट पड़ेगा और आसपास के दस गज के इलाके को तहस-नहस कर देगा...।"

रहीम कुछ नहीं बोला...बस होठों पर जुबान फेर कर रह गया।

"वर्क कैसे करता है बम...?" सतीश रावण ने पूछा। रहीम ने खुले हुए मोबाइल बम को उसे दिखाया और एक स्थान पर उंगली रखते हुए बोला-

AJ SCAN

"यह दोनों प्वांइट ऑन के बटन के साथ जोड़ दिये जाते हैं। जैसे ही बटन ऑन होगा...दोनों प्वाइंट आपस में मिल जायेंगे...और बम फट पड़ेगा।"

सतीश रावण ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया और आगे बोला-

rcz2010@gmail.com

"इस मकान में बमों के अलावा और क्या-क्या है?"

"कुछ नहीं...।"

"कुछ भी नहीं...!"

"न...नहीं...रहमान खान ने बस यही छः मोबाइल बम दिये थे।"

"किराये का है...।"

सतीश रावण ने कुछेक सवाल और किये और फिर आरी चला दी।

"खचाक्" की आवाज के साथ रहीम की गर्दन कट गई और वह वहीं एक तरफ लम बा हो छटपटाने लगा। सतीश रावण ने आरी उसके कपड़ों से साफ की और उसे अपनी पीठ पर चिपका कर खुले हुए बम को उठाकर देखा...फिर वापिस रहीम की लाश के पास रख दिया। तत्पश्चात् वह उसके पास से हटा और कमरे में इधर-उधर निगाह मारी। शीघ्र ही उसकी निगाहें फ्लैक्सीबल तार के एक रोल पर जा अटकीं जो कि कोने में एक टेबल के ऊपर पड़ा था। कुछ देर तक वह तार को देखता रहा...फिर एकाएक ही उसके होठों पर पैशाचिक मुस्कान नाच उठी। वह आगे बढ़ा और तार का रोल उठाकर खोला और उसका सिरा रहीम की लाश की बांह के साथ बांधकर तार को खोलता हुआ कमरे से बाहर निकलकर आंगन पार करता हुआ दरवाजे के करीब जाकर ठिठका। उसने सांकल हटाकर दरवाजा खोला और वहां पड़ी लाश को फांदता हुआ मकान से बाहर आ गया। तार को गली की नाली मैं बिछाते हुए वह सड़क की तरफ बढ़ने लगा। कुछ ही देर में वह सड़क पर था। उसने दांतों से तार को काटा और उसके सिरे दांतों से छीलकर इंसूलेशन उतारा और वहीं एक तरफ रखकर बाकी बची तार के साथ वापिस मकान में आ गया। कमरे में आकर उसने रोल को एक तरफ फेंका और रहीम की लाश से बंधी तार को खोलकर उसके सिरे दांतों से इंसूलेशन से मुक्त किये और दोनों सिरे खुले हुए बम के दोनों प्वाइंट से जोड़ दिये। तत्पश्चात् उसने तैयार बमों को थैने में डाला जो कि उसे वहीं पड़ा मिला था और मकान से बाहर आ गया। दरवाजा बन्द करके वह वहां से हटा और सड़क पर आकर इधर-उधर देखा। पूरी

AJ SCAN

तरह से आश्वस्त होकर कि आसपास कोई नहीं...उसने तार के दोनों सिरे उठाये और उन्हें आपस में मिला दिया। सिरों के मिलने की देर थी कि जैसे कहर टूट पड़ा गली में।
“बड़ा...म...।”

एक गगनभेदी विस्फोट हुआ और उस मकान के साथ-साथ आसपास के दो अन्य मकान भी ध्वस्त हो गये। विस्फोट की भीषणता का पता इसी से चल रहा था कि सतीश रावण जो कि वहां से साठ-सत्तर गज के फासले पर था...उछल कर एक तरफ जा गिरा था। गिरते ही वह सम्भला...बमों वाले थैने को उठाया और वहां से भाग खड़ा हुआ। कुछ ही देर में वह गलियों में से होता हुआ एक सड़क पर जा पहुंचा । वहां से उसने एक रिक्शा पकड़ी और रवाना हो गया।

rcz202016@gmail.com

“इधर गली में मोड़ दे।”

थोड़ी देर चलने पर सतीश रावण रिक्शा-पोलर से बोला। पोलर ने रिक्शा उसके कहे अनुसार दायीं तरफ एक गली में मोड़ दिया। गली पूरी तरह से सुनसान थी। सतीश रावण ने रिक्शा एक मकान के आगे रुकवाई और नीचे उतर गया।

“कितने पैसे...?”

“पांच रुपये...।” रिक्शा पोलर बोला। सतीश रावण ने जेब से नोट निकाले और उन्हें इस प्रकार खोलने लगा जैसे वह उनमें से पांच का नोट ढूंढ रहा हो। तभी पचास का एक नोट उसेक हाथों से निकलकर नीचे गिर पड़ा।

“इसे उठाना।” सतीश रावण बोला। रिक्शा पोलर रिक्शा के पास से हटकर नोट के करीब आया और उसे उठाने के लिये झुका। नोट उठाकर अभी वह सीधा ही हो रहा था कि तभी-

“खचाक्...!”

सतीश रावण की आरी पूरे वेग से उसकी गर्दन पर चली। रिक्शा पोलर वहीं सड़क पर लम्बा हो छटपटाने लगा। आधी से ज्यादा गर्दन कट चुकी थी उसकी। बचने का चांस एक प्रतिशत भी नहीं था। सतीश रावण ने आरी उसके कपड़ों से साफ कर अपनी पीठ पर चिपकाई और दूसरे हाथ में पकड़े नोटों को जेब में डालकर रिक्शा की तरफ मुड़ा। उसने उसकी सवारी वाली गद्दी उठाई. नीचे एक खाना बना हुआ था, जिसमें कि नाइलोन की एक रस्सी...एक पुराना कपड़ा पड़ा था। सतीश रावण ने मोबाइल बमों वाला थैला उस खाने में डाला और गद्दी को ऊपर रखकर हैडल पकड़ा

AJ SCAN

तथा रिक्शा मोड़कर उस पर बैठकर पैडल मारता हुआ सड़क पर आ गया। कुछ ही देर में वह नारायण बाग की तरफ बढ़ रहा था।

¶¶

“बड़ा...म...।”

rcz202016@gmail.com

गगनभेदी धमाके की आवाज सुनकर बुरी तरह से उछल पड़ा सब-इंस्पेक्टर राजपूत। उसके साथ खड़े चार सिपाही भी बुरी तरह से उछल पड़े। उस वक्त राजपूत एक चैकपोस्ट पर खड़ा आने-जाने वाले वाहनों की चैकिंग कर रहा था।

“यह तो किसी बम फटने की आवाज है सर!”

एक सिपाही बोला।

"तुम दोनों यहीं रहो...और तुम मेरे साथ चलो।"

सड़क किनारे खड़ी अपनी जीप की तरफ झपटता हुआ बोला राजपूत। दोनों सिपाही उसके पीछे-पीछे लपके। कुछ ही पलों में वह दोनों सिपाहियों के साथ जीप में बैठा घटनास्थल की तरफ उड़ा जा रहा था, जिधर से कि धमाके की आवाज आई थी। थोड़ी दूर चलने पर उसे बायीं तरफ से लोगों का शोर उठता सुनाई दिया। उसने फौरन स्टेयरिंग बायीं तरफ घूमा दिया। करीब दो सौ गज पे लोगों का हुजूम खड़ा था। राजपूत ने तुरन्त जीप का सायरन बजा दिया।

"पी...पी...पी...।"

पुलिस के सायरन की तेज आवाज से लोगों का ध्यान जीप की तरफ गया और वे उसे रास्ता देने के लिये एक तरफ हटने लगे। जीप उस गली के सामने जाकर रुकी जिसमें कि विस्फोट हुआ था। जीप में बैठे-बैठे ही राजपूत ने उधर देखा। तीन मकान पूरी तरह से ध्वस्त हो गये थे तथा आसपास के अन्य मकानों में दरारें पड़ गई थीं। ध्वस्त हुए मकान में से दो-तीन जगहों से आग की लपटें निकल रही थीं तथा पूरी गली मलबे से भरी पड़ी थी। राजपूत ने करीब खड़े एक व्यक्ति को बुलाया।

AJ SCAN

“क्या हुआ...?” उसने पूछा।

“पता नहीं साहब...।” वह व्यक्ति बोला-“मैं तो सो रहा था। तभी एकाएक जबरदस्त धमाका हुआ और मेरा पूरा मकान हिल गया। डर कर मैं बाहर निकला तो इन मकानों को आग की लपटों मैं घिरा पाया।”

rcz202016@gmail.com

“कौन रहते थे इन मकानों में...?”

“वो तो शर्मा जी का मकान है।” उस व्यक्ति ने पहले मकान की तरफ इशारा किया...“उससे आगे रहीम रहता हैं, फिर पुरोहित जी का मकान है।”

“शर्मा जी पूरे परिवार के साथ रहते हैं यहां...?”

“जी हां...। उनकी पत्नी...तीन बच्चे और उनकी बूढ़ी मां सभी यहीं रहते हैं।”

“और रहीम...?”

“वह अकेला ही रहता है।”

“बिल्कुल ...?”

“जी हां...किराये पर रहता है वह।”

“पुरोहित जी...?”

“वह भी अकेले रहते हैं।”

AJ SCAN

"उनके परिवार में कोई नहीं क्या...?"

"दो बच्चे हैं उनके...हरियाणा में रहते हैं वे...पत्नी मर चुकी है।"

"तुम्हारा मकान कौन-सा है...?"

rcz202016@gmail.com

"यह रहा।" उसने गली के सिरे वाले मकान की तरफ इशारा किया। राजपूत ने एक नजर उसके मकान पर डाली, फिर वायरलैस सैट ऑन करके पहले कुंवर सिंह रावत के रीडर को विस्फोट की खबर दी...फिर थाने में मैसेज भेज दिया। तत्पश्चात् वह सिपाहियों के साथ जीप से निकला और ध्वस्त हुए मकानों की तरफ बढ़ा। सिवाय मलबे के और कुछ भी नजर नहीं आया उसे। पता नहीं कितनी लाशें दबी पड़ी थीं। मलबे के नीचे। आधे घण्टे बाद फायर ब्रिगेड तथा मलबा साफ करने वाली मशीने वहां पहुंचीं और तब जाकर काम शुरू हो सका।

¶¶

सतीश रावण ने रिक्शा एक दोमंजिला कोठी से थोड़ी दूरी पर रोकी और रिक्शे पर बैठे-बैठे ही कोटी की तरफ देखने लगा। साधारण-सी बनी वह कोठी पीले रंग के चूने से पुती हुई थी। कोठी के गेट पर स्टेनगल से लैसे एक व्यक्ति खड़ा था। अंधेरे के कारण उसका चेहरा तो नजर नहीं आ रहा था...मगर डील-डौल से वह कसरती बदन का लग रहा ता। जहांगीर के मुताविक नारायण बाग वाली इस कोठी में पन्द्रह आतंकवादी ठहरे हुए हैं...जिन्होंने कि पच्चीस जनवरी को अलग-अगल स्थानों पर अन्धाधुन्ध गोलियां चलाकर लोगों को खत्म करना है। जहांगीर के कहे अनुसार सभी के पास ए०के० सैंतालीस राइफलें हैं...और साथ में हैंडग्रेनेड भी हैं। सतीश रावण को पब्लिक से कोई मतलब नहीं था। वह मरती है तो मरे...आतंवाद फैलता है तो फैले...इससे भी उसे कोई मतलब नहीं था। उसे मतलब था तो रहमान खान और हरि सिंह गहलौत से। जिनके कारण उसे दस लाख की चोट लगी थी और थाने में रातभर ठुकाई हुई थी। और इतना नुकसान होने और मार खाने के बाद वह चुप बैठ जाता...ऐसा कैसे हो सकता था? रिक्शा पर बैठ-बैठे ही उसने कोठी के भीतरी भाग की तरफ देखा। सिर्फ दो कमरों की खिड़कियों में रोशनी नजर आई उसे। बाकी की कोठी अन्धेरें में डूबी हुई थी। उसने तेजी से कुछ सोचा ...फिर पैडल पर पैर का दबाव डाला। रिक्शा आगे बढ़ने लगी। सतीश रावण ने गेट पर खड़े गार्ड का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करने के लिये घण्टी बजाई।

"टन्न...टन्न...।"

AJ SCAN

घण्टी बजाने के साथ ही पैडल को इधर-से-उधर इस तरह कर रहा था मानो शराब के नशे में चूर हो। रिक्शा चलाने के साथ ही वह गाना भी गाता जा रहा था-

“गल्लां गोरियां दे विच होये। असी मर गये नी ओये होये।।”

गार्ड ने नाक-भौंह सिकोड़ी और बड़बड़ाया-

“साले हरामी...सारा दिन पैडल मारते हैं और रात को सारी कमाई शराब में डूबो देते हैं।”

तभी रिक्शे का हैंडल उसकी तरफ मुड़ा और रिक्शा तेजी सें उसकी तरफ बढ़ा। सतीश रावण ने रिक्शे का पिछला बायां पहिया इस तरह उठाया लिया मानो वह रिक्शा को सम्भालने की पूरी कोशिश कर रहा हो। मगर हैंडल सम्भालते-सम्भालतो भी रिक्शा गेट से जा टकराई और उलट गई। सतीश रावण एक तरफ जा गिरा। गार्ड ने खुद को तो बचा लिया...मगर उसे रिक्शा वाले पर गुस्सा आ गया। आगे बढ़कर उसने बूट की भरपूर ठोकर सतीश रावण के कूल्हे पर मारी।

“साले हरामी, नहीं पचती तो पीता क्यों है?” वह गुर्राया। सतीश रावण बुरी तरह से बिलबिला उठा...फिर शराबी की तरह झूमते हुए उठा और आगे-पीछे होते हुए समझाने वाले अन्दाज में बोला—

“आई एम सॉरी...गाड़ी ओट ओफ कन्ट्रोल हो गई थी।”

“साला अंग्रेज की औलाद ...।” गार्ड ने उसके चेहरे पर झापड़ जड़ दिया। सतीश रावण ने उसे मिचमिचाती आंखों से ऊपर से नीचे देखा, फिर अपने रिक्शा को उठाने की कोशिश करने लगा। मगर रिक्शा थी कि उठ ही नहीं रही थी उससे। गार्ड भी समझ गया कि उसे दफा करने के लिये उसे उसकी मदद करनी पड़ेगी। सो उसने स्टेनगन कन्धे पर लटकाई और जैसे ही वह रिक्शा उठाने के लिए झुका- रिवाल्वर की ठण्डी नाल उसकी पसलियों से आ लगी। साथ ही फुंफकारती आवाज उसके कानों में पड़ी।

“खबरदार...रिक्शा सीधी कर और बाउण्ड्री वाल की तरफ ले चल।”

AJ SCAN

बुरी तरह से उछल पड़ा गार्ड। उसे समझते देर नहीं लगी कि वह उस रिक्शा वाले की चाल में फंस गया है।

“क...कौन हो तुम...?”

“बकवास नहीं...रिक्शा सीधी कर...और हीरो बनने की कोशिश मत करना...वरना वक्त से पहले ही मारा जायेगा...।”

गार्ड समझ गया कि उस पर रिवाल्वर तानने वाला कोई पहुंची हुई शै है। सो चुपचाप उसने रिक्शा सीधी की और गेट के पहलू में ले आया। इस बीच सतीश रावण की रिवाल्वर निरन्तर उसकी पीठ पर टिकी रही।

“स्टेनगन उतार और नीचे रख दे।”

चारदीवारी की ओट में आते ही बोला सतीश रावण. चालाकी की कोई गुंजाइश नहीं थी...सो गार्ड ने चुपचाप स्टेनगन कन्धे से निकालकर छोड़ दी...जो कि उसके पैरों के पास आ गिरी।

“क्या नाम है तेरा...?”

सतीश रावण बोला।

“हबीबुल्ला...तुम कौन हो...?”

“तुम सबका बाप।”

“क्या मतलब...?” हड़बड़ाया हबीबुल्ला।

AJ SCAN

“रहमान खान का कुत्ता है न तू...?”

बुरी तरह से चौंका हबीबुल्ला और हैरानी से उसे देखने लगा।

“कौन हो तुम...?”

rcz202016@gmail.com

“कहा न तुम सबका बाप...बुलडॉग ...सबसे बड़ा कुत्ता।”

हबीबुल्ला आंखे फाड़े उसे देखने लगा जिसे स्वयं को सबसे बड़ा कुत्ता कहते हुए फख्र हो रहा था।

“अन्दर कितने आदमी हैं?” सतीश रावण गुर्राया।

“क...कोई नहीं...।

"फिर भीतर क्या तेरी मां किसी से इश्क लड़ा रही है जो तू यहां पहरा दे रहा है।"

हबीबुल्ला का चेहरा कानों तक लाल हो उठा, मगर वह मजबूर था...इसलिये खून का घूंट पीकर रह गया।

"बोल...और बोलने से पहले यह जान ले कि मुझे सब कुछ पता है...।"

"स...सत्रह...।" थूक सटकते हुए बोला हबीबुल्ला।

"सभी के पास ए०के० सैंतालीस हैं?"

"ह...हां...।"

AJ SCAN

“और हैंडग्रेनेड...?”

“कुल तीस हैंडग्रेनेड आये हैं यहां...।”

rcz202016@gmail.com

“बोल अल्लाह...।”

“क्या...?” हड़बड़ाया हबीबुल्ला।

“क्या खुदा का नाम सुनाई नहीं देता तुझे? बोल अल्लाह...।”

हबीबुल्ला ने अल्लाह कहने के लिये जैसे ही मुंह खोला...सतीश रावण ने फुर्ती से रिवाल्वर उसके खुले मुंह में डाली और ट्रेगर दबा दिया। हबीबुल्ला के चेहरे के परखच्चे उड़ गये। रिवाल्वर की नाल उसके मुंह में होने के कारण गोली चलने की आवाज नाममात्र की ही निकली। हबीबुल्ला का जिस्म जोरों से उछला और सड़क पर

गिरकर दो-तीन झटके लेने के बाद स्थिर हो गया। सतीश रावण ने रिवाल्वर जेब में डाली और झूककर स्टेनगन उठा ली। तत्पश्चात् उसने हबीबुल्ला की टांग पगकड़ी और उसे घसीटते हुए भीतर ले आया और उसे बाउण्ड्री वॉल की जड़ में डालकर बाहर आ गया। उसने रिक्शा को एक तरफ खड़ा किया और स्टेनगन सम्भाले गेट में प्रवेश कर ड्राइव-वे पर आगे बढ़ने लगा। कम्पाउण्ड में आकर वह ठिठका..सतर्क निगाहों से इधर-उधर देखा...फिर स्टेनगन की नाल से दरवाजे पर दबाव डाला। दरवाजा भीतर की तरफ खुलता चला गया। पूरी तरह से सावधान वह भीतर प्रविष्ट हुआ। सामने लॉबी में कतार में फोल्डिग पलंग बिछे हुए थे और उन पर आदमी सो रहे थे। सतीश रावण ने उनकी गिनती की। दस थे वे। बायीं तरफ ऊपरी मंजिल को जाने के लिये सीढियां बनी हुई थीं। सोये पड़े हर व्यक्ति के करीब ए०के० सैंतालीस पड़ी हुई थी। सतीश रावण ने एक नजर सीढ़ियों पर डाली...फिर एक सुरक्षित जगह तलाश की। वह जगह बायीं तरफ वाला कमरा था, जिसमें कि कोई भी नहीं था। उसने दरवाजे के पीछे जाकर सीढियों की तरफ देखा तो उसके चेहरे पर मायूसी छा गई। बहां से सीढ़ियों से उतरने वालों को निशाना नहीं बनाया जा सकता था। आखिर उसने खुले में ही लड़ने का फैसला किया और स्टेनगन की नाल सो रहे व्यक्तियों की तरफ करके ट्रेगर दबा दिया।

"तड़...तड़...तड़....।"

AJ SCAN

गोलियों की आवाजों से पूरी कोठी गूंज उठी। देखते-ही-देखते सात व्यक्ति लाशों में तब्दील हो गये। बाकी के तीन हड़बड़ते हेए अपने पलंगों से उठे और अपनी राइफलों की तरफ झपटे। मगर तब तक सतीश रावण एक पलंग की पिछली तरफ छलांग लगा चुका था। लाश तथा पलंग की ओट लेकर उसने जल्दी से पलंग पर पड़ी ए०के० सैंतालीस उठाई और फर्श पर लेट गया। ठीक तभी बाकी के तीन ने अपनी राइफलों के मुंह खोल दिये। मगर सतीश रावण सुरक्षित था। गोलियां उसके ऊपर से होते हुए दीवार से टकराकर नीचे गिर पड़ी थीं। सतीश रावण फर्श पर एक तरफ लुढ़का और लुढ़कते हुए ही उसने ट्रेगर दबा दिया।

rcz202016@gmail.com

“तड़...तड़...तड़...।”

वे तीनों भी खुदा को प्यारे हो गये। सतीश रावण फौरन एक पलंग के निचे घुस गया और राइफल सम्भाले सीढ़ियों की तरफ देखने लगा। तभी धाड़-धाड़ करते कई आदमी सीढ़ियों पर उतरते नजर आये। इससे पहले कि सतीश रावण राइफल का ट्रेगर दबाता...उनमें से दो की निगाहें उस पर पड़ गईं।

“वो रहा...।”

एक चीखा...साथ ही उसने राइफल का मुंह खोल दिया।

"रेट...रेट...रेट...।"

गोलियों की बाढ़ सतीश रावण की तरफ लपकीं...मगर उसने वक्त रहते वह स्थान छोड़ दिया था। सो गोलियां फर्श से जा टकराई। सतीश रावण जानता था कि अगर उसने फौरन कुछ नहीं किया तो उसका बचना नामुमकिन है। सो उसने फौरन राइफल का मुंह खोल दिया।

"तड़...तड़...तड़...।"

चूंकि वह पलंग के नीचे था...इसलिये वह उनके सीनों का निशाना नहीं ले सका...मगर तीन की टांगों को उसने जरूर जख्मी कर दिया था। नतीजा यह हुआ कि तीनों चीखते हेए सीढ़ियों से लुढ़कते हुए नीचे आ गिरे। गिरते समय एक अपने साथियों से टकराया था...जिससे कि उनका ध्यान उसकी तरफ हो गया। बस इतना मौका बहुत था सतीश रावण के लिये। तुरन्त वह पलंग के नीचे से निकला और ट्रेगर दबा दिया।

AJ SCAN

"तड़...तड़...तड़...।"

देखते-ही-देखते तीन लाशों में तब्दील हो गये। अपने साथियों को मरते देख बाकी के बुरी तरह बौखला उठे...और उनकी बौखलाहट का सतीश रावण ने भरपूर फायदा उठाया। बिना कोई वक्त गंवाये उसने बाकियों को भी गोलियों से भून दिया। कमरे में अब सत्रह लाशें बिखरी हुई थीं। सतीश रावण ने लाशों को गिना, फिर एक कमरे में घुस गया। वह कमरा पूरी तरह से खाली था...जबकि सतीश रावण को हैंडग्रेनेड की तलाश थी। वह उस कमरे से निकला और दूसरे कमरे में प्रवेश कर गया। वहां से भी वह खाली हाथ ही बाहर निकला। हैंडग्रेनेड उसे ऊपरी मंजिल के बीच बाले कमरे में मिले जो कि लकड़ी के एक बक्से में पड़े थे। सतीश रावण ने राइफल एक तरफ फेंकी और पांच हैंडग्रेनेड उठाकर नीचे आ गया। कुछ ही देर में वह रिक्शे की गद्दी हटाकर नीचे रखे मोबाइल बमों वाले थैले में बम डाल रहा था। गद्दी को यथास्थान रखकर वह रिक्शा पर चढ़ा और पैडल मारते हुए आगे बढ़ने लगा।

¶¶

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घण्टी बजते ही हरि सिंह गहलौत ने फौरन रिसीवर उठाकर कान से लगाया। रात दस बजे के बाद से वह अभी तक स्कॉच के पैग हलक से नीचे उतार रहा था। बारह बजे के बाद से तो वह बार-बार फोन की तरफ देखने लगा था। बारह बजकगर दस मिनट पर ट्रेन छूटनी थी और उसे उससे पहले फोन के बजने की उम्मीद थी। लेकिन फोन बारह बीस तक नहीं बजा तो उसने रिसीवर उठाकर कान से लगाया। फोन भी ठीक था। फिर बजा क्यों नहीं?

क्या सतीश रावण स्टेशन पर नहीं पहुंचा ? या उसने ही सभी को खत्म कर दिया है?

अभी वह इन्हीं सोचों में ही डूबा हुआ था कि फोन चीख उठा था।

"हैलो...!" वह बेसब्रीभरे अन्दाज में बोला।

"मैं शौकत अली बोल रहा हूं मन्त्रीजी।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

AJ SCAN

“हां बोल...काम हुआ...?”

“वह वहां पहुंचा ही नहीं...।”

rcz202016@gmail.com

“ऐसा कैसे हो सकता है? रुपयों की गंध सूंघते ही वह वहां न पहुंचा हो...ऐसा कैसे हो सकता है!”

“वह नहीं पहंचा ...।”

“कहीं उसने तुझे वहां देख तो नहीं लिया...?”

“सवाल ही पैदा नहीं होता। मैं एक तरफ छुपा हुआ था और मेरे बाकी साथियों को वह पहचानता ही नहीं...।”

“फिर आया क्यों नहीं वह?” बड़बड़ाया हरि सिंह गहलौत दिल डूबने लगा था उसका। फोन पर उसकी आशा के अनुरूप खबर नहीं मिली थी। ऐसे में उसका दिल तो टूटना ही था। निराशाभरी सांस छोड़ते हुए उसने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया और नया पैग तैयार करने लगा। अभी वह आधा पैग ही खाली कर पाया था कि फोन की घण्टी पुनः बजी।

“ट्रिन...ट्रिन....।”

हरि सिंह गहलौत ने पैग खाली करके टेबल पर रखा और रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

“हैलो...!”

“मेरी मौत का इन्तजार कर रहा था हरि सिंह गहलौत...।”

AJ SCAN

दूसरी तरफ से सतीश रावण की आवाज सुनकर वह बुरी तरह से चौंका।

"तुम...।"

rcz202016@gmail.com

"हां मैं...तेरा बाप सतीश रावण।"

"मुझे अभी-अभी पता लगा है कि तुम वहां पहुंचे ही नहीं...मैंने तो पचास लाख देकर...।"

"मीठी गोली से मरने वाला नहीं हूं मैं...।"

"क्या मतलब...?" हड़बड़ाया हरि सिंह गहलौत।

"मेरी मौत का सामान इकट्ठा कर रखा था तूने...।"

"लेकिन...।"

"मुझे तेरे से ऐसी ही हरामजदगी की उम्मीद थी...आखिर मेरा भाई जो ठहरा। जैसे मैं हरामी...वैसे तू हरामी...।"

"तुम क्या कह रहे हो...मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा। मैं भला तुम्हें क्यों मारूंगा?"

"क्योंकि सिर्फ मैं ही जानता हूं कि तेरी मां रण्डी थी।"

"हरामजादे...।" फुंफकार उठा हरि सिंह गहलौत।

AJ SCAN

“चीख मत...तुझे मालूम है कि मैं हरामजादा हूं...।”

कसमसाया हरि सिंह गहलौत। पैरों पर पानी नहीं पड़ने दे रहा था सतीश रावण।

“साढ़े नौ बजे ही तूने मेरी मौत का सामान स्टेशन पर भेज दिया था। तू क्या समझता था इतनी जल्दी पहुंचकर तेरे आदमी मेरी आंखों में नहीं चढ़ेंगे।”

हरि सिंह गहलौत के मुंह से बोल नहीं फूटा।

“तेरे कुत्तों को देखकर मैं समझ गया कि तू आसानी से मुझे पचास लाख नहीं देगा...सो मैंने भी अपना रास्ता बदल लिया...। कल जो मोबाइल बम शहर में जगह-जगह फटने वाले थे...वे अभी फट गये हैं...।”

“क्या मतलब...?”

“रहीम और उसका साथी ऊपर पहुंच गये हैं। बेचारे मोबाइल फोन में बम फिट कर रहे थे कि बम फट पड़ा और दोनों खुदा को प्यारे हो गये।”

हरि सिंह गहलौत का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

“क्या हुआ...लकवा मार गया क्या...? अभी तो और भी बहुत कुछ सुनाना है।”

“क्या...?”

“नारायण बाग वाली कोठी में अट्ठारह लाशें पड़ी हैं। ए०के० सैंतालीस के साथ। समेट लेना।”

“त...तूने सभी को मार डाला?”

AJ SCAN

“बेचारे पच्चीस जनवरी को शहर में कत्लेआम का बाजार गर्म करने जा रहे थे कि खुदा ने उन्हें अपने पास बुला लिया। च...च...च... तेरा सी०एम० बनने का आधा सपना तो धराशायी हो गया...बाकी बचा आधा पच्चीस जनवरी की रात को हो जायेगा, जब मैं सी०एम० को फोन करके तेरी करतूत बताऊंगा।”

rcz2

हरि सिंह गहलौत की आंखों के सामने अन्धेरा छा गया।

“त...तुम्हें गलतफहमी हुई है सतीश रावण...।” वह बात को सम्भालने की कोशिश करते हुए बोला—“मैंने सचमुच तुम्हारे लिये पचास लाख भेजे थे। मेरा तुम्हें खत्म करने का कोई इरादा नहीं था।”

“अच्छा...!” व्यंग्यभरी आवाज आई।

“मैं सच कह रहा हूं...। मेरा यकीन करो।”

"तो फिर तेरे कुत्ते क्या कर रहे थे वहां...?"

"वो मेरे आदमी नहीं थे...तुम्हें गलतफहमी हुई है...मेरे सिर्फ दो आदमी गये थे स्टेशन...वो भी ठीक बारह बजे...तुम्हें खामखाह किसी आम आदमी पर शक हुआ है।"

"हो सकता है तू ठीक कह रहा हो।" सोचपूर्ण आवाज उभरी।

"मैं ठीक ही कह रहा हूं। मैंने तुम्हें खत्म करने की कोई साजिश नहीं रची।"

"ठीक है।" गहरी सांस छोड़ने की आवाज आई—"तू कहता है तो ऐसा ही होगा। ऐसे में तेरे जिन आदमियों को मैंने खत्म किया...उसके लिये सॉरी...।"

हरि सिंह गहलौत ने दांत किटकिटाये, मगर बोला कुछ नहीं वह।

AJ SCAN

“तू ऐसा कर...पचास लाख फिर से स्टेशन पर भेज दे।”

“अब ऐसा कल ही मुमकिन हो सकता है।”

rcz202016@gmail.com

कुछ सोचकर बोला हरि सिंह गहलौत।

“क्यों...?”

“वह आदमी वापिस चला गया है...और पचास लाख भी उसी के पास हैं....तुम कल मुझे बता देना कि पैसा कहां पहुंचाना है...मैं ठीक वक्त पर पचास लाख वहां भेज दूंगा।”

“ओ०के०....अब कल बातकक करुंगा।”

“और भगवान के लिये वह खून-खराबा और मत करना...।”

“ओ०के०...।”

दूसरी तरफ से गहरी सांस छोड़ी और उसी के साथ ही सम्बन्ध विच्छेद हो गया। हरि सिंह गहलौत ने फौरन पलंजर दबाया और रहमान खान का नम्बर मिलाने लगा।

“हैलो...!” थोड़ी देर बाद दूसरी तरफ से आवाज आई।

“मैं बोल रहा हूं...।”

“ओह...कहिये नेताजी...कांटा दूर हो गया?”

AJ SCAN

“खाक दूर हुआ...बल्कि और ज्यादा गहरा धंस गया है।”

“क्या मतलब...?”

rcz202016@gmail.com

“कुत्ता पागल हो गया।”

“मैं कुछ समझा नहीं...!”

“मेरा इन्तजार करो...मैं वहीं पहुंच रहा हूं।”

कहकर उसने रिसीवर रखा और खड़ा हो गया।

¶¶

सतीश रावण गेस्ट हाउस पहुंचा। रिक्शा को उसने काफी पीछे ही छोड़ दिया था। बमों का थैला उसके कन्धे पर लटक रहा था। गेस्ट हाउस के शीशे के दरवाजे को धकेल कर वह अन्दर प्रविष्ट हुआ तो बायीं तरफ काउण्टर गर्ल को नॉवल पढ़ते पाया। काउण्टर गर्ल ने नॉवल पर से निगाहें हटाकर सतीश रावण की तरफ देखा तो सतीश रावण ने मुंह बना लिया साथ ही गहरी सांस छोड़ी।

"चाबी...।" वह उदास लहजे में हाथ उसके आगे फैलाते हुए बोला। काउण्टर गर्ल ने चाबी बोर्ड से उतारकर उसे दी।

"डिनर कर आये...?" वह बोली। सतीश रावण ने पुनः निराशाभरी सांस छोड़ी और इन्कार में सिर हिलाया।

"लगता है, आज भूखा ही सोना पड़ेगा।" वह बोला—"महंगे-से-महंगे होटल में गया...गरह खाना नसीब नहीं हुआ...जहां भी गया...वहीं पतीले खड़कते मिले।"

AJ SCAN

युवती ने एक बार फिर उसके हुलिये को ऊपर से नीचे की तरफ देखा। कहीं से भी आकर्षक नजर नहीं आ रहा था वह। आजमाने में क्या हर्ज हैं? वह मन-ही-मन बोली।

"अगर आपको डिनर यहीं उपलब्ध हो जाये तो...?" वह अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कुराई। सतीश रावण की आंखें चमक उठी। उसने भरपूर निगाहों से उसे देखा और बोला—

"मेरी खुशकिस्मती होगी यह...।"

"पांच हजार लगेंगे।"

सतीश रावण ने देर नहीं की। फौरन जेब से सारे रुपये निकालकर काउण्टर पर रख दिये।

“दो-चार सौ कम हैं...डिनर के कमरे में पहुंचते ही पूरे हो जायेंगे।”

रुपये देखकर युवती की आंखों में लालचभरी चमक उभरी आई। उसने नोट उठाये और टेबल की ड्राज मैं रखते हुए बोली-

“आप चलिये...डिनर अभी पहुंच जायेगा।”

“साथ में स्कॉच हो तो...।

“मिल जायेगी...मगर उसके पैसे अलग से लगेंगे।”

“दूंगा...।

AJ SCAN

“और कुछ...?”

“बस स्कॉच के साथ डिनर पहुंच जाये।”

कहते हुए सतीश रावण ने उसके उभारों पर निगाह मारी और अपने कमरे की तरफ बढ़ गया। कमरें में आकर उसने थैले को बैड के नीये खिसकाया...रिवाल्वरों को गद्दे के नीचे रखा...आरी को भी पीठ से उतारकर गद्दे के नीये रखा। करीब पन्द्रह मिनट बाद वह युवती ट्रे उठाये भीतर प्रविष्ट हुई। ट्रे में स्कॉच की बोतल के साथ दो खाली गिलास रखे थे। उसने आगे बढ़कर ट्रे टेबल पर ऱखी तो सतीश रावण की निगाहें उसकी गुलाबी उभारों पर अटक कर रह गईं जो कि उसके झुकने से बाहर को उलटने को आतुर नजर आने लगे थे। झुके-झुके ही युवती ने दो पैग बनाये और एक पैग उठाकर सतीश रावण की तरफ बढ़ाया था दूसरा अपने हाथ में ही थामे सतीश रावण के साथ लगकर बैठ गई। दोनों के जाम टकराये और होठों की तरफ बढ़ गये। तीन-तीन पैग हलक में उतारने के बाद उनके जिस्म एक-दूसरे से टकराने लगे थे। और फिर...!

¶¶

रहमान खान के माथे पर चिंता की लकीरें स्पष्ट नजर आ रही थीं। हरि सिंह गहलौत के पहुंचने से पहले ही उसे अपने दो अड्डों के तबाह होने और उन्नीस आदमियों की मौत के साथ-साथ यह भी पता चल गया था कि सतीश रावण स्टेशन पर पहुंचा ही नहीं था। सो अपने तबाह हुए अड्डों के पीछे उसे सतीश रावण का हाथ होने का संदेह हुआ और हरि सिंह गहलौत ने आकर उसके संदेह पर सच्चाई की मोहर लगा दी। हरि सिंह गहलौत रहमान खान के चिंतित चेहरे को गौर से देख रहा था। रहमान खान ने बेचैनी से पहलू बदला और बोला-

"यह सतीश रावण तो सचमुच बहुत बड़ा हरामी निकला...एक ही झटके में इसने हमारी आधे से ज्यादा ताकत खत्म कर दी।"

"अब आगे की सोचो रहमान खान! उसका कुछ करो...वरना पूरी की पूरी ताकत खत्म हो जायेगी।"

हरि सिंह गहलौत बेचैनीभरे स्वर में बोला।

"अब तो एक ही रास्ता है...।"

AJ SCAN

"क्या...?"

"उसे पचास लाख दे दिये जायें...।"

rcz202016@gmail.com

"तुम पागल तो नहीं हो गये?" हड़बड़ाया हरि सिंह गहलौत।

"इसके अलावा कोई रास्ता भी तो नहीं...।"

"लेकिन...।"

"छब्बीस जनवरी सिर पर आ गई है नेताजी! सी०एम० को खत्म करने की हमने जो योजना बनाई थी वह योजना हमारे आदमियों के मर जाने से एक-चौथाई पिट गई है। कहीं ऐसा न हो कि बाकी की योजना भी पिट जाये...और आपके और

हमारे अपने मिट्टी में मिल जायें। इसलिये बेहतरी इसी में है कि पागल कुत्ता अपने दांत और ज्यादा गहरे गाड़े... उसके मुंह में हड्डी डाल दो।"

"माना हड्डी डाल दी...फिर भी क्या गारण्टी है कि वह दांत नहीं मारेगा?"

"क्या मतलब...?"

"अण्डरवर्ल्ड में वह महारानी के नामसे जाना जाता है रहमान खान। एकबारगी सांप पर तो विश्वास किया जा सकता है...मगर सतीश रावण पर नहीं। उसका एक नहीं, दो फन हैं। एक से वह दूध पीता है तो दूसरे से डस लेता है।"

"तो फिर क्या किया जाये...?"

"यही तो समझ में नहीं आ रहा।" चिन्ताभरे स्वर में बोला हरि सिंह गहलौत-"उसे पचास लाख देने का मतलब होगा...पचास लाख पर पानी फेरना...और

AJ SCAN

न देने का मतलब होगा उससे पंगा लिये रखना।”

“मैं तो यही चाहूंगा कि उसे पचास लाख दे दिये जायें...।”

“उसका पता लगे तभी न।”

rcz202016@gmail.com

हरि सिंह गहलौत ने बेचैनी से पहलू बदला।

“आप पचास लाख का बन्दोबस्त कीजिये...सुबह जब वह फोन करे तो हां कर दीजियेगा...और पूरी ईमानदारी से उसके बताये वक्त और जगह पर जाकर पैसा रख दीजिये। इससे और कुछ नहीं तो वह दो-तीन दिन तो चुप रहेगा। बस एक बार सी०एम० का काम-तमाम हो जाये...फिर आगे की मैं सम्भाल लूंगा।”

“मैं अभी भी कहता हूं रहमान खान...उस पर विश्वास न करो।”

“लगता है, सी०एम० बनने का भूत उतर गया है आप पर से।”

“क...कैसी बात करते हो?” हड़बड़ाया हरि सिंह गहलौत।

“तो फिर जो मैं कह रहा हूं, वही कीजिये।”

हरि सिंह ने बुझे मन से सिर हिला दिया। उसने हां तो कर दी थी...मगर उसका चेहरा बता रहा था कि वह रहमान खान के फैसले से खुश नहीं था। निराशाभरी सांस छोड़ते हुए वह उठा और कमरे से बाहर निकल गया। उसके निकलते ही रहमान खान के चेहरे पर क्रूरता के भाव उभर आये। आंखों में दरिन्दगी उभर आई।

“हमीद गुल...!” उसने आवाज लगाई। तुरन्त पीछे के कमरे का दरवाजा खुलना और उसमें से ठिगने कद का चेहरे से ही क्रूर और फुर्तिला नजर आने वाला व्यक्ति निकलकर रहमान खान के सामने आ खड़ा हुआ।

AJ SCAN

“हरि सिंह गहलौत अपने घर जा रहा है।”

“जी खान साहब...।”

“उसका कोई बॉडीगार्ड भी नहीं उसके साथ...उसे राजी-खुशी बिना किसी दिक्कत के उसके घर पहुंचा दो।”

“जी खान साहब...।”

हमीद गुल बोला और कमरे से बाहर निकल गया।

¶¶

“कह तो ऐसे दिया जैसे पचास लाख न हुए पचास रुपये हुए...।” कार ड्राइव करते हुए बड़बड़ाया हरि सिंह गहलौत-“पचास लाख पहले गंवा चुका हूं... अब और नहीं गवाऊंगा।। सुबह होते ही आई०एस०आई० के अध्यक्ष से सम्पर्क करूंगा...और उसे साफ कह दूंगा कि मैं एक पैसा और नहीं खर्च करूंगा। ऊपर से सतीश रावण के बारे में भी बताऊंगा कि वह कैसा हरामी है। अगर उसे पचास लाख मिल भी गये तो वह एक करोड़ मांगना शुरू कर देगा।”

उसकी बड़बड़ाहट से ही साफ पता चल रहा था कि पैसा खर्च करने के मामले में वह कितना कंजूस है। पता नहीं कुंवर सिंह रावत को उसने कैसे पचास लाख दे दिये थे। अपनी बड़बड़ाहट को जारी रखे हुए वह अपनी कोठी की तरफ बढ़ा जा रहा था। उस वक्त वह हनुमान गढ़ रोड पर तिकोना पार्क के करीब से गुजर रहा था, जब एकाएक पार्क की साइड में से एक मैटाडोर वैन निकलकर ऐन उसकी कार के सामने आ खड़ी हुई। अचानक सामने आ खड़ी हुई वैन को देख बुरी तरह से बौखला उठा हरि सिंह गहलौत...उसके साथ ही उसका पैर एक्सीलेटर से उठकर पूरी ताकत से ब्रेक पैडल पर दबा।

“चीं...।” की आवाज वातावरण में गूंज उठी। कार अभी पूरी तरह से रुकी भी नहीं थी कि वैन में से एक हाथ बाहर निकला और थोड़ा-सा नीचे होकर तेजी से कुछ फेंकने वाले अन्दाज में हिला। हाथ में से एक काली-सी गेंद निकली और कार की तरफ लपकी। गेंद सीधा कार की विण्ड स्क्रीन से टकराई और उसके साथ ही-

AJ SCAN

"बड़ाम...।"

गगनभेदी धमाका हुआ और कार के परखच्चे उड़ गये। आग का बवण्डर कार में से उठा और आग के बादल का रूप लेका ऊपर उठने लगा। तभी वैन स्टार्ट हुई और आगे बढ़ गए। वैन की ड्राइविंग सीट पर बैठे हमीद गुल के होठों पर शैतानी मुस्कान नाच रही थी। उसकी आंके कुत्तों की आंखों के समान चमक रही थीं। हरि सिंह गहलौत को उसने पूरी हिफाजत से उसके घर पहुंचा दिया था। ऊपर वाले घर में। इधर कंकाल बनी कार में हरि सिंह गहलौत ड्राइविंग सीट पर मरा पड़ा था। उसकी लाश बुरी तरह से झुलस गई थी। सी०एम० बनने की हसरत पूरी होने से पहले ही वह लाश में तब्दील हो गया था...और उसका यह हश्र किया था उसके उसी खैरख्वाह ने जिसने उसे सी०एम० बनाने का वादा किया था। एक सांप पर विश्वास किया था उसने। बल्कि सांप से भी जहरीले देश पर विश्वास किया था...ऐसा जहरीला जो हर पल यही सोचता रहता है कि हिन्दुस्तान के किस हिस्से में दांत गड़ाये जायें। इधर हमीद गुल वापिस रहमान खान के पास पहुंचा और सिर को थोड़ा झुकाते हे बोला—

"काम हो गया खान साहब...।"

“अपने घर पहुंच गया हरि सिंह गहलौत...?” पूछा रहमान खान ने।

“जी हां खान साहब...।”

“कोई चांस तो नहीं उसके बचने के?”

“बम इतना पावरफुल था कि उसके कार समेत परखच्चे उड़ गये थे।”

“गुड...अब तुम आराम करो...।”

हमीद गुल पिछले कमरे की तरफ बढ़ गया। उसके कमरे में प्रवेश करने के बाद रहमान खान ने उसके बाले कमरे के दरवाजे को लॉक किया...फिर सामने वाले दरवाजे को बन्द करके भीतर से सिटकनी चढ़ा दी। तत्पश्चात् उसकने कमरे की दोनों खिड़कियों को बन्द किया और बायीं तरफ बनी लौहे की आलमारी की तरफ बढ़ा। आलमारी का दरवजा खोलकर उसने सामने टंगे कपड़ों को एक तरफ हटाया और

AJ SCAN

हाथ कपड़ों के पीछे डालकर कोई हरकत की। अगले ही पल आलमारी अपने स्थान पर दायीं तरफ सकरने लगी...और उसी के साथ ही आलमारी के नीचे रिक्त स्थान नजर आने लगा जिसमें कि नीचे जाने के लिये लोहे की सीढ़ियां बनी हुई थीं। रहमान खान ने सीढ़ियों पर पैर रखा और उतरता हुआ नीचे आ गया। कोई ज्यादा बड़ा नहीं था वह तहखाना। मुश्किल से तीन फीट चौड़ा और चार फीट लम्बा था। तहखाना पूरी तरह से खाली था और उसकी दीवारें सपाट थीं। रहमान खान बायीं तरफ वाली दीवार की तरफ मुड़ा और हाथ उस दीवार पर फेरने लगा। फिरता हुआ उसका हाथ एक ऐसे स्थान पर आकर रुका जो कि कुछ उभरा हुआ था, जबकि देखने से पूरी दीवार सपाट ही नजर आती थी। उसने उस स्थान पर एक साथ दो मुक्के मारे जैसे वह मुक्कों से ही दीवार तोड़ देगा। तुरन्त असर हुआ उसके मुक्कों का। फर्श से लेकर करीब चार फीट ऊपर तक की दीवार शटर की तरह ऊपर उठ गई। रहमान खान नीचे बैठा और सामने देखा, जहां पर कि वह बेहद शक्तिशाली ट्रांसमीटर रखा हुआ था। उसने ट्रांसमीटर के साथ रखे हैडफोन को उठाकर कानों पर लगाया। हैडफोन के साथ ही एक छोटा-सा माइक अटैच्ड था, जिसे उसने एडजस्ट करके मुंह के आगे किया और फिर हाथ आगे करके एक स्विच दबा दिया।

rcz202016@gmail.com

"सलाम वालेकुम जनाबेआला...!" दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह बोला—"मैं खान अलीखान बोल रहा हूं...कोड नम्बर चार सौ...हरि सिंह गहलौत जन्नतनशीं हो गया है...जी हां...मैंने मरवा दिया है उसे...गुस्ताखी माफ हो जनाबेआला वह मुझे हमारे मतलब का शक्स नहीं लगा था और न ही वह सी०एम० बनने के लायक था... ऐसा नहीं...मौजूदा सी०एम० का काम तो जरूर होगा जनाबेआला...मैं आज ही यहां के होम मिनिस्टर से बात करूंगा...मुझे उम्मीद है कि वह तैयार हो

जायेगा...जी नहीं...हरि सिंह गहलौत को खत्म करने के पीछे वजह थी सतीश रावण...जी हां..वह उससे न सिर्फ डर गया था...बल्कि उसे पचास लाख देने में भी आनाकानी कर रहा था...।" उसने सारी बात कह सुनाई, फिर आगे बोला—"सतीश रावण की वजह से हमारा बहुत नुकसान हो गया है...अब उसकी भरपाई भी वही करेगा...फिलहाल तो मैंने इस बारे मैं नहीं सोचा...मगर मुझे उम्मीद है कि मैं सुबह तक कोई-न-कोई रास्ता तलाश कर लूंगा...जी...जी...आप बेफिक्र रहिये, खूदा ने चाहा तो हम अपने मत, में जरूर कामयाब हो जायेंगे...खुदा हाफिज...।"

उसने स्विच ऑफ किया और फिर से हैडफोन उतारकर रख दिया। वह सीधा खड़ा हुआ और दीवार के उसी स्थान पर पुन: दो घुंसे मारे जहां पहले मारे थे। नीचे वाली दीवार पुन: इकसार हो गई। सीढ़ियां चढ़कर वह ऊपर आया और आलमारी में हाथ डालकर कोई हरकत की। आलमारी पुन: खिसक कर पहले वाले स्थान पर आ खड़ी हुई। रहमान खान ने एक गहरी सांस छोड़ी और तमाम खिड़कियां-दरवाजे खोलकर फोन के करीब आकर सोफे पर बैठा...रिसीवर उठाया और कोई नम्बर डायल करने लगा।

"ट्रिन...ट्रिन...।"

AJ SCAN

फोन की घण्टी घनघनाई। गृहमन्त्री कालीसिंह शेखावत उस वक्त गहरी नींद सोया हुआ था। छब्बीस जनवरी की तैयारी तथा तमाम सुरक्षा-प्रबन्धों के लिये वह रात एक बजे आला अफसरों कि मीटिंग में था। मीटिंग समाप्त होने के बाद वह सीधा अपनी कोठी पहुंचा और सो गया। अभी उसे सोये हुए आधा घण्टा भी नहीं हुआ था कि फोन की घण्टी ने उसकी नींद चौपट कर दी। करवट बदल कर उसने रिसवीर उठाया और गुस्से में बोला—

rcz202016@gmail.com

"क्या है?"

जाहिर था कि नींद में खलल डालने की वजह से वह गुस्से में आ गया था।

"क...कोई आपसे बात करना चाहता है मन्त्रीजी।"

दूसरी तरफ से उसकी कोठी के टेलीफोन ऑपरेटर की घबराई आवाज आई।

"बेवकूफ...उससे कहो कि वह सुबह बात करे...।"

“मैंने कहा था कि आप सो रहे हैं...मगर उसने यह कहकर कि अगर मैंने फौरन आपसे बात नहीं कराई तो आपको बहुत बड़ा नुकसान हो सकता है, मुझे मजबूर कर दिया।”

नुकसान की बात सुन कालीसिंह शेखावत बुरी तरह से चौंका...साथ ही उसके माथे पर बल पड़ गये।

“कैसा नुकसान हो सकता है मेरा...?” उसने मन-ही-मन सोचा। मगर उसकी समझ में कुछ नहीं आया।

“बात करने वाला कौन है...?” उसने माउथपीस में पूछा।

“अपना नाम रहमान खान बता रहा है।” ऑपरेटर की आवाज आई—“बस इससस ज्यादा कुछ नहीं बता रहा।”

AJ SCAN

"लाइन दो।"

कुछ सोचकर बोला कालीसिंह शेखावत। नींद तो उसकी उसी वक्त उड़ गई थी, जब उसके कान में नुकसान का शब्द पड़ा था। तभी हल्की-सी क्लिक की आवाज हुई और उसी के साथ दूसरी तरफ से आवाज आई।

rcz202016@gmail.com

"हैलो...मन्त्रीजी...।"

"हां, मैं गृहमन्त्री कालीसिंह शेखावत बोल रहा हूं।" तुम...?"

"बन्दे को रहमान खान कहते हैं।"

"कौन रहमान खान...?"

“अभी आप मुझे नहीं जानते...हां...मगर आप हमसे सहयोग करेंगे तो जल्दी जान जायेंगे और सहयोग की स्थिति में आपको भारी फायदा होगा।”

“कैसा फायदा...?”

“मुझे पता है कि आप सी०एम० बनने के ख्वाहिशमंद थे...मगर हाई कमान की दखलअंदाजी के कारण आपको गृहमन्त्री पद पर ही संतोष करना पड़े...।”

“नहीं...नहीं...बकवास है यह।”

हड़बड़ाया कालीसिंह शेखावत।

“आपकी हड़बड़ाहट बता रही है कि मैं सच कह रहा हूं। अगर आप चाहें तो आपकी मनोकामना पूरी हो सकती है। आप सी०एम० बन सकते हैं।”कालीसिंह

AJ SCAN

शेखावत का कलेजा धड़क उठा।

“कैसे...?”

उसके मुंह से अपने आप ही यह शब्द निकल गया।

rcz202016@gmail.com

“बस आप हमारा साथ दीजिये...हम आपको सी०एम० बना देंगे।”

“मैं कुछ समझा नहीं...।”

दूसरी तरफ से गहरी सांस छोड़ने की आवाज आई...फिर कहा गया—

“गंगानगर के हरि सिंह गहलौत के सी०एम० बनने के पूरे चांस हो गये थे...उन्हें तो आप जानते ही हैं न।”

“तुम संचार मन्त्री की बात कर रहे हो...?”

“जी हां...हमने उनसे वायदा किया था कि उन्हें सी०एम० बनाया जायेगा...लेकिन वक्त आने से पहले ही वे एक टुच्चे अपराधी से उलझ गये और जन्नतनशीं हो गये।”

“क...क्या....?” बुरी तरह से उछल पड़ा कालीसिंह शेखावत—“हरि सिंह गहलौत...!”

“वो अब नहीं रहा...अभी थोड़ी देर पहले ही सतीश रावण नाम के अपराधी ने उनकी कार को बम से उड़ा दिया....और कार वे खुद ड्राइव कर रहे थे।”

कालीसिंह शेखावत की आंखों में आश्चर्य नाचने लगा...उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि जो कुछ उसने सुना है वह सच है।

AJ SCAN

"त...तुम मजाक कर रहे हो?" वह बोला।

"विश्वास नहीं हो रहा हो तो गंगानगर कोतवाली फोन करके पूछ लो...हकीकत का पता चल जायेगा।"

rcz202016@gmail.com

"लेकिन...।"

"हम बाद में बात कर लेंगे...पहले आप मेरी बात की सच्चाई जान लें।"

"सच ही कह रहे होगे तुम...।" गम्भीरत से बोला कालीसिंह शेखावत।

"वो तो अब रहे नहीं...सो मैंने आपको सी०एम० बनाने के लिये चुना है। अब यह आप पर डिपेंड करता है कि आप सी०एम० बनना चाहते हैं या नहीं...?"

"कौन बेवकूफ होगा जो मुख्यमंत्री न बनना चाहेगा...।"

गम्भीरता से बोला कालीसिंह शेखावत- "लेकिन ऐसा होना मुमकिन नहीं। सी०एम० की छवि जनता में उज्ज्वल है...ऐसे में उन्हें किसी भी तरीके से उनके पद से हटाया नहीं जा सकेगा...और इलैक्शन होने में अभी चार साल पड़े हैं।"

"अगर आप हमारा साथ दें तो हम चार दिन में ही आपको मुख्यमन्त्री पद की शपथ दिलवा सकते हैं।"

जबरदस्त झटका लगा कालींसिंह शेखावत के जेहन को।

"कैसे...?" वह थूक सटकते हुए बोला।

"कैसे ये भी बतायेंगे...पहले कबूल कीजिये कि आप हमारा साथ देंगे।"

AJ SCAN

“कैसा साथ चाहते हो तुम...?”

“राजस्थान को हिन्दुस्तान से अलग करना चाहते हैं हम...।”

rcz202016@gmail.com

“क...क्या...?”

कालीसिंह बुरी तरह से उछल पड़ा...आंखें फटने से कगार तक फैल गईं।

“जी हां...और हिन्दुस्तान से अलग हुए इस टुकड़े पर राज करेंगे आप...यानी आप सी०एम० से सीधे राजा बन जायेंगे...वो राजा जिसकी जुबान से निकाल शब्द राजस्थान की तकदीर होगा।”

कालीसिंह शेखावत का कलेजा उसकी पसलियों से धाड़-धाड़ बज रहा था।

"क....कहीं तुम उन्हीं उग्रवादियों के सरदार तो नहीं जिनके कारण गंगानगर में रेड अलर्ट लगा हुआ है।"

"अभी तो उग्रवादी हैं...मगर बाद में हम इन्कलाबी बन जायेंगे...बाद में समझते हैं न आप...राजस्थान के अलग होने के कारण गंगानगर में रेड अलर्ट लगा हुआ है।"

"तो पाकिस्तानी हो तुम...?"

"बात को लम्बा खींच रहे हैं आप मन्त्रीजी...हमें जवाब चाहिये...क्या चाहते हैं आप...?"

"वो बेवकूफ ही होगा जो इतनी शानदार ऑफर को ठुकरायेगा।"

AJ SCAN

"यानी आप सी०एम० बनना चाहते हैं?"

"चाहता तो मैं तब से हूं, जब इलैक्शन हुए थे, मगर तकदीर साथ नहीं दे रही थी।"

rcz2016@gmail.com

"अब साथ देगी...न सिर्फ आप सी०एम० बनेंगे...बल्कि दो-दीन साल में आप यहां के राजा बन जायेंगे।"

"तुम्हारे मुंह में घी-शक्कर...लेकिन यह सब होगा कैसे...?"

"वो आप हम पर छोड़ दीयिये...आप बस अपनी एक-दो जेबों के मुंह खोल दीजिये...बाकी हम सम्भाल लेंगे।"

"कितना खर्च करना पड़ेगा...?"

"बस एक-डेढ़ करोड़...।"

"बस...?"

"बस।"

"कर दूंगा...एक-डेढ़ क्या दो करोड़ कर दूंगा...।"

"वैरी गुड...!"

"तुम जब चीहो रुपय. लेने आ सकते हो।"

"मैं आपको सुबह फोन करूंगा...उसके बाद ही असली बात होगी। फिलहाल तो आप आंखें बन्द कीजिये। उन सपनों में खो जाइये। जो कि बहुत जल्द पूरे होंगे।"

AJ SCAN

बात पूरी होते ही दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया। कालीसिंह शेखावत ने रिसीवर रखा और बैड पर लेटकर गहरी सोच में डूब गया। इतनी बड़ी ऑफर मिल रही थी उसे...ऐसे में भला कैसे नींद आनी थी उसे!

¶¶

rcz202016@gmail.com

सुबह आठ बजे सतीश रावण की आंख खुली। बैड पर लेटे-लेटे ही उसने बांहें फैलाकर अंगड़ाई ली तो उसकी बायी बांह अपने करीब सो रही काउण्टर गर्ल के भारी उभरों से टकराई। सतीश रावण ने गर्दन मोड़कर उसकी तरफ देखा। सिर से पांब तक निर्वस्त्र वह युवती गहरी नींद सो रही थी...उसके गुलाब की तरह खिले चेहरे पर सन्तुष्टि के भाव थे। सतीश रावण मुस्कुराया और बैड पर बैठकर उसकी छातियों को पकड़कर उमेठा। हड़बड़ाकर युवती ने आंखें खोलीं और फिर सतीश रावण को देख मुस्कुरा पड़ी।

“अभी दिल नहीं भरी क्या...?”

वह बैठते हुए बोली।

“तुम बोलो...तुम्हारा दिल भर गया?” सतीश रावण उसके अंगों पर हाथ फेरते हुए बोला।

“सच बोलूं...?”

“हां।”

“सच यह है कि जितनी आशा लेकर मैं यहां आई थी, उससे कहीं ज्यादा मिला है मुझे...तुम सचमुच एक सम्पूर्ण मर्द हो। इस उम्र में भी तुममे नौजवानों जैसा जोशा-खरोश है।”

सतीश रावण हंसा। अब वह उसे क्या बताता कि वह अधेड़ सरदार समझ रही है...वह हकीकत में पच्चीस साल का भी नहीं...।

AJ SCAN

"यानी दिल भर गया तुम्हारा...?" वह बोला।

"दिल तो नहीं भरा...हैं। तुम्हारा वक्त पूरा हो गया है...अगर तुम्हारा दिल नहीं भरा हो तो तुम रात को फिर से पांच हजार खर्च करके मुझे पा सकते हो।"

rcz202016@gmail.com

"रात की रात को देखी जायेगी।"

सतीश रावण मुस्कुराया। युवती ने कपड़े पहने और सतीश रावण की तरफ हाथ फैलाती हुई बोली-

"स्कॉच के पैसे...।"

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी- "तुम काउण्टर पर पहुंचो...मैं आ रहा हूं...।"

युवती ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया...हाथ पीछे खींचा और इठलाती हुई दरवाजे की तरफ बढ़ गई। सतीश रावण ने अण्डरवियर पहना और दरवाजा बन्द करके बाथरूम की तरफ बढ़ गया।

"बाथरूम में प्रवेश कर जैसे ही उसने दरवाजा बन्द किया...कमरे का दरवाजा आहिस्ता से खुला और वही युवती दबे पांव कमरे में प्रविष्ट हुई।

रात को सतीश रावण ने जेब से उसे पांच हजार दिये थे तो उसने यह कहा था जितने पैसे कम हैं...और स्कॉच के पैसे उसे कमरे में पहुंचते ही मिल जायेंगे...और फिर अब कहा था कि वह काउण्टर पर पहुंचे...पैसे वहां पहुंच जायेंगे।

"अवश्य ही इसके पास काफी मोटा पैसा है...।" वह मन-ही-मन बड़बड़ाई- "जो मेरे सामने निकालने से कतरा रहा है, अगर पांच-दस हजार होते तो अवश्य ही वह वहीं कमरे में ही उसे चुकता कर देता।"

AJ SCAN

और मोटे माल का लालच उसे खा गया। उसके कदम वहीं बाहर ही रुक गये। दरवाजा बन्द होने के बाद वह फौरन दरवाजे के सामने आई और झुककर की-होल में से भीतर देखा। जैसे ही सतीश रावण बाथरूम में घुसा और उसने दरवाजा बन्द किया...वह हैंडल को नीचे दबा दरवाजे को धकेलते हुए भीतर प्रवेश कर गई। बैड के करीब आकर उसने झुककर बैड के नीचे देखा तो वहां उसे एक थैला पड़ा नजर आया। बिना कोई वक्त गंवाये उसने बांह लम्बी की और थैले को खींच लिया। थैले का मुंह खोलकर उसने उसमें झांका तो उसके रंग उढ़ गये। बमों को पहचानने में उसे एक पल भी नहीं लग। पर मोबाइल फोन को वह फोल ही समझी थी।

rcz202016@gmail.com

“इतने फोन किसलिये...?” वह मन-ही-मन बड़बड़ाई। तुरन्त उसने थैले को बैड के नीचे खिसकाया और बेसब्री से बैड पर देखा। तभी उसकी नजर बैड के कोने की तरफ उठी। वह हिस्सा कुछ उभरा हुआ नजर आ रहा था। उसने तुरन्त उस कोने को नंगा किया तो गद्दे के नीचे उसे नोटों की गड्डियां बिछी नजर आईं। साथ में तीन रिवाल्वर और आरी पड़ी दिखी। रिवाल्वर देखकर उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

“जरूर यह कोई खतरनाक आदमी है...।” वह मन-ही-मन बड़बड़ाई। धड़कते कलेजे को किसी प्रकार सम्भाले उसने नोटों पर हाथ साफ किया और गद्दे को यथास्थान रखकर नोटों को दोनों हाथों में उठाये कमरे से बाहर आ तेजी से काउण्टर की तरफ भागी। काउण्टर के करीब आकर उसने नोटों को आनन-फानन ड्राज में फेंका और रिसीवर उठाकर कोतवाली का नम्बर डायल करने लगी।

“हैलो...।” तभी दूसरी तरफ से आवाज आई- “इंस्पेक्टर किशन लाल शर्मा स्पीकिंग...।”

“म...मैं आशा गेस्ट हाउस से बोल रही हूं...।” बुरी तरह से कांप रहा था उसका स्वर- “अ...आप फौरन यहां आ जाइये...।”

“क्यों...?”

“गेस्ट हाउस के छ: नम्बर में एक सरदार ठहरा हुआ है...उसके पास ढेर सारे बम और पिस्तौलें हैं...म...मुझे लगता है कि वह कोई उग्रवादी है।”

“आशा गेस्ट हाउस कहां है...?”

“ग...गोल मार्किट...प्लीज जल्दी आइये।”

AJ SCAN

"हम पहुंच रहे हैं...।"

दूसरी तरफ से उत्तेजनाभरी आवाज आई। युवती ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और रूमाल निकालकर अपने चेहरे का पसीना पोंछने लगी। इस वक्त उसका कलेजा किस कदर धड़क रहा था...यह वह ही जानती थी। बार-बार उसकी निगाहें सतीश रावण के कमरे की तरफ उठ जाती थीं।

बस जल्द-से-जल्द पुलिस यहां पहुंच जाये...फिर उसे कोई खतरा नहीं। फिर सारा-का-सारा पैसा उसका।

और अगर वह पुलिस के पहुंचने से पहले ही बाहर आ गया तो...?

आगे की सोचकर ही उसकी हालत खराब होने लगी थी। बेवकूफ के दिल में यह नहीं उभर रहा था कि पुलिस के पहुंचने तक वह इधर-उधर हो जाये। या सायद नोटों से भरी ड्राज उसे वहीं चिपकाये हुए थी।

¶¶

आर्म्ड पुलिस की भरी हुई जीप थाने से निकलती देख बुरी तरह से चौंका अशरफ। उस वक्त वह थाने के करीब ही खड़ा था। उससे थोड़ा परे हटकर एक मैटाडोर वैन खड़ी थीं, जिसमें कि उसके पांच साथी मौजूद थे. रहमान खान ने रात को ही उसकी ड्यूटी थाने पर नजर रखने की लगा दी थी। हालांकि अशरफ ने उससे पूछा भी था कि वह ऐसी ड्यूटी क्यों लगा रहा है, मगर रहमान खान ने उसे उसकी बात का जवाब नहीं दिया था। अपने आदेश में उसने सिर्फ यही कहा था कि वह थाने पर नजर रखे और अगर कोई अप्रत्याशित बात होते देखे तो उसे फौरन खबर करे। और इस वक्त वह अप्रत्याशित होते ही देख रहा था। अप्रत्याशित यह नहीं था कि थाने से हथियारबंद पुलिस की भरी हुई जीप निकली थी। अप्रत्याशित तो यह था कि जीप खुद इंस्पेक्टर किशन लाल शर्मा चला रहा था और उसके चेहरे पर फैली उत्तेजना यह बता रही थी कि वह जल्द-से-जल्द कहीं पहुंचना चाहता है । तुरन्त उसने जेब से मोबाइन फोन निकाला और जल्दी-जल्दी रहमान खान का नम्बर मिलाने लगा।

"हैलो...।" तभी दूसरी तरफ से रहमान खान की आवाज आई।

AJ SCAN

“अशरफ बोल रहा हूं खान साहब...।” अशरफ बोला।

“हां, बोलो अशरफ...क्या रिपोर्ट है?”

“अभी-अभी थाने से आर्म्ड पुलिस की भरी हुई जीप निकली है...और ऐसा लगता है कि कहीं हमला करने के उद्देश्य से जा रहा है इंस्पेक्टर...।”

“फौरन जीप का पीछा करो।”

“जी...।”

“और जिस पर भी पुलिस हमला करे...उसे हर हाल में बचाकर मेरे पास लाना है।”

“यह आप क्या कह रहे हैं?” चौंका अशरफ।

“ऐसे सवाल बाद में भी पूछे जा सकते हैं। जीप हाथ से निकल गई तो...।”

“मैं अभी पीछा करता हूं...।”

हड़बड़ाया अशरफ और फौरन मैटाडोर की तरफ भागा। आनन-फानन वह मैटाडोर में बैठा और चीखा-

“जल्दी चलो....।”

कुछ ही पलों में मैटाडोर रॉकेट बनी उधर उड़ती नजर आ रही थी, जिधर कि जीप गई थी। ज्यादा देर नहीं लगी उसे जीप को पकड़ने में।

AJ SCAN

जीप के पीछे लगे रहो।" वह बोला और फिर अपने साथियों को समझाने लगा कि उन्हें क्या करना है।

¶¶

पन्द्रह मिनट बाद सतीश रावण अण्डरवियर का इलास्टिक ठीक करते हुए बाथरूम से बाहर निकला। बाथरूम से बाहर निकलते ही नजरें कमरे के दरवाजे पर पड़ी तो बुरी तरह से चौंक उठा वह । उसे अच्छी तरह से याद था कि बाथरूम में जाने से पहले उसने दरवाजा बन्द किया था...और अब वह दरवाजा खुला हुआ देख रहा था। चौंकना स्वाभाविक था उसका। तुरन्त वह बैड की तरफ लपका। गद्दे के कोने के करीब आकर उसने झुकककर गद्दे को उठाया तो उसे वहां सिर्फ अपनी तीनों रिवाल्वरें और आरी पड़ी हुई नजर आई। नोट पूरी तरह से साफ हो चुके थे। उसी पल उसकी आंखों के सामने युवती का चेहरा नाच उठा।

"साली हरामन...हरामी से हरामीपना। चोर को ही लूट लिया...।"

वह बड़बड़ाया। तुरन्त उसने गद्दे को छोड़ा और जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने लगा। कपड़े पहनकर उसने आरी पीठ से चिपकाई और फिर एक रिवाल्वर पैंट की जेब में...दूसरी बैल्ट में फंसाई और तीसरी अपनी जैकेट की भीतरी जेब में डाल ली। तत्पश्चात् उसने गद्दे के नीचे से थैला निकाला...उसे कन्धे पर लादा और कमरे से बाहर आकर युवती की तरफ बढ़ा। इधर युवती ने सतीश रावण को देखा तो उसके पसीने छूटने लगे। जिस्म कांपने लगा। व्याकुल निगाहों से उसने दरवाजे की तरफ देखा। मगर दरवाजे से बाहर उसे कोई भी पुलिसिया नजर नहीं आया। उसने पुनः सतीश रावण की तरफ देखा। अब तक सतीश रावण उसके काफी करीब आ चुका था। वह जबरदस्ती मुस्कुराई और अपना हाथ उसकी तरफ फैलाती हुई बोली-

"बकाया रकम...।"

यह दो शब्द कहने में उसे कितना जोर लगाना पड़ा था, यह वह ही जानती थी। पसीने से तर-ब-तर हो गया था उसका चेहरा। जिस्म कांप उठा था। सतीश रावण के होठों पर जहरीली मुस्कान रेंग गई। आंखों में पिशाच जाग उठे।

"बकाया पैसे चाहियें तुझे...?" वह बोला।

AJ SCAN

जवाब में युवती ने जोरो से थूक सटकी।

“ए...ऐसे कैसे बोल रहे हो?” वह थर्राये स्वर में बोली। सतीश रावण ने बड़े इत्मीनान से जेब से रिवाल्वर निकाली और उसके खूबसूरत चेहरे की तरफ तानते हुए बोला—

rcz202016@gmail.com

“तू बेवकूफ है...जानती है इस एक रिवाल्वर की क्या कीमत है? चोर बाजार में भी वह चीस-चालीस हजार से कम नहीं मिलती और तू एक की बजाय तीन-तीन रिवाल्वरें छोड़ आई...पता है कितना नुकसान किया तूने अपना...।”

युवती के गले की घण्टी जोरों से उछली।

“त...तुम क्या कह रहे हो...? म...मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा।”

“अपने पैसे काट...और शराफत से मेरी बकाया रकम मुझे दे दे...वरना तेरा यह खूबसूरत थोबड़ा पलभर में ही चीथड़े-चीथड़े हो जायेगा।”

“ल...लेकिन...।”

“जल्दी कर...।”

सतीश रावण की गुर्राहट ने युवती को भीतर तक दहला दिया।

“द...देती हूं...।”

सतीश रावण की गुर्राहट ने युवती को भीतर तक दहला दिया।

“द...देती हूं...।”

AJ SCAN

वह कांपते स्वर में बोली और ड्राज खींचकर उसमें से एक-एक गड्डी निकाल काउण्टर पर रखने लगी। सतीश रावण साथ-के-साथ गड्डी जेब में पहुंचा रहा था। अभी वह तीसरी गड्डी ही जेब में पहुंचा पाया ता कि तभी-

"धांय...।"

rcz202016@gmail.com

दरवाजे की तरफ से गोली चली और सतीश रावण की रिवॉल्वर उसके हाथ से छूटकर परे जा गिरी। गोली की आवाज सुनकर युवती जोरों से चीखी और मारे खौफ के कुर्सी समेत ही पीछे को उलट गई। इधर सतीश रावण ने चौंकककर दरवाजे की तरफ देखा तो उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा। एक-दो नहीं दस से ज्यादा राइफलें तनी हुई थीं उसकी तरफ। साथ में एक रिवाल्वर—जिसमें से निकली गोली ने उसकी रिवॉल्वर को उसके हाथ में जुदा किया था। वह रिवाल्वर इंस्पेक्टर किशन लाल शर्मा के हाथ में थी।

"हैंड्सअप...।"

गुर्राया इंस्पेक्टर किशन लाल शर्मा। चालाकी का कोई मौका नहीं था...सो सतीश रावण ने शराफत का सबूत देते हुए हाथ ऊपर उठा लिये। तभी बुरी तरह से कांपती हुई युवती खड़ी हुई। पुलिस को देख उसके उड़े रंगों कुछ बहार लौटी। अब उसे लग रहा था कि वह बच जायेगी। उधर किशन लाल शर्मा रिवाल्वर सतीश रावण की तरफ ताने उसकी तरफ बढ़ा।

ठीक तभी-

जैसे कोई बिजली-सी चमकी। सतीश रावण के कॉलर में से उसकी आरी निकली। और जब तक किशन लाल शर्मा पर कोई और कुछ समझता।

“खचाक!”

अगले ही पल किशन लाल शर्मा की रिवाल्वर वाली कलाई नीचे लटक गई और वहां से खून का फव्वारा फूट पड़ा। रिवाल्वर उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर पड़ी। वार करते ही सतीश रावण अपने स्थान से उछला और काउण्टर के पीछे खड़ी

AJ SCAN

युवती के पीछे जा पहुंचा। इधर सिपाहियों ने अपने अफसर का हाथ कटते देखा तो उन्होंने फौरन अपनी राइफलों के मुंह खोल दिये।

“धांय...धांय।”

rcz2020016@gmail.com

मगर वक्त रहते सतीश रावण युवती को अपनी ढाल बना चुका था। नतीजा—गोलियों युवती के जिस्म में जा धंसी। सिपाहियों ने इस स्थिति को देखा तो वे बुरी तरह से बौखला उठे और जब तक वे कुछ समझते-

“रेट...रेट...रेट...।”

पीछे से कहर टूट पड़ा उन पर। सिपाहियों को सपने में भी अंदाजा नहीं था कि मौत उन पर पीछे से बरस पड़ेगी। सो जब तक वे पीछे मुड़ते...उनमें से चार कम हो चुके थे। बाकी अपनी जान बचाने के लिये इधर-उधर पोजीशन लेने के लिये भागे। तभी सतीश रावण ने थैले में से एक हैण्डग्रेनेड निकाला...दांतों से उसकी पिन खींची और बाहर की तरफ उछाल दिया।

“बड़ाम...।”

गगनभेदी धमाका हुआ और उस धमाके में इंसानी चीखों के साथ तीन सिपाहियों के चीथड़े उड़ते नजर आये। सतीश रावण ने एक और बम निकाला और दांतों से उसकी पिन खींचकर युवती की लाश को एक तरफ फेंका और काउण्टर के पीछे से निकलकर किशन लाल शर्मा की तरफ फेंका। एक हाथ में बम तथा दूसरे हाथ में आरी पकड़े दरिन्दे को अपनी तरफ बढते देख किशन लाल शर्मा की हाल त पतली होने लगी...उसके पीले पड़े चेहरे की रंगत और भी पीली पड़ गई। सतीश रावण उसकी बिगड़ती हालत देख मुस्कुराया और बम को सिपाहियों पर उछाल दिया।

“बड़ाम...।”

तेज धमाके के साथ दो और सिपाही चीथड़ों में तब्दील हो गये।

“मेरे को पकड़ने आया था तू...?”

AJ SCAN

सतीश रावण किशन लाल शर्मा के चेहरे पर निगाहें गड़ाते हुए हंसा। किशन लाल शर्मा ने जोरों से थूक सटकी। मुंह से बोल तक नहीं फूटा उसके। इससे पहले कि सतीश रावण उससे कोई सवाल करता...या अपनी आरी चलाता...। गेट में से ए०के० सैंतालीस से लैस चार आदमियों ने प्रवेश किया। सतीश रावण की गर्दन उनकी तरफ मुडती साथ ही उसकी आरी अपने आप ही उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर पड़ी और हाथ ऊपर उठ गये। राइफलें उसी की तरफ जो तनी थीं...ऐसे में आरी छोड़ने में ही अक्लमन्दी थी। तभी उनमें से एक ने स्टेनगन का रुख किशन लाला शर्मा की तरफ किया और ट्रेगर दबा दिया।

rcz202016@gmail.com

“रेट...रेट...रेट....।”

एक साथ कई गोलियां किशन लाल शर्मा के जिस्म में जा समाईं। उसका जिस्म जोरों से उछला...नीचे गिरा-पल-दो पल छटपटाया...फिर शांत हो गया। उसी व्यक्ति ने जिसने किशन लाल शर्मा को गोलियों से भूना था, सतीश रावण की तरफ कदम बढ़ाया और ए०के० सैंतालीस की नाल उसके सीने से लगाते हुए गुर्राया-

"कोई चालाकी नहीं दिखानी...वरना मुझे तेरे सीने में गोली मारने में कोई अफसोस नहीं होगा।"

सतीश रावण ने बड़ी शराफत से सहमति में गर्दन हिला दी। इतना तो वह समझ ही गया था कि उस पर राइफलें तानने वाले उसे मारने नहीं, बल्कि अपने साथ ले जाने आये हैं...क्योंकि अगर उन्होंने उसे मारना होता तो फिर पुलिस से बचाते ही क्यों? उस व्यक्ति ने सतीश रावण की जेबों से रिवाल्वरें बरामद कीं...फिर उसके कन्धें पर लटक रहे थैले को भी अपने कब्जे में कर लिया। तत्पश्चात् उसने फर्श पर पड़ी उसकी आरी उठाई और पीछे हटते हुए बोला—

"बाहर निकल...।"

सतीश रावण ने चुपचाप बाहर की तरफ कदम बढ़ाये। बाहर बायीं तरफ मैटाडोर वैन खड़ी थी, जिसमें कि अशरफ अपने साथियों के साथ बैठा था।

"इधर आ जा...।" अशरफ ने आवाज लगाई। सतीश रावण ने चुपचाप बड़ी शराफत से कदम उधर बढ़ाये। कुछ ही देर में वह मैटाडोर में बैठा दस व्यक्तियों से

AJ SCAN

घिरा था तथा मैटाडोर तेजी से सड़क पर भागती नजर आ रही थी।

“कौन हो तुम...?” तभी सतीश रावण ने अपना मुंह खोला-“और मुझे कहां ले जा रहे हो?”

“थोड़ा इन्तजार करो...।” मुस्कुराया अशरफ-“तुम्हारे सारे सवालों का जवाब मिल जायेगा तुम्हें...।”

¶¶

रहमान खान पर नजर पडते ही सतीश रावण के होठों से गहरी सांस निकल गई। उसे देखते ही उसे सारे सवालों का जवाब अपने आप ही मिल गया था।

“फंसा...।”

वह मन-ही-मन बड़बड़ाया। रहमान खान के अड्डे से वह न सिर्फ जिन्दा बचतर निकल गया था...बल्कि उसके एक आदमी को भी मार गया था वह...और फिर उसने उसके आदमियों की संख्या में इस कदर कटौती की। दो अड्डों को तबाह कर चुका था वह उसके। इतना तगडा नुकसान कर चुका था वह उसका...ऐसे मैं जाहिर था कि अब वह उसे किसी भी सूरत में नहीं बख्शेगा। रहमान खान उसके चेहरे पर निगाहें गड़ाते हुए मुस्कुराया.

“तुम्हारे बहराम द थैले में से मोबाइल बमों के अलावा दस्ती बम भी मिले हैं हमें सरदार जी! कहां से मिला थैला?”

सतीश रावण कुछ नहीं बोला...बस उसकी तरफ देखता रहा।

“साथ में दो रिवाल्वरें और एक आरी भी मिली है।”

सतीश रावण ने चुपचाप सिर से पगड़ी उतार दी...और दाढ़ी-मूछें तथा सिर के नकली बाल भी उतार दिये। वह समझ गया कि वह पहचान लिया गया है...सो अब

AJ SCAN

खुद को छुपाने का कोई फायदा नजर नहीं आया उसे। उसे असली रूप में देखकर रहमान खान के होठों पर फैली मुस्कान गहरी हो गई।

"समझदार हो।"

rcz20सतीश रावण कुछ नहीं बोला।m

"बैठो।"

सतीश रावण चुपचाप एक कुर्सी पर बैठ गया। जिस अंदाज से रहमान खान अभी तक उससे पेश आया था...उससे सतीश रावण इतना तो समझ ही गया था कि फिलहाल उसे कोई खतरा नहीं। यूं भी वह चार व्यक्तियों से घिरा हुआ था...जो कि उसकी कुर्सी के पीछे उसके सिर पर खड़े थे...ऐसे में वह कोई भी गफलत हरकत नहीं कर सकता था। रहमान खान ने कुर्सी पर बैठे-बैठे ही पहलू बदला और बोला-

"हैरान हो रहे होगे तुम कि हम तुम तक पहुंच कैसे गये?"

"सो तो हूं।" सतीश रावण गम्भीरता से बोला।

"तुम्हारी पिछली सारी खता माफ...।" रहमान खान बोला-"तुमने मुझे गालियां निकालीं...माफ...। मेरे अड्डों को तबाह किया...माफ...। मेरे इतने आदमियों का कत्ल किया...सब कुछ माफ...और यह माफी मैं तुम्हें रात को ही दे चुका था...तुम्हें माफी देने के बाद मैंने तुम्हारी तलाश शुरू की। तलाश शुरू करने के साथ ही मैंने अशरफ को कुछ आदमियों के साथ थाने पर निगाह रखने पर लगा दिया था।"

"क्यों...?"

"जिस तरह तुम कत्ल-पर-कत्ल किये जा रहे थे...उससे जाहिर था कि पुलिस तुम्हारी तलाश में धक्के खा रही थी...ऊपर से हमारे कारण रेड अलर्ट था। सो मैंने सोचा कि हो सकता है तुम पुलिस के हत्थे चढ़ जाओ...और अगर तुम पुलिस के हत्थे चढ़ गये तो तुम्हारा बचना नामुमकिन था। इसीलिये मैंने थाने पर निगरानी लगाई थी, ताकि पुलिस का कोई भी जत्था अगर हथियार बन्दहोकर थाने से निकलेगा तो

AJ SCAN

जाहिर हे कि वह कहीं अटैक करने जा रहा है...और मौजूदा हालात में अटैक सिर्फ तुम पर ही हो सकता था।"

"यानी अशरफ थाने से पुलिस का पीछा करते हुए गेस्ट हाउस पहुंचा था।"

"बिल्कुल...और इस तरह मैंने तुम्हें पुलिस के हाथों मरने से बचा लिया...मेरा शुक्रिया अदा करो।"

"शुक्रिया...।" सतीश रावण मुस्कुराया-"मेरी खतायें माफ करने का भी शुक्रिया। अब अपने होठों से यह भी कह दो कि मेरी तमाम खतायें माफ करने के पीछे तुम्हारा मकसद क्या है?"

"तुम्हें पता होगा हरि सिंह गहलौत मर चुका है।"

जवाब देने की बजाय बोला रहमान खान।

“क...क्या...?” बुरी तरह से उछल पड़ा सतीश रावण।

“मैं झूठ नहीं बोल रहा।”

“ल...लेकिन वो मरा कैसे...?”

“पुलिस के मुताबिक तुमने उसकी कार पर बम फेंककर कार समेत उसके परखच्चे उड़ा दिये थे।”

“म...मैने...!” हड़बड़ाया सतीश रावण।

“पुलिस के मुताबिक...।”

AJ SCAN

“और हकीकत क्या है...?”

“हकीकत यह है कि वह अपनी बेवकूफी और कंजूसी की वजह से मरा।”

“क्या मतलब...?”

rcz202016@gmail.com

“मैंने उसे कहा था कि तुम्हें पचास लाख दे दे... मगर वह था कि देने को तैयार ही नहीं था...सो...।”

“तुमन उसे मार डाला...।”

“हां...।” मुस्कुराया रहमान खान। सतीश रावण के चेहरे पर निराशा फैल गई। उसे पूरा भरोसा था कि वह हरि सिंह गहलौत से पचास लाख वसूल कर लेगा...मगर उसकी मौत से उसकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया।

“लगता है पचास लाख डूबने का अफसोस हो रहा है तुम्हें?”

“सो तो होगा ही...।” गहरी सांस छोड़ी सतीश रावण ने- “मुझे पूरा विश्वास था कि मैं हरि सिंह गहलौत से पचास लाख हासिल कर लूंगा...मगर तुमने उसे मार कर मेरी सारी उम्मीदों पर पानी फेक दिया।”

उसने पुनः गहरी सांस छोड़ी। रहमान खान के होठों पर कुटिल मुस्कान नाच उठी।

“अगर तुम चाहो तो पचास की बजाय सौ लाख कमा सकते हो।”

“सौ...लाख...?” बुरी तरह से चौंका सतीश रावण।

“सौ लाख...मतलब एक करोड़।” रहमान खान न उसकी आंखों के सामने एक उंगली खड़ी की। सतीश रावण ने उसे गहरी निगाहों से ऊपर से नीचे तक देखा।

AJ SCAN

“इतने दानवीर तो नजर नहीं आते तुम कि मेरी झोली में एक करोड़ फेंक दो।”

“तुमसे किसने कहा कि मैं दानवीर हूं...?”

rcz202016@gmail.com

“यानी करोड़ रुपये के बदले कोई काम करना पड़ेगा मुझे...?”

“तुम्हारी खतायें यूं ही माफ नहीं कीं मैंने।” कड़वे स्वर में बोला रहमान खान-“ तुमने मेरी मां को इतनी गन्दी गालियां निकाली कि उन्हें कोई गिरा हुआ इन्सान भी बर्दाश्त नहीं कर सकता...मगर मैंने किया...न सिर्फ बर्दाश्त किया, बल्कि तुम्हें माफ भी कर दिया। तुमने मेरे ढेर सारे आदमियों को मार डाला...मेरे अड्डों को उड़ाकर मेरा जो माली नुकसान किया....उसकी सजा सिर्फ मौत ही थी तुम्हारे लिये...मगर मैने वो सब कुछ भी तुम्हें माफ किया...अब ऊपर से तुम्हें एक करोड़ की ऑफर दे रहा हूं और यह एक करोड़ तुम्हारी खताओं का इनाम नहीं, बल्कि...।”

“बात को लम्बा खींचने की बजाए काम की बात करो रहमान खान...।” सतीश रावण उसकी बात काटते हुए बोला-“क्या काम करवाना चाहते हो...?”

“काम कोई ज्यादा बडा नहीं है।”

“काम बोलो...।”

“बस एक खून करना है।”

“सिर्फ एक खून...?” चौंका सतीश रावण।

“हां...सिर्फ एक खून ...।”

“और उस एक खून के लिये तुम मेरी खतायें माफ कर रहे हो...?”

AJ SCAN

“साथ में एक करोड़ भी दे रहा हूं...।”

“फिर तो खून किसी बड़े बकरे का ही करना होगा।” गहरी सांस छोड़ी सतीश रावण ने।

rcz202016@gmail.com

“तुम ठीक समझे...बल्कि यह कहा जाये कि वह बकरा नहीं, बल्की हाथी है जो ज्यादा बेहतर होगा...और हाथी भी वो, जिसके चारों तरफ शिकारी कुत्तों की फौज खड़ी है।”

सतीश रावण चौंका।

“यानी बॉडीगार्डों से घिरा रहता है वह।”

“बिल्कुल ठीक समझे तुम...।”

“अब लगे हाथ यह भी बता दो कि वह हाथी है कौन...?”

रहमान खान ने पहलू बदला और निगाहें सतीश रावण के चेहरे जमाये हुए बोला-

“पण्डित केदारनाथ...।”

“यानी ब्रह्महत्या का पाप लगेगा मुझे...।”

“क्या...?”

“कुछ नहीं...तुम बोलो..कौन है यह पण्डित केदारनाथ...?”

AJ SCAN

“राजस्थान का सी०एम०।”

बुरी तरह से उछल पड़ा सतीश रावण।

“चीफ मिनिस्टर...।”

rcz202016@gmail.com

“सी०एम० का मतलब चीफ मिनिस्टर ही होता है।”

उसे घूरते हुए गुर्राया रहमान खान। सतीश रावण ने जोरों से थूक सटकी।

“क्या बात है...? सी०एम० का नाम सुनते ही दस्त लग गये।”

सतीश रावण कुछ नहीं बोला।

“मैंने तो सुना था कि तुम बडी पहुंची हुई चीज हो...तुम्हारा दिमाग कम्प्यूटर से भी तेज चलता है। किसी भी समस्या का समाधान तुम चुटकी बजाते ही ढूंढ लेते हो, मगर इस वक्त तुम्हारा चेहरा देखकर लग रहा है कि तुम्हारे बारे में मैंने जो कुछ भी सुना था, गलत था।”

“पांच...।”सतीश रावण ने अपना दायां पंजा उसके सामने फैलाया।

“क...क्या पांच...?”

“पांच करोड़...।”

बुरी तरह से उछल पड़ा रहमान खान और आंखें फाड़े उसे देखने लगा।

“क्या कहा...?”

AJ SCAN

"ऊंचा तो सुनते नहीं तुम...फिर भी बहरे होने का नाटक कर रहे हो। मैंने पांच करोड़ कहा है। सी०एम० का खून करने के पांच करोड़ लगेंगे।" रहमान खान की आंखों में कहर उभर आया।

"तू जानता है तू कहां बैठा है?" वह फुंफकारा।

rcz202016@gmail.com

"आई०एस०आई० के एजेन्ट रहमान खान के सामने बैठा हूं...।" सतीश रावण धूर्तता से मुस्कुराया।

"और तेरे पीछे मेरे बाद मेरे आदमी खड़े हैं...मेरा बस एक इशारा करने की देर होगी कि तुम लराश में तब्दील हो जाओगे।"

"मेरी तरफ से तुम्हें इशारा करने की इजाजत है।"

"क...क्या...?" हड़बड़ाया रहमान खान। उसे सतीश रावण से ऐसे जवाब की सपने में भी उम्मीद नहीं थी। वह तो यह समझ रहा था कि मौत के नाम से ही कांप उठेगा वह...मगर यहां तो मामला ही उल्टा हो गया। वो तो ऐसे बोला था, जैसे मरने को मरा जा रहे हो। सतीश रावण कुटिलता से मुस्कुराया।

"पूरे राजस्थान पर कब्जा करना चाहते हो और मुझे सिर्फ चिड़िया का चुग्गा देकर खुश करना चाहते हो।"

"क्या मतलब...?" रहमान खान पुनः हड़बड़ाया।

"कोई पेशेवर कातिल तो हो नहीं तुम जो तुमने किसी से सी०एम० को खत्म करने का ठेका लिया है।" सतीश रावण बोला-"आई०एस०आई० के एजेन्ट हो तुम। ऐसे में जाहिर है कि सी०एम० को खत्म करके तुमने उसकी गद्दी पर किसी ऐसे शख्स को बिठाओगे जो तुम्रारे इशारों पर काम करेगा। यानी पूरा राजस्थान तुम्हारे कब्जे में आ जायेगा...और इतनी बड़ी स्टेट के कब्जे में आने का मतलब होगा अरबों-खरबों कमाना...क्या पता कल को तुम राजस्थान को भारत से अलग कर पाकिस्तान में ही मिला लो...और यह सारा काम तभी होगा, जब सी०एम० की हत्या होगी और अगर मैंने उसके लिये पांच करोड़ मांग भी लिये तो क्या बुरा किया...जबकि तुम मुझे इशारा करने की धमकी दे रहे हो।"

AJ SCAN

रहमान खान ने बेचैनी से पहलू बदला।

"लेकिन...हम तुम्हें पांच करोड़ नहीं दे सकते...।"

rcz202016@gmail.com

"फिर बेशक मार सकते हो तुम मुझे...मगर मैं लूंगा तो पांच करोड़ ही लूंगा।"

"बड़े ढीठ हो."

"इसमें क्या शक है।" हंसा सतीश रावण।

"बेशर्म भी हो।"

"सो तो हूं...।" सतीश रावण पुनः हंसा। रहमान खान ने पहलू बदला...गहरी सांस छोड़ी और बोला-

"ठीक है...पांच करोड़ मिलेंगे तुम्हें।"

"एक करोड़ एडवांस...।"

रहमान खान ने कहरभरी निगाहों से उसे देखा।

"घूर क्यों रहे हो...? एडवांस ही मांगा है....कोई सारी रकम तो नहीं मांग ली।" सतीश रावण बोला।

"हमने तुम्हारी जान बख्श दी...यह क्या कम एडवांस है?" गुर्राया रहमान खान। सतीश रावण ने गहरी सासं छोड़ते हुए पहलू बदला और समझाने वाले अंदाज में हाथ उठाते हुए बोला-

AJ SCAN

“देखों मियां …हर धन्धे के कुछ उसूल होते हैं…उसूल भी अलग-अलग होते हैं…मगर एडवांस एक ऐसा उसूल है जो हर धन्धे में होता है। तुम किसी भी दुकान पर चले जाओ…या अण्डरवर्ल्ड में कहीं चले जाओ…एडवांस दोगे तभी तुम्हारा काम होगा…वरना नहीं…।”

“और अगर तुम एडवांस लेकर भाग गये तो…?”

कुछ सोचकर बोला रहमान खान।

“क्या मतलब…?”

“तुम अपने मुंह से खुद कबूल कर चुके हो कि तुम सबसे बड़े हरामी हो…।”

“सो तो हूं।” सतीश रावण ने गर्व से सीना फुलाया।

"और धोखा देना तुम्हारी फितरत है...?"

"फितरत नहीं मजबूरी ....।"

"मजबूरी...?"

"मैं धोखा सिर्फ उसी को देता3 हूं जो मुझे धोखा देते हैं, वरना शुरू में मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं होता।"

"मगर तुम्हारी इमेज को मैं जानता हूं...। पाकिस्तान में तुमने जो गुल खिलाये उसकी सारी खबर लग चुकी है मुझे...जब तक तुम्हारा मसला हल नहीं होता...तुम सामने वाले के तलवे चाटते रहते हो...और जैसे ही तुम्हारा मतलब पूरा होता हैं, तुम उसकी गर्दन पर आरी फेर देते हो। हरि सिंह गहलौत की मौत से तुम्हारे पचास लाख डूब गये...और अब तुम एक करोड़ मांग रहे हो...।"

AJ SCAN

“एडवांस मांग रहा हूं...।”

“वही...पचास लाख का दुगुना हुआ यह। ऐसे में क्या पता एक करोड़ हाथ में आते ही तुम भाग जाओ और हम टापते ही रह जायें।”

rcz202016@gmail.com

सतीश रावण के होठों पर व्यंग्यभरी मुस्कान फैल गई।

“लगता है खुद पर भरोसा नहीं तुम्हें...।” वह बोला।

“क्या मतलब...?”

“इतनी ताकत होने के बावजूद भी तुम्हें यह डर सता रहै है कि मैं भाग सकता हूं...।”

"तुम जो न कर गुजरो...वही कम है।" बोला रहमान खान- "यह तो हमारी किस्मत अच्छी थी कि हमने तुम्हें ढूंढ लिया...वरना तुम तो हमारे हाथ कभी भी न आते।"

सतीश रावण ने पहलू बदला...मुस्कुराया और बोला-

"मेरे बारे में इतना कुछ जानने के बावजूद भी तुम मुझे पूरा नहीं जान पाये।"

"क्या मतलब...?"

"पैसा मेरी कमजोरी है रहमान खान। पैसे के लिये में कुछ भी कर सकता हूं...। तुम मुझे एक करोड़ दोगे तो मेरी नजर बाकी के चार करोड़ पर से नहीं हटने वाली...उन्हें पाने के लिये मुझे मजबूरी में ही सही, तुम्हारा काम करना पड़ेगा।"

AJ SCAN

रहमान खान के चेहरे पर सोचें उभर आईं।

"ठीक है।" थोड़ी देर बाद वह गहरी सांस छोड़ते हुए बोला-"एक करोड़ एडवांस दिया।"

"कहां छिपा दिया। अभी तो मैंने देखा ही नहीं...फिर ले कैसे लिया...?"

"जब यहां से निकलोगे तो एक करोड़ तुम्हारे पास होगा।"

सतीश रावण ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया।

"अब मतलब की बात करें...?"

"करो...।" गहरी सांस छोड़ी सतीश रावण ने।

"सी०एम० पण्डित केदानाथ का खून तुम्हें ऐन छब्बीस जनवरी के दिन करना है।"

"आगे-पीछे नहीं...?"

"अगर कोई सॉलिड प्लानिंग हो तो बेशक एक-दो दिन बाद भी कर सकते हो, मगर छब्बीस जनवरी को परेड ग्राउण्ड में ही तुम उसे खत्म कर दो तो वो ज्यादा बेहतर होगा।"

"कैसे...?"

"इससे दहशतगर्दों की दहशत में इजाफा होगा और हम अपने अगले काम और भी आसानी से कर सकेंगे।"

AJ SCAN

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और बोला-

“एक बात कहूं...?”

“कहो...।”

rcz202016@gmail.com

“बुरा तो नहीं मानोगे...?”

“तुम कहो तो?”

“हिन्दुस्तान में सिर्फ एक ही हरामी है और वह तुम्हारे सामने बैठा है...मगर पाकिस्तान तो हरामियों से भरा पड़ा है...वो भी मेरे से भी बड़े हरामियों से भरा पड़ा है।”

“सतीश रावण...।” गुर्राया रहमान खान।

“अरे तुम्हें रोटी तो खाने को मिलती नहीं और पड़ोसी का घर उजाड़ने को पानी तरह पैसा बहा रहे हो।”

“क्यों...चिढ़ रहा है तू...?”

“मुझे भला क्या चिढ़...मेरी तरफ से तुम पूरे भारत के टुकड़े कर दो...मुझे भला क्या फर्क पड़ने वाला है? मुझे तो बस पैसों से मतलब है...और वो तुम मुझे दे रहे हो।”

“तो फिर सिर्फ काम की बात करो...और आइन्दा हमें हरामी कहने की गुस्ताखी भील कर भी मत करना।”

सतीश रावम ने मुस्कुराते हुए सिर हिला दिया, फिर बोला-

AJ SCAN

"तो तुम छब्बीस जनवरी को सी०एम० का काम तमाम करना चाहते हो?"

"हां।"

rcz202016@gmail.com

"और आज तेईस जनवरी है...यानी सिर्फ दो दिन पड़े हैं बीच में।"

"बिल्कुल...।"

"ऐसे में जाहिर है कि तुमने भी कोई प्लान बनाया होगा।"

"हां बनाया था।" रहमान खान ने गहरी सांस छोड़ी-"मगर तुम्हारे कारण हमारा सारा प्लान चौपट हो गया।"

"मेरे कारण...?" कहकर रहमान खान ने एक गहरी सांस छोड़ी-"इतना शानदार प्लान बनाया था मैंने...मगर तुमने सब गुड़गोबर करके रख दिया।"

"वो कैसे...?" हैरानी से बोला सतीश रावण।

"मेरे इतने आदमियों को मार डाला...मेरा इतना असलाह तबाह कर दिया...और पूछ रहे हो कैसे!"

सतीश रावण की हैरानी और बढ़ी।

"यानी तुम छब्बीस जनवली को सीधे सी०एम० पर हमला करने का प्लान बनाये हुए थे।"

"नहीं...।"

AJ SCAN

"तो...?"

"मेरा प्लान यह था कि चौबीस और पच्चीस जनवरी को मैं शहर में एक साथ कई विस्फोट कराता...जिसमें कि कई लोगों की जान जानी थी।"

"उससे क्या होता...?"

"रक्षा तन्त्र छब्बीस जनवरी को देखते हुए पूरे शहर में पुलिस का जाल फैला देता, ताकि कहीं कोई अप्रिय घटना न हो...और ऐसे में जाहिर था कि परेड ग्राउण्ड पर सी०एम० की हिफाजत में काफी कमी आ जाती।"

"फिर...?"

"मैंने दो मानव बम तैयार कर रखे थे जो कि तुम्हारे हमले में मारे गये।"

“यानी उन्हें तुमने सी०एम० को खत्म करने के लिये तैयार कर रखा था।”

“हां...।”

“क्या वो सी०एम० के करीब पहुंच जाते?”

“मैंने प्लान ही ऐसा बना रखा था कि सी०एम० खुद उनके करीब पहुंचता...।”

“वो कैसे...?”

“सी०एम० अपनी कार से निकलकर अपने बॉडीगार्ड्स से घिरा स्टेज की तरफ बढ़ता।” रहमान खान बोला- “वहां बतौर चीफ गेस्ट उसकी कुर्सी पड़ी होनी थी। उसके अपनी कारों के पास से हटते ही मेरा एक आदमी कारों के करीब पहुंच जाता

AJ SCAN

और जैसे ही सी०एम० स्टेज के करीब पहुंचता तो एक साथी तीन-चार बम उसके आस-पास गिरा देता।"

"फिर...?"

"धमाकों सो जाहिर है वहां अफरा-तफरी मच जाती।"

"बिल्कुल...।"

"और सी०एम० के बॉडीगार्ड्स उसे अपने घेरे में ले फौरन कारों की तरफ बढ़ते।"

"फिर...?"

“जैसे वह कार के करीब पहुंचता...वहां खड़ा मानव बम सीधा उस पर छलांग लगाता और दोनों के परखच्चे उड़ जाते...।”

“ओह!”

“और अगर वह कामयाब नहीं भी होता तो दूसरा मानव बम उस पर छलांग लगा देता। कुल मिलाकर उसकी मौत यकीनी थी...मगर तुमने मेरा न सिर्फ सारा असलाह तबाह कर दिया...बल्कि मेरे दोनों मानव बम भी खत्म कर दिये।”

सतीश रावण ने अफसोसभरी गहरी सांस छोड़ी और बोला—

“प्लान तो तुम्हारा बढ़िया था...मगर उसके कामयाब होने के चांस सिर्फ साठ परसेंट थे।”

“यानी...?”

AJ SCAN

“सी०एम० की मौत यकीनी नहीं थी तुम्हारे प्लान में...उसके बचने के चालीस परसेंट चांस थे।”

“कैसे...?” हैरानी से बोला रहमान खान।

rcz202016@gmail.com

“वो ऐसे कि सी०एम० के कार से निकलने के बाद ही कार की रखवाली होनी थी और कोई भी वांछित तत्व उसके करीब भी नहीं फटक सकता था। यानी मानव बमों वाला तुम्हा3रा फार्मूला उसी सूरत में कामयाब होना था जब बॉडीगार्ड्स बेवकूफ होते जोकि नहीं हैं।”

“ओह...!”

“और अफरा-तफरी पैदा करने के लिये जो वहां तुमने धमाके करने थे... उससे सी०एम० की हिफाजत भी वहां मौजूद हर सिपाही को ज्यादा सतर्क हो जाना थी। यानी वहां के लोगों को लाठियां मार-मारकर खदेड़ दिया जाता...ऐसे में तुम्हारे

मानव बम वहां कैसे टिके रह सकते थे। बल्कि सी०एम० को अपनी कार के करीब पहुंचने तक तो पुलिस तुम्हारे मानव बमों को वहां से काफी दूर तक खदेड़ देती।"

"जरूरी तो नहीं यह सब...।"

"वही तो कह रहा हूं कि सफलता के साठ परसेंट और नाकामी के चालीस परसेंट चांस होते।"

"और जो प्लान तुम बनाओगे उसमें कामयाबी के चांस कितने परसेंट होगे? वो मैंने नहीं तुमने बनाना है।"

"अभी मैंने प्लान बनाया ही नहीं।"

सतीश रावण हंसकर बोला।

AJ SCAN

“कब तक बना लोगे प्लान...?”

“वो तो चुटकियों में बन जाएगा। बस एक बार दिमाग की फैक्ट्री में तेल पड़ जाएगा।”

“घबराओ नहीं...जब यहां से निकलोगे तो तुम्हारी फैक्ट्री तेल से भरी पड़ी होगी।”

“मुझे मालूम है।”

“और कुछ पूछना है...?”

“अभी पूछा ही कहां है मैंने..?”

“यानी अभी तक भेजा ही खा रहे थे मेरा?”

“नहीं...बल्कि जानकारी ले रहा था...अभी तो मैंने और भी जानकारी लेनी है...फिर सी०एम० के सुरक्षा प्रबंधों के बारे में जानना है...उसके बाद ही मेरी पूछताछ खत्म होगी।”

“यानी अभी और भेजा खाओगे?”

“तुम ऐसा ही सोच लो...।”

“खाओ...।” मुंह बनाकर रहमान खान ने कहा- “पूछो क्या पूछना चाहते हो?”

“सी०एम० को खत्म करने के बाद उसकी कुर्सी पर किसे बिठाओगे?”

AJ SCAN

"क्या मतलब?"

"पहले तो हरि सिंह गहलौत था जो तुम्हारे तलवे चाहता था...मगर वह खत्म हो चुका है...यानी हरि सिंह गहलौत के अलावा भी कोई और है जो तुम्हारे सामने दुम हिलाता है और वह भी जाहिर हे कि कोई मन्त्री है...क्योंकि कोई दूसरा सी०एम० बन नहीं सकता न।"

rcz202016@gmail.com

"तो...?"

"मुझे उसका नाम बताओ...।"

"क्यों..."?"

सतीश रावण ने पहलू बदला और निगाहें रहमान खान के चेहरे पर स्थिर करते हुए बोला—

"सी०एम० को खत्म करने का जो प्लान तुमने बनाया था...उसमें सुरक्षा प्रबन्धों की जानकारी प्राप्त करने की कोई जरूरत नहीं थी। जबकि जो प्लानिंग मैं करूंगा...उसमें जरुरत होगी...और पूरी जरूरत होगी।"

"तो...?"

"चूंकि तुम्हें सी०एम० के सुरक्षा प्रबंधों को जानने की जरूरत नहीं थी...इसलिए जाहिर हे कि तुम्हें उनका पता भी नहीं होगा...हां उस मंत्री को उसका पता जरूर हो सकता है...।"

"ओह...तो इसलिए तुम उसका नाम पूछ रहे थे।"

"तो और क्या मुझे उसका अचार डालना है।"

AJ SCAN

“ कालीसिंह...।”

“कालीसिंह...?”

“कालीसिंह शेखावत...होम मिनिस्टर है।” बोला रहमान खान।

rcz202016@gmail.com

“होम मिनिस्टर है....फिर तो उसे पूरे सुरक्षा प्रबन्धों की जानकारी होगी।”

“सो तो होगी ही।”

“कहां रहता है...?”

“भरतपुर...।”

"उससे जानकारी प्राप्त करो...और मुझे बताओ...।"

"चाहो तो यहीं बुला लूं...तुम खुद पूछ लेना जो पूछना चाहो...।"

"यह बढ़िया रहेगा।" सतीश रावण मुस्कुराया।

"और कुछ...?"

"मैं जा रहा हूं।" सतीश रावण गम्भीरता से बोला— "मगर फैक्ट्री की टंकी अभी खाली है।"

रहमान खान ने सतीश रावण के पीछे खड़े एक व्यक्ति को इशारा किया। तुरंत वह व्यक्ति अपने स्थान से हटा और कमरे से बाहर निकल गया।

AJ SCAN

“तुम्हारा एक करोड़ आ रहा है।” रहमान खान गम्भीरता से बोला-“और कुछ...?”

“मेरी आरी और रिवॉल्वर...।”

rcz202016@gmail.com

दो मिनट में ही सतीश रावण की गोद में उसकी आरी और वे दोनों रिवॉल्वर भी थीं। सतीश रावण ने आरी अपनी पीठ पर चिपकाई और दोनों रिवॉल्वर अपने कपड़ों में कहीं छुपा लीं. तभी बाहर गया व्यक्ति एक सूटकेस उठाये भीतर प्रविष्ट हुआ। जिस तरह वह एक तरफ झुक कर लड़खड़ाता हुआ चल रहा था उसी से पता चल रहा था कि सूटकेस काफी भारी है। उसने सूटकेस दोनों के बीच में पड़ी सेंटर टेबल पर रखा और पीछे हट गया।

“चैक कर लो...चाहो तो गिन भी लो...पूरा एक करोड़ है।”

बोला रहमान खान। बिना कुछ कहे सतीश रावण ने सूटकेस को घुमाकर उसका मुंह अपनी तरफ किया और उसके बाद खेलकर ढक्कन को उठाया। पांच-पांच सौ के नोटों से भरा पड़ा था सूटकेस।

"असली हैं न...?" सतीश रावण मुस्कुराया।

"क्यों...? कोई शक है क्या...?"

"दरअसल पाकिस्तान से नकली नोटों की बाढ़-सी आ रही है...इसलिए पूछ रहा हूं...।"

"चैक कर लो।"

भुनभुनाते हुए बोला रहमान खान।

AJ SCAN

“अपने ठिकाने पहुंचकर जरूर करूगां।”

“असली हैं।”

“फिर भी चैक करूगां।”

rcz202016@gmail.com

“असली हैं।”

“फिर भी चैक करूंगा।” हंसा सतीश रावण। रहमान खान ने बेचैनी से पहलू बदला। सतीश रावण ने सूटकेस बंद किया और गहरी सांस छोड़ते हुए बोला—

“आशा गेस्ट हाऊस से निकलते वक्त कईयों ने देखा था मुझे...।”

“तो...?”

“अगर इन कपड़ों में ...या इस हुलिये में उसने करीब पड़ी अपनी नकली दाढ़ी-मूछों की तरफ इशारा किया-“शहर में घुसूंगा तो कोई भी पहचान सकता है मुझे...इसलिये मेरे लिये थोड़े-सा मेकअप का सामान मंगा दो।”

“क्या चाहिये...?”

सतीश रावण उसे बताने लगा।

¶¶

दस बजे सतीश रावण गंगानगर के सबसे महंगे होटल गोल्ड रश में प्रवेश कर रहा था। इस वक्त उसके जिस्म पर गहरे नीले रंग का शानदार सूट था...।नीचे उसने सफेद शर्ट पहन रखी थी। आंखों पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा था...। दोनों हाथों की उंगलियों में चार अंगूठियां थें। बालौं की रंगतक लाली लिये हुए थी तथा नाक के नीचे भी बालों की सी रंगत वाली छोटी-छोटी मूंछें थीं। कुल मिलकर वह किसी रईस

AJ SCAN

खानदान का चश्मोचिराग नजर आ रहा था। रिसेप्शन पर उसने अपन नाम देवेन्द्र सिंह राठौर लिखवाया था...तथा पते के नाम पर भरतपुर का एक पता लिखवा दिया था। दो दिन का एडवांस देकर वह रूम ब्वॉय के साथ अपने कमरे में पहुंचा...। रूम ब्वॉय उसका सूटकेस रखकर बाहर निकला तो सतीश रावण कमरे का मुआयना करने लगा। बहुत ही शानदार ढंग से सजा हुआ था कमरा। सतीश रावण ने बैड पर बैठकर जूते उतारे और बैड की पुश्त पर लगा स्विच दबा दिया। शीघ्र ही रूम-ब्वॉय उसके सामने खड़ा था। सतीश रावण ने अपने लिये नाश्ते का ऑर्डर दिया और बैड की पुश्त पर टेक लगाकर सोच में डूब गया। रहमान खान पाकिस्तानी था...। इससे उसे कोई मतलब नहीं था कि वह दुश्मन देश का आदमी था। वह तो सिर्फ पैसे से प्यार करता था। दौलत के लिये अगर कोई उससे उसके ही देश का सौदा करे तो उसे कोई हर्ज नहीं होता। वह रहमान खान के बारे में सोच रहा था जिसका उसने इतना नुकसान कर डाला था कि उसका बदला सिर्फ उसकी मौत से ही पूरा हो सकता था। मगर उसने उसे खत्म करने की बजाय न केवल गले लगाया बल्कि उसकी सारी खतायें भी माफ कर दीं...ऊपर से एक करोड़ बतौर एडवांस भी दे दिया। पाकिस्तानियों के बारे में जानता था वह...खासतौर से आई०एस०आई० के एजेन्टों को जान गया था वह जो उसी की तरह कहते कुछ और हैं तथा करते कुछ और हैं। वह समझता था कि काम होते ही उसे बाकी के चार करोड़ मिलने की बजाय सिर्फ मौत हीं मिलेगी। जिंदगी का जरा-सा भी चांस नहीं...ऊपर से वह यह भी जानता था कि वह हर पल उसके आदमियों की निगाहों में होगा। यानी भागने का भी कोई चांस नहीं। इस वक्त वह यही सोच रहा था कि वादा पूरा करने के बाद खुद को कैसे बचाया जाये? मगर अभी तक कोई भी रास्ता उसके जेहन मे नहीं आ रहा था। तभी रूम ब्वॉय नाश्ते की ट्रे उठाये भीतक प्रविष्ट हुआ।

rcz202016@gmail.com

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घण्टी घनघनाई। कालीसिंह शेखावत ने कॉफी का घूंट भरा और मग को टेबल पर रख रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

rcz202016@gmail.com

"यस...।" वह माउथ पीस में बोला।

"कोई रहमान खान आपसे बात करना चाहते हैं।"

दूसरी तरफ से ऑपरेटर की आवाज आई। कालीसिंह के जेहन में रात वाले फोन की याद गूंजी। सुबह फोन करने का वादा किया था रहमान खान ने। और इस वक्त वह अपना वादा पूरा कर रहा था।

"लाइन दो।" वह गम्भीर स्वर में बोला। तुरंत हल्की-सी क्लिक की आवाज आई और दूसरी तरफ से रात वाली आवाज आई...।

AJ SCAN

“हैलो...।”

“यस....” कालीसिंह गम्भीरता से बोला।

“पहचाना मुझे मन्त्रीजी...मैं रात वाला रहमान खान...।”

“पहचान लिया है।” कालीसिंह बोला-“ तुमने कहा था कि सुबह मुझे बताओगे कि मैं राजा कैसे बन सकता हूं...।”

“मुझे याद है और आपको भी याद होगा कि मैंने कहा था कि आप भी हमारा पूरा साथ देंगे।”

“बिल्कुल कहा था।”

“हमारी तरफ से पूरी तैयारी हो गई है...।अब बस आपकी मदद की थोड़ी जरूरत है।”

“कैसी मदद चाहिये तुम्हें...?”

rcz202016@gmail.com

“उसके लिये आपको यहां गंगानगहर में आना होगा।”

बुरी तरह से चौंका कालीसिंह शेखावत।

“वहां आऊं मैं...?”

“जी हां...।”

AJ SCAN

“मगर इस तरह मेरा वहां पहुंचना दूसरों को शक में डाल सकता है।”

“किसी को भी शक नहीं होगा। आप ही की सरकार का मन्त्री मरा है- और आज उसका अन्तिम संस्कार है...आप उसकी अन्तिम यात्रा में शरीक होने के लिये यहां आ जाइए...। किसी को भी शक नहीं होगा...। संस्कार से फारिग होकर आप हमासे गुफ्तगू कर लीजिये और फिर वापिस रवाना हो जाइए...।”

“कहीं कोई खेल तो नहीं खेल रहे...।”

“कैसा खेल...?”

“मुझे ही खत्म करने का प्लान बना रखा हो तुमने...। कालीसिंह शेखावत बोला—“इसलिये मुझे लालच देकर बुला रहे हो...।”

"ऐसी कोई बात नहीं मन्त्रीजी...आप बेफिक्र रहें, हमारा ऐसा, कोई इरादा नहीं...। आप मुतमुईन होकर यहां आइये। और यकीन मानो आपको राजा बनाने का जो वादा मैंने आपसे किया हैं...हर सूरत में पूरा होगा।"

कालीसिंह ने कुछ देर सोचा फिर गहरी सांस छोड़ते हुए बोला-

rcz202016@gmail.com

"ठीक है...मैं पहुंच जाऊंगा...।"

"शमशान में ही काले कपड़े पहने हमारा एक आदमी आपको नजर आ जायेगा...। आप चुपचाप उसके पीछे-पीछे चलते हुए हम तक पहुंच जायेंगे...।"

"ओ०के०....।"

कालीसिंह शेखावत ने पुनः गहरी सांस छोड़ी...। दूसरी तरह से सम्बन्ध विच्चेद हो गया। कालीसिंह ने रिसीवर रखा और कॉफी का मग उठाकर उसका घूंट

AJ SCAN

भरा और गहरी सोचों में डूब गया।

¶¶

फोन रखकर रहमान खान ने अशरफ का तरफ देखा जो कि उसके फोन करने के दौरान ही कमरे में पहुंचा था।

"कहां गया वह...?"

उसने पूछा।

"गोल्ड रश में...।" अशरफ बोला-"कमरा नम्बर तेरह....मैंने तीन आदमियों की ड्यूटी लगा दी है वहां—जो कि हर पल उस पर निगाह रखेंगे।"

रहमान खान ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया। फिर बोला-

“कालीसिंह शेखावत को जानते हो?”

“सिर्फ यही पता हे कि वह राजस्थान का होम मिनिस्टर है। शक्ल से नहीं जानता।”

02016@gmail.com

“कोई बात नहीं...वो पहचान लेगा तुम्हें...तुम हरि सिंह गहलौत के जनाजे में जाओगे...वो भी काले कपड़े पहनकर... कालीसिंह शेखावत भी वहां पहुंचेगा...।”

“जी।” अशरफ सिर हिलाया...।

“तुम्हें वहां कुछ नहीं करना...बस एक तरफ खड़े हो जाना है। कालीसिंह शेखावत खुद तुम्हें ढूंढ लेगा।”

AJ SCAN

अशरफ ने पुनः सिर हिलाया।

“और जब वह तुमसे सम्पर्क करे...तुम उसे लेकर सीधा यहां आ जाना।”

“जी!”

“और वहां से रवाना होते वक्त मोबाइल से मुझसे बात कर लेना।”

“जी।”

कहते हुए अशरफ ने सिर हिला दिया। फिर बोला—“सतीश रावण का क्या करना है?”

रहमान खान के होठों पर क्रूर मुस्कान रेंग गई।

“आज तक वह दूसरों से खेलता रहा है...इस बार हम खेलेंगे उससे ...। अपना काम निकलते ही हमसे मौत के घाट उतार देंगे।”

“गुस्ताखी माफ हो खान साहब...।” अशरफ बोला- “सतीश रावण बेवकूफ नहीं है। वह भी यही सोचेगा आप काम निकलते ही उसे खत्म कर सकते हैं।”

rcz202016@gmail.com

“बिल्कुल सोचेगा वह।”

“फिर...?”

“मगर उसकी सोच में यह होगा कि हम उसे सी०एम० को खत्म करने के बाद मारेंगे। मगर ऐसा होगा नहीं...।”

“तो फिर क्या होगा...?”

AJ SCAN

“उसकी मौत सी०एम० के मरने से पहले ही हो जायेगी।”

बुरी तरह से चौंका अशरफ...साथ ही उसकी आंखों में हैरानी उभर आई।

“मैं कुछ समझा नहीं खान साहब।” वह बोला-“अगर उसे पहले ही खत्म कर रहे हैं आप, तो फिर उससे दोस्ती करने का फायदा...?”

रहमान खान के होठों पर फैली क्रूरता और भी गहरी हो गई।

“अ...आप मुस्कुरा रहे हैं खान साहब...जबकि मेरे पल्ले कुछ भी नहीं पड़ रहा।”

रहमान खान ने मुस्कुराते हुए ही पहलू बदला और बोला-

“सतीश रावण ने हमारे आदमियों को मारकर और हमारा ढेर सारा नुकसान करके हमारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया था। अब दो दिन में न तो पाकिस्तान से असलाह आ सकता था और न ही उतने आदमी इकट्टे किये जा सकते थे। कुल मिलाकर अब सी०एम० को खत्म करने के लिये नये सिरे से योजना बनानी पड़ती...वो भी ऐसी योजना जिसमें हमारी कम से कम ताकत लगे और खर्च भी कम से कम हो। और वो योजना भी सटासट बनानी थी। और ऐसी योजना सतीश रावण जैसा ही कोई हरामी बना सकता हैं। सतीश रावण का दिमाग घोड़े से भी तेज दौड़ता है...इसलिये मैंने उसकी सारी खतायें माफ करते हुए उसे एक करोड़ बतौर एडवांस दे दिया...।”

rcz202016@gmail.com

उसने एक पल के लिये अपनी जूबान को विश्राम दिया...फिर अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला—

“अब सतीश रावण सी०एम० को खत्म करने की योजना बनायेगा। हम उसकी योजना में से नुक्स निकालेंगे जिसका समाधान सतीश रावण को करना होगा। जैसे ही योजना बिना किसी नुक्स के तैयार हो जायेगी...उसके सीने में गोली उतार दी जायेगी और फिर बाकी का काम हम खुद कर लेंगे।”

AJ SCAN

“ओह!”

“अब समझे, उसे पहले ही गोली मार देने का मतलब...?”

“बिल्कुल...।” मुस्कुराया अशरफ—“उस वक्त होशियार भी नहीं होगा...। क्योंकि उसके दिमाग में तो यह होगा कि उसे गोली काम खत्म होने के बाद मारी जाएगी...।”

“बिल्कुल...।”

“और वह एक करोड़ रुपये...जो आपने बतौर एडवांस दिये हैं?”

“स्कीम खत्म होने तक वह उनमें से जितना खर्च कर लेगा...वह उसका...बाकी का वापिस हमारे पास आ जाएगा।”

कहते हुए मुस्कुरा पड़ा रहमान खान। अशरफ भी मुस्कुरा पड़ा।

¶¶

हरि सिंह गहलौत की चिता जल रही थी। धू-धू करती चिता के चारों तरफ गंगा नगर के गणमान्य नागरिकों के अलावा सरकार के कई मन्त्री तथा बड़े-बड़े अफसर भी खड़े थे। एक तरफ कालीसिंह शेखावत गमगीन मुद्रा में खड़ा था। वह एक बार चिता की तरफ देखता...फिर शमशान के गेट की तरफ देखने लगता। उस वक्त वापिसी की तैयारी हो रही थी, जब उसकी नजर गेट में प्रवेश कर रहे काले कपड़े पहने अशरफ पर थी। अशरफ थोड़ा आगे बड़कर बाईं तरफ सीमेंट की बनी एक बैंच पर बैठ गया। कालीसिंह शेखावत चुपचाप अपने स्थान से हटा और अशरफ की तरफ बढ़ा। इधर उसे अपनी तरफ बढ़ते हुए अशरफ ने भी देख लिया था...सो वह सीधा होकर बैठ गया। कालीसिंह शेखावत ने करीब आकर शोकभरे अंदाज में दोनों हाथ जोड़ दिये। अशरफ ने भी हाथ जोड़ दिये। कालीसिंह शेखावत उसके बराबर बैठा और भेदभरे स्वर में बोला—

“रहमान खान ने भेजा है तुम्हें...?”“

AJ SCAN

“जी हां...आप कालीसिंह जी हैं।” अशरफ धीमे स्वर में बड़े इज्जत से बोला।

“हां...।”

“मैं आप ही को लेने आया हूं।”

“रहमान खान कहां है?”

“वे आपका ही इंतजार कर रहे हैं।”

कालीसिंह शेखावत अपने स्थान से उठा और जल रही चिता की तरफ नजर मारी। तुरंत वहां खड़े आदमियों में से दो व्यक्ति निकले और उनकी तरफ बढ़े। उनके चलने के अंदाज से ही पता चल रहा था कि वे कमांडोज हैं। कालीसिंह के सामने आकर वह तन कर खड़े हो गये।

"मैं इनके साथ कहीं किसी जरूरी काम पर जा रहा हूं।"

कालीसिंह बोला—"मेरे आपस आने तक तुम सब यहीं रहोगे।"

rcz202016@gmail.com

"बट सर....।" एक बोला।

"दिस इज एन ऑर्डर...।"

"यस सर...।"

दोनों एक साथ बोले।

AJ SCAN

“आओ...।”

कालीसिंह शेखावत अशरफ से बोला और उसके साथ शमशान से बाहर आ गया। बाहर दूर-दूर तक कारें ही कारें नजर आ रही थीं। कालीसिंह शेखावत अशरफ के साथ उस काले रंग की कार की तरफ बढ़ा जिसके बोनट पर तिरंगा झण्डा लगा था तथा जिसे आठ गार्ड घेरे खड़े थे। वहां पहुंचकर कालीसिंह शेखावत ने पुनः अपने ऑर्डर को दोहराया और अशरफ से बोला—

“तुम किस गाड़ी में आये हो...?”

अशरफ ने सबसे पीछे खड़ी एक मारुति की तरफ बांह लम्बी की-“उसमें।”

“तुम आगे-आगे चलो...हम तुम्हारे पीछे चलते हैं।”

कहकर कालीसिंह शेखावत कार के खुले दरवाजे में प्रवेश कर गया। उसके सीट पर बैठते ही ड्राइवर ने दरवाजा बन्द किया और फौरन ड्राइविंग गेट को खोल स्टीयरिंग के पीछे बैठ गया। इधर अशरफ अपनी मारुति के करीब आया और दरवाजा खोलकर ड्राइविंग सीट पर बैठकर कार स्टार्ट की और आगे बढ़ा दी। बैक रीयर व्यू-मिरर में से उसने अपने पीछे आ रही कालीसिंह शेखावत की कार को देखा... और अपनी शर्ट की जेब में से मोबाइल फोन निकालकर कार चलाते हुए रहमान खान का नम्बर मिलाने लगा।

rcz202016@gmail.com

¶¶

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घन्टी घनघना उठी। रहमान खान ने रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए माऊथपीस में बोला—

"हैलो...।"

AJ SCAN

“अशरफ बोल रहा हूं खान साहब...।” दूसरी तरफ से अशरफ की आवाज आई।

“हां बोलो...अशरफ...कालीसिंह मिला?”

“वह मेरे पीछे-पीछे अपनी कार में आ रहा है।”

“साथ कौन है उसके...?”

“उसका ड्राइवर...।”

“बॉडीगार्ड...?”

“वो नहीं हैं...।”

“ठीक है...तुम उसे लेकर पहुंचो...।”

कहकर रहमान खान ने रिसीवर रखा और आवाज लगाई-

rcz202016@gmail.com

“शौकत...!”

तुरंत शौकत हाजिर हुआ।

“हुक्म खान साहिब...।” वह बोला।

“गोल्ड रश के तेरह नम्बर में सतीश रावण ठहरा हुआ है। उसके पास जा और बोल कि कालीसिंह आ गया है।”

AJ SCAN

“जी।”

“और अगर वह वहां न मिले तो होटल से बाहर मतलूब खड़ा होगा...उससे पूछ लेना।”

“जी...।”

“अब जा...और जल्दी से उसे लेकर आ।”

शौकत तुरंत मुड़ा और कमरे से बाहर निकल गया।

¶¶

"खट...खट...खट...।"

दरवाजे पर दस्तक पड़ी। बैट पर लेटे सतीश रावण की निगाहें दरवाजे की तरफ उठ गईं। सुबह नाश्ता करते के पश्चात् वह होटल से निकल गया था। हालांकि उसे पता था कि वह रहमान खान की निगाहों में हैं। मगर वह जानना चाहता था कि उस पर निगाह कौन रखे हुए है। इसका पता उसे बहुत जल्दी लग गया। होटल से थोड़ी दूर आते ही उसने दो आदमी अपने पीछे लगे नजर आये...। करीब दो घन्टे वह शहर की सड़कों पर आवारागर्दी करता रहा और फिर वापिस होटल आ गया। वे दोनों आदमी निरंतर उसके पीछे लगे रहे थे। अपनी तरफ से वे पूरी सावधानी बरत रहे थे कि सतीस रावण को उनका पता न लगे...। मगर उन्हें क्या पता था कि किसाका पीछा कर रहे हैं। होटल में आकर सतीश रावण दूसरी मंजिल पर स्थित अपने कमरें में पहुंचा और सीधा खिड़की की तरफ बढ़ा जो कि बाहर सड़क की तरफ खुलती थी। खिड़की का दरवाजा थोड़ा-सा खोलकर उसने नीचे सड़क पर झांका तो उसके होठों पर मुस्कान नाच उठी। नीचे वही दोनों आदमी एक तीसरे आदमी से बात कर रहे थे। सतीश रावण ने गर्दन वापिस खींची और आकर बैड पर लेट गया। कुछ देर तक वह यूं ही बैड पर लेटा रहा...फिर उठा और कमरे से निकलकर सीढ़िया उतरकर नीचे हॉल में आया और रिसेप्शन की तरफ बढ़ा। रिसेप्शन पर बैठी खूबसूरत हसीना ने मुस्कुराकर उसका स्वागत किया। वह वो लड़की नहीं थी जिसके पास उसने सुबह बात की थी। सुबह दस बजे एक रिसेप्शनिस्ट की ड्यूटी खत्म हो गई थी तथा उसके स्थान पर दूसरी युवती आ गई थी। सतीश रावण ने काउंटर पर अपनी कोहनी टिकाई युवती के उभारों पर निगाह मारी। युवती ने उसकी हरकत का जरा भी बुरा नहीं माना—बल्कि उसने अपनी मुस्कान में और इजाफा किया और बोली—

AJ SCAN

“युअर वेलकम इन गोल्ट रश। व्हाट कैन आई डू फॉर यू?”

सतीश रावण भी मुस्कुराया और निगाहें उसके उभारों से हटाकर उसके चेहरे पर जमाते हे बोला-

“एक कमरा चाहिये...साथ में अगर कुछ और सेवा भी हो सकती हो तो मेरा भाग्य।”

“सॉरी...।” युवती मुस्कुराते हे बोली- “यहां आपको सिर्फ कमरा ही मिल सकता है। साथ में जिस चीज की आपको इच्छा है वो नसीब नहीं हो सकती यहां...।”

“ओह...!”

“वैसे अगर आप चाहें तो किसी और जगह पर आपकी ख्वाहिश पूरी हो सकती है।”

“कहां...?” आंखें चमकाईं सतीश रावण ने।

rcz2020016@gmail.com

“मेरे बारे में क्या ख्याल है आपका...थोड़ा पैसा जरूर खर्च होगा..मगर आपको खुशी पूरी मिलेगी।”

सतीश रावण मुस्कुरा पड़ा—“मैं ऐसी खुशी पाने के लिये बेताब हूं...।”

“सिर्फ दो हजार खर्च करने होंगे आपको...।”

सतीश रावण ने चुपचाप जेब से दो हजार निकलकर उसे थमा दिये। युवती ने काउंटर की ड्राज में से एक कार्ड निकालकर उसकी तरफ बढ़ाया और बोली-

AJ SCAN

"शाम आठ बजे मेरी ड्यूटी खत्म हो जायेगी...कार्ड पर मेरे घर का पता लिखा है...आप नौ-दस बजे मेरे घर आ जाइये...।"

सतीश रावण ने कार्ड लेकर उस पर एक निगाह मारी और उसे जेब में डाल लिया। तत्पश्चात् युवती ने रजिस्टर खोला और पैन उठाते हुए बोली-

"आपका नाम सर...?"

"उसकी अब जरूरत नहीं..।" मुस्कुराया सतीश रावण।

"क्या मतलब...? आप कमरा नहीं लेंगे क्या...?"

"कमरा तो ले रखा हैं मैंने...।"

“मैं कुछ समझी नहीं...।”

सतीश रावण ने उसके उभारों को घूरा और बोला-

“तुमसे बात करने का बहाना चाहिये था...इसीलिये कमरा लेने का बहाना बना तुम्हारे पास आ गया।”

“ओह यू नाटी...।” वह शोख अदा से बोली। सतीश रावण हौले से हंसा और अपनी जेब थपथपाई-

“रात को दस बजे में मल्लिकायआलीया के हुजूर में पेश हो जाऊंगा।”

युवती खिलखिलाई।

AJ SCAN

"वैसे आपका नाम क्या है?"

"रोजी।"

"खिले गुलाब की तरह तुम्हारा नाम भी तुम्हारे रूप को सार्थक करता है।"

रोजी पुनः हंसी।

"बातें अच्छी बना लेते हो।" वह बोली। सतीश रावण कुछ नहीं बोला...वहां से हटा और सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया। जिस काम के लिये कमरा चाहिये था...वह काम अब वह दूसरे तरीके से करने की सोच चुका था। अपने कमरे में आकर वह कुछ देर बैड पर लेटा रहा...फिर अपने लिये लंच मंगाकर उसे खाया और फिर लम्बी तान कर सो गया। अभी थोड़ी देर पहले ही उसकी नींद खुली थी। बैड से उतरकर वह दरवाजे की तरफ बढ़ा और बिना कुछ बोले सिटकनी गिराकर दरवाजा खोल दिया। सामने शौकत खड़ा था...जिसे पहचानने में उसे जरा-सी देर नहीं लगी। उसने दरवाजे में खड़े-खड़े ही प्रश्नभरी निगाहों से उसे देखा।

“खान साहब बुला रहे हैं...।” शौकत बोला।

“क्यों...?”

“कालीसिंह आ गया है...उससे जो बात करनी हो कर लो।”

rcz202016@gmail.com

“ओह!”

“तुम मेरे साथ ही चल रहे हो...।”

सतीश रावण एक तरफ हटा और बोला-

“तुम बैठो...मैं जरा फ्रेश हो लूं...।”

AJ SCAN

कहकर वह बाथरूम की तरफ मुड़ गया। दस मिनट बाद वह बाथरूम से निकला तो उसने शौकत को एक कुर्सी पर बैठे पाया।

“चलो...।” सतीश रावण बोला। शौकत तुरंत कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया। सतीश रावण ने एक नजर बैड के नीचे अपने एक करोड़ के सूटकेस पर मारी। आश्वस्त होकर व ह शौकत के साथ कमरे से बाहर निकला और दरवाजा बंद कर ताला लगाकर सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया। हॉल पार कर वह शौकत के साथ होटल से बाहर निकला और उस फीयेट की तरफ बढ़ा जिधर कि शौकत बढ़ने लगा था। कुछ ही देर में दोनों फीयेट में बैठे थे तथा फीयेट सड़क पर दौड़ती नजर आ रही थी।

¶¶

कालीसिंह शेखावत का स्वागत रहमान खान ने इस तरह किया जैसे किसी राजा का किया जाता हैं। उसकी कोठी के मेन गेट में दाखिल होते ही ड्राईव-वे के दोनों तरफ खड़ी दो खूबसूरत युवतियों ने उसकी कार पर फूल बरसाये...फिर रहमान खान स्वयं कम्पाउंड में आया और कालीसिंह के आगे सिर नवां इस्तकबाल करते हुए बोला —

"रहमान खान बादशाह सलामत को सलाम करता है...आइए हुजूर, नाचीज का गरीबखाना आपके पैरों को चूमने के लिये तरस रहा है।"

उसकी आवाज में खुशामद साफ झलक रही थी। लगभग बिछकर उसके आगे चलते हुए वह उसे कोठी के ड्राइंग-रूम में लेकर आया और एक सोफे की तरफ इशारा करते हुए बोला—

@gmail.com

"बैठिये...!"

शान से सीना फुलाये कालीसिंह शेखावत आगे बढ़कर सोफे पर बैठ गया। रहमान खान ने तुरंत ताली बजाई। फौरन एक हसीन-तरीन युवती हाथों में ट्रे उठाये भीतर प्रविष्ट हुई और कुल्हे मटकाती हुई आगे बढ़ी। ट्रे में स्कॉच की बोतल तथा साथ में तले हुये काजू रखे हुए थे। युवती ने बड़े करीने से सारा सामान टेबल पर सजाया और एक पैग भरकर बड़ी शोख अदा से कालीसिंह शेखावत की तरफ बढ़ाया। कालीसिंह शेखावत ने पैग पकड़ा और रहमान खान की तरफ देखा।

AJ SCAN

“इसे बाहर भेजो..।” वह बोला। रहमान खान ने फौरन युवती को इशारा किया। युवती कुल्हे मटकाते हुए बाहर निकल गई।

“तो तुम हो रहमान खान...?” युवती के जाते ही बोला कालीसिंह शेखावत।

“जी हां...।”

“बैठो...।”

रहमान खान उसके सामने वाले सोफे पर बैठ गया और खुद ही अपने लिये पैग तैयार करने लगा। कालीसिंह शेखावत ने दो घूंट भरे और गिलास को हाथ में पकड़े हुए ही बोला-

“हरि सिंह गहलौत को किसने मारा...?”

“आप शायद भूल रहे हैं...फोन पर मैंने आपको बताया था कि सतीश रावण नाम के एक टुच्चे बदमाश ने हरि सिंह गहलौत का खून किया है।”

“तुम्हें कैसे पता लगा कि खून करने वाला वही था?”

इस सवाल पर पहले तो रहमान खान सकपकाया...फिर मुस्कुरा पड़ा।

“आप शायद भूल रहे हैं कि मैं कौन हूं...अगर भूल नहीं रहे तो आपको यह भी याद होना चाहिये कि मेरे सोर्सिस क्या हैं...।”

“यानी तुम्हें अपने सोर्सिस से पता चला कि हरि सिंह गहलौत को सतीश रावण ने मारा है।”

“जी हां...।”

AJ SCAN

कालीसिंह के होठों पर मुस्कान आकर लुप्त हो गई।

उसने पैग खाली किया और टेबल पर रखकर सोफे की पुश्त से टेक लगा ली।

“अगर तुम्हारे सोर्सिस इतने ही बढ़िया हैं तो तुम्हें यह भी मालूम होगा कि वह किससे मिलकर आ रहा था?”

“क्या मतलब...?” हड़बड़ाया रहमान खान...।

“मरते वक्त हरि सिंह गहलौत अकेला था...।यहां तक कि अपनी गाड़ी को ड्राईव भी वह खुद ही कर रहा था...बॉडीगार्ड तो बहुत दूर की बात है। ऐसे में जाहिर है कि वह किसी खास काम से गया होगा और यह तुम ही बता सकते हो कि वह किस काम से कहां गया था?”

"सॉरी...इसका पता नहीं लगा पाया मैं।"

कालासिंह शेखावत का चेहरा सख्त हो उठा।

"देखो रहमान खान...मुझे झूठ से सख्त नफरत हैं। यूं भी जहां झूठ चलता है...वहां आपस में कोई विश्वास नहीं रहता...। अब तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारा साथ दूं तो तुम्हें हकीकत बतानी होगी।"

"कैसी हकीकत...?"

"कबूल करो कि हरि सिंह गहलौत तुम्हारा साथी था।"

"किया...।" फंसे स्वर में बोला रहमान खान- "यह बात मैं फोन पर भी कबूल कर चुका था।

AJ SCAN

"यह भी कबूल करो कि रात वह तुमसे मिलकर लौट रहा था और तुमने ही उसे मारा है....।"

"लेकिन...।"

"सतीश रावण की यहां मौजूदगी का तुम गलत फायदा मत उठाओ...मैंने इस तरफ खूब सोचा था। सतीश रावण मुझे कहीं भी फिट होता नजर नहीं आया."

"आप ठीक कह रहे हैं।" गहरी सांस छोड़ी रहमान खान ने।

"यानी तुम कबूल करते हो...?"

"किया...।"

"अब यह भी बता दो कि उसे खत्म करने के पीछे असल वजह क्या थी?"

रहमान खान ने शराफत से सब कुछ बता दिया।

"मेरा पता कैसे लगा...?"

rcz202016@gmail.com

"हरि सिंह गहलौत अक्सर बताता रहता था कि सी०एम० बनने की आपकी दिली इच्छा थी जोकि आपकी बद्किस्मती से पूरी नहीं हो पाई।"

"और उसे खत्म कर तुमने मुझे फोन कर दिया।"

"जी हां...।" गहरी सांस छोड़ी रहमान खान ने। कालीसिंह शेखावत ने पहलू बदला और अपने लिये पैग तैयार करके उसका एक घूंट भरा और रहमान खान की तरफ देखते हुए बोला- "यह सच है कि सी०एम० बनना चाहता हूं...। यह मेरी बद्किस्मती रही कि केदारनाथ मुझसे बाजी मार गया और मुझे गृहमन्त्री के पद पर ही

AJ SCAN

संतोष करना पड़ा...। हालांकि मैं चाहता तो जबरदस्ती सी०एम० बन सकता था...लेकिन हाई कमान के आदेश के कारण मैं मजबूर हो गया।"

"आप निश्चित रहिये मन्त्रीजी ...आपको सी०एम० अब हम बनायेंगे...और यह बात भी दिल में बिठा लीजिये कि तीन साल के अन्दर-अन्दर आप राजस्थान के बादशाह होंगे..यह हमारा आपसे वादा है।"

"बादशाह तो जब बनूंगा सो बनूंगा...। पहले सी०एम० तो बनाओ मुझे...।"

"वो तो आप चार दिन में ही बन जायेंगे...।"

"केदारनाथ को खत्म करके...?"

"बिल्कुल...।" मुस्कुराया रहमान खान—"इधर वह मरा-उधर आप सी०एम० बने।"

"तुम क्या सोचते हो...तुम उसे खत्म करने में कामयाब हो जाओगे...?"

"अगर आप थोड़ा-सा साथ दें तो वह हर हाल में खत्म हो सकता है।"

rcz202016@gmail.com

"कैसा साथ चाहते हो...?"

ठीक तभी सतीश रावण ने शौकत के साथ कमरे में प्रवेश किया।

"बड़ी देर लगा दी आने में।" रहमान खान शौकत खान की तरफ देखते हुए बोला।

"आप तो जानते ही हैं खान साहब कि रेड़ अलर्ट जारी है...थोड़ी-बहुत देर तो लगनी ही थी।" शौकत बोला।

AJ SCAN

“तुम जाओ।”

शौकत ने कालीसिंह शेखावत को सलाम किया और बाहर निकल गया।

“आओ बैठो...।” रहमान खान सतीश रावण से बोला। सतीश रावण आगे बढ़कर सोफा चेयर पर बैठ गया।

“यह मिस्टर कालीसिंह शेखावत हैं...यहां के होम मिनिस्टर...।” उसने दोनों का परिचय कराया- “ और यह है मेरा सबसे अहम आदमी नसीम खान...।”

जानबूझकर उसने सतीश रावण का नाम गलत बताया था, ताकि सतीश रावण के नाम से कोई लफड़ा न खड़ा हो। कालीसिंह शेखावत और सतीश रावण एक-दूसरे को देख कर हौले से मुस्कुराये...।

"मैंने मन्त्रीजी से बात कर ली है...।" रहमान खान सतीश रावण से बोला-"यह हमारा पूरा साथ देने को तैयार हैं... तुम्हें जो कुछ भी पूछना है बेफिक्र होकर पूछो।"

सतीश रावण ने कालीसिंह शेखावत के चेहरे पर नजरें गड़ाईं और बोला-

rcz202016@gmail.com

"आप यहां के गृहमन्त्री हैं।"

"वो तो हूं...।"

"और अब आपने सी०एम० बनना हैं।"

"मेरे पास वक्त की बहुत कमी है...इसलिये जो पूछना है सीधे पूछो।"

AJ SCAN

सतीश रावण ने रहमान खान को अपने लिये पैग बनाने का इशारा किया और फिर कालीसिंह शेखावत की तरफ देखते हुए बोला-

"आप गृहमन्त्री हैं...ऐसे में जाहिर हैं कि सी०एम० के सुरक्षा प्रबन्धों की आपको पूरी जानकारी होगी।"

"तो...?"

"आप हमें सी०एम० के सुरक्षा प्रबन्धों की विस्तृत जानकारी दीजिये...। साथ ही उन अतिरिक्त प्रबन्धों की जानकारी भी हमें चाहिये जो कि आपने छब्बीस जनवरी को सी०एम० की हिफाजत के लिये करने हैं।"

"तो यह जानकारी चाहिये तुम्हें...?"

कालीसिंह शेखावत गिलास होठों की तरफ बढ़ाते हुए बोला

"जी हां...।"

अपना पैग उठाते हुए सतीश रावण बोला। कालीसिंह शेखावत ने पैग खाली किया और टेबल पर रखते हुए बोला-

rcz202016@gmail.com

"तुम्हारी सोच बिल्कुल ठीक है...। सी०एम० के तमाम सुरक्षा प्रबन्ध मेरी ही निगरानी में होने हैं...और किसी अनहोनी का जवाबदेह भी मैं हूं...।"

"आप तो सियासतदान हैं... अपनी जवाबदेही से आप अपने ऊपर लगे किसी भी इल्जाम को बड़ी खूबसूरती से अलग कर सकते हैं।"

"वो बाद की बात है...पहले यह यकीन दिलाओ कि सी०एम० कत्ल होगा या नहीं...?"

AJ SCAN

“वो तो होगा ही...बशर्ते कि आप हमें तमाम सुरक्षा प्रबन्ध बतायें।”

कालीसिंह शेखावत ने कुछ देर सोचने की मुद्रा बनाई...फिर उन्हें सुरक्षा प्रबन्धों की जानकारी देने लगा। पूरे सुरक्षा प्रबन्ध बताकर उसने सतीश रावण की तरफ देखा...।

“कुछ और पूछना है?”

“आपने जो प्रबन्द बताये...क्या वे पूरे हैं...?”

“बिल्कुल...।”

“कोई कमीबेसी तो नहीं रह गई...कुछ भूल तो नहीं रहे आप?”

"नहीं...पूरे-के-पूरे सुरक्षा प्रबन्ध बता दिये हैं मैंने तुम्हें।"

सतीश रावण ने सोचभरे अंदाज में सिर हिलाया।

"ठीक है....।" वह गहरी सांस छोड़ते हुए बोला—"आप जाइए अब...अब हम देखते हैं कि हम क्या कर सकते हैं।"

कालीसिंह शेखावत ने रहमान खान की तरफ देखा और बोला-

"मेरा मोबाइल फोन नम्बर नोट कर लो...। अब अगर कुछ पूछना हो तो मुझे मोबाइल पर ही फोन करना।"

रहमान खान ने जेब से पैन निकाला और एक पॉकेट डायरी निकाल ली।

AJ SCAN

“बताइये...।” वह बोला।

कालीसिंह शेखावत ने उसे नम्बर बताया और खड़ा हो गया...।

“मैं चलता हूं।” वह बोला। रहमान खान और सतीश रावण भी खड़े हो गये।

¶¶

कालीसिंह शेखावत को विदा कर रहमान खान और सतीश रावण वापिस कमरे में आये और अपने-अपने स्थान पर बैठ गये।

“कुछ आया दिमाग में?” पूछा रहमान खान ने।

"अभी तो सुरक्षा प्रबन्धों की जानकारी मिली है...रात को सोचूंगा कि क्या किया जा सकता हैं।"

"सुबह तक तो बन जायेगी न स्कीम...?"

rcz2020010@gmail.com

"उम्मीद तो है।" सतीश रावण मुस्कुराया।

"उम्मीद नहीं...कल मुझे हर हाल में स्कीम चाहिये...आखिर उसके लिये तैयारी भी तो करनी है।"

"कोशिश करूंगा। मगर...।"

"मगर क्या...?"

AJ SCAN

“मैं पिंजरे में कैद होकर शायद ही कुछ सोच पाऊं...।”

“यह क्या कह रहे हो तुम...? तुम होटल में ठहरे हुए हो कैद कहां कर रखा है मैंने तुम्हें...।”

“तीन-तीन आदमियों की ड्यूटी लगा रखी है तुमने मेरी निगरानी को...और कह रहे हो कि मैं आजाद हूं...। माना कि मैंने तुमसे बतौर एडवांस एक करोड़ ले रखा है...ऐसे में तुम्हारा यह सोचना कि मैं रूपया लेकर भाग जाऊंगा...वाजिब है...। मगर जब तुमने मेरा होटल...मेरा कमरा देख लिया तो फिर निगरानी की क्या जरूरत...!”

“बहुत बड़े हरामी हो तुम...।” गम्भीरता से बोला रहमान खान- “तुम्हारा कोई भरोसा नहीं कि तुम कहां गुलाटी मार जाओ...। इसीलिये मैंने अपने आदमियों को तुम्हारी निगरानी पर रखा है...।”

“मगर...।”

“किसी ने तुमसे कुछ कहा तो नहीं...?”

“नहीं...।”

“तुम कहीं गये तो क्या किसी ने तुम्हें रोका?”

rcz202016@gmail.com

“नहीं...।”

“फिर कैसे कह सकते हो तुम कि तुम कैद हो! तुम कहीं भी आ-जा सकते हो...कुछ भी कर सकते हो। फिर कैद कहां हो तुम...!”

“मगर...।”

AJ SCAN

“यह बहानेबाजी छोड़ो और मतलब की बात करो...। अगर तुम चाहते हो कि तुम पर नजर न रखी जाये तो एक करोड़ हमें वापिस कर दो। नहीं तो निगरानी तो होगी ही। आखिर हमारा एक करोड़ फंसा हुआ है तुम्हारे पास। डिनर किया...?”

“नहीं...।”

“करोगे...?”

“नहीं करूंगा।”

“तो फिर जाओ...दिमाग के घोड़े दौड़ाओ और सुबह मुझे स्कीम तैयार करके दो।”

सतीश रावण ने पुनः गहरी सांस छोड़ी और खड़ा हो गया।

¶¶

रात आठ बजे सतीश रावण होटल पहुंचा...।

उसने रिसेप्शन की तरफ देखा। रोजी वहां नहीं थी...उसकी जगह एक दूसरी हसीना ने सम्भाल ली थी। सतीश रावण सीधा अपने कमरे में पहुंचा और अपनी जेबों से कुछ सामान निकाला और बैड पर रखकर बाथरूम की तरफ बढ़ गया। बैड पर उसने जो सामान रखा था...वह उसने बाजार से खरीदा था। थोड़ी देर बाद वह बाथरूम से निकला और सारा सामान उठाकर ड्रैसिंग टेबल के सामने जा बैठा। करीब एक घन्टे तक वह अपना मेकअप करता रहा। एक घन्टे बाद वह ड्रेसिंग टेबल के सामने से हटा तो वह एक अधेड़ उम्र का आदमी लग रहा था जिसकी मूंछों के अधिकतर बाल सफेद हो चुके थे...सिर पूरी तरह से सफेद हो चुका था, आंखों के कोरों पर झुर्रिया थीं तथा गाल लटक रहे थे। तत्पश्चात् उसने कपड़े बदले और फिर ड्रेसिंग टेबल के सामने आकर शीशे में खुद को निहारा। संतुष्टि से उसने सिर हिलाया और कमरे से बाहर आकर दरवाजा बंद किया और ताला लगाकर नीचे हॉल में आ गया। कुछ ही देर में वह मतलूब तथा उसनके दोनों साथियों के करीब से निकल रहा था। तीनों ने उसे देखा जरूर था मगर उनके चेहरों पर पहचान के भाव नहीं आये थे। थोड़ा आगे बढ़कर उसने एक थ्री-व्हीलर रोका और उसमें सवार हो रोजी के घर की तरफ रवाना ही गया।

AJ SCAN

¶¶

रोजी ने टेबल पर रखी स्कॉच की बोतल-दो गिलास-सोडा तथा तन्दूरी चिकन पर निगाह मारी...फिर संतुष्टि से सिर हिलाया...। पूरे छः सौ रुपये खर्च करने पड़े थे उसे यह सामान मुहैया करने में...और उसे विश्वास था कि वह ग्राहक से एक हजार झटक लेगी। कोई टैक्सी नहीं थी रोजीं...। मजबूरी में यह धंधा करती थी...वो भी इतने ढके-छुपे ढंग से कि किसी को उस पर संदेह न हो। अड़ोस-पड़ोस की नजरों में वह होटल गोल्ड रश की रिसेप्शनिस्ट थी...और उसी तनख्वाह से अपना गुजारा चलाती थी। मगर यह तो वही जानती थी कि जितना वेतन उसे होटल से मिलना था उतने में तो उसके मेकअप का खर्चा भी नहीं निकलना था। सो उसने अपना पेट भरने के लिये यह रास्ता चुना। ज्यादा नहीं महीने में तीन या चार बार ही वह किसी के नीचे आती थी...और उनसे मिले पैसों से वह अपना खर्चा पूरा तरती थी...।

"डिंग...डांग...।"

तभी कॉलबेल बजी। रोजी ने वॉल क्लाक की तरफ देखा। दस बजकर पांच मिनट हो चुके थे। वह हौले से मुस्कुराई और कमरे से बाहर कर मेन डोर की तरफ बढ़ी। उसने मेन डोर का दरवाजा खोला...। सामने अपने ग्राहक के स्थान पर किसी

अधेड़ को देखकर वह बुरी तरह से चौंकी...। फिर तेजी से उसने स्वयं पर काबू पाया और प्रश्नभरी नगाहों से अधेड़ को देखा।

"कहिये...?" वह बोली। वह अधेड़ जोकि सतीश रावण ही था मुस्कुरा पड़ा।

"सुबह दो हजार दिये थे मैंने तुम्हें...।" वह बोला।

बुरी तरह से उछल पड़ी रोजी...आंखों में अविश्वास उभर आया।

"त...तुमने कहां दिये थे मुझे रुपये...?"

"होटल...में...और दस बजे मुझे यहां बुलाया था।"

"क्या बकते हो...मैं तो तुम्हें पहली बार देख रही हूं...."

AJ SCAN

“यह कार्ड तुम्हीं ने दिया था न मुझे?” सतीश रावण ने उसका विजिटिंग कार्ड निकालकर उसे दिखाया। रोजी हैरान...। उसे अच्छी तरह से याद था कि वह अपने सामने खड़े शख्स को पहली बार देख रही है। फिर उसका कार्ड उसके पास कैसे आ गया?

अब उस बेचारी को क्या मालूम कि उसके सामने खड़ा शख्स वही है...हां उसका चेहरा जरूर बदला हुआ था।

“द...देखिये...मैं...।” हड़बड़ाते हुए बोली वह।

“तुम शायद मेरी सूरत से धोखा का रही हो। मैं वही हूं....यह सूरत तो मैंने किसी कारण से बदली है।”

“त...तुम वही हो?”

"हां...सौलहो आने वही हूं...सौ प्रतिशत वही हूं...चौबीस कैरेट वही हूं...। अगर तुम्हें अब भी विश्वास नहीं आ रहा तो मैं तुम्हें ये भी बता सकता हूं कि हमारे बीच क्या बातें हुई थीं।"

"बताओ।"

rcz202016@gmail.com

सतीश रावण ने उसे सब कुछ बताया। काफी मुश्किल से वह उसे यकीन दिलाने में सफल हुआ कि वह वही है जिसने उसे दो हजार दिये थे...। तब जाकर रोजी ने उसे अन्दर आने दिया था। दोनों बैडरूम में पहुंचे।

"वाह! तुमने तो पूरी तैयारी पहले से ही कर रखी है।" सतीश रावण कुर्सी पर बैठते ही बोला। रोजी उस के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई।

"यह चेहरा बदलने की क्या जरूरत पड़ गई आपको...?"वह सतीश रावण से बोली।

AJ SCAN

“यूं ही...।” सतीश रावण फीकी मुस्कान मुस्काया-“तुम अपना काम करो।”

रोजी ने कंधे उचकाये और स्कॉच की बोतल खोलकर पैग बनाने लगी।

“लगता है इस खेल में अनाड़ी हो तुम?”

“क्या मतलब...?” चौंकते हुए रोजी ने उसकी तरफ देखा। सतीश रावण मुस्कुराया...।

“पैग ऐसे नहीं भरा जाता...।” वह बोला।

“तो कैसे भरा जाता है?”

"यहां मेरी गोद में आकर बैठों...फिर पैग भरो...एक पैग दो पैग का नशा करेगा तब...।"

रोजी मुस्कुराई और उठकर टेबल का घेरा काट उसकी गोद में बैठ गई। उसने पैग बनाये और एक पैग सतीश रावण की तरफ बढ़ा दिया। सतीश रावण ने एक हाथ उसकी कमीज के गले में डाला और दूसरे से पैग पकड़ उसे होठों से लगा लिया। तीन-तीन पैग हलक में उतारने के बाद रोजी पर हल्का-सा नशा छा गया, जबकि सतीश रावण को अभी जरा भी सरूर नहीं हुआ था।

"बस...।" वह बोली-"मेरा तो काम हो गया...।"

"तो फिर खाना शुरू करें...?"

"हां...।"

AJ SCAN

कहकर रोजी उठी और अपनी कुर्सी पर आ बैठी। दोनों ने खाना खाया। सतीश रावण ने जेब से रूमाल निकालकर मुंह पौंछा और रोजी की ओर भूखी निगाहों से देखते हुए बोला-

“मेरा ख्याल है कि अब मुझे अपना रुपया वसूल करना शुरू कर देना चाहिये...।”

रोजी मुस्कुराई और कुर्सी से खड़ी होकर बैड पर आ गई। सतीश रावण भी बैड पर आ गया। देखते ही देखते दोनों के जिस्मों से कपड़े उतरे और दोनों पूर्णतया निर्वस्त्र हो गये। सतीश रावण ने उसके चुंधियाते यौवन को देखा और भूखे कुत्ते की तरह उस पर छलांग मार दी। और फिर दोनों के बीच वो खेल चलने लगा जो सिर्फ पति और पत्नी के बीच ही खेला जाता है। उनके अलावा इस खेल को खेलना नाजायज माना जाता है।

¶¶

उस वक्त सुबह के तीन बजे थे जब सतीश रावण रोजी के पहलू से उठकर बैड से उतरकर बाथरूम की तरफ बढ़ा था। बाथरूम से वापिस आकर उसने रोजी की तरफ देखा। वह भारी आंखों से उसे देख रही थी। उसके चेहरे पर थकान के भाव थे...मगर उस थके हुए चेहरे पर संतुष्टि साफ नजर आ रही थी। सतीश रावण उसके करीब आकर बैठा और उसकी छातियों पर हाथ फेरते हुए बोला-

“इस खेल में तुम मुझे अनाड़ी ही लगी हो। मैंने कई बड़ी-बड़ी कालगर्ल्स के साथ रातें गुजारी हैं...मगर तुम मुझे उनसे बिल्कुल अलग नजर आईं।”

rcz2016@gmail.com

रोजी ने एक गहरी सांस छोड़ी और ऊपर हो पीछे को सरक कर बैड पर अधलेटी अवस्था में बैठ गई।

“पेट की आग आदमी को बहुत कुछ करने को मजबूर कर देती है।” वह गम्भीरत से बोली—“होटल से तो सिर्फ तीन हजार रुपये मिलती है...इतने रुपयों में बनता ही क्या है आज के जमाने मैं...। इसीलिये मजबूरीवश मुझे महीने में तीन-चार बार किसी का हमबिस्तर बनना पड़ता है...ताकि मेरी रोटी ठीक ढंग से चल सके।”

AJ SCAN

“ओह! तो तुम मजबूरी से करती हो यह सब...।”

“हां...मैंने इसे अपना धंधा नहीं बना रखा...। अगर ऊपर-वाला मुझे कुछ दौलत दे दे तो मैं इस काम की तरफ देखूं भी न?”

सतीश रावण गम्भीर हो उठा।

“मुझे जानती हो?” वह बोला।

“आपका तो नाम भी नहीं जानती मैं। मुझे बस इतना पता है कि आपने मेरा जिस्म रातभर के लिये दो हजार में खरीदा है...और अभी रात पूरी होने में वक्त है।”

सतीश रावण ने गहरी सांस छोडी...।

"जानती हो मैंने यह रूप क्यों बदला है?"

"क्यों...?" दिलचस्पीभरे स्वर में बोली वह।

"दिल्ली का एक व्यापारी हूं मैं...ऐसा व्यापारी जो एक शहर से दूसरे शहर आगे बढ़ता रहता है और अपने व्यापार को चलाता जाता है। मेरा न तो कोई घर है...न ठिकाना...। दिल्ली मैंने इसलिये बोला क्योंकि मैं दिल्ली में ही पला-बड़ा हुआ था...। दस साल का था जब मुझे पता लगा कि मौत क्या होती है। मेरी मां का साया उठ गया मुझ पर से ...उसके दो साल बाद मेरे पापा भी दुनिया छोड़ गये।"

"ओह...!"

"उनके मरने का बाद मुझे यह पता चला कि इंसान दौलत के लिये कितना नीचे गिर जाता है। मेरे पापा की मौत के बाद मेरे चाचा ने मुझे पालना शुरू किया वह मुझे दिल से नहीं पाल रहा था...बल्कि उसकी नजरें मेरी दौलत पर टीकी हुई थीं...। और अट्ठारह साल का होने पर उसने एक दिन धोखे से मुझसे कुछ पेपर्स पर साइन

AJ SCAN

करवा लिये...। मैं धोखे में मारा गया...। मेरे चाचा ने मेरी लाखों की जायदाद हड़प ली और मुझे घर से निकाल दिया।"

"ओह...!" अफसोसभरे स्वर में बोली रोजी।

"मैंने उसे ऊपरवाले की मर्जी माना और अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए एक जगह नौकरी कर ली। वहां से पहली तलख्वाह मिलते ही मैंने नौकरी छोड़ दी और तनख्वाह के पैसों से कुछ माल खरीद कर उसे बेचने लगा। मेरी मेहनत रंग लाई और मैं धीरे-धीरे आगे बड़ने लगा। एक शहर से दूसरे शहर, दूसरे से तीसरे...मुझे नहीं पता कि मैं कितने शहरों में घूम चुका हुं.... हर शहर से मैं कुछ सस्ती चीजें खरीदता हूं और अगले शहर में उन्हें बेच देता हूं...। काफी रुपया कमाया मैंने इस धंधे में...। कई औरतों से सम्बन्ध भी स्थापित किये...मगर आज तक मुझे एक भी ऐसी औरत नहीं मिली जिसने निःस्वार्थ मेरा ध्यान रखा हो।"

सतीश रावण ने एक गहरी सांस छोड़ी और आगे बोला-

"आज जब मैं तुम्हारे पास आया तो डिनर देख में समझ गया कि तुम भले घर की लड़की हो...। अगर तुम प्रोफेशनल होती तो पहले डिनर के पैसे रखवातीं...फिर खाना खाने देतीं। तुम्हें देखकर मुझे ऐसा लगा कि मेरी जिंदगी में ठहराव का वक्त आ गया है। मुझसे शादी करोगी?"

सतीश रावण की इस ऑफर पर रोजी बुरी तरह से उछल पड़ी।

rcz202016@gmail.com

"क...क्या?"

"दौलत की कमी नहीं मेरे पास...। ऊपरवाले ने दिमाग भी इतना दिया है कि मैं एक जगह पर भी अपना बिजनेस अच्छा खासा चमका सकता हूं...।"

"ल...लेकिन...।"

"मगर मेरी एक शर्त होगी।"

AJ SCAN

“कैसी शर्त ...?”

“तुम्हें नौकरी छोड़नी होगी, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरी पत्नी किसी दूसरे की गुलामी करे। मेरी नजर में औरत घर में ही अच्छी लगती है।”

रोजी भरी-भरी आंखों से उसे देख रही थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह हो क्या रहा है! एक अनजान आदमी सुबह उससे मिला...रात भर के लिये उसे खरीदा और अब शादी की बात कर रहा है। हैरान तो होनी ही थी उसे। उसका चेहरा देख सतीश रावण मुस्कुराया।

“हैरान हो रही हो?” वह बोला- “होंगी ही...शायद मैंने तुमसे उस तरह बात नहीं की जैसे एक प्रेमी अपनी प्रेमिका से करता है?”

रोजी के मुंह से बोल नहीं फूटा..उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह सामने बैठे शख्स के प्रस्ताव का क्या उत्तर दे?

“लगता है तुम्हारे अंदर द्वन्द्व चल रहा है कि तुम मेरे प्रस्ताव को अपनाओ या ठुकराओ। तुम बेशक सोच-समझ कर मुझे जवाब दे सकती हो। अब मेरे बदले चेहरे का राज सुनो...। मेरे पीछे तीन आदमी लगे हुए हैं...जो कि मुझे लूटने की फिराक मे हैं।”

“क्....या...?” हड़बड़ाई रोजी।

“यह तो मैं तुम्हें बता ही चुका हूं कि मैं अपनी सारी कमाई हमेशा अपने पास ही रखता हूं...। इस वक्त मेरे पास एक करोड़ का कैश है।”

“ए...क करोड़...!” रोजी का आंखें फट पड़ी...।

“हां...इतना रुपया मैंने मुम्बई में कमाया था और वहीं पर ही मेरे पीछे तीन व्यक्ति लग गये। बड़ी मुश्किल से मैं खुद को उनकी नजरों से बचाकर निकला था। मगर यह मेरी गलतफहमी थी। आज शाम मैंने उन्हें होटल के बाहर खड़े देखा था।

AJ SCAN

ऊपर से मैंने तुम्हें वक्त दे रखा था...। मेरे कारण कहीं तुम पर आंच न आ जाये...इसीलिये मैं होटल से ही वेश बदलकर निकला था।”

“फिर तो तुम्हारी जान को भी खतरा है।”

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी...।

“अपना क्या है छड़ा मुस्टंड हूं....न कोई आगे...न पीछे-जहां मर गया वहीं के कमेटी वाले मुझे फूंक देंगे...।” कहते हुए सतीश रावण की आवाज भर्रा गई।

“मरें आपके दुश्मन...।” रोजी तुरंत बोली-“ आप जिंदा रहेंगे...खूब जीयेंगे आप।”

“जीना पता है किसे कहते हैं...जीना उसे कहते हैं जिसमें किसी का साथ हो...कोई दुःख-सुख का साथी हो...और अगर वह मर जाये तो उसके पीछे कोई रोने

वाला हो।"

रोजी ने प्यार से उसके सीने पर हाथ फेरा और उसकी गोद में सिर रख दिया।

rcz20"मुझे लगता है कि मुझे मेरी मंजिल मिल गई है...।"

"सच...!" सतीश रावण खुशीभरे स्वर में बोला-"तुम मुझसे शादी करोगी?"

"हां...करुंगी।"

"हे भगवान! कहीं मैं कोई सपना तो नहीं देख रहा!"

"आप सपना नहीं हकीकत देख रहे हैं...।"

AJ SCAN

मुस्कुराई रोजी। सतीश रावण ने उसे अपने सीने से लगा जोरों से भींच लिया....।

“थैंक गॉड! मेरी जिंदगी में ठहराव लाकर तुमने मुझ पर जो उपकार किया है वो मैं कभी नहीं भूलूंगा...।”

रोजी ने भी उसे जोरों से भींच लिया...।

थोड़ी देर बाद सतीश रावण ने उसे स्वयं से अलग किया और उसकी आंखों में झांकते हुए बोला-

“अब मुझे किसी का डर नहीं...मुझे मेरा मददगार...मेरी दुःख-सुख का साथी मिला गया है...। अब मैं दुगुने जोश से दुनिया से लड़ सकता हूं।”

“मगर उससे पहले आपको उन तीन से छुटकारा पाना है जो आपके पीछे लगे हैं।”

“उनका मैंने सोच लिया है।”

“क्या...?” रोजी उत्सुकता से बोली।

“सुबह तुम जब ड्यूटी पर होंगी तो मैं तुम्हें अपने कमरे की चाबी दे जाऊंगा। मेरे पीछे तुम मेरे कमरे में से सूटकेस निकालकर यहां अपने घर ले आना...मैं दो-तीन दिन में उन्हें डॉज देकर तुम्हारे पास आ जाऊंगा...फिर हम शादी कर लेंगे...।”

रोजी ने सहमति में सिर हिला दिया।

“एक बात का ध्यान रखना...।”

AJ SCAN

“क्या...?”

“मेरे वाला सूटकेस वो पहचान सकते हैं...इसलिये तुम अपनी तरफ से कोई सूटकेस ले जाना और रुपया उसमें भरकर लाना।”

“आप निश्चिंत रहिये...मेरी तरफ से आपको कोई शिकायत नहीं होगी। बस आप अपना ध्यान रखिये...।”

उसकी आवाज से ऐसा लग रहा था जैसे उसने दिल से सतीश रावण को अपना पति मान लिया है। और फिर सतीश रावण के हाथ उसके जिस्म पर फिरने लगे। कमरे में एक बार फिर से आग भड़कनी शुरू हो गई और दोनों के जिस्मों में लावा पकने लगा।

¶¶

सुबह सात बजे सतीश रावण गोल्ड रश में अपने कमरे में प्रविष्ट हुआ और सीधा बाथरूम में जा घुसा। थोड़ी देर बाद वह बाथरूम से निकाल तो वह अपने पुराने कल वाले रूप में था। आकर वह बैड पर लेटा और सो गया। तब का सोया वह ग्यारह बजे तब उठा जब दरवाजे पर दस्तक हुई।

"खट...खट...खट...।"

rcz202016@gmail.com

आंखें मिचमिचाते हुए सतीश रावण बैड से उठा और आगे बढ़कर दरवाजा खोला। सामने शौकत खड़ा था।

"अब उठे हो...?" वह उसे घूरते हुए बोला।

"हां...क्यों...?"

"खान साहब तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।"

AJ SCAN

“उनसे कहो कि मैं एक घंटे में पहुंच जाऊंगा।”

कहकर उसने उसके मुंह पर ही दरवाजा बंद कर दिया। वह बाथरूम में गया...फ्रैश हुआ और दरवाजे के साइड में लटकता पर्दा दरवाजे के आगे कर दिया ताकि कोई की-होल से भीतर न झांक सके। फिर वह बैड की तरफ बढ़ा। बैड के करीब आकर उसने झकु कर सूटकेस को खींचकर बैड के नीचे से निकाला और सूटकेस को बैड पर रखकर उसे खोल, बैड पर पलट दिया। बैड पर नोटों का ढेर लग गया। उसने खाली सूटकेस को बंद किया और उसे उठा कमरे से बाहर आ गया। कमरे को ताला लगाकर वह सूटकेस उठाये सीढ़ियों द्वारा हॉल में आया और रिसेप्शन की तरफ पढ़ा जहां पर कि रोजी बैठी थीं। रोजी उसे देख पहले तो मुस्कुराई...फिर जैसे ही उसकी नजर उसके सूटकेस पर पड़ी...वह चौंक उठी...। शंका के कीटाणु उसके जेहन में सिर उठाने लगे। वह यही सोचने लगी थी कि उसका महबूब जिसने रात को उससे शादी का वादा किया था...उसे छोड़कर जा रहा है। सतीश रावण उसके करीब आया और बैग को नीचे रख काउंटर पर कोहनी टिका थोड़ा आगे झुका और भेदभरे स्वर में बोला-

“मेरे पीछे जो व्यक्ति लगे हैं...उन्हें अपने पीछे लगाने के लिये मैं सूटकेस को साथ ले जा रहा हूं...। सारा रुपया मेरे कमरे मैं बैड पर पड़ा है...।”

सुनकर रोजी के चेरहरे पर इत्मीनान उभरा।

"तुम लाई हो सूटकेस...?"

rcz202016@gmail.com

"दो लाई हूं...।" उसने अपनी कुर्सी के पीछे इशारा किया। सतीश रावण ने उसके पीछे देखा जहां दो सूटकेस पड़े थे। फिर जेब से चाबी निकालकर उसकी तरफ बढ़ा दी।

"इसे रख लो...।"

रोजी ने तुरंत चाबी ले ली और अपने कपड़ों में कहीं छुपा दी।

"अपना ध्यान रखान।" सतीश रावण बोला- "मैं दो-तीन दिन में लौट आऊंगा।"

AJ SCAN

रोजी ने सिर हिला दिया। उसकी हड़ब़ड़ाई आंखें साफ बता रही थीं कि वह दिल से सतीश रावण को प्यार करने लगी थी। सतीश रावण काऊंटर के पास से हटा और गेट की तरफ बढ़ गया। गेट से बाहर आकर उसने देखा। मतलूब अपने दोनों साथियों के साथ बाहर खड़ा था। तभी मतलूब की नजर उस पर पड़ी...और जब उसकी नजर उसके हाथ में लटक रहे सूटकेस पर पड़ी तो वह बुरी तरह से चौंका। सतीश रावण मन-ही-मन मुस्कुराया और एक थ्री-व्हीलर रोककर उसमें सवार हो गया। थ्री-व्हीलर के आगे बढ़ते ही उसने गर्दन मोड़कर पीछे देखा। तीनों तेजी से सड़क किनारे खड़ी एक बाईक की तरफ बढ़ रहे थे। मुस्कुराते हुए सतीश रावण ने गर्दन सीधी की और थ्री-व्हीलर के चालक से बोला-

"दाईं तरफ गली में मोड़ दो।"

चालक ने हुक्म का पालन किया। थ्री-व्हीलर गली में प्रविष्ट हुआ। थ्री-व्हीलर गली में प्रवेश करते वक्त सतीश रावण ने एक बार फिर गर्दन पीछे मोड़ी। मतलूब बाईक पर बैठा उसे किक मार रहा था तथा बाकी के दोनों बेसब्री से उसकी तरफ देख रहे थे। सतीश रावण के होठों पर मुस्कान नाच उठी। उसने गर्दन सीधी कर सामने देखा। गली कोई ज्यादा लम्बी नहीं थी...उसका दूसरा सिर सामने नजर आ रहा था तथा उसके पार गुजरते हुए वाहन दिख रहे थे। सतीश रावण ने तेजी से कुछ सोचा और जैसे ही थ्री- व्हीलर गली के पार निकला-

“गोल मार्किट चलना है।” सतीश रावण बोला।

श्री-व्हीलर के चालक ने सिर हिलाया और उसे मोड़ने के लिये ब्रेक पर पैर रखा। जब तक वह ऑटो को पुनः गति देता...सतीश रावण नीचे उतर चुका था। चालक को पता ही नहीं चला कि कब उसकी सवारी अपना सूटकेस उसके ऑटो में छोड़कर उतर गई। उतरने के बाद सतीश रावण ने एक अन्य ऑटो रिक्शा रोका और उसमें सवार हो गया। ठीक तभी बाईक गली में से निकली...।

तीनों बैठे हुए थे उस पर। सतीश रावण के होठों पर मुस्कान फैल गई। उसे पता चल चुका था कि उसके पीछे लगे व्यक्तियों ने उसे देख लिया है। मगर अब कोई चिंता नहीं थी उसे। उसने रहमान खान की कोठी का पता चालक को बताया और सीट की पुश्त से टेक लगा ली। करीब आधे घन्टे बाद वह रहमान खान की कोठी के गेट के सामने ऑटो रिक्शा से उतरा और खुले गेट में प्रवेश कर गया। ठीक तभी शौकत उसके सामने आया।

“बड़ी देर कर दी।” वह बोला।

AJ SCAN

“आ तो गया हूं।” सतीश रावण बोला।

“खान साहब तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।”

सतीश रावण कुछ नहीं बोला...बस कोठी में प्रवेश कर गया। जिस वक्त वह रहमान खान के कमरे में प्रविष्ट हुआ...रहमान कान किसी को फोन कर रहा था।

“ठीक है...मैं देखता हूं।”

कहकर उसने सतीश रावण को देखा और रिसीवर क्रेडिल पर टिकाया।

“बैठो...।” वह बोला। सतीश रावण आगे बढ़कर सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया।

"रात कहां गये थे तुम...?"

बुरी तरह से चौंका सतीश रावण...। साथ ही उसका कलेजा यह सोचकर धड़क उठा कि कहीं उसे रोजी के घर का पता तो नहीं चल गया! अगर ऐसा है तो उसका एक करोड़ डूबा ही डूबा।

rcz202016@gmail.com

"क्यों...?" किसी तरह स्वयं को सम्भालते हुए बोला वह।

"शौकत तुम्हें जिस वक्त बुलाने गया था...उस वक्त तुम सो रहे थे। मतलब साफ है कि तुम सारी रात जागते रहे थे...।"

सतीश रावण ने राहतभरी सांस छोड़ी।

AJ SCAN

"मेरी निगरानी पर तीन-तीन आदमी तैनात किये हैं तुमने...उनसे पता कर लो।"

"सूटकेस कहा है...?"

"कौन-सा सूटकेस...?" जानबूझकर अंजान बनते हुए बोला सतीश रावण।

"मैं उस सूटकेस की बात कर रहा हूं जिसमें तुमने एक करोड़ रुपया एडवांस लिया था।"

"क्यों...?" सतीश रावण के माथे पर बल पड़े-" क्यों पूछ रहे हो तुम उसके बारे में?"

"होटल से निकलते वक्त वह सूटकेस तुम्हारे हाथ में था...मगर जब तुम यहां उतरे तो तुम्हारे पास सूटकेस नहीं था...रास्ते में कहां गायब किया उसे?"

"तुमसे मतलब...?"

इस कोरे जवाब की रहमान खान को सपने में भी उम्मीद नहीं थी। तभी तो हड़बड़ा पड़ा था वह।

rcz202016@gmail.com

"क्या मतलब...?"

"वो रुपया मेरा है। उस पांच करोड़ का एक हिस्सा जिसके बकाया मैंने काम करने का बाद तुमसे लेने हैं...मैं उस एक करोड़ का क्या करता हूं...कहां रखता हूं...उससे तुम्हें कोई सरोकार नहीं होना चाहिये।"

"क्यों...क्यों नहीं होना चाहिये...?"

"क्यों होना चाहिये...?"

AJ SCAN

"बिल्कुल होना चाहिये...अगर तुम हमारा काम करने में नाकाम रहते हो तो वो करोड़ रुपया हमारा होगा...ऐसे में हमें पूरा हक है कि तुमसे जानें कि वह रुपया कहां है।"

"गंगा में गई हडिड्यां कभी नहीं मिला करतीं रहमान मियां...इसलियें उस के करोड़ को भूल जाओ और मतलब की बात करो...।"

रहमान खान का दिल तो किया कि वह अभी रिवॉल्वर निकाले और उसके सीने में गोली उतार दे। बड़ी मुश्किल से वह अपने आप पर काबू पा रहा था...। अगर उसे उससे काम न निकलवाना होता तो कोई बड़ी बात नहीं थी कि अब तक वह उसे गोली मार चुका होता। मन मसोसेते हुए पहलू बदला और बोला-

"स्कीम बनाई?"

"हां...बनाई।"

“फुलप्रूफ है?”

“यह तो तुम बताओगे कि फुलप्रूफ है या नहीं...। अगर तुम्हें कोई नुक्स नजर आये तो बोल देना...।”

rcz202016@gmail.com

“ठीक है बोलो।”

गहरी सांस छोड़ी रहमान खान ने। सतीश रावण ने पहलू बदला और रहमान के चेहरे पर निगाहें गड़ाते हुए बोला—

“तुमने कहा है कि पण्डित केदारनाथ का खून छब्बीस जनवरी को होना चाहिये....।”

“अगर ऐसा हो जाये तो इससे बढ़िया बात ही नहीं...।”

AJ SCAN

“तुम्हें याद है कि कालीसिंह ने सी०एम० पण्डित केदारनाथ की हिफाजत के बारे में क्या कहा था?”

“याद है।”

“बताओ...।”

“तुम्हारे सामने ही तो बताया था उसने...फिर क्यों पूछ रहे हो?”

“क्या बोलने में हर्ज है तुम्हें...?”

“नहीं...मुझे क्या हर्ज होगा...!” हड़बड़ाया रहमान खान...।

“तो फिर बोलो...क्या सुरक्षा प्रबन्ध बताये थे कालीसिंह ने?”

रहमान खान ने पहलू बदला...कुछ देर सोचा फिर कहने लगा-

“केदारनाथ एक रात पहले ही यानी कल रात को यहां पहुंच जायेगा...। उसके यहां पहुंचने से पहले ही उस रेस्ट हाऊस को चारों तरफ से गार्डों द्वारा घेर लिया जायेगा ताकि कोई असामाजिक तत्व सी०एम० के वहां पहुंचने से पहले कोई गड़बड़ी न कर दे।”

“यानी अब तक रेस्ट हाऊस पुलिस द्वारा घेर लिया गया होगा...।”

“हां...।”

“फिर...?”

AJ SCAN

“कल रात को किसी भी वक्त सी०एम० अपने बॉडीगार्डों के साथ यह8 पहुंच जायेगा और रात को यहीं आराम करेगा।”

“आगे...?”

“अगले दिन सुबह...यानी छब्बीस जनवरी को वह ठीक आठ बजे रेस्ट हाऊस से परेड ग्राऊंड की तरफ रवाना होगा...उस वक्त तीन गाड़ियां उसकी गाड़ी के आगे होंगी...और तीन उसके पीछे...उसके दायें-बायें दो-दो मोटरसाइकिल होंगी...। उन मोटर-साइकिलों पर और गाड़ियों में उसके गार्ड होंगे जोकि स्टेनगनों से और एस०एल०आर० से लैस होंगे। हर गाड़ी पर एक एल०एप०जी० फिट होगी...।”

“गाड़ियों का काफिला सीदा परेड ग्राऊँड में ऐन स्टेज के पास रुकेगा और फिर सी०एम० अपनी गाड़ी से निकलकर स्टेज पर चढ़ जायेंगे।”

इस बीच उसके बॉडीगार्ड इधर-उधर फैल जायेंगे...। कुल मिलाकर किसी भी वक्त कोई भी व्यक्ति उससे नहीं मिल सकता...हमला करना तो बहुत दूर की बात रही।”

कहकर रहमान खान ने अपने होंठ बंद किये और प्रश्नभरी निगाहों से सतीश रावण को देखने लगा।

“और कुछ...?” सतीश रावण बोला।

rcz202016@gmail.com

“बस यही बताया था उसने...।” बोला रहमान खान—“अब तुम बोलो...तुम क्या करोगे...?”

सतीश रावण ने कुछ पलों तक सोचने की मुद्रा बनाई...फिर बोला-

“कालीसिंह शेखावत के मोबाइल पर फोन करो उसे।”

“क्यों...?” चौंकते हुए बोला रहमान खान।

AJ SCAN

“जो मैं कहता हूं...उससे वही कहो...।”

“क्या कहूं...।”

सतीश रावण ने बताया...।

बुरी तरह से उछल पड़ा रहमान खान...।

“यह क्या कह रहे हो तुम...?” वह बोला- “तुम पागल तो नहीं हो गये...?”

“मैं पागल नहीं हुआ...बल्कि मेरा दिमाग बिल्कुल ठीक काम कर रहा है।”

"मगर...।"

"घबराओ नहीं-कुछ भी घाटा नहीं होगा तुम्हें...।" सतीश रावण बोला- "तुम फोन करो उसे।"

rcz2026@gmail.com

न चाहते हुए थी रहमान खान को रिसीवर उठाना पड़ा। उसने कालीसिंह शेखावत का नम्बर डालय किया और दूसरी तरफ से जवाब आने की प्रतीक्षा करने लगा।

¶¶

"डिन डिन...न...डिन...डिनान...।"

कालीसिंह शेखावत की जेब में रखे मोबाइल फोन का म्यूजिक बजा। उसने जेब से फोन निकाला और उस पर लिखे नम्बर को पढ़ा। इस वक्त वह एक मीटिंग में

AJ SCAN

जा रहा था। बटन दबाकर उसने फोन ऑन किया और कान से लगाया।

“हैलो...!”

“रहमान खान का सलाम कबूल फरमायें मन्त्रीजी।”

दूसरी तरफ से रहमान खान की आवाज सुनकर वह चौंककर सीधा बैठ गया।

“बोलो रहमान खान...।” वह गम्भीरता से बोला।

“आपके सी०एम० को खत्म करने को पूरा प्लान तैयार हो चुका है जनाब...।”

“सच...?”

“सच...। बस अब आप ताज पहनने की तैयारी शुरू कर दीजिये...।”

“क्या प्लान बनाया है?”

rcz202016@gmail.com

पूछते हुए उसका कलेजा धड़क उठा था।

“छब्बीस जनवरी को जैसे ही सी०एम० रेस्ट हाउस से परेड ग्राउंड जाने के लिये निकलेगा... उसका काम तमाम हो जायेगा।”

“ए...ऐसा कैसे हो सकता है?”

AJ SCAN

"ऐसा ही होगा...हमने पुलिस के ही दो ऐसे आदमी खरीद लिये हैं जो इस काम को अंजाम देंगे।"

"क्या मतलब...?"

"उन दोनों की ड्यूटी भी रेस्ट हाऊस पर लगी है...और यह तो जाहिर ही है कि वे हथियारबंद होंगे...। हमने दोनों से पचास-पचास लाख में सौदा कर लिया है। उतने रुपयों के लिए उन्होंने भी हमारे लिये काम करने की हामी भर ली है।"

"बेवकूफ...!" गुस्से में बोला कालीसिंह शेखावत—"तुम क्या समझते हो कि वो सिपाही सी०एम० को खत्म करने में कामयाब हो जायेंगे...। पैसा देखकर हर किसी के दिल में लालच आ जाता है मगर जब काम करने का वक्त आता है तो बड़े-बड़ों की हवा सरक जाती है।"

"आप शायद यह समझ रहे हैं कि पचास-पचास लाख लेकर वे सी०एम० की हत्या करेंगे?"

"यही तो कह रहे हो तुम...।"

"जी नहीं...मैंने यह कहा है कि उनसे सौदा हुआ है।"

rcz202016@gmail.com

"क्या मतलब...?"

"उस सौदे के तहत वे सिर्फ हमारे मेहमान बनकर रहेंगे और उनके स्थान पर हमारे दो आदमी उनके फेस-मास्क लगाकर...उनकी वर्दी पहनकर जायेंगे....। अब यह तो आप समझ ही सकते हैं कि हमारे भेजे आदमी जांबाज होंगे...।"

"मगर अगर उन्होंने सी०एम० को खत्म किया तो बचेंगे वो भी नहीं।"

"वो वापिस आने के लिये नहीं जायेंगे।"

AJ SCAN

“ओह नो...!” कालीसिंह शेखावत की आंखें फैल गईं।

“ओह यस...। कैसा लगा प्लान आपको...?”

कालीसिंह शेखावत ने गहरी सांस छोड़ी और बोला-

“मुझे अपने सामने अपनी ही सूरत का सी०एम० नजर रहा है।”

“हा...हा...हा...।”

“प्लान वाकई शानदार है।”

“शुक्रिया...अब आपको एक करोड़ भेजना है हमें।”

“चिंता मत करो...कल शाम को तुम्हारे पास रुपया पहुंच जायेगा...।”

“थैंक्यू...।”

rcz202016@gmail.com

AJ SCAN

दूसरी तरफ से आवाज आई और सम्बन्ध विच्छेद हो गया। कालीसिंह शेखावत ने फोन ऑफ किया और उसे जेब में डालते हुए बोला—

“गाड़ी को सी०एम० की कोठी की तरफ ले चलो...।”

rcz202016@gmail.com

ड्राइवर ने सामने देखते हुए ही सिर हिला दिया.

¶¶

रहमान खान ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और सतीश रावण को घूरते हुए बोला—

“मुझे समझ में नहीं रहा कि तुमने मुझसे फोन क्यों करवाया?”

सतीश रावण के होठों पर मुस्कान नाच उठी। उसने पहलू बदला और गहरी सांस छोड़ते हुए बोला—

“मुझे नहीं पता कि तुम राजनीति के बारे में जानते हो या नहीं...। मगर इतना अवश्य पता है कि अगर तुम राजनीति के बारे में जानते हो तो मेरे से बहुत कम जानते हो...और राजनीतिज्ञों की तो पूछो ही मत...।”

“मैं समझा नहीं...।”

“यह पॉलिटीशियन बड़ी पहुंची हुई चीज होती हैं बड़े भाई...आगे-पीछे तो यह लोग खुद को नोचते-खसोटते रहते हैं...मगर जब मामला देश का होता है तो सारे एक हो जाते हैं...।”

“कहीं तुम यह तो नहीं कहना चाहते कि कालीसिंह हमसे कोई खेल खेल रहा है।”

AJ SCAN

“हो सकता है मेरी सोच सही हो...और यह भी हे सकता है कि मैं गलत सोच रहा होऊं।”

“मेरा तो दिमाग ही घुमाकर रख दिया है तुमने...मेरी समझ में अब भी कुछ नहीं आ रहा।”

rcz202016@gmail.com

अपने माथे पर हाथ रगड़ते हुए बोला रहमान खान।

“ अभी सब समझ में आ जायेगा।” सतीश रावण बोला- “बेशक कालीसिंह शेखावत तुम्हारा भरोसे का आदमी है और उसके दिल में सी0एम0 बनने की इच्छा है...मगर है तो वो पॉलिटिशियन ही। क्या पता कब पलटा खा जाये और उसके दिल में देशप्रेम जाग जाये...। उस सूरत में वहच क्या करेगा?”

“करेगा क्या? पूरी की पूरी फोर्स को ही बदलने का हुक्म जारी कर देगा...और मेरी बनाई स्कीम् के मद्देनजर वह किसी भी सिपाही को करीब भी नहीं फटकने देगा।”

“बिल्कुल...।”

“यानी अगर उसके दिल में खोट होगा भी तो भी हमारा कुछ नहीं बिगड़ेगा...बल्कि हमारा काम और भी शानदार ढंग से होगा।”

“ओह!”

“और अगर वह दिल से तुम्हारे साथ है तो फिर बात ही कुछ नहीं...।”

“क्यों नहीं...वह कह सकता है हमने उस स्कीम पर अमल क्यों नहीं किया जो मैंने बनाई थी?”

“तुम कह देना कि ऐन वक्त पर तुम्हारा इरादा बदल गया था। या कोई भी फड़कता हुआ बहाना बना सकते हो।”

AJ SCAN

रहमान खान निरुत्तर हो गया।

“मेरा ख्याल है कि अब तुम समझ गये होंगे कि मैंने तुमसे फोन क्यों कराया?”

rcz202016@gmail.com

“समझ गया...।”

“कैसा लगा...?”

“अच्छा लगा...अब स्कीम भी बता दो...।”

सतीश रावण ने पहलू बदला और बोला—

“स्कीम तो मेरे जेहन में है...मगर उससे पहले मैं रेस्ट हाउस से परेड़ ग्राउंड तक के रास्ते को देखना चाहता हूं।”

“क्यों...?”

“यह मैं बाद में बताऊंगा...।”

“तुम स्कीम बताओ...रास्ता बाद में भी देखा जा सकता है।”

“तुम्हें शायद पता नहीं कि सतीश रावण मुंह से कच्ची बात नहीं निकालता।”

“मगर...।”

AJ SCAN

"नो...।"सतीश रावण ने सिर दायें-बायें हिलाया- "पहले मैं रास्ता देखूंगा...फिर कुछ कहूंगा...।"

मन मसोस कर रह गया रहमान खान...।

कुढ़ते हुए वह खड़ा हुआ और बोला-

"आओ...।"

सतीश रावण भी खड़ा हो गया।

¶¶

"वो देखो...वो रहा रेस्ट हाऊस...।"

कार की ड्राइविंग सीट पर बैठे हुए ही रहमान खान ने रेस्ट हाऊस की तरफ इशारा किया। उसके बराबर वाली पैंसेजर सीट पर बैठे सतीश रावण ने उसके इशारे का पीछा किया। काफी ढेर सारी जगह घेरे हुए था रेस्ट हाऊस...। रेस्ट हाऊस की बाऊंड्री वॉल के भीतर की तरफ चारों तरफ फूलदार पौधे लगे थे...। गेट पर स्टेनगनों से लैस दो सिपाही खड़े थे। उन दोन के अलावा रेस्ट हाऊस की छत पर तथा बाहर लॉन में भी सतीश रावण को कई सिपाही खड़े इधर-से-उधर टहलते नजर आ रहे थे।

“यह तो इन्होंने अभी से रेस्ट हाऊस पर कब्जा कर लिया है।”

वह रहमान खान की तरफ देखते हुए बोला।

“सी०एम० आ रहा है...कोई छोटा-मोटा मन्त्री तो नहीं आ रहा...। ऐसे में एहतियात जरूरी हो जाती है...ऊपर से रेड अलर्ट है।”

सतीश रावण ने सिर हिलाते हुए गहरी सांस छोड़ी और बोला-

AJ SCAN

"अब परेड ग्राऊंड चलो...।"

"यहां जो देखना था देख लिया?"

rcz202016@gmail.com

"हां...।"

"कौन-से रास्ते से चलना है परेड ग्राऊंड...?"

"क्या मतलब...?"

"यहां से परेड ग्राऊंड जाने के तीन रास्ते हैं जो आगे चलकर एक सड़क से मिल जाते हैं। उन तीन में से किस रास्ते पर चलोगे?"

“सी०एम० किस रास्ते से निकलेगा?”

“यह न तो तुमने कालीसिंह से पूछा...न ही मैंने।”

सतीश रावण ने एक पल के लिये सोचा फिर बोला-

“जो रास्ता ज्यादा साफ और खुला हो...उसी रास्ते से चलो...।”

रहमान खान से सिर हिलाया और कार स्टार्ट कर उसे आगे बढ़ा दिया। थोड़ा आगे आकर उसने स्टेयरिंग बाईं तरफ घुमाया और एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ा दिया। सतीश रावण विण्ड स्कीन पर निगाहें जमाये सब देख रहा था। करीब दस मिनट बाद रहमान खान ने कार को दाईं तरफ मोड़ा और सामने देखते हुआ ही बोला।

“यह वो सड़क है, जहां से रेस्ट हाऊस के तीन रास्ते निकलते हैं।”

AJ SCAN

सतीश रावण ने देखा...वह सड़क अपेक्षाकृत काफी चौड़ी थी और वहीं से तीन अलग रास्ते निकल रहे थे। सतीश रावण कुछ पल तीनों रास्तों को देखता रहा...फिर गहरी सांस छोड़ते हुए बोला—

"परेड ग्राऊंड चलो...।"

rcz202016@gmail.com

रहमान खान ने कार आगे बढ़ा दी। दस मिनट बाद कार परेड ग्राऊंड के गेट से कुछ दूर खड़ी थी। परेड ग्राऊंड की करीब तीन फीट ऊंची चारदीवारी में वह स्टेज नजर आ रही थी जहां से कि राज्यपाल ने सलामी लेनी थी और उस पर बतौर मेहमान सी०एम० ने बैठना था। स्टेज करीब पंद्रह फीट ऊंची थी और उस पर चार-पांच आदमी कुछ काम कर रहे थे।

"क्या कर रहे हैं वह आदमी...?"

पूछा सतीश रावण ने...।

“स्टेज की हिफाजत के लिये कुछ कर रहे होंगे।”

बोला रहमान खान। सतीश रावण ने परेड ग्राऊंड में निगाहें दौड़ाईं...। जगह-जगह पाईपों के रास्ते बने हुए थे...एक तरफ गणमान्य व्यक्तियों के स्टेज तक पहुंचने का चौड़ा रास्ता बना हुआ था...।

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और बोला-

“वापिस चलो...।”

“देख लिया...?”

“हां...।”

AJ SCAN

“कोई कसर रह गई हो तो पूरी तर लो।”

“वापिस चलो।”

सोचपूर्ण स्वर में बोला सतीश रावण। रहमान खान ने इग्नीशन में लटक रही चाबी घुमा दी।

¶¶

कालीसिंह शेखावत को इस तरह अचानक अपने सामने देख सी०एम० पण्डित केदारनाथ बुरी तरह से चौंके। पण्डित केदारनाथ करीब पचपन साल के साधारण सेहत वाले व्यक्ति थे। चूड़ीदार पायजामे के ऊपर लम्बा कुर्ता और ऊपर काले रंग की अचकन उनके व्यक्तित्व को काफी आकर्षक बना रही थी। अपने आधे गंजे सिर पर हाथ फेरते हुए उन्होंने मुस्कुराते हुए कालीसिंह शेखावत का स्वागदत किया।

“आओ कालीसिंह...अचानक इधर कैसे आना हो गया...खैरियत तो है...?”

कालीसिंह शेखावत ने आगे बढ़कर उसके पैरों को छुआ....फिर उसके सामने वाले सोफे पर बैठ गया।

“क्या बात है...? तुम गम्भीर क्यों हो...?隆” उसके चेहरे को देखते हुए बोले पण्डित केदारनाथ। कालीसिंह शेखावत ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

“आपको तो पता ही है कि गंगानगर में उग्रवादियों का प्रवेश हो गया है...।”

“हां...यह चिंता की बात है।” पण्डित केदारनाथ भी गम्भीर हो गये- “और दो दिन पहले गंगानगर में जो हुआ...उसका भी पता है मुझे...हमारा एक साथी भी उग्रवाद की भेंट चढ़ चुका है...।हरि सिंह गहलौत की मौत से तो उग्रवादियों के हौसले कई गुना बढ़ गये होंगे।”

AJ SCAN

एक गहरी सांस छोड़ी कालीसिंह शेखावत ने।

"आप जानते हैं हरि सिंह गहलौत क्यों मरा...?"

"अरे भाई...उसे उग्रवादियों ने मारा है...और वे किसी को मारने के लिये कारण नहीं तलाशते।"

@gmail.com

"मगर हरि सिंह गहलौत की मौत के पीछे कारण था।"

बुरी तरह से चौंके पण्डित केदारनाथ।

"क्या कारण था...?" बुरी तरह से उछल पड़े पण्डित केदारनाथ—"य...यह क्या कह रहे हो तुम...?"

“आप हकीकत सुन रहे हैं...। हरि सिंह गहलौत आपको खत्म कर खुद सी०एम० बनने के चक्कर में था।”

पण्डित केदारनाथ का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

“य...यह क्या कह रहे हो तुम कालीसिंह...! हरि सिंह मुझे खत्म करने के चक्कर में था!”

“जी हां...और उसकी मौत के बाद उग्रवादियों ने मुझसे सम्पर्क किया था।”

“त...तुमसे...!”

“जी हां...।”

AJ SCAN

“क्यों...?”

“आपको तो पता ही है कि इलेक्शनों के बाद मैं भी सी०एम० की सीट का प्रमुख दावेदार था...मगर बाजी आपने मार ली और...आप सी०एम० बन गये... और मैं गृहमन्त्री बन गया। तब मैंने आपके खिलाफ कुछ उल्टे-सीधे बयान भी दिये थे। बस उन्हीं बयानों के आधार पर उग्रवादियों ने यह समझ लिया कि मैं सी०एम० बनने का ख्वाहिशमन्द हूं...सो उन्होंने मुझे फोन किया और मैंने फौरन हां कर दी।”

rcz202016@gmail.com

“ओह...!”

कालीसिंह शेखावत ने गहरी सांस छोड़ी और आगे बोला-

“मेरे लिये देश पहले है पण्डित जी...और राजनीति बाद में आती है। उन्होंने मुझे, कहा कि वे सी०एम० यानि आपको खत्म कर आपकी जगह मुझें सी०एम० बना देंगे...और फिर राजस्थान को देश से अलग कर मुझे वहां का बादशाह बना देंगे। हालांकि उस वक्त मैं उन्हें फटकार भी सकता था मगर तब वे किसी और से सम्पर्क करते और हो सकता था कि वह लालच में आ जाता...सो मैंने हां कर दी।”

“फिर...?”

“कल मैं रहमान खान नाम के उग्रवादी से मिला भी था और उसे आपकी हिफाजदत के सारे बंदोबस्त भी बता दिये थे।”

“क्यों...?”

“क्योंकि मैं जानना चाहता था कि आपको खत्म करने की वे क्या स्कीम बनाते हैं।”

“यह तुमने गलत किया कालीसिंह, उन्हें उसी वक्त गिरफ्तार कर लेना चाहिये था तुम्हें...।”

“यह विचार मेंरे मन में भी आया था।”

AJ SCAN

“फिर तुमने ऐसा किया क्यों नहीं...?”

“दरअसल मैं यह समझ रहा था कि रहमान खान के ऊपर भी कोई है। मैं उस तक पहुंचना चाहता था। इसलिये मैंने ऐसा नहीं किया...। मुझे विश्वास था कि मेरे द्वारा आपके सुरक्षा प्रबन्धों को बताने का बाद उनका चीफ मुझसे सम्पर्क करेगा।”

rcz202016@gmail.com

“सम्पर्क हुआ...?”

“हुआ...मगर सम्पर्क रहमान खान ने ही किया। उसने आपको खत्म करने का प्लान बना लिया है।”

“क्या...?”

कालीसिंह शेखावत ने उन्हें सब कुछ बताया फिर बोला-

“अब आपकी हिफाजत के साथ-साथ रहमान खान और उसके आदमियों को गिरफ्तार करने की जिम्मेदारी मुझ पर है पण्डित जी...। हमारी आपस की लड़ाई तो सारी उम्र चलती रहेगा...मगर अगर कोई बाहर का आकर हमारे घर में दखलअंदाजी करे...वो हमें बर्दाश्त नहीं...।

पण्डित केदारनाथ उठे और कालीसिंह को सीने से लगा लिया।

“मुझे तुम पर गर्व है कालीसिंह...।” वे डबडबाये स्वर मैं बोले-“आज की दृष्ति हो चुकी राजनीति में तुम उस कमल के सामान हो जो कीचड़ में खिलता है। तुम जैसों के दम पर ही तो हमारा देश एक है...वरना दुनिया ने तो हमें तोडने की कोशिश में कोई कसर नहीं रखी थी।”

कहकर उन्होंने उसकी पीठ थपथपाई।

AJ SCAN

“अभी मेरी पीठ मत थपथपाइये पण्डित जी...यह पीठ तभी थपथपा जब छब्बीस जनवरी राजी खुशी से निकल जायेगी...और उग्रवादी पकड़े जायेंगे...।”

“आप ऑर्डर दो वहां की पुलिस को कि वे रहमान खान और उसके साथियों को गिरफ्तार कर लें।”

rcz202016@gmail.com

“वो मैं अभी किये देता हूं...मगर फिर भी आपकी हिफाजत का पूरा बंदोबस्त करना होगा मुझे।”

¶¶

“अब बोलो...।” कुर्सी पर बैठते हुए बोला रहमान खान—“क्या स्कीम बनाई है तुमने...?”

उसके सामने बैठे सतीश रावण ने पहलू बदला और टांग पर टांग रखते हुए बोला—

“सी०एम० का कत्ल न तो परेड ग्राउंड में हो सकता है...न ही रेस्ट हाऊस में...। अगर उसका कत्ल हो सकता है तो सिर्फ रास्ते में ही हो सकता है।”

रहमान खान ने घूर कर उसे देखा।

“अगर तुम यह सोच रहे हो कि उसे रास्ते में ही कहीं मारा जा सकता है तो तुम गलत सोच रहे हो।”

“क्यों...?”

AJ SCAN

"तुम क्या समझते हो...रास्ते में उसकी सुरक्षा के बंदोबस्त नहीं होंगे...? कालीसिंह की बात शायद भूल रहे हो तुम कि रेस्ट हाऊस से लेकर परेड ग्राऊंड तक जगह-जगह पुलिस तैनात होगी ऐसे में क्या तुम उसे खत्म करने में कामयाब हो जाओगे...वो भी उस सूरत में जब सी०एम० की कार बुलेटप्रूफ होगी? हां...अगर तुम उसको तोप से उड़ाने की सोच रहे हो तो अलग बात है। मगर तोप का बंदोबस्त मैं नहीं कर पाऊंगा।"

rcz203016@gmail.com

"बोल चुके...?"

"क्यों...?"

"अब तभी बोलना जब मैं बोलने को कहूं...।"

रहमान खान कसमसाया...।

“बोलो...।” वह फंसे स्वर में बोला। सतीश रावण ने दो-तीन लम्बी सांसें छोड़ी और बोला-

“सी०एम० को न तो गोली से उड़ाया जायेगा...न ही इसके लिये तुम्हें तोपखाना मंगवाने की जरूरत है।”

रहमान खान कुछ नहीं बोला...बस उस की तरफ देखता रहा।

“मैंने उस चौराहे को देखा है जहां पर कि रेस्ट हाऊस की तीन सड़कें मेन रोड से मिलती हैं। वे तीनों ही सड़के अपेक्षाकृत कम चौड़ी हैं...जबकि मेन रोड हाईवे जैसी है।”

“तुमने उन छोटी सड़कों पर गौर नहीं किया...मगर मैंने किया है। एक वह जो सीधी जाती है...उसे छोड़कर बाकी की दोनों सड़कों से आने वाले ट्रैफिक को मुड़ते समय न सिर्फ धीमा होना पड़ता है-बल्कि उसके पिछले पहिये सड़क से नीचे भी उतर जाते हैं। सिर्फ सीधी सड़क के पहिये सड़क से नीचे नहीं उतरते।”

AJ SCAN

"तुम कहना क्या चाहते हो?" स्वयं को बोलने से रोक नहीं पाया रहमान खान।

"तुम फिर बोले...मैंने कहा न जब मैं बोलने को कहूं तभी बोलना।"

rcz202016@gmail.com

रहमान खान पुनः कसमसाया...और होठों को भींच लिया

"जिस सड़क से हम रेस्ट हाउस से चले थे...।" सतीश रावण आगे बोला- "तुम्हारे कहे अनुसार वह सड़क अन्य दोनों सड़कों से न केवल चौड़ी है-बल्कि साफ भी है। बोलो...."

"हां...।"

“नब्बे प्रतिशत उम्मीद तो यही है। सी०एम० उसी सड़क से परेड ग्राऊण्ड की तरफ जाएगें।

रहमान खान चुप रहा।

“उस सड़क से...।” सतीश रावण आगे बोला-“मुख्य सड़क पर आके वक्त सी०एम० की कार के पिछले पहियों को सड़क से नीचे उतरना होगा...। कोई छोटी कार तो होगी नहीं सी०एम० की...। कुल मिलाकर सके पिछले पहियों को चाहे कुछ भी हो जाये कच्चे पर उतरना ही पड़ेगा। बस वहीं उसका काम तमाम हो जायेगा।”

बुरी तरह से चौंका रहमान खान...।

“वो कैसे?”

“रिमोट बम से....”

AJ SCAN

“व्हाट...?”

“सड़क के ऐन किनारे की जगह को खोदकर वहां सड़क के भीतर की तरफ एक छोटी-सी सुरंग बनाई जायेगी। इतनी लम्बी कि उसमें हाथ डालकर बम को रखा जा सके...और फिर उस जगह को वैसा ही कर दिया जायेगा। बम ऐसा होना चाहिये कि वह सिर्फ रिमोट कन्ट्रोल का ही कहना माने...। अपने ऊपर पड़ने वाले अन्य वाहनों का दबाव वह आसानी से बर्दाश्त कर जाये।”

“ओह...!”

“मैं रिमोट लेकर वहां से कुछ दूर खड़ा होऊंगा...और जैसे ही सी०एम० की कार उस स्थान से निकलेगी मैं रिमोट कन्ट्रोल का बटन दबा दूंगा...।”

“तुम नहीं मैं...।” एकाएक कुटिलता से हंसा रहमान खान।

“अपने बाप का क्या जाता है...!” सतीश रावण ने हाथ फैलाते हुए कंधे उचुकाये—“तुम दबा लेना...।”

“तेरे बाप को तो जाना था चला गया...अब यह सोच कि तेरा क्या जाने वाला है।”

“क्या...?” हड़बड़ाया सतीश रावण।

“जान जाने बाली है तेरी।”

कहने के साथ ही रहमान खान ने रिवॉल्वर निकालकर उसकी तरफ तान दी। बुरी तरह से हड़बड़ाया सतीश रावण।

“य...यह क्या कर रहे हो तुम...?” वह थर्राये स्वर में बोला।

AJ SCAN

“अशरफ...शौकत...जहीर...मतलूब...!”

रहमान खान ने उसकी बात का जवाब न देते हुए आवाज लगाई। तुरंत चारों भीतर प्रविष्ट हुए और सतीश रावण के पीछ खड़े हो गये।

rcz202016@gmail.com

“ य...यह सब क्या है...?”

हड़बड़ाते हुए बोला सतीश रावण। रहमान खान के होठों पर कुटिल मुस्कान नाच उठी।

“यह सब वही है छोटे मियां...जो तू दूसरों के साथ करता रहा है।”

“क...क्या मतलब...?”

"एक करोड़ कहां है...? वही जो तू मुझसे बतौर एडवास ले गया था।"

सतीश रावण समझ गया कि वह उसके जाल में फंस चुका है। मौत की उसे फिक्र नहीं थी...क्योंकि वह जानता था कि ऊपर वाले ने उसकी कैसी मौत लिखी है। आखिर वह एक शैतान आत्मा था। भेड़िया था वह। वो भेड़िया जिसने धर्मराज तक को धर्मसंकट में डाल दिया था। उनके हाथों से मर तो नहीं सकता था वह...मगर वे उसके हाथ-पैर तो काट कर उसे लूला-लंगड़ कर सकते थे...और ऐसी जिंदगी उसके लिये मौत से भी बद्तर होती। उसने जोरों से थूक सटकी और बोला-

"य...यह तुम ठीक नहीं कर रहे रहमान खान...! मैंने तुम्हें स्कीम बताई और तुम मुझे बकाया रकम देने के स्थान पर मेरे साथ इस तरह पेश आ रहे हो।"

"तू देखना कल अभी मैं तेरे साथ क्या सलूक करूंगा..।" गुर्राया रहमान खान-" मेरे इतने आदमी मार डाले तूने...करोड़ों का नुकसान कर दिया तूने मेरा...।"

AJ SCAN

"म...मगर उसके लिये तो तुमने मुझे माफ कर दिया था!"

"मुंह से माफ किया था मैंने तुझे, दिल से तो नहीं किया था। और यह माफी भी मैंने सिर्फ इसीलिये दी थी कि तेरे से सी०एम० को खत्म करने का प्लान बनवा सकूं...।"

rcz202016@gmail.com

सतीश रावण ने जोरों से थूक सटकी...।

"तू अभी तक सिर्फ इसीलिये बचा हुआ है कि तूने होटल से एक करोड़ का सूटकेस निकालकर कहीं छुपी दिया है। अगर तू सूटकेस होटल से नहीं निकालता तो अब तक तेरे सीने में गोली उतर चुकी होती।"

सतीश रावण के गले की घण्टी जोरों से उछली।

"इस बार खसामोश रहकर तू अपनी मौत को दुश्वार क्यों बना रहा है। आराम से मरना चाहता है तो एक करोड़ के बारे में बता।"

सतीश रावण ने होंठ सख्ती से भींच लिये...। उसने मन-ही-मन निश्चय कर लिया कि वह उसे रुपयों के बारे में कुछ नहीं बतायेगा...कम-से-कम तब तक सही-सलामत तो रहूंगा...और हो सकता है...वहीं कोई रास्ता निकल आये। उसे सख्ती से होंठ भींचते देख रहमान खान के होठों पर मुस्कान नाच उठी।

"तू पाकिस्तान गया जरूर है...और वहां की आई०एस०आई० को भी तूने चक्कर में डाल दिया था। अगर तू वहां हमारी पकड़ में एक बार भी आ जाता तो तुझे पता चलता कि दरिंदगी में हम पाकिस्तानियों से बढ़कर कोई नहीं...। खैर कोई बात नहीं...अब पता चल जायेगा हमारी दरिंदगी का...पकड़ लो इसको...।"

तुरंत अशरफ और उसके साथियों ने सतीश रावण को दबोच लिया। सतीश रावण के पास इतना भी वक्त नहीं था कि वह अपनी आरी निकाल पाता...या रिवॉल्वर निकाल पाता। बिना कोई वक्त गंवाये उन्होंने उसे कुर्सी से उठाकर फर्श पर बेदर्दी से पटक दिया। सतीश रावण के होठों से पीड़ाभरी कराह निकल गई। उसे ऐसा लगा जैसे उसके शरीर की तीन-चार हड्डियां टूट गई हों। मगर ऐसा नहीं था। उसकी हड्डियां अभी सलामत थीं...। पर हां...टूटने के चांस पूरे बने हुए थे। फर्श पर गिरे चारों ने

AJ SCAN

उसके जिस्म पर पैर जमा दिये। तब अशरफ ने झुककर उसकी जेब खाली की और दोनों रिवाल्वरें अपने कब्जे में कर लीं। ठीक तभी रहमान खान के बूट की भरपूर ठोकर उसके कूल्हें पर पड़ी। बुरी तरह से बिलबिला उठा सतीश रावण। आंखों में पीड़ा के भाव आये।

"बोल...कहां है एक करोड़ रुपया...?"

rcz202016@gmail.com

फुंफकारा रहमान खान।

"म...मैं नहीं जानता...।" सतीश रावण बोला।

"उठाओ इसे...और पटक दो।"

तुरंत अशरफ और मतलूब ने सतीश रावण को टांगों से पकड़ लिया और बाकी दोनों ने बांहों से। चारों ने उसे अपने सीने तक उठाया और एक साथ छोड़ दिया

“धड़ाम...।” सतीश रावण पूरे वेग से फर्श पर टकराया। चीख निकल गई उसके होठों से।

“रुको नहीं...इसी तरह बार-बार उठाकर पटकते रहो...और तब तक पटकते रहो...जब तक कि यह हां नहीं कर देता।”

गुर्राया रहमान खान। चारों ने पुनः उसे टांगों-बांहों से पकड़कर उठा लिया। सतीश रावण समझ गया कि अगर यही क्रिया बार-बार होती रही तो उसकी एक भी हड्डी सलामत नहीं रहेगी। लातों-घूंसों को वह बर्दाश्त कर भी जाता...मगर इस तरह बार-बार फर्श पर पटके जाने को वह शायद ही बर्दाशत कर पायेगा। चारों ने उसे ऊपर उठाकर पुनः फर्श पर पटक दिया। सतीश रावण पुनः चीखा।

“बोल कहां है रुपया...?” रहमान खान गुर्राया...।

“खान साहब पुलिस...।” तभी दरवाजे की तरफ से घबराई आवाज आई।

AJ SCAN

¶¶

“ट्रिन...ट्रिन...।”

rcz202016@gmail.com

फोन की घण्टी घनघना उठी। एस०पी० कूंवर सिंह रावत ने रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

“यस...।” वह माऊथपीस में बोला।

“सर, होम मिनिस्टर का फोन है।” दूसरी तरफ से टेलीफोन ऑपरेटर की आवाज आई। कुंवर सिंह परावत एकदम से सीधा होकर बैठ गया। साथ ही उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा। चोर की दाढ़ी में तिनका...उसे ऐसा लगा कि हरि सिंह गहलौत से ली पचास लाख की रिश्वत का गृहमन्त्री को पता चल गया है।

“लाइन दो...।” वह थूक सटकते हुए बोला। तुरंत हल्की-सी क्लिक की आवाज के साथ दूसरी तरफ से कालीसिंह शेखावत की आवाज आई।

“हैलो...!”

“सर...!” कुवंर सिंह रावत अपने आप पर काबू पाते हुए बोला।

“फौरन पूरी फोर्स के साथ शहीद चौक के बाईं तरफ नेहरू रोड पर एक सौ चार नम्बर कोठी पर रेड करो...वहां टैरेरिस्ट सरगना रहमान खान कुछ उग्रवादियों के साथ छुपा हुआ है।”

“यस सर...तत्परता से बोला कुंवर सिंह रावत। मन-ही-मन उसने राहतभरी मीलों लम्बी सांस छोड़ी कि गृहमन्त्री को रिश्वत के बारे में कुछ नही पता...।

“रहमान खान को जिंदा या मुर्दा किसी भी सूरत में गिरफ्तार करना है।”

AJ SCAN

“ओ०के० सर।”

“ऑपरेशन के बाद मुझे फौरन फोन द्वारा रिपोर्ट मिलनी चाहिये...।”

rcz202016@gmail.com

दूसरी तरफ से आदेश पारित हुआ सम्बंध विच्छेद हो गया। कुंवर सिंह रावत ने फौरन पलंजर दबाया और थाने का नम्बर डायल करने लगा।

¶¶

पुलिस का नमा सुनकर जहां सतीश रावण बुरी तरह से चौंक उठा था...वहीं उसने राहत की सांस भी ली थी। उस वक्त वह फर्श पर पड़ा गहरी सांसे छोड़ रहा था तथा उसकी खोपड़ी के पृष्ट बाग से खून बह रहा था। बार-बार फर्श पर पटके जाने से उसकी पीठ तथा कंधों की हडिड्या कड़कड़ा उठी थीं। मगर अब उसे लग रहा था कि वह लूला-लंगड़ा होने से बच जायेगा। इधर रहमान खान का कलेजा उछल कर उसके

हलक में आ फंसा था। उसने झटके से दरवाजे की तरफ गर्दन मोड़ी जहां खड़े व्यक्ति ने उसे पुलिस की आमद की खबर दी थी।

“पुलिस ने कोठी को चारों तरफ से घेर लिया है खान साहब...।”

वह व्यक्ति थर्राये स्वर में बोला।

“क्या बकते हो?” गुर्राया रहमान खान।

“म...मैं सच कह रहा हूं खान साहब, आप...।”

“तुम्हारे अड्डे को चारों तरफ से घेर लिया गया है।” तभी बाहर से दहाड़ती आवाज आई- “मैं एस०पी० कुंवर सिंह रावत तुम्हें चेतावनी देता हूं कि फौरन अपने हथियार फेंक कर हाथ ऊपर उठा कर बाहर आ जाओ...वरना मुझे मजबूरन सख्त कदम उठान पड़ेगा।”

AJ SCAN

“साला हरामी...पचास लाख खाकर भी आंखें दिखा रहा है...”फुंफकारा रहमान खान—“अभी दिखाता हूं तुझे कि आई०एस०आई० क्या बला है।”

कहकर उसने अशरफ की तरफ देखा। अशरफ तथा अन्य फौरन एकदम से सतर्क हो उठे।

rcz202016@gmail.com

“एक भी पुलिसिया जिंदा नहीं बचना चाहिये...।” वह फुंफकारा—“सारी पुलिस को खत्म कर दो... और वह साला कुत्ता एस०पी० से तो किसी भी सूरत में नहीं छोड़ना...। हरामजादा हमारा खाकर हमी पर भौंक रहा है। खत्म कर दो सभी को...।”

“जी खान साहब...।”

चारों एक साथ बोले और दरवाजे की तरफ मुड़े।

“और सुनो...!” चारों रुके और गर्दनें रहमान खान की तरफ मुड़ी।

“पुलिस से निपटने के बाद हमारे दूसरे अड्डे पर पहुंच जाना..मैं वहीम मिलूंगा तुमसे।”

चारों ने एक साथ सीधी हुई और वे दरवाजे से बाहर निकल गये। उनके जाने के पश्चात् रहमान खान ने एक गहरी सांस छोड़ी और जेब से रिवॉल्वर निकालकर जैसे ही सतीश रावण की तरफ मुड़ा...।

बुरी तरह से उछल पड़ा वह। सतीश रावण अपने स्थान पर नहीं था।

“यह हरामी कहां गया?” वह हैरानी से बड़बड़ाया।

“मैं यहां हूं कुत्ते की दुम...।” तभी साथ वाले कमरे के दरवाजे के पीछे से आवाज आई। रहमान खान ने चौंककर उधर देखा। दरवाजे के पीछे से सतीश रावण उऊसकी तरफ झांक रहा ता। रहमान खान ने बिना कोई वक्त गंवाये ट्रिगर दबा दिया।

AJ SCAN

“धांय...।

गोली सतीश रावण की खोपड़ी में धंसने के लिए उसकी तरफ लपकी। मगर उसे भेद नहीं पाई। सतीश रावण उससे पहले ही दरवाजे के पीछे हो चुका था।

rcz202016@gmail.com

“बाहर निकल हरामखोर...।”

फुंफकारा रहमान खान।

“तू ही अंदर आ जा...।” सतीश रावण की गुर्रहट उभरी। बुरी तरह से भुनभुनाता हुआ रहमान खान दरवाजे की तरफ बढ़ा। रिवॉल्वर वाला हाथ आगे कर रखा था। सो जैसे ही वह दरवाजे के करीब पहुंचा...।

“खचाक...।”

रहमान खान की रिवॉल्वर वाले हाथ पर तेजी से प्रहार हुआ। रहमान खान ने फौरन हाथ पीछे खींचा ...मगर तब तक देर हो चुकी थी। उसकी दो उंगलियां उसके हाथ से अलग हो, नीचे गिर पड़ी थीं...और साथ ही रिवॉल्वर भी नीचे गिर पड़ा था। पता नहीं क्यों वह सतीश रावण की आरी को भूल गया था...। नजरअंदाज कर गया। रहमान खान एक बारगी को बुरी तरह से हड़बड़ाया...फिर गला फाड़कर चिल्लाया-

“हाय...रे...।”

तुरंत सिपाहियों ने अपनी एस०एल०आर० के मुंह खोल दिये।

“तड़...तड़...तड़...।”

सैकड़ों की तादाद में गोलियां कोठी की तरफ लपकीं जिनमें से कुछ तो बाउंड्री वॉल से टकराकर नीचे गिर पड़ी और कुछ बाउंड्री वॉल के ऊपर से निकल गईं। भीतर की तरफ से भी गोला-बारी एकदम से तेज ही गई। तभी क तरफ

AJ SCAN

पौजीशन लिये सिपाही के जिस्म में कई गोलियां आ धंसीं...। वह जोरों से चीखा और सड़क पर एक-दो पलों के लिये छटपटा कर शांत हो गया। अपने साथी की मौत देख अन्य सिपाहियों के भीतर जैसे ज्वालामुखी भड़क उठी और वे दुगने वेग से आक्रमण करने लगे।

"रेट...रेट...रेट...।"

rcz202016@gmail.com

"तड़...तड़....तड़...।"

ऐसा लग रहा था जैसे वहां हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की जंग छिड़ गई हो। ठीक ही तो था। जंग ही तो थी यह पाकिस्तान और भारत में। दोनों तरफ से गोलियों का आदान-प्रदान हो रहा था। बेशक अशरफ, शौकत वगैरह पाकिस्तान से ट्रेनिंग लेकर आये थे...मगर पाकिस्तान से उन्हें उतनी ही ट्रेनिंग मिली हुई थी जिसके लिये वे हिन्दुस्तान की जनता में खून बहा सकें। पुलिस जैसी सख्त ट्रेनिंग नहीं मिली हुई थी उन्हें...। नतीजा...। धीरे-धीरे उग्रवादियों की तादात में कमी आने लगी। वे एक-एक करके मरने लगे और पुलिस का दबाव उन पर बढ़ता गया। करीब एक घण्टे बाद भीतर से गोलियों की आमद एकदम से बंद हो गई। सिपाहियों ने कोठी को चारों तरफ से घेर लिया।

“तुम बढ़ो आगे...।”

तभी कुंवर सिंह रावत ने दो सिपाहियों को आदेश दिया। एस०एल०आर० ताने दोनों सिपाही गेट को धकेल पूरी सतर्कता से भीतर प्रविष्ट हुए। लॉन में तथा बाऊंड्री वॉल के पीछे इधर-उधर लाशें बिखरी पड़ी थीं। पूरी तरह से आश्वस्त होकर वे आगे बढ़े और कम्पाऊंड में आ गये। कम्पाऊंड में जाकर एक सिपाही ने गर्दन पीछे मोड़कर इशारा किया। बाहर खड़े कुंवर सिंह रावत ने फौरन छः और सिपाहियों को भीतर जाने का आदेश दिया। तुरंत खड़े सिपाही आगे बढ़े और कम्पाऊंड में खड़े सिपाहियों से जा मिले।

“अन्दर जाकर देखो...।” एक सिपाही बोला। पहले वाले दोनों में से एक ने दरवाजा खोला और दोनों कोठी में प्रवेश कर गये। विभिन्न कमरों में होते हुए वे हॉल में पहुंचे तो दोनों के कदम वहीं ठिठक गये। नजरें फर्श पर बेहोश पड़े सतीश रावण पर जम गईं। जोकि बेहोश पड़ा था तथा बुरी तरह से जख्मी नजर आ रहा था। अब उन्हें क्या मालूम था कि जिसे वे बेहोश समझ रहे थे...वह हकीकत में पूरी तरह से होश में है

AJ SCAN

"यह कौन है...?" एक सिपाही बोला।

"मुझे क्या पता...मगर मुझे लगता है कि उग्रवादी इसे यहां बंधक बनाये हुए थे...देख नहीं रहे किस कदर हालत खस्ता हो रही है इसकी।" दूसरा बोला।

"तुम बाहर जाकर रिपोर्ट दो...मैं देखता हूं इसे, कहीं मरा तो नहीं पड़ा...।"

कहकर पहला सतीश रावण की तरफ बढ़ा, जबकि दूसरा कम्पाऊंड में खुलने वाले दरवाजे की तरफ बढ़ गया। कुछ ही देर में कुंवर सिंह रावत समेत कई सिपाही हॉल में सतीश रावण के चारों तरफ खड़े थे।

"कौन है यह...?" पूछा कुंवर सिंह रावत ने।

"पता नहीं सर...! यह है जिंदा..। लगता है काफी टार्चर किया जा रहा था इसे यहां...।"

सतीश रावण के पास पंजों के बल बैठा सिपाही बोला।

“इसे हॉस्पिटल पहुंचाओ...।”

“यस सर....।”

“और कोठी को सील कर दिया जाये...सारा सामान अपने कब्जे में कर लिया जाये।” फौरन वहां खड़े सिपाही हरकत में आ गये।

¶¶

कमरे के दरवाजे को बंद कर रहमान खान सीधा आलमारी की तरफ लपका। बाल-बाल बचा था वह सतीश रावण के हाथों से...मगर फिर भी अपनी दो उंगलियां गंवा चुका था वह। एक सतीश रावण का खौफ...ऊपर से पुलिस द्वारा कोठी को चारों

AJ SCAN

तरफ से घेरा जाना। ऐसे में बचने का वह एक ही रास्ता नजर आया था उसे और इस वक्त वह उसी रास्ते का प्रयोग करने जा रहा था। आलमारी के सामने आकर उसने आलमारी खोली और उसमें पहले की तरह कोई हरकत की। तुरंत आलमारी एक तरफ हट गई। रहमान खान सीढ़ी द्वारा नीचे बेसमेंट में पहुंचा और दीवार में लगी एक छोटी-सी कील को भीतर की तरफ दबाया...साथ ही उसकी गर्दन छत की तरफ उठी। आलमारी धीरे-धीरे रिक्त स्थान को कवर कर रही थी। जैसे ही आलमारी यथा स्थान पहुंची उस छोटे-से बेसमेंट में रोशनी फैल गई। उसी रोशनी में रहमान खान ने पहले की तरह हरकत करके ट्रांसमीटर वाला दरवाजा खोला और हैडफोन फिर से सिर से लगाकर ट्रांसमीटर ऑन कर दिया।

rcz202016@gmail.com

"हैलो...खान अली खान रिपोर्टिंग...हैलो खान अली खान रिपोर्टिंग...।"

उसने दो बार ही अपनी बात को दोहराया था कि हैडफोन द्वारा उसके कानों में आवाज पड़ी।

"यस कंट्रोल रूम...रिपोर्टिंग ओवर...।"

“सारा प्लान फेल हो गया...ओवर।”

“कैसे?” चौंकती आवाज आई।

“पुलिस ने रेड डाल दी है...पता नहीं कैसे पुलिस को इस जगह का पता चल गया है...ओवर।”

“तुम कहां हो...? ओवर।”

“बेसमेंट में...ओवर।”

“फिर क्या सोचा है तुमने...?”

“पुलिस हावी रहेगी जनाबेआला।”

AJ SCAN

“कुछ पता लगा? पुलिस को तुम्हारे ठिकाने का पता कैसे लगा...? ओवर।”

“नो सर! ओवर।”

rcz202016@gmail.com

“फिर...?”

“मुझे लगता है कि हम सी०एम० को खत्म नहीं कर पायेंगे।”

“क्यों...?”

“हालांकि सतीश रावण से मुझे शानदार स्कीम मिल गई थी सी०एम० को खत्म करने की...मगर ऐन तभी पुलिस पहुंच गई...अब पता नहीं सतीश रावण पुलिस के हाथों से कैसे बचेगा...। अब मुझे मिलाकर तीन-चार ही बचे हैं यहां...ऐसे में हंम कैसे सी०एम०को खत्म कर पायेंगे? ओवर।”

“सी०एम० हर सूरत में खत्म होना चाहिये। ओवर।”

“बट सर..!”

“नो बट...बेशक उसे खत्म करते हुए तुम मारे जाओ...मगर उसे जरूर मरना चाहिये...क्योंकि उसी की मौत में ही हमारी कामयाबी है। ओवर।”

“म...मैं कोशिश करूंगी सर।”

“कोशिश नहीं काम होना चाहिये...हर सूरत में होना चाहिये...ओवर एण्ड आल...।”

उसी के साथ ही दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया। गहरी सांस छोड़ते हुए रहमान खान ने ट्रांसमीटर ऑफ किया...हैडफोन को सिर से उतारा और वहीं एक

AJ SCAN

अन्य स्विच को दबाया। तुरंत बाईं तरफ की दीवार एक तरफ हटी और उसके पीछे एक टी०वी० पड़ा नजर आया। फौरन टी०वी० पर कोठी के बाहर के दृश्य उभरने लगे। उसके पुलिस पर गोलियां बरसा रहे थे...साथ ही उसे इधर-उधर लाशें नजर आईं...जोकि उसी के आदमियों की थीं। धीरे-धीरे उसके आदमियों की संख्या में कमी होती जा रही थी। और फिर उसने अपने आखिरी आदमी को गीली खाकर मरते देखा। निराशाभरी सांस छूट गई उसके होठों से। अपने ही अड्डे पर कैद होकर रह गया था वह। थोड़ी देर बाद गेट में से दो सिपाही भीतर प्रविष्ट हुए और कम्पाऊंड में पहुंचे। टी०वी० स्क्रीम पर निगाहें गड़ाये रहमान खान सब कुछ देख रहा था। फिर कुछ और सिपाही गेट में प्रविष्ट हुए और वे भी कम्पाऊंड में आ गये। रहमान खान ने दो सिपाहियों को दरवाजा खोलकर कोठी में प्रवेश करते देखा तो उसने टी०वी० का चैनल बदला। तुरंत ही टी०वी० पर भीतर का दृश्य उभरा...और फिर उसकी नजर हॉल में बेहोश पड़े सतीश रावण पर पड़ी। बुरी तरह से चौंका वह।

rcz202016@gmail.com

"इसे क्या हुआ?" वह बड़बड़ाया। और जब सिपाही एस०पी० के हुक्म से सतीश रावण को उठा कर ले गये तो रहमान खान ने गहरी सांस छोड़ी...। वह समझ गया कि सतीश रावण ने वहां से निकलने की चाल चली है। और जब पुलिस कोठी को सील करके चली गई तो रहमान खान ने टी०वी० ऑफ कर दिया। अब उसे रात होने का इंतजार था। क्योंकि अगर वह रात सके पहले कोठी से निकलता तो किसी की भी निगाहों में पड़ सकता था...जबकि उसके लिये जिंदा रहना अभी बहुत जरूरी था। इसी वजह से ही उसने रात होने तक वहीं दुबके रहने का फैसला किया था।

¶¶

खामोशी होने के थोड़ी देर बाद सतीश रावण ने अपनी पलकों के बीच थोड़ी-सी झिरी पैदा की और पुतलियों को इधर-उधर घुमाया...। कोई भी नजर नहीं आया उसे। रहमान के अड्डे से उसे पुलिस की गाड़ी के फर्श पर डालकर सीधा अस्पताल में पहुंचाया गया था। खुद कुंवर सिंह रावत अस्पताल में आया था। सतीश रावण के पास खड़े होकर ही उसने डॉक्टरों को उसे होश में लाने के लिये कहा था...।

अब जब कोई जानबूझकर बेहोश होते वह होश में कैसे आ सकता था? डॉक्टरों ने उसी वक्त उसे दो-तीन इंजेक्शन ठीक दिये...।

सूई चुभने की प्रतिक्रिया प्रदर्शन न करने के लिये उसने कितनी मेहनत की थी...यह वह ही जानता था। अगर सूई चुभने पर वह हिलता या चेहरे पर ऐसे-वैसे भाव लाता तो अवश्य ही वहां खड़े कुंवर सिंह रावत को पता चल जाता कि वह बेहोश नहीं-बल्कि बेहोशी का नाटक कर रहा है। और फिर उसके सिर पर पट्टी बांधी गई तथा जिस्म के अन्य हिस्सों पर दवाई लगाई गई। सतीश रावण बेहोशी का नाटक किये वहीं पड़ा रहा। करीब आधे घंटे बाद कुंवर सिंह रावत डॉक्टरों को यह कह कर कि उसका खास ध्यान रखा जाये, चला गया...। और फिर शाम सात बजे तक डॉक्टरों का आना-जान लगा रहा। अब तक अंधेरा फैल गया था। और पिछले पांच मिनट में

AJ SCAN

उसके पास किसी की आवाज नहीं उभरी थी। उसने पलकों को थोड़ा और खोला और अपने आस-पास देखा। अस्पताल के एक कमरे में था वह...। कमरे के आधे बंद दरवाजे के बाहर से हाथ में डण्डा लिये एक सिपाही बैठा नजर आया। उसके बैड के करीब ही एक स्टूल पर दवाइयां रखी हुई थीं। सतीश रावण ने तेजी से कुछ सोचा और फिर होठों से कराह निकाली।

"आह!"

rcz202016@gmail.com

उसकी कराह सुन बाहर बैठे सिपाही की गर्दन फौरन उसकी तरफ घूमी। सतीश रावण बैड पर बैठने की कोशिश करता हुआ इधर-उधर हैरानी से देख रहा था। उसे उठते देख सिपाही फौरन कुर्सी से खड़ा हो गया और भीतर आ गया।

"होश आ गया तेरे को...?" करीब आकर वह सतीश रावण को घूरते हुए बोला- "क्या नाम है तेरा...?"

सतीश रावण कुछ नहीं बोला बस खाली-खाली निगाहों से उसे देखने लगा।

“अबे भूतनी के...नाम पूछा है मैंने तेरा...नाम बोल...।”

“नाम ...।” सतीश रावण की आंखों में उलझन उभरी- “क्या नाम है मेरा...?” वह बड़बड़ाया।

“साले हरामी...नाटक करता है...।”

गुर्राया सिपाही। सतीश रावण की आंखों में फैली उलझन और भी ज्यादा हो गई...।”

“क्या नाम है मेरा? कौन हूं मैं?”

वह बड़बड़ाया...और फिर अपना सिर दोनों हाथों में पकड़ बैड पर गिर पड़ा...।

AJ SCAN

उसकी आंखें पुनः बंद हो गई। बुरी तरह से चौंका सिपाही।

"इस हरामी की याददाश्त तो सचमुच चली गई है।" वह बड़बड़ाया —"डॉक्टर को बताता हूं...।"

rcz202016@gmail.com

वह तुरंत दरवाजे की तरफ मुड़ा और तेज-तेज चलता हुआ दरवाजे से बाहर निकल गया। उसके जाते ही सतीश रावण की आंखें फटाक से खुलीं...साथ ही वह उछल कर बैड से उतरा और तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ा। दरवाजे के करीब आकर उसने गर्दन लम्बी कर बाहर झांका...।

गलियारा था वह जिसके बाईं तरफ वही सिपाही आगे बढ़ रहा था...।

सतीश रावण ने दाईं तरफ देखा। कोई भी नजर नहीं आया उसे। तुरंत वह बाहर निकला और दाईं तरफ तेजी से आगे बढ़ने लगा। आगे जाकर वह गलियारा बाईं तरफ मुड़ता था। सतीश रावण बाईं तरफ मुड़ा तो उसके कदम वहीं थम गये। गलियारे

के अन्त में हस्पताल का गेट था जहां पर कि एक नहीं बल्कि दो सिपाही टहल रहे थे। वो भी राइफलों से लैस। सतीश रावण के चेहरे पर हल्की-सी बेचैनी उभर आई। निश्चय ही वे सिपाही उसी के लिये वहां मौजूद थे। आखिर वह सोचकर कि जो होगा देखा जायेगा...वह गलियारे में आगे बढ़ने लगा। कदम बढ़ाने के साथ ही उसने अपनी पीठ पर हाथ मारकर आरी की मौजूदगी को जांचा कि वो है या नहीं। आरी उसकी पीठ से ही चिपकी हुई थी। अभी वह आधा गलियारा पार कर पाया था कि तभी उसे अपने पीछे कुछ आवाजें सुनाई दीं। उसने गर्दन पीछे मोड़ी। चार आदमी एक मरीज के साथ आ रहे थे। मरीज की हालात बता रहे थे कि वह अभी-अभी डिस्चार्ज होकर अपने रिश्तेदारों के साथ जा रहा है। सतीश रावण ने तुरंत निर्णय लिया और उनके करीब आने का इंतजार करने लगा।

"अब कैसे हाल हैं...?" उनके करीब आते ही वह मरीज से बोला।

"ऊपरवाले का शुक्र है...।" एक बोला- "बस थोड़ी कमजोरी रह गई है।"

"यहां के डॉक्टर तो देवता हैं...।" दूसरा बोला।

AJ SCAN

"बिल्कुल...।" सतीश रावण उनके साथ चलते हुए बोला- "वरना आम अस्पतालों में तो डॉक्टर मरीज के पास तभी पहुंचता है जब मरीज की हालत बेहद नाजुक हो जाती है। भगवान भला करे...किसी की नजर न लगे अस्पताल को...अब मुझे ही देखिये...परसों जब मैं यहां आया था तो मेरे बचने की जरा भी उम्मीद नहीं थी।" यह बात उसने तनिक ऊंचे स्वर में कही थी ताकि बाहर खड़े सिपाही उसे पुराना मरीज ही समझें—"और देख लो, दो ही दिन में मैं चलने-फिरने लायक हो गया हूं।"

rcz202016@gmail.com

उसकी बात सिपाहियों ने भी सुनी...सो उसकी तरफ देखा भी नहीं उन्होंने...।

वे यही समझे कि वह मरीज का ही कोई साथी है...या कोई पेशेंट जो दो दिन बाद डिस्चार्ज हुआ है। इस प्रकार बातें करते हुए वह गेट पार कर करीब खड़ी एक टैक्सी की तरफ बढ़ गया। टैक्सी आगे बढ़ी और चली हुई सदर गेट की तरफ बढ़ी। गेट के करीब आकर उसने गर्दन पीछे मोड़ी। ठीक तभी घबराई हुई अवस्था में भीतर वाला सिपाही अस्पताल से निकला।

¶¶

सिपाही डॉक्टर के ऑफिस में पहुंचा तो डॉक्टर वहां नहीं था। पांच मिनट तक वह बड़ी बेसब्री से वहां ऑफिस में ही कुर्सी पर बैठा इतंजार करता रहा। पांच मिनट बाद डॉक्टर दरवाजा खोलकर भीतर आया तो सिपाही को वहां देख चौंका...।

"तुम...तुम वहां कैसे आये...?"

"पेशेंट को होश आ गया था।" सिपाही तनिक हड़बड़ाते हुए बोला।

"क्या मतलब...?" पुनः चौंका डॉक्टर।

"वह फिर से बेहोश हो गया है...।"

"फिर बेहोश हो गया?"

AJ SCAN

"जी हां...। उसके होश में आते ही मैंने उससे उसका नाम पूछा तो वह हैरानी से मुझे देखने लगा...फिर बोला—"कि उसका नाम क्या है...और फिर एकाएक ही वह सिर पकड़कर पुनः बेहोश हो गया। लगता है उसकी याद्दाश्त चली गई है।"

डॉक्टर ने एक बार गुस्से से उसकी तरफ देखा फिर ऑफिस से निकलकर सतीश रावण के कमरे की तरफ बढ़ा। पीछे-पीछे सिपाही लपका। डॉक्टर ने सतीश रावण के वार्ड में जैसे ही पैर रखा...बुरी तरह से चौंक पड़ा वह। उसके पीछे खड़े सिपाही के तो पैरों तले से धरती ही खिसक गई। बैड खाली पड़ा था। डॉक्टर ने गर्दन पीछे मोड़ खा जाने वाली निगाहों से उसे देखा तो वह सिर से पैर तक कांप उठा।

"मरीज कहां है?" डॉक्टर गुर्राया...।

जवाब देने के स्थान पर सिपाही फौरन पीछे हटा और वार्ड से निकलकर दाईं तरफ भागा। अस्पताल के गेट पर खड़े दोनों सिपाहियों ने भागकर से अपनी तरफ बढ़ते देखा तो दोनों एकदम से सतर्क हो गये।

"क्या हुआ...?" उसके करीब आते ही एक ने पूछा।

"व ...वो भाग गया...।" बदहवासीभरे स्वर में बोला सिपाही।

"भाग गया...?" दूसरा बोला- "लेकिन यहां से तो कोई नहीं निकला!"

"वो भाग गया है।"

"मगर यहां से तो...।" पहले वाला एकदम से उछल पड़ा...साथ ही उसकी गर्दन सदर गेट की तरफ घूमी—"एक आदमी निकलकर टैक्सी में बैठते देखा है। एक एकेले मरीज को उस टैक्सी में बैठे देखा था....।"

कहते हुए उसने सतीश रावण वाली टैक्सी की तरफ इशारा किया—"तुम उसका पीछा करो...मैं एस०पी० सीहब को फोन करता हूं।"

AJ SCAN

भीतर वाला सिपाही बोला...और भीतर की तरफ भागा। दोनों सिपाही फौरन करीब ही खड़ी बाईक की तरफ लपके।

¶¶

अब तक सतीश रावण गेट से निकल चुका था। उसकी गर्दन अभी भी पीछे की तरफ मुड़ी हुई थी। उसने एक सिपाही को अपनी टैक्सी की तरफ इशारा करते और फिर दो को बाईक की तरफ लपकते देख लिया था।

"गाड़ी को जितनी तेज भगा सकता है भगा...।" वह फुंफकारा—"अगर कहीं भी तेरी रफ्तार में कमी आई...तेरी गर्दन धड़ से जुदा हो जायेगी।"

अचानक आ पड़ी उस मुसीबत से ड्राइवर बुरी तरह से घबरा गया था। साथ ही उसका पैर एक्सीलेटर पर पूरा दब गया। जान बचाने के लिये उसने टैक्सी को पूरी रफ्तार दे दी। टैक्सी तोप से छूटे गोले की तरह भाग निकली। और जब तक बाईक अस्पताल के सदर गेट से निकली...सतीश रावण की टैक्सी कहीं की कहीं पहुंच चुकी थी।

"बस यहीं रोक दे।"

करीब दो किलोमीटर चलने के बाद सतीश रावण गुर्राया। ड्राइवर ने हुक्म का पालन किया। टैक्सी रुकी...सतीश रावण दरवाजा खोलकर बाहर आ गया। टैक्सी ड्राइवर को जैसे जान बचाने का मौका मिल गया। बिना वक्त गंवाये वह टैक्सी को फौरन वहां से ले उड़ा। सतीश रावण हौले से हंसा और करीब की एक गली में घुस गया। गलियों में होते हुए वह रोजी के मकान के सामने आकर रुका और कॉलबेल का पुश दबा दिया।

"डिंग...डांग....।"

भीतर कहीं घण्टी का मधुर संगीत गूंजा।

"कौन...?" थोड़ी देर बाद भीतदर से रोजी की आवाज आई।

AJ SCAN

"मैं हूं...दरवाजा खोलो।"

सतीश रावण अपनी आवाज में घबराहट लाते हुए बोला। तुरंत दरवाजा खुला और सतीश रावण इस तरह भीतर दाखिल हुआ जैसे वह बहुत घबराया हुआ हो। अन्दर आकर उसने फौरन दारवाजा बंद किया और सिटकनी चढ़ाकर गहरी-गहरी सांसे छोड़ने लगा। उधर उसके सिर पर पट्टी बंधे तथा उसे जख्मी देख रोजी बुरी तरह से चौंक पड़ी।

"य....यह क्या हुआ तुम्हें...?" वह कांपते स्वर में बोली। सतीश रावण ने उसे अपनी बांहों में भर लिया और भर्राये लहजे में बोला—

"शायद मेरी लम्बी उम्र की दुआ की थी तुमने जो मैं मौत के मुंह से निकल आया।"

"म...मगर हुआ क्या...?" थर्राये स्वर में बोली रोजी।

सतीश रावण उसे अपने साथ चिपकाये हुए ही कमरे में आ गया और बैड पर अधलेटी अवस्था में बैठते हुए उसे अपने ऊपर गिरा लिया।

"मैंने तुमसे कहा था कि तीन आदमी मेरे पीछे लगे हुए हैं।"

"हां...उन्हीं से छुटकारा पाने के लिये ही तो तुम खाली सूटकेस लेकर होटल से निकले थे...।"

"हां...उन्हीं के हत्थे चढ़ा गया था मैं।"

"ओह नो...।"

"पहले तो उन्होंने मेरा सूटकेस हथियाया....फिर जब उन्होंने उसे खाली देखा तो मार-मार कर मेरा हुक्का बजा दिया।"

AJ SCAN

“फिर?”

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ते हुए उसकी छातियों पर हाथ फेरा।

rcz202016@gmail.com

“वे तीन थे और मैं अकेला...अगर एक होता तो मैं उसे सम्भाल भी लेता...मगर वे तीन थे। फिर भी मैंने हिम्मत मारी और अधमरा होने के बावजूद भी मैं उनकी पकड़ से निकलने में कामयाब हो गया।”

“तुम्हें सीधा थाने जाना चाहिये था। वे कल को फिर तुम पर हमला कर सकते हैं।”

सतीश रावण इस तरह हंसा जैसे रोजी ने बहुत बड़ा जोक मारा हो।

“तुम हंसे क्यों?” रोजी उस घूरते हुए बोली।

"तुम क्या समझती ही...मैं पुलिस के पास नहीं गया था?"

"यानी गये थे।"

"हां...।"

"फिर...?"

"तुम्हें यह जानकर हैरानी होगी कि वे तीनों मेरे से पहले ही कोतवाली पहुंचे हुए थे।"

"क्या...!"

AJ SCAN

“हां...पुलिस को उन्होंने अपने साथ मिला लिया था।”

“ओह गॉड....फिर....?”

“फिर वही हुआ जो होना था—पुलिस के डण्डे मुझ पर पड़ने लगे और हर डण्डे के साथ मुझसे पूछा जाता कि मैंने रुपया कहां छुपाया है।”

“तुमने बताया...?”

“अगर बताता तो अब तक मेरी लाश किसी चौराहे पर पड़ी होती।”

“यानी नहीं बताया।”

“नहीं...।”

“पुलिस से कैसे छूटे तुम...?”

“मार खा-खा कर मेरी हाल बद से बद्तर हो गई और आखिरकार मैं बेहोश हो गया...।” होश आया तो खुद को अस्पताल के बिस्तर पर पड़ा पाया...। मेरे वार्ड के बाहर एक पुलिसिया मेरी निगरानी पर बैठा था।”

“ओह!”

आगे की कहानी सतीश रावण ने ज्यों-की-त्यों बता दी कि कैसे वह अस्पताल से भागा और उस तक पहुंचा...। रोजी ने राहतभरी गहरी सांस छोड़ी और बोली—

“शुक्र है भगवान का कि तुम बच गये वरना मैं तो...।”

AJ SCAN

“अभी कहां बचा मैं...।”

“क्या मतलब...?”

“मेरे पास एक करोड़ रुपया है...यह बात अब पुलिस को भी पता चल गई है...। अब तो उन तीनों के साथ-साथ पुलिस भी सरगर्मी से मेरी तलाश करेगी...और जहां भी मैं उसके हाथ लग गया...वही घड़ी मेरी आखिरी घड़ी होगी...क्योंकि तब शायद ही मैं अपनी मुंह बंद रख पाऊं...।”

रोजी के चेहरे पर आतंक फैल गया।

“यह तो बुरा हुआ...बहुत ही बुरा हुआ।” वह थर्राये स्वर में बोली।

“ऊपरवाला अगर किसी को दुःख देता हे तो उस से लड़ने के लिये दिमाग भी देता है।”

"म...मैं कुछ समझी नहीं..।"

"एक करोड़ रुपया मैंने अपनी मेहनत और ईमानदारी से कमाया है। हां यह जरूर कहूंगा कि टैक्स के नाम पर मैंने सरकार को कुछ भी नहीं दिया...यानी सारा पैसा दो नम्बर का है। मगर उसे कमाने के लिये मैंने अपना पसीना बहाया है, अपनी टांगे तोड़ी हैं...। इस पैसे पर या तो मेरा हक है...या मेरी पत्नी का।" उसने रोजी की छाती को हल्के-से दबाया—"यह पैसा मैं यूं ही नहीं जाने दूंगा।"

"लेकिन...।"

"अब मेरे को ढुढंने के लिये पूरे शहर की खाक छानते रहेंगे...मगर मुझे नहीं पा सकेंगे वे...?"

"क्या करोगे तुम...?"

AJ SCAN

“कल रात को जब मैं तुम्हारे पास आया था, तो क्या तुम मुझे पहचान पाई थीं?”

बुरी तरह से उछल पड़ी रोजी...फिर उसके होठों पर मुस्कान फैल गई।

rcz202016@gmail.com

“ओह! तो जनाब फिर से बड़ी उम्र के मियां बनेंगे।”

“हां...तुम बाजार से मेरे लिये मेकअप का सामान ले आना...बाकी मैं सब कर लूंगा।”

“क्या-क्या लाना है...?”

सतीश रावण ने उसे बताया। रोजी उसके ऊपर से उठने लगी तो सतीश रावण ने पुनः उसे अपने ऊपर गिरा लिया।

“थोड़ी देर बाद चली जाना...।”

“बाजार बंद होने का वक्त हो रहा है जनाब...पहले सामान ले आऊं...फिर जो बात करनी हो कर लेना।”

सतीश रावण ने उसे अपनी गिरफ्त से निकल जाने दिया। अपने कपड़े दुरूस्त कर रोजी ने उसकी तरफ देखा।

“अगर देर लग जाये ना मुझे लौटने में तो बाजार से ही डिनर ले आऊंगी।”

सतीश रावण ने मुस्कुराते हुए सिर हिला दिया।

“और मेरी आवाज सुनकर ही दरवाजा खोलना...।”

AJ SCAN

सतीश रावण ने पुनः सिर हिलाया।

“अब उठो और दरवाजा बंद कर लो।”

rcz202016@gmail.com

सतीश रावण बैड से खड़ा हो गया। रोजी ने अपना हैंडपर्स उठाया और कमरे से बाहर निकल आई। उसे रवाना कर सतीश रावण वापिस कमरे में आया और बैड की पुश्त से टेक लगा गहरी सोचों में डूब गया। रहमान खान से उसे यह तो उम्मीद थी कि वह उसे खत्म कर देगा...मगर यह उम्मीद नहीं थी कि वह वक्त खत्म कर देगा...मगर यह उम्मीद नहीं थी कि वह वक्त से पहले ही उसकी मौत की तैयारी किये था। वह तो यही समझ रहा था कि सी०एम० की हत्या के बाद ही वह उसे खत्म करने की कोशिश करेगा। और खुद को बचाने के लिये उसने पहले से ही रास्ता निकाल लिया था। मगर वह तो पहले ही उसकी मौत का सामान इकट्ठा किए था....और उससे बचने की कोई तैयारी नहीं की हुई थी उसने...। नतीजा....उसके शरीर पर घाव बन गये। अगर ऐन वक्त पर वहां पर पुलिस नहीं पहुंच जाती तो उसका लूला-लंगड़ा होना निश्चय हो चुका था। उसने एक गहरी सांस छोड़ी और अपनी सोचों के रुख को बदला। अब वह रहमान खान के बारे में सोच रहा था। उसने सिर्फ सी०एम० को खत्म करने का प्लान बनाने के लिये ही उसे अपने झांसे में लिया था। यानी अब वह सी०एम० की हत्या उसी तरीके से करेगा जो तरीका उसने उसे बताया था। एक जहरीली मुस्कान रेंग गई उसके होठों पर।

“रहमान खान...!” वह बड़बडाया—“तू भी हरामी है...यह तो तूने मुझे टांग कर साबित कर दिया...। लेकिन मुझसे बड़ा हराम तू हरगिज नहीं हो सकता...। तू क्या...बेशक पूरे पाकिस्तान के हरामी इकट्ठे हो जायें...मुझसे बड़े नहीं हो सकते। अपनी हरामजदगी तो तूने दिखा दी...अब मेरी हरामजदगी देखना। जिन्दगी में मैंने हमेशा दूसरे को तकलीफ ही दी है। किसी को कैसे मारना है...यही प्लान बनाता रहा हूं मैं...। मगर इस बाहर मैं बचाऊंगा। हां...सी०एम० को बचाऊंगा मैं...। अब तू मुझे किसी भी सूरत में खत्म नहीं कर पायेगा। और अगर कोई खत्म होगा तो वह तू होगा। मेरा चार करोड़ डकार गया तूं...मगर पचेगा नहीं तुझे मेरा पैसा...तेरी मौत का फरमान बन गया है मेरा चार करोड़।”

कहते हुए उसका चेहरा सुर्ख हो उठा था।

¶¶

डेढ़ घण्टे बाद रोजी की वापसी हुई। सतीश रावण ने उसी आवाज सुनकर ही दरवाजा खोला था सतीश रावण के बताये सामान के साथ वह डिनर भी पैक करवा लाई थी।

AJ SCAN

“सामान चैक कर लो...।”वह सामान बैड पर रखते हुए बोली—“कोई कमी तो नहीं रह गई...जब तक मैं डिनर लगाती हूं।”

सतीश रावण सामान देखने लगा। रोजी पूरा सामान लाई थी जो उसने बताया था। उसने सामान को एक तरफ रखा और रोजी की तरफ देखा जो कि टेबल पर डिनर सजा रही थी।

@gmail.com

“रुपया ले आई थीं तुम होटल से?”

पूछा सतीश रावण ने।

“हां...।” स्कॉच की बोतल टेबल पर रखते हे बोली रोजी।

“कोई दिक्कत तो नहीं आई थी?”

“थोड़ी-बहुत तो आई थी।” कुर्सी पर बैठते हुए मुस्कुराई। रोजी—“दोनों बैग तुम्हारे कमरे से ले जाने थे और नोटों से भरकर लाने थे...स्टाफ की नजरों में आ सकती थी...मगर आई नहीं...।”

सतीश रावण भी मुस्कुराया...।

“सच कहूं तो इतना सारा रुपया देखकर मेरा तो कलेजा ही हलक में आ गया था। जब तक रुपया घर में नहीं ले आई मैं, मेरी तो जान ही निकली जा रही थी।”

“जबकि तुम जनती थीं कि उस रुपये पर तुम्हारा बराबर हक है।”

“तुम कह रहे हो तो ठीक है...मगर मैं अपनी हक शादी के बाद ही मानूंगी।”

“सतीश रावण हौले से हंसा...। फिर बोला—

AJ SCAN

“नौकरी छोड़ दी?”

“अभी नहीं...।”

rcz202016@gmail.com

“क्यों...?”

“मैनेजर नहीं आया था आज...। अब सुबह जाकर अपना इस्तीफा दे दूंगी।”

“नहीं...अभी नौकरी मत छोड़ना...।”

“म...मगर तुम तो कह रहे थे कि...।”

“उस वक्त हालात और थे...उस वक्त मुझे सिर्फ अंदेशा था कि मुझ पर हमला होगा...और मुझ विश्वास था कि मैं उन्हें चकमा देने में कामयाब हो जाऊंगा...मगर अब हालात बदल चुके हैं।”

“कैसे...?”

“मुझे घेर लिया था उन्होंने...सूटकेस छीन लिया था जोकि उन्हें खाली मिला..। जाहिर है कि वे कूदकर इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि सारा रुपया होटल में मेरे कमरे में है।”

“तो...?”

“तो वे सीधा मेरे कमरे में पहुंचेंगे और वहां की तलाशी लेंगे और जब उन्हें वहां से कुछ भी हासिल नहीं होगा तो वे यही सोचेंगे कि होटल का कोई स्टाफ मैम्बर मेरा शषुभचिंतक है...और मेरे साथ मिला हुआ है। ऐसे में अगर तुमने नौकरी छड़ दी तो उन्हें सबसे पहले तुम्हीं पर शक होगा...और वे तुम्हें सूंघते हुए यहां आ पहुंचेंगे।”

AJ SCAN

"ओह...!" रोजी के मुंह से निकाला, साथ ही उसकी रंगत पीली पड़ गई। निश्चय ही सतीश रावण की बात से वह काफी डरह गई थी।

"इसीलिये तुम्हें अभी नौकरी नहीं छोड़नी...बल्कि अपनी ड्यूटी पर रहकर तुम यह जान सकती हो कि वहां कोई हरकत तो नहीं हो रही...। अगर हो रही होगी तो तुम फौरन मुझे सूचित कर देना।"

रोजी ने चुपचाप सिर हिला दिया।

"अब डिनर करते हैं...और डिनर के बाद उस खेल की रिहर्सल करते हैं जो हमें शादी के बाद हर रोज खेलना है।"

न चाहते हुए भी रोजी के होंठों पर मदभरी मुस्कान फैल गई। उसने बोतल उठाई और पैग तैयार करने लगी।

¶¶

कुंवर सिंह रावत की आंखों से शोले निकल रहे ते। आग उगलती निगाहों से वह उन तीनों सिपाहियों को देख रहा था जोकि उसके सामने सिर झुकाये खड़े थे। फोन पर यह खबर मिलते ही वह सीधा अहस्पताल आ पहुंचा जो कि सतीश रावण की टैक्सी के पीछे गये थे। मगर न तो उन्हें टैक्सी मिली...और न ही सतीश रावण। डेढ़ घन्टे बाद वे अस्पताल वापिस पहुंचे और कुंवर सिंह रावत के अपनी इंतजार करते देखा। उसके करीब खड़ा तीसरा सिपाही बार-बार थूक सटक रहा था...। घबहराहट उसकी आंखों में साफ नजर आ रही थी। उन्हें खाली हाथ वापिस लौटते देख कुंवर सिंह रावत समझ गया कि पंछी फरार हो चुका है। फिर भी उसने पूछा-

“मिला...?”

“न...नो सर...!” एक सिपाही घबराये लहजे में बोला।

“कैसे भागा वो...!”

AJ SCAN

कहते ही उसने पहले वाले से पूछा। उत्तर में उसने सबकुछ बताया।

"यू आर सस्पैंडिंग...।" वह गुर्राया और अपनी कार की तरफ गया। उसका दिल तो कर रहा था कि वह उन पर पिल पड़े...और मार-मार कर उनकी हड्डियां तोड़ दे। उसे उस बात का दुःख नहीं था कि एक अपराधी फरार हो गया है...। दुःख तो उसे इस बात का था कि सुबह पेपरों में उसकी जो जय-जयकार होनी थी...वह अब फीकी पड़ जायेगी। गर वह लॉकअप से भागता तो वह बात को छिपा भी सकता था...मगर अब नहीं छुप सकती थी। डॉक्टर पत्रकारों को अवश्य ही बता देगा...और उसकी जुबान को वह पकड़ नहीं सकता था। ऐसे में उसे कालीसिंह शेखावत को भी बताना था कि वह फरार हो गया है। रहमान खान की पहचान नहीं थी उसे....। क्या पता भागने वाला रहमान ही हो?

ऐसे में सी०एम० की जान को खतरा बरकरार था...और जरा-सी चूक से उसकी नौकरी जा सकती थी। बस उसी कारण उसका गुस्सा आसमान पर जा चढ़ा था और उसने तीनों सिपाहियों को सस्पैंड कर दिया था। तीनों सिपाही पिटे मुंह लिये उसे कार में बैठते देख रहे थे। उस वक्त उन पर जो बीत रही थी...यह वो ही जानते थे।

¶¶

रात के ग्यारह बजे रहमान खान बेसमेंट से निकलकर कमरे में आया। बेसमेंट से निकलने से पहले उसने टी0वी0 पर पहले कोठी को अच्छी तरह से देख लिया था। सिर्फ कोठी के बाहर ही तीन सिपाही जोकि एस0एल0आर0 से सुसज्जित थे, पहरा दे रहे थे...। बाकी उसे कोठी के भीतर कोई भी नजर नहीं आया। और फिर उसने पहले ट्रांसमीटर को नष्ट किया...फिर कमरे में आया। कमरे का बाहर वाला दरवाजा बाहर से बंद था। मगर उसे इसकी परवाह नहीं थी। वह पिछले कमरे के बंद दरवाजे के करीब पहुंचा और उसे खोलकर भीतर प्रवेश कर गया। उस कमरे में बाईं तरफ अटैच्ड बाथरूम था। उसने बाथरूम का दरवाजा खोला और बाथरूम में प्रवेश कर दाईं तरफ दरवाजे की तरफ मुड़ा जोकि कोठी के पीछे वाले कम्पाउंड में खुलता था। उसे पता था कि उस दरवाजे के बाहर कोई कुण्डा नहीं था...बस भीतर से हीं बंद किया जा सकता था उसे। सिटकनी गिराकर उसने दरवाजा खोला और कम्पाउंड में आकर बिना इधर-उधर देखे लॉन पार करते हुए बाऊंड्री वॉल की तरफ बढ़ा। अभी वह बाऊंड्री वॉल के करीब पहुंचा था कि—

“कौन है...?”

AJ SCAN

एक कड़कती आवाज उसके कानों से टकराई. जवाब देने के स्थान पर रहमान खान ने खुद को फौरन नीचे गिराया. गिरते वक्त उसने रिवॉल्वर जेब से निकाली और उस तरफ फायर झोंक दिया जिधर से कि उसे चेतावनीभरी आवाज आई थीं।

“धांय...।”

rcz202016@gmail.com

गोली सीधी उस सिपाही के सीने में जा धंसी जिसने कि उसे ललकारा था। उस वक्त वह कोठी का राऊंड लगाने के लिए उधर आया था, जब उसकी नजर रहमान खान पर पड़ी। सिपाही के जमीन पर गिरने से पहले ही रहमान खान बिजली की सी फुर्ती से खड़ हुआ और बाऊंड्री वॉल की तरफ झपटा। वह जानता था कि गोली की आवाज बाकी के दोनों सिपाहियों को इधर भागने को प्रेरित करेगी...ऐसे में उसका एक पल भी वहां रुकना उसके लिये खतरनाक हो सकता था। उनके पहुंचने से पहले उसे बाऊंड्री वॉल पार करनी थी। सो वह तेजी से बाऊंड्री वॉल की तरफ लपका और छलांग मार कर बाऊंड्री वॉल को पकड़कर तेजी से ऊपर उठा। उस वक्त वह दूसरी तरफ उतरने की तैयारी कर रहा था जब गोलियों की आवाजों से वातावरण गूंज उठा।

“तड़...तड़....तड़....।”

रहमान खान ने हड़बड़ाते हुए दूसरी तरफ छलांग लगाई और पूरी शक्ति से वहां से भाग खड़ा हुआ। बाल-बाल बचा था वह। एक पल की भी देरी उसके जिस्म में दर्जनों सुराख बना सकती थी। थोड़ा आगे जाकर वह एक गली में घुस गया और गली के दूसरे सिरे की तरफ बढ़ने लगा। गली से बाहर निकलकर उसने रिवॉल्वर जेब में रखी और थ्री-व्हीलर रुकवाकर उसने सवार हो गया।

"देवी कॉलोनी चलो...।"

वह बोला। थ्री-व्हीलर आगे बढ़ा तो उसने गर्दन थ्री-व्हीलर से बाहर निकाल कर पीछे झांका...।

कोई सिपाही नजर नहीं आया उसे। राहतभरी गहरी सांस छोड़ी उसने और गर्दन वापिस खींच सामने देखने लगा। जिस मकान के सामने रहमान खान रुका...वह एक दो-मंजिला पुराने ढंग का बना जर्जर मकान था जिसकी बाहर की प्लास्टर उखड़ी दीवारें बता रही थीं कि वर्षों से उसकी देखभाल नहीं की गई थी। मकान का दरवाजा मकान की अपेक्षा काफी मजबूत नजर आ रहा था। रहमान खान ने दरवाजे की लटक रही सांकल को पकड़कर दरवाजे पर तीन-चार दफा मारा...।

AJ SCAN

"खड़....खड़....खड़...।"

थोड़ी देर बाद फिर उसने सांकल खड़काई...।

rcz202016@gmail.com

"खड़....खड़...खड़...।"

उस बार भीतर से प्रतिक्रिया हुई।

"कौन...?" भीतर से कोई जनाना आवाज आई।

"मैं हूं...।" रहमान खान बोला—"खान अली खान। दरवाजा खोल...।"

भीतर से सांकल हटाये जाने की आवाज आई और फिर 'चूं' की आवाज के सात दरवाजे के पल्ले भीतर की तरफ खुले। सामने करीब तीस साल की साधारण शक्लो-सूरत की मगर कमाल की फिगर वाली औरत खड़ी थी। उसकी सैक्सी फिगर उसकी उम्र के साथ-साथ उसकी साधारण शक्ल को भी भूलने को मजबूर कर रही थी। उस वक्त वह काले रंग का टाइट सूट पहने हुए थी जिसमें से उसका अंग-प्रत्यंग लश्कारे मारता नजर आ रहा था। वह नूरजहां थी। आई०एस०आई० की एजेंट नूरजहां...जोकि बड़े लोगों के नीचे बिछकर हिन्दुस्तान की गुप्त जानकारियां पाकिस्तान को भेजती थी। नूरजहां ने फीकी मुस्कान के साथ रहमान खान का अभिवादन किया और एक तरफ हट गई। रहमान खान भीतर प्रवेश कर गया। नूरजहां ने दरहवाजा बंद कर सांकल चढ़ाई और रहमान खान को लिये आगे बढ़ी। बाहर की तरह मकान भीतर से जर्रर नजर नहीं आ रहा था। अन्दर मकान पूरी तरह से साफ-सुथरा था। करीब दस फीट की गली पार करके आंगन में पहुंचे और दाईं तरफ बने तीन कमरों में से बीच वाले कमरें में प्रवेश कर गये। कमरे में बीचो-बीच सनमाईका की सैंटर टेबल के इर्द-गिर्द सोफे रखे हुए थे। टेबल पर फोन के साथ स्कॉच की बोतल रखी हुई थी तथा बोतल के पास शीशे का एक आधा भरा गिलास रखा हुआ था। दाईं तरफ कोने में बी०पी०एल० का कलर टी०वी० एक ट्रॉली पर ऱखा था। रहमान खान गहरी सांस छोड़ते हुए एक सोफा चेयर पर बैठा और बोतल उठाते हुए बोला—

“सुबह से कुछ भी नहीं खाया...कुछ खाने को दो...।”

AJ SCAN

नूरजहां कमरे से बाहर निकल गई। जब तक वह खाना लायी, रहमान खान तीन पैग डकार चुका था। नूरजहां ने खाना टेबल पर लगाया और उसके सामने वाली सोफा चेयर पर बैठ गई। रहमान खान ने एक और पैग पेट में पहुंचाया और फिर भूखे कुत्ते की तरह खाने पर टूट पड़ा। बीस मिनट बाद वह खाना खा कर फारिग हुआ और नूरजहां की तरफ देखा।

"सब कुछ खत्म हो गया।"

rcz202016@gmail.com

वह गहरी सांस छोडते हुए बोला।

"मुझे सुबह उस वक्त ही पता चल गया था जब आपने जनाबेआला को रिपोर्ट दी थी।"

"ओह!"

“आप द्वारा पुलिस के हमले की रिपोर्ट के बाद मुझे वायरलैस के जरिये हुक्म मिला कि मैं पता लगाऊं कि पुलिस को हमारे उसे अड्डे का पता कैसे लगा।”

“पता लगाया...?”

“एक घन्टे में ही पता लग गया।”

बुरी तरह से चौंकते हुए रहमान खान ने नूरजहां की तरफ देखा।

“क्या पता लगा....?”

नूरजहां ने सोफे पर बैठे-बैठे ही पहलू बदला और बोली—

AJ SCAN

"हुक्म मिलते ही मैंने सोचा कि कैसे पता लगाया जाये? सोचने के बाद मैंने सबसे पहले यह पता लगाया कि अड्डे पर हमला करने वाली पुलिस को कमाण्ड कौन कर रहा था?"

"एस०पी० कुवंर सिंह रावत था वह।" बोल परड़ा रहमान खान।

rcz202016@gmail.com

"हां...मैंने भी यह पता लगाया था। एस०पी० का पता चलते ही मैंने उसके टेलीफोन ऑपरेटर को फोन किया। वह मुझे जानता है और मेरा दीवाना है।"

"क्या वह जानता है कि तुम पाकिस्तानी जासूस हो?"

"यह नहीं जानता वह...उसे बस यही पता है कि मैं चालू हूं और खरीदी जा सकने वाली चीज हूं।"

"ओह!"

“मेरा फोन मिलने पर उसने मुझसे फोन करने का कारण पूछा तो मैंने उसे कहा कि कल से कोई भी मुर्गा नहीं फंसा...और मैं मर्द के लिये तरस रही हूं। बस वह फौरन यहां चला आया।”

“फिर...?”

“फिर क्या, उसके नीचे बिछी मैं और उसी दौरान मैंने उससे पूछा कि पुलिस ने कोठी पर हमला क्यों किया था? उसने मुझे बताया कि कोठी में उग्रवादी घुसे हुए थे और उनका प्लान सी०एम० के खत्म करने का था।”

“फिर...?”

“उसे बुलवाने के पीछे कारण यही था कि वह एस०पी० का फोन ऑपरेटर था और एस०पी० के हुक्म देने वाला उसका कोई बाप ही हो सकता था...। मैंने उससे पूछा कि खुद एस०पी० को वहां जाने की क्या जरूरत थी? तब उसने बताया

AJ SCAN

कि पीछे से डण्डा काफी बढ़ा था। खुद कालीसिंह शेखावत का फोन आया था एस०पी० को और उसके बाद उसने थाने फोन कर दिया।"

बुरी तरह से उछल पड़ा रहमान खान।

"क...कालीसिंह का फोन आया था?" वह अविश्वासभरे स्वर में बोला।

rcz20...@gmail.com

"हां...।"

पलक झपकते ही रहमान खान सब कुछ समझ गया कि पुलिस को उसका पता कैसे लगा।

"हरामजादा...धोखेबाज...।" वह बड़बड़ाया...।

“अब गाली देने का क्या फायदा उसे...। आगे की सोचिये हुजूर, आगे क्या करना है?”

“करना तो वही है जो सोच रखा है।”

“यानी सी०एम० का कत्ल...।”

“”हां...ऊपर से सख्त ऑर्डर आया है कि उसे खत्म करने के लिये यदि मुझे ही क्यों न मरना पड़े...मैं मरूं, मगर उसे हर सूरत में खत्म करना है।”

“ओह...!”

रहमान खान ने गहरी सांस छोड़ी और आगे बोला-

AJ SCAN

“उसे खत्म करने का प्लान तो है मेरे जेहन में...।”

“क्या...?”

रहमान खान ने उसे बताया, फिर बोला-

rcz202016@gmail.com

“यह प्लान सतीश रावण से हासिल हुआ था मुझे...। हरामजादा मेरा एक करोड़ मार गया और मेरे कई आदमी भी मार गया...और जब उसके मरने की बारी आई तो पुलिस वहां पहुंच गई...।”

“ओह!”

“बस अगर दस मिनट और पुलिस वहां न पहुंचती तो मुझे एक करोड़ भी मिल जाता और उसका काम भी तमाम हो जाता।”

"छोड़िये उसे हुजूर...।" नूरजहां बोली—"जो हो गया उस पर मिट्टी डालिये...।"

"नहीं नूर...यह बात मिट्टी में डालने वाली नहीं है। सतीश रावण हरमाजादा है...बहुत बड़ा हरामजादा...मेरा उससे पांच करोड़ में सौदा हुआ था। बाकी के चार करोड़ उसे नहीं मिले...ऐसे में वह चुप नहीं बैठेगा। ऊपर से मैंने उसकी जो हालत की थी...वह उस हालत को भी नहीं भूलेगा...। अपना इंतकाम लेने के लिये वह कुछ भी कर गुजर सकता है।"

"अब उसके खौफ से आप छुपकर बैठने से तो रहे और न ही आप काम रोक सकते हैं।"

"हां...काम तो रोका नहीं जा सकता...सिर्फ कल...कल का दिन है। परसों मुझे सी०एम० का काम तमाम करना है...फिर उसके बाद कालीसिंह को देखूंगा।"

"कनीज को बताइये....क्या खिदमत कर सकती हूं मैं आपकी?" नूरजहां बोली।

AJ SCAN

“मुझे एक बेहद पॉवरफुल रिमोट से चलने वाला बम चाहिये...।”

“मिल जायेगा...।”

rcz202016@gmail.com

“बम ऐसा होना चाहिये कि उस पर चाहे कितना भी दबाव क्यों न पड़ जाये...वह फटे नहीं...। सिर्फ रिमोट का कहना मानता हो तो...वैसा बम चाहिये मुझे...।”

“मिल जायेगा...।”

"तो दिखाओ...।"

"अभी कहां से दिखाऊं...।"

rcz2020010@gmail.com

"कह तो रही हो मिल जायेगा...।"

"यह तो अब भी कह रही हूं...।"

"यानि किसी और से लाओगी।"

"हां...।"

"कहां से...?"

AJ SCAN

“इसे छोड़िये...सुबह होने पर बम आपके सामने होगा...और खिदमत बताइये...।”

“कुछ जांबाज चाहियें...।”

“कितने...?”

“जितने दे सकती हो।”

नूरजहां उंगलियों पर गिनती करते हुए कुछ बुदबुदाई फिर बोली—

“पांच ऐसे आदमी पेश कर सकती हूं जो सिर्फ इशारा मिलने पर ही अपनी जान दे देंगे।”

“बहुत है।”

“कुछ और...?”

rcz202016@gmail.com

“बस...फिलहाल यही दो काम करो...बाकी जब जरूरत होगी बता दूंगा।”

नूरजहां खड़ी हो गई।

“साथ वाले कमरे में बिस्तर लगा है...आप आराम कीजिये...मैं चलती हूं आपके सामान का बंदोबस्त करने।”

रहमान खान सिर हिलाते हुए खड़ा हो गया।

AJ SCAN

¶¶

रात एक बजे नूरजहां ने जिस गली में कदम रखा...वह शायद राजस्थान की सबसे गंदी गली थी। गली में अंधेरा इतना था कि हाथ को हाथ सुझाई नहीं देता था। और इतफाक से नूरजहां अपने साथ टार्च भी नहीं लाई थी। जबकि उसे पता था कि गली में हर वक्त नालियों का कीचड़ भरा रहता है। दोनो बांहों को फैलाये, बैलेंस बनाये हुए उसने कदम गे बढ़ाया और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। आंखें फाड़-फाड़कर वह अंधेरे में देखने लगी कोशिश कर रही थी, आगे कोई चीज तो नहीं...। उसे अपने जूतों के नीचे कीचड़ में चलने की चिप-चिप वह साफ सुन रही थी। अभी उसने आठ-दस कदम ही बढ़ाये थे कि एकाएक ही उसका पैर आगे रखी किसी चीज से उलझा। उसके साथ ही उसे सूअर के घुरघुराने की आवाज आई। बद्‌किस्मिती उसकी...। उसने खुद को सम्भालने की पूरी कोशिश की...मगर सूअर उसकी टांगों में से निकल गया और अपना बैलेंस बरकरारा नहीं रख पाई वह। नतीजा-वह पीछे को जा गिरी। उसकी कमीज और हाथ-बाहें कीचड़ में सन गये।

“सत्यानाश हो हरामी का...।” वह गुस्से में बड़बड़ाते हुए उठी। आंखें फाड़कर उसने इधर-उधर देखा और फिर आगे बढ़ने लगी। अपने आप पर चड़ चुके कीचड़ के बोझ को वह साफ महसूस कर रही थी-और बदबू से मारे उसका दिमाग खराब हुआ जा रहा था। थोड़ा आगे चलकर वह ठिठकी और अपने दाईं तरफ आंखे

फाड़ कर देखा । आशवस्त हो वह दाईं तरफ बढ़ी, पीले रंग के दरवाजे के सामने आई और उस पर हाथ मारा।

"खड़...खड़...खड़...।"

rcz2010@gmail.com

पूरी गली में दरवाजा भिड़भिड़ाने का शोर गूंज उठा।

"कौन है...?" थोड़ी देर बाद भीतर से आवाज आई। साथ ही दरवाजे की दरारों में से रोशन उभरी।

"मैं हूं...।" नूरजहां बोली—"दरवाजा खोलो लियाकत अली।"

"दरवाजा खुला।

AJ SCAN

सामने करीब पैंतालीस साल का मैले-कुचैले कपड़े पहने मगर जिस्म से पूरी तरह से तंदरूस्त व्यक्ति खड़ा था। उसने नूरजहां को ऊपर से नीचे तक देखा तो मुस्कुरा पड़ा।

"लगता है गली में लोटनिंग लगाकर आई हो." वह बोला। नूरजहां मुंह बनाते हुए भीतर प्रवेश कर गई। लियाकत अली दरवाजा बंद कर उसे एक कमरे में ले आया।

"खैरियत तो है? इस वक्त...!"

"पहले मेरे लिये पानी का बंदोबस्त करो...बदबू के मारे कलेजा फटा जा रहा है मेरा।"

नूरजहां उसकी बात काटते हुए बोली और उसके सामने ही अपने कपड़े उतारने लगी। लियाकत अली आंखें फाड़े उसके हुस्न को देख रहा था...पानी लाने का तो ध्यान ही नहीं रहा था उसे। पूरी तरह से निर्वस्त्र होकर नूरजहां ने उसकी तरफ देखा।

"मैंने पानी के लिये कहा है।" वह बोली।

"ब...बाथरूम में है।" फंसे स्वर में बोला लियाकत अली। इस वक्त उसकी जो हालत हो रही थी...यह वो ही जानता था। नूरजहां कपड़े उठा कमरे से बाहर निकल गई...। करीब बीस मिनट बाद वह नहा-धोकर वापिस लौटी। कपड़े नहीं पहने हुए थी वह...। उसने मुस्कुराते हुए लियाकत अली तो देखा और बोली-

"कपड़े धोकर बाहर टांग दिये हैं मैंने...जब तक वे सूखते नहीं...तब तक मैं तुम्हारी...।

लियाकत अली को जैसे मुंहमांगी मुराद मिल गई। तुरन्त वह अपने कपड़ों से निजात पाने में जुट गया....और कुछ ही देर में वह बैड पर नूरजहां के ऊपर पड़ा था। प्यार के इस खेल में नूरजहां उसका पूरा साथ दे रही थी। थोड़ी देर तक तो लियाकत अली पुरे जोशो-खरोश से अपने काम में लग रहा... फिर तुरंत नूरजहां पर गिरकर लम्बी-लम्बी सांस छोड़ने लगा। जब उसकी सांसे व्यवस्थित हुई तो वह नूरजहां से ऊपर से उतरा और उसकी छातियों पर हाथ फेरते हुए बोला-

AJ SCAN

"आज पहली बार तुमने मुझे न सिर्फ हाथ लगाने दिया है...बल्कि मुझे वो सब कुछ दिया है जो मैं चाहता था। ऊपर से रात के इस वक्त आईं तुम..जाहिर है कि कोई खास काम है तुम्हें...।"

"तुम ठीक समझे लियाकत अली...।" गहरी सांस छोड़ी नूरजहां ने—"मैं एक बहुत ही खास काम से आई हूं तुम्हारे पास।"

"मुझे खुद को सौंप कर निहाल कर दिया तुमने मुझे...वो भी बिना कुछ कहे। कहो...किस काम से आई हो...मै उसे पूरा करने में कोई कसर नहीं छोडूंगा।"

"एक बम चाहिये मुझे...।" बोली नूरजहां...।

बुरी तरह से चौंका लियाकत अली।

"सिर्फ एक बम चाहिये...?"

"हां...।"

"कमाल है...अब से पहले कभी तुम मुझसे कई बम ले जा चुकी हो...लेकिन ऐसी मेहरबानी पहले कभी नहीं की तुमने।"

"इस बार मुझे एक खास तरह का बम चाहिये...।"

"किस खास तरह का...।"

"रिमोट से चलने वाला।"

"ओह!"

AJ SCAN

“और बम भी ऐसा कि आसपास के पूरे इलाके को बर्बाद कर दे।”

“लगता है किसी बड़े आदमी की जान लेने का इरादा है तुम्हारा...?”

मुस्कुराया लियाकत अली।

“मेरे सवाल का जवाब दो।”

“मिल जायेगा...मगर उसे बनाने के लिये मुझे वक्त चाहिये।”

“कितना वक्त मांगते हो तुम...?”

लियाकत अली ने कुछ देर तक सोचा....फिर बोला-

“बम तो मैं दो घण्टे में ही तैयार कर दूंगा...मगर चूंकि वह इलैक्ट्रॉनिक होगा...इसलिये बाजार खुलने पर ही ऐसा सामान मिल सकेगा।”

“मुझे वक्त बताओ।”

“बारह बजे तक हासिल हो जायेगा तुम्हें बम। मैं खुद ही तुम्हारे घर पहुंचा दूंगा।”

“एक बात और।”

“क्या...?”

AJ SCAN

“बम पर चाहे कितने भी ट्रक गुजर जायें...मगर फटना तभी चाहिये जब रिमोट का बटन दबे।”

लियाकत अली ने मुस्कुराते हुए सिर हिला दिया- “और कुछ...?”

“पैसे बोलो...।”

“सिर्फ खर्चा लूंगा मैं तुमसे...रही मजदूरी की बात तो जब तक तुम्हारे कपड़े सूखेंगे...म मजदूरी हासिल कर लूंगा।”

नूरजहां मुस्कुरा पड़ी और पीठ के बल बैड पर लेट गई। लियाकत अली अगला राऊंड खेलने के लिये फिर से उसके ऊपर सवार हो गया।

¶¶

सुबह आठ बजे नूरजहां घर पहुंची। दरवाजा रहमान खान ने खोला।

"काम हुआ नहीं अभी...?" वह उसे खाली हाथ देख बोला।

"यहीं दरवाजे पर ही बता दूं हुजूर...!" नूरजहां बोली।

rcz202016@gmail.com

"ओह!"

रहमान खान एक तरफ हट गया। नूरजहां भीतर दाखिल हुईं और सीधा बाथरूम में गई। वहां उसने पैर तथा जूते अच्छी तरह से धोए और फिर उस कमरे में आ गई जहां पर कि उसने रात को रहमान खान से बात की थी। रहमान खान कल वाली जगह पर बैठा था। नूरजहां उसके सामने वाली सोफा चेयर पर बैठी और बोली —

"बम दोपहर तक यहां पहुंच जायेगा...।"

AJ SCAN

“किसके पास गई थीं तुम...?”

“आप नहीं जानते उसे...। मेरी भी उससे अभि दो साल पहले ही जान-पहचान हुई थी।...लियाकत अली है उसका नाम। पंद्रह सालों से यही धंधा कर रहा है...और अभी तक पुलिस की नजरों से बचा हुआ है।”

“ओह...!”

“मुझे वह मुम्बई के एक गैंग की मैम्बर समझता है...इसीलिये मुझसे डरता है। इसी डर की वजह से वह आज तक मुझे हाथ तक लगाने की हिम्मत नहीं कर पाया था और मैं भी उसकी तरफ नहीं खिंची थी। इसके पीछे दो कारण थे।”

“क्या...?”

"एक तो वह रहता ऐसी जगह है जहां किसी की भी हालत खराब हो जाये...। पूरी गली में कीचड भरा रहता है हर वक्त...। दूसरे, वह खुद भी गंदा है। उसके कपड़ों से हर वक्त बू आती रहती है।"

"ओह!"

rcz202016@gmail.com

"मगर रात मुझे अपने आपको उसे सौंपना पड़ा। सुबह छः बजे तक वह कई मर्तबा मुझ पर चढ़ा उतरा...तब जाकर मुझे थोड़ी देर सोने की फुर्सत मिली...।"

रहमान खान मुस्कुराया...फिर गम्भीर होते हुए बोला—

"मुल्क के लिये इंसान को कई बार कई हदों को पार करना पड़ता है।"

"आप ठीक तरह रहे हैं जनाब...! मुल्क के लिये ही मैं न सिर्फ उसके नीचे बिछी....बल्कि उसके जिस्म से उठने वाली बदबू को भी बर्दाश्त किया।"

AJ SCAN

रहमान खान ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया।

"दोपहर बारह बजे तक उसने बम वहीं पहुंचाने का वादा किया हैं।"

"वह वादे पर खरा तो उतरेगा न?"

"बिल्कुल उतरेगा...। आपको बारह बजे तक हर हालत में बम हासिल हो जायेगा।"

रहमान खान से सिर हिलाया और बोला—

"अब पांच आदमी दो मुझे जो एक इशारे पर अपनी जान तक देने को तैयार हो जायें।"

जवाब में नूरजहां ने आगे को झुकते हुए फोन अपनी तरफ खींचा और रिसीवर उठाकर कोई नम्बर मिलाने लगी।

“हैलो...!” दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह बोली- “नूरजहां बोल रही हूं...मीर हसन को बुलाओ...।” थोड़ी देर बाद वह पुनः बोली- “ कैसे हो मीर हसन...नहा-धोकर फौरन मेरे पास पहुंचो...नाश्ता यहीं कर लेना..हां एक अहम काम है...साथ में अहसान वगैरह को भी लेकर आना...मैं वेट कर रही हूं।” कहकर उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और रहमान खान की तरफ देखा।

“आधे घन्टे तक पहुंच जायेंगे वे...तब तक मैं नाश्ते की तैयारी करती हूं”

रहमान खान ने चुपचाप सिर हिला दिया।

¶¶

AJ SCAN

पौने नौ बजे नूरजहां के दरवाजे पर दस्तक हुई।

“खड़...खड़...खड़...।”

नूरजहां टेबल पर से सीधी हुई और टेबल पर सजे नाश्ते से निगाहें हटाकर रहमान खान से बोली- “ लगता है वे आ गये हैं...मैं देखती हूं।”

कहकर वह कमरे से बाहर निकल गई। शीघ्र ही वह वापिस लौटी तो उसके साथ पांच व्यक्ति थे। रहमान खान ने पांचों पर निगाहें दौड़ाई। पांचों के पांचों सेहतमंद होने के साथ-साथ चेहरों से क्रूर नजर आ रहे थे।

“यह हमारे हुजूर हैं।” नूरजहां ने रहमान खान की तरफ इशारा किया —“खान साहेब...सलाम करो इन्हें...।”

पांचों ने एक साथ झुक कर उसे कोर्निश बजाने वाले अंदाज में सलाम किया।

“अब खान साहेब को अपने बारे में बताओ...।” नूरजहां बोली।

“मैं बशीर खान...।” सबसे बाईं तरह वाला सिर को तनिक झुकाते हुए बोला।

“बंदे का नाम अहसान अहमद है।” उसके साथ वाला बोला।

“बब्बर खान...।” तीसरा बोला।

“सोहेल...।” खुद पर रहमान खान की निगाहें पड़ते ही चौथा बोला।

AJ SCAN

"गुलाम अली...।" पांचवें ने अपना नाम बताया।

"हुजूर जो भी कहें...वो तुम्हें खुदा का हुक्म समझकर करना है।" तभी नूरजहां बोली-"अगर हुजूर कहें कि कुएं में कूद जाओ तो तुम्हें वजह नहीं पूछनी...बस कूद जाना है।"

पांचों के सिर एक साथ हिले...और गर्दनें रहमान खान की तरफ मुड़ गईं...। वे पांचों उसे इस प्रकार देख रहे थे कि पांचों उसका हुक्म सुनने को बेताब हो रहे हों।

"पहले नाश्ता करो...।" रहमान खान बोला—"बाद में बात करेंगे।"

पांचों नाश्ते की तरफ आकर्षित हुए...।

आधे घन्टे बाद नाश्ते से फारिग होकर पांचों की निगाहें रहमान खान पर जम गईं।

"गुलाम हुजूर का हुक्म सुनने को बेताब हैं।"

मीर हसन बोला। रहमान खान ने सोफे की पुश्त से टेक लगाई और बोला-

rcz202016@gmail.com

"कल सुबह हमने एक बहुत ही अहम मिशन पूरा करना है।"

"कैसा मिशन हुजूर...?"

गुलाम अली बोला।

"कल छब्बीस जनवरी को राजस्थान का सी०एम० बतौर चीफ गेस्ट यहां आ रहा है। वह आयेगा तो अपने पैरों पर....पर जायेगा चार कंधों पर सवार होकर।"

AJ SCAN

पांचों एक साथ बुरी तरह से चौंके।

“सी०एम० का कत्ल करना है?” हड़बड़ाते हुए बोला मीर हसन...।

“क्यों कत्ल का नाम सुनकर पसीने छूटने लगे।” रहमान खान ने उसे घूरा।

“ऐसा बात नहीं है हुजूर...।” मीर हसन बोला- “खौफ नाम की किसी चीज को हम जानते तक नहीं...।”

“फिर घबरा क्यों रहे हो?”

“हम घबराये नहीं...बल्कि चौंके हैं हुजूर....! इस मिशन का तो हमें ख्वाबों-ख्याल ही नहीं थ। आप बताइये क्या करना है हमें?”

रहमान खान ने नूरजहां की तरफ गर्दन घुमाई।

“इन पांचों को वॉकी-टॉकी देने हैं....”

“मिल जायेंगे...मगर वॉकी-टॉकी नहीं मोबाईल फोन मिलेंगे।”

rcz202016@gmail.com

“चलेंगे।” कहकर उसने मीर हसन की तरफ देखा—“तुम...”

वह बोला—“परेड ग्राऊंड से रेस्ट हाऊस के रास्ते पर उस जगह पर होगे जहां पर कि रेस्ट हाऊस की तीनों सड़के मेन रोड पर मिलती हैं।”

“चौराहे पर...?”

“हां....सी०एम० का काम उस चौराहे पर तमाम होगा।”

AJ SCAN

मीर हसन ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया...हां उसका चेहरा जरूर बता रहा था कि वह यह जानना चाहता है कि कत्ल कैसे होगा?

रहमान खान भी उसके मन में उठ रहे विचारों को समझ रहा था...सो उस ने पहले सी0एम0 को खत्म करने का प्लान बताया फिर आगे बोला-

“बम आज दोपहर तक हमें मिल जायेगा और आज ही उस बम को चौराहे पर दफन कर दिया जायेगा...।”

मीर हसन ने सिर हिलाया।

“तुम और गुलाम अली वहां चौराहे पर न सिर्फ सड़क के नीचे सुरंग बनाओगे-बल्कि तुम्हें वहां बम भी फिट करना है।”

“जी...!”

“तुम...” रहमान खान ने सोहेल की तरफ देखा- “रेस्ट हाऊस से चौराहे तक की निगरानी करोगे...कोई भी खतरा नजर आते ही तुम मोबाइल से मीर हसन को खबर कर दोगे।”

rcz202016@gmail.com

सोहेल ने सिर हिला दिया।

“और तुम्हें चौराहे से परेड ग्राऊंड तक की सड़क की निगरानी करनी है।” रहमान खान ने बब्बर खान की तरफ देखा। बब्बर खान ने भी सहमति में सिर हिलाया...। रहमान खाने ने अहसान अहमद की तरफ देखा- “तुम चौराहे के आसपास के इलाके पर नजर रखोगे। चौराहे के आस-पास कोई भी ऐसा शख्स नजर आए जो....।”

कहकर उसने एक गहरी सांस छोड़ी और आगे बोलने ही वाला था.....।

AJ SCAN

“ऐसा शख्स?” मीर हसन बोला।

“सतीश रावण नाम है उसका....मेरे हाथों से दो बार मरते-मरते बचा है। वह मेरी प्लानिंग के बारे में सब कुछ जानता है...इसलिये तुम होशियार रहना...किसी भी गैर आदमी को अपने आस-पास देखों तो उससे पूछताछ करना...और जैसे ही यकीन हो कि वह कोई हरामी है...उसे गोली से उड़ा देना। समझ गये?”

“जी हां हुजूर...!” मीर हसन बोला।

“किसी ने कुछ पूछना है?”

“अगर इजाजत हो तो बंदा कुछ कहना चाहेगा हुजूर!”

हिचकिचाते हुए बोला अहसान अहमद। सभी की निगाहें अहसान अहमत के चेहरे पर जम गई।

“बोलो...क्या कहना चाहते हो?”

रहमान खान बोला। अहसान अहमद हिचकिचाया...।

rcz202016@gmail.com

“अब बोल भी चुको।”

अहसान अहमद ने थूक सटकी और बोला-

“आपकी स्कीम यूं तो अच्छी है हुजूर...लेकिन इसमें एक ऐसी कमी है जो हमारी सारी मेहनत पर पानी फेर सकती है। अगर उस कमी को दूर कर लिया जाये तो ठीक रहेगा।”

रहमान खान ही नहीं...नूरजहां तथा अन्य भी बुरी तरह से चौंक पड़े।

AJ SCAN

"किस कमी की बात कर रहा है तू...?" नूरजहां उसे गहरी निगाहों से देखते हुए बोली। अहसान अह्मद ने पहले नूरजहां की तरफ देखा...फिर पुनः रहमान खान की तरफ देखते हुए बोला-

"उस सड़क पर ट्रेफिक का आना-जाना लगा रहता है। ऊपर से सी०एम० कल यहां पहुंच रहा है...।"

"वह कल नहीं आज रात को पहुंचेगा यहां...।"

"ऐसे में सड़क की निगरानी हो सकती है और हमसे पूछा जा सकता है कि सड़क क्यों खोदी जा रही है?"

रहमान खान के चेहरे पर सोचें उभर आईं। अहसान अहमद ठीक कह रहा था। कोई भी पूछताछ कर सकता था और किसी को भी संदेह हो सकता था।

“फिर क्या किया जाये...?” नूरजहां बोली- “अब वहां चारों तरफ कनातें लगाकर ते काम किया नहीं जा सकता...।”

“नहीं नूर...अहसान ठीक कह रहा है...इसका कोई-न-कोई रास्ता सोचना पड़ेगा।”

z202016@gmail.com

सोचभरे स्वर में बोला रहमान खान।

“अगर इजाजत हो तो गुलाम कुछ कहे।”

तभी मीर हसन बोला।

“बोलो...।” रहमान खान उसे देखते हुए बोला।

AJ SCAN

“क्यों न उस जगह पर कोई ट्रक खड़ा कर दिया जाये...कोई पूछेगा तो कह दिया जायेगा कि ट्रक खराब है और खुदाई ट्रक के नीचे होती रहेगी।”

“यस...।” आंखें चमकाईं रहमान खान ने—“यह ठीक रहेगा।”

मीर हसन का सीना चौड़ा हो गया। इससे पहले कि अहसान अहमद नूरजहां से ट्रक के लिये बोलता...नूरजहां मीर हसन से बोल पड़ी—

“नसीम से ले लेना ट्रक...मेरा नाम ले देना...मना नहीं करेगा।”

मीर हसन ने सिर हिला दिया।

“अब तुम लोग जाओ... दोपहर को तुम्हारे पास बम पहुंच जायेगा।”

रहमान खान बोला। पांचों एक साथ खड़े हो गये।

¶¶

सुबह सवा नौ बजे नींद खुली सतीश रावण की। सारी रात वह रोजी से भिड़ता रहा था...सुबह चार बजे जाकर उसने उसे छोड़ा और तब का सोया...वह अब जाकर उठा था। गर्दन मोड़कर उसने वहां देखा जहां रोजी सोई थी। रोजी अपने स्थान पर नहीं थी।

"नींद खुल गई...।" तभी दरवाजे की तरफ से रोजी की आवाज आई। सतीश रावण ने दरवाजे की तरफ देखा । रोजी अपने बालों को तौलिये से लपेटे सिर पर तौलिये का जूड़ा बनाये भीतर आ रही थी। नहाकर आ रही थी वह। सतीश रावण मुस्कुराया...बैड पर लेटे-लेटे ही अंगड़ाई ली और उठकर बैड से नीचे उतर गया। रोजी ने उसके निर्वस्त्र बदन को ऊपर से नीचे तक देखा तो उसकी आंखों में नशा-सा भरने लगा...। भीतर कहीं लावा पकने लगा। बड़ी मुश्किल से वह स्वयं पर काबू रखने में कामयाब हो पाई।

AJ SCAN

“बाथरूम...।” वह फंसे स्वर में बोली।

“मुझे पता है...।”

सतीश रावण हौले से हंसा और निर्वस्त्र ही उसके पास से निकलते हुए कमरे से बाहर निकल गया। बीस मिनट बाद सतीश रावण फ्रेश होकर बाहर निकाल और सीधा बैडरूम में आ गया। तब तक रोजी कपड़े पहन चुकी थी। सतीश रावण ने पैंट उठाकर पहनी फिर शर्ट उठा ली।

“मैं नौकरी पर जा रही हूं...।” रोजी अपना पर्स उठाते हुए बोली-“तुम्हारा नाश्ता किचन में पड़ा है, खा लेना।”

सतीश रावण ने बटन बंद करते हुए सिर हिलाया।

"और अपना थोबड़ा जरूर बदल लेना!" हंसते हुए बोली रोजी-" परसों वाले बुड्ढे बन जाना।"

सतीश रावण भी हंसा...।

rcz2020106@gmail.com

रोजी नौकरी पर चली गई। उसके जाने के उपरांत सतीश रावण ने दरवाजा बंद किया...फिर किचन में आकर नाश्ता किया। तत्पश्चात् वह बैडरूम में आया और मेकअप का सामान लेकर ड्रेसिंग टेबल के सामने बैठ गया। एक घंटे तक वह अपने चेहरे में तब्दीली करता रहा...।

एक घन्टे बाद जब वह ड्रेसिंग टेबल के सामने से हटा तो वह पैंतालीस-पचास साल का अधेड़ नजर आ रहा था। जिसके सिर के बाल पूरी तरह से सफेद हो चुके थे तथा चेहरे पर भी झुर्रिया पैदा हो गई थी। वह एक कुर्सी पर बैठा...कुछ देर सोचा और फिर खड़ा हो कमरे से बाहर निकल गया...। कुछ ही देर में वह मकान को ताला लगाता नजर आ रहा था। ताला लगाकर उसने चाबी जेब में डाली और वहां से हट गया। रोड पर आकर उसने एक थ्री-व्हीलर रोका और परेड ग्राऊंड की तरफ रवाना हो गया। परेड ग्राऊंड पहुंचकर उसने कुछ देर इधर-उधर देखने का नाटक किया...जैसे वह कुछ देखना चाहता हो। फिर ऑटो चालाक से बोला-

AJ SCAN

"रेस्ट हाऊस चलो।"

ऑटो चालक ने एक्सीलेटर घुमाया और उस सड़क पर आ गया जो कि रेस्ट हाऊस की तरफ जाती थी। थोड़ा आगे आकर सतीश रावण की नजर बब्बर खान पर पड़ी। जिस अंदाज से वह वहां खड़ा था....उससे ऐसा लगता था। मानो उसे वहां तैनात किया गया हो। वहां से गुजरने वाले हर व्यक्ति को वह सदंहभरी निगाहों से देख रहा था। सतीश रावण मुस्कुराया और उस पर से निगाहें हटाकर आगे देखने लगा। चौराहे तक उसे कोई और नजर नहीं आया जिस पर कि संदेह किया जा सके। चौराहे पर उसे एक बड़ी बॉडी वाला ट्रक खड़ा नजर आया जिसके नीचे एक व्यक्ति उकडू अवस्था में बैठा था। करीब ही एक व्यक्ति और लेटा था। नीचे बैठा व्यक्ति उसे उस कच्चे स्थान पर बैठा दिखा जोकि ऐन मोड़ पर था। सतीश रावण के होठों पर मुस्कान नाच उठी। उसने गर्दन सीधी कर ली। थ्री-व्हीलर ट्रक के करीब से होते हुए आगे निकल गया। रेस्ट हाऊस पहुंचकर सतीश रावण ने ऑटो का भाड़ा चुकाया और नबाहर आ गया। करीब पंद्रह मिनट तक वह इधर-उधर टहलता रहा...फिर एक खाली ऑटो पकड़कर पुनः परेड ग्राऊंड की तरफ रवाना हो गया। इस वक्त उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे मानो उसने मन-ही-मन कोई निश्चय कर लिया हो। कुछ ही देर में वह चौराहे पर खड़े ट्रक के करीब से गुजर रहा था। गर्दन को थोड़ा-सा झुकाकर उस ने ट्रक के नीचे नजर मारी। नीचे बैठे व्यक्ति के पास मिट्टी का एक छोटा-सा ढेर लगा हुआ था। सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और सामने देखने लगा। वह समझ गया कि ट्रक के नीचे क्या हो रहा है। उसी के प्लान पर काम किया जा रहा था...यानी वे रहमान खान के आदमी

थे। थोड़ी देर बाद थ्री-व्हीलर बब्बर खान के करीब से गुरजरा तो सतीश रावण के होठों पर मुस्कान नाच उठी। पहले तो उसे सिर्फ संदेह था...मगर अब उसे पूरा यकीन हो गया था कि वह आदमी रहमान खान का ही है। थोड़ा आगे चलकर उसने थ्री-व्हीलर रुकवाया और किराया अदा करके बाहर आया। थ्री-व्हीलर के वहां से चलने के उपरांत सतीश रावण मुड़ा और बब्बर खान की तरफ बढ़ने लगा। उसके चलने का अंदाज ऐसा था मानो वह अपने घर जा रहा हो...या किसी काम से, कहीं जा रहा हो। बब्बर खान के करीब पहुंचने पर बब्बर खान ने उसे देखा और इग्नोर कर दिया। वह उसे राह चलता एक आम आदमी ही समझ बैठा। बस यहीं गलती कर गया वह। सतीश रावण उसके पीछे से जैसे ही गुजरने को हुआ...बिजली की-सी गति से उसकी आरी निकली और बब्बर खान की गर्दन से जा लगी। अचानक आई इस मुसीबत के लिये बब्बर खान कतई तैयार नहीं था। सो बुरी तरह से हड़बड़ाया वह....और इससे पहले कि वह कोई एक्शन लेता...पीछे से फुंफकारती आवाज उसके कानों में पड़ी।

rcz202016@gmail.com

"कोई चालाकी नहीं...वरना मेरी आरी चल जायेगी...और तेरी गर्दन कट जायेगी।"

बब्बर खान के हाथ जहां-के-तहां रुक गये।

"हाथ ऊपर।"

AJ SCAN

बब्बर खान ने बड़ी शराफत से हाथ ऊपर उठाये और आवाज में सख्ती लाने की कोशिश करते हुए बोला-

"कौन हो तुम...?"

"जवाब में पीछे से उसकी जेब में एक हाथ रेंगा और रिवॉल्वर उसकी जेब से निकल गई। फिर आरी ओसकी गर्दन से हटी और गुर्राहट उभरी—

"घूम जा...।"

बब्बर खान पीछे घूमा। सामने एक बूढ़े को खड़े देखकर वह हैरान हुआ ।

"कौन हो तुम...?" उसने अपना प्रश्न दोहराया।

"उधर चल...आराम से बातें करेंगे।" सतीश रावण ने एक तरफ इशारा किया। बब्बर खान ने उसके इशारे पर अमल किया था। इन्कार की या नखरा दिखाने की कोई गुंजाइश नहीं थी...सो वह चुपचाप उधर बढ़ने लगाक। वह प्लाट जिसकी तरफ सतीश रावण ने इशारा किया था...चारदीवारी से घिरा हुआ था। सतीश रावण उसे चारदीवारी में ले आया। अब दोनों आने-जाने वालों की नजरों में तभी आ सकते थे जब कि कोई भीतर झांक कर उन्हें देखता।

rcz202016@gmail.com

"कौन हो तुम...?" बब्बर खान ने पुन: अपना प्रश्न दोहराया। सतीश रावण के होठों पर मुस्कान फैल गई...एक दरिंदगी से भरी मुस्कान...।

"रहमान खान कहां है?" वह गुर्राया। बुरी तरह से चौंका बब्बर खान...। मगर तुरंत ही उसने स्वयं को सम्भाल लिया।

"कौन रहमान खान? म्...मैं किसी रहमान खान को नहीं जानता।"

AJ SCAN

“लगता है तुझे रहमान खान ने सतीश रावण के बारे में कुछ नहीं बताया था।”

कुटिलता से मुस्कुराया सतीश रावण। बब्बर खान एक बार फिर चौंका।

“स....सतीश रावण...!” वह हड़बड़ाते हुए बोला।

“हां...सतीश रावण....।”

“द...देखिये भाई साहब...न तो मैं किसी सतीश रावण को जानता हूं...न ही मेरा किसी रहमान खान से ताल्लुक है।”

“अच्छा...!” व्यंग्य से हंसा सतीश रावण।

"मैं सच कह रहा हूं...आपको कोई गलतफहमी हुई है...किसी और के धोके में आपने मुझे पकड़ लिया है।"

"अच्छा...!" सतीश रावण पुनः हंसा।

rcz2010@gmail.com

"म...मेरा यकीन कीजिये...।"

"फिर सड़क के पास खड़ा क्या कर रहा था?"

क....किसी का इंतजार कर रहा था।"

"क्या मतलब....?" हड़बड़या बब्बर खान।

"डेढ़ घन्टे से वॉच कर रहा हूं तुझे....।"

AJ SCAN

जवाब में बब्बर खान ने जोरों से थूक सटकी।

“क्या नाम है तेरा...?”

“ब...बब्बर खान...।”

“देख मियां...मेरी तेरे से कोई दुश्मनी नहीं....मेरी दुश्मनी सिर्फ रहमान खान से है....तू मुझे उसका पता बता दें...मैं न सिर्फ तुझे छोड़ दूंगा...बल्कि तेरी रिवाल्वर भी तुझे वापिस कर दूंगा।”

“अ....आप समझते क्यों नहीं...मेरा रहमान खान से कोई ताल्लुक नहीं।”

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी।

"लगता है, लातों का भूत है तू...।" वह बोला—"कोई बात नहीं...मैं ऐसे ही मना लूंगा तुझे...मगर अफसोस कि मेरी लातें कम और आरी ज्यादा चलती है।"

कहने के साथ सतीश रावण ने आरी लहराई।

rcz202016@gmail.com

"खच्चाक...।"

बब्बर खान की दायीं कलाई आधे से ज्यादा कट गई और वहां से खून का फव्वारा बह निकला। बुरी तरह से चीखा बब्बर खान और अपने बायें हाथ से बांह पकड़ ली।

"चीख नहीं...।" गुर्राया सतीश रावण—"अभी तो शुरुआत ही हुई है। अभी तो तेरे जिस्म के एक-एक हिस्से को काटूंगा...फिर आखिर में तेरी गर्दन काटूंगा। हां...अगर तूने पहले ही रहमान खान का पता बता दिया तो मेरा यह वादा रहा कि मैं तुझे छोड़ दूंगा...।"

AJ SCAN

कराहते हुए बब्बर खान ने जोरों से थूक सटकी।

“रहमान खान कहां है...?” सतीश रावण ने अपना प्रश्न दोहराया। रहमान खान के गले की घण्टी पुनः उछली।

“खच्चाक....” सतीश रावण की आरी पुनः लहराई और उसकी दूसरी कलाई भी कट गई।

“अभी भी तेरे पास वक्त है कि तू अस्पताल जाकर टांकें लगवाकर अपने हाथों को वापिस ला सकता है।” सतीश रावण गुर्राया—“वरना थोड़ी देर बाद तेरे हाथ तेरे जिस्म से जुड़ने से इन्कार कर देंगे। बोल कहां है रहमान खान...?”

कहते हुए सतीश रावण ने आरी चलाने के लिये आरी ऊपर उठाई...बब्बर खान चीख पड़ा-

"न...नहीं...अ...आरी मत चलाना...म...मैं बताता हूं।"

सतीश रावण के होठों पर मुस्कान फैल गई।

rcz202016@gmail.com

"मैं जानता था कि तू बेवकूफ तो है...मगर इतना नहीं जो मरता मर जाये, जुबान न खोले...बोल कहां है रहमान खान...?"

बब्बर खान ने उसे बताया।

"अकेला है वहां वह...?"

"न...नहीं...."

AJ SCAN

“तो...?”

“नूरजहां भी साथ है।”

“नूरजहां कौन...?”

“हमारी बॉस...उसी ने हमें बुलाया था और कहा था कि रहमान खान जो कहे, हम करें...।”

“फिर...?”

“रहमान खान ने हमें सड़क में बम फिट करने का हुक्म दिया...।”

“बम कहां है?”

"वो अभी नहीं आया...। रहमान खान ने कहा था कि बम के आते ही वह उसे हम तक पहुंचा देगा।"

"कहां से आयेगा बम...?"

rcz202016@gmail.com

"लियाकत खान के पास से ...। नूरजहां ने बम बनाने का ऑर्डर उसे दिया था...।"

"कहां रहता है लियाकत खान...?"

बब्बर खान ने पता बताया। सतीश रावण ने उससे कुछ सवाल और किये फिर बोला—

"खुदा को मानता है तू...?"

AJ SCAN

“क...क्या?” हड़बड़ाया बब्बर खान।

“मैंने पूछा है क्या तू खुदा को मानता है..?”

“ह...हां...।”

“तो बोल अल्लाह...।”

“अल्लाह...।”

जैसे ही बब्बर खान ने खुदा का नाम लिया...सतीश रावण की आरी पूरी शक्ति से उसकी गर्दन पर चली।

“खच्चाक...।”

एक ही बार में बब्बर खान की आधी से ज्यादा गर्दन कट गई। वह जोरों से उछला और नीचे गिरकर मिट्टी में लोटपोट होने लगा।

“सीधे जन्नत जायेगा तू...क्योंकि आखिरी वक्त में तूने खुदा को याद किया था।”

सतीश रावण हंसा और झुक कर छटपटा रहे बब्बर खान के कपड़ों से आरी साफ करने लाग। जब तक उसकी आरी साफ होती...बब्बर खान शांत हो चुका था। सतीश रावण ने आरी अपनी शर्ट के नीचे पीठ पर चिपकाई...रिवॉल्वर जेब के हवाले की और झुक कर उसकी तलाशी लेने लगा। तलाशी में उसे बब्बर खान के पर्स के अलावा एक मोबाइल फोन मिला जिसे उसने अपने कब्जे में कर लिया। तत्पश्चात् उसने बब्बर खान की लाश को देख अपनी बाईं आंख दबाई और मुस्कुराते हुए बड़ी अदा से अपने माथे से दो उंगलियां टच कीं और प्लाट से बाहर आ गया।

¶¶

AJ SCAN

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घण्टी घनघना उठी। एस0पी0 कुंवर सिंह रावत ने रिसीवर उठाकर कान से लगाया....। उसका रात का अंदेशा ठीक निकला था....। सुबह के अखबारों में एक उग्रवादी के अस्पतान से निकल भागने की खबर सुर्खियों में छपी थी और करीब दस बजे ही उसे गृहमन्त्री का फोन आ गया था जिसमें उसे फटकार लगाई गई थी...साथ ही यह भी कहा गया था कि वह जल्द-से-जल्द रहमान खान को ढूंढकर उसे गिरफ्तार करे या खत्म कर दे। फटकार सुनने के बाद कुंवर सिंह रावत ने पुलिस की चौकसी और ज्यादा बढ़ा दी थी। और स्वयं अपने ऑफिस में बैठ कर पूरी पुलिस को कमाड कर रहा था।

"यस...।" वह माऊथपीस में बोला।

"कोई आदमी बात करना चाहता है सर।" ऑपरेटर की आवाज आई।

“कौन...?”

“नाम नहीं बता रहा वह-कहता हैं कि आप उसे जानते हैं...।”

कुंवर सिंह रावत के जेहन में फौरन रहमान खान का नाम कौंधा।

rcz202016@gmail.com

“लाइन दो...।” वह बोला।

तुरंत हल्की-सी क्लिक की आवाज आई...फिर दूसरी तरफ से आवाज आई-

“हैलो....।”

“यस...।” बोला एस०पी०—“कुंवर सिंह रावत स्पीकिंग...।”

AJ SCAN

“हुजूर का खादिम बोल रहा हूं...।” आवाज आई।

“कौन...?”

“गुलामों के नाम नहीं हुआ करते हुजूर! उनसे सिर्फ मतलब की बात की जाती है।”

कुंवर सिंह रावत के चेहरे पर उलझन उभरी...।

“फोन क्यों किया...?” वह बोला।

“गुलाम जानता है कि हुजूर को एक ऐसे शख्स की तलाश है जो अगर हुजूर को नहीं मिला तो हुजूर की नौकरी जा सकती है...।”

“क्या मतलब...?”

“मैं रहमान खान की बात कर रहा हूं...।”

rcz202016@gmail.com

बुरी तरह से उछल पड़ा कुंवर सिंह रावत...। उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

“कौन बोल रहे हो तुम...?”

“फिर वही बात...मैंने कहा न गुलामों के नाम नहीं होते...।”

“तुम जानते हो रहमान खान को?”

AJ SCAN

“न सिर्फ जानता हूं... बल्कि यह भी जानता हूं कि इस वक्त कौन-सी बिल में छुपा हुआ है।”

“कहां है वो?”

दूसरी तरफ खामोशी छा गई।

“हैलो...।”

“मैं सुन रहा हूं हुजूर....।”

“कहां है वो...?”

“दो दिन से भूखा हूं जनाब....पेट में अन्न का दाना नहीं गया...अब आप खुद ही बताइये...कभी भूखे पेट भी बात होती है।”

कुंवर सिंह रावत समझ गया कि दूसरी तऱफ से बोलने वाला शख्स रहमान खान का पता बताने की कीमत मांग रहा है।

rcz202016@gmail.com

“क्या चाहते हो?”

“मैं ज्यादा लालची इंसान नहीं हूं हुजूर...थोड़े से ही अपना गुजारा कर सकने वाला परम संतोषी जीव हूं...और भी एक आदत यह भी है कि मैं किसी की हक हलाल की कमाई में से पेट नहीं भरता...। मेरा पेट तो सिर्फ हराम की रोटियों से भरता है हुजूर...।”

“क्या मतलब...?”

AJ SCAN

“आपके पास पचास लाख रुपया है। मुझे उम्मीद हे कि मैं उससे एक वक्त की रोटी का जुगाड़ कर लूंगा।”

बुरी तरह से उछल पड़ा कुंवर सिंह रावत।

“प...पचास लाख रुपया...?”

“जी हां...वो जो आपने हरि सिंह गहलौत से लिया था...। आप वह रुपया मुझे दे दीजिये...। गरीब आपको सारी उम्र दुआयें देगा...। और पचास लाख के बदले मैं आपको रहमान खान का पता बता दूंगा।”

कुंवर सिंह रातव का चेहरा सुलग उठा।

“किस पचास लाख की बात कर रहे हो तुम...मेरे पास एक भी पैसा नहीं...।”

"यानी मुझे कहीं और से रोटी का जुगाड़ करना पड़ेगा। कोई बात नहीं...।" दूसरी तरफ से गहरी सासं छोड़ी गई—"मैं कहीं और ट्राई करता हूं...।"

"द...देखो तुम...।

rcz202016@gmail.com

"पचास लाख की बात ही क्या है हुजूर...आपकी नौकरी सलामत रहे...ऐसे पचासों पचास लाख बना लेंगे आप...। मगर जब नौकरी ही नहीं रहेगी तो सिर्फ उसी एक पचास लाख पर ही आपको गुजारा करना पड़ेगा जो आप मुझे देने से इन्कार कर रहे हैं...।"

"म...मैं इन्कार कहां कर रहा हूं...?" हड़बड़ाया-सा बोला कुंवर सिंह रावत।

"अपने पास न होने की बात करना...इन्कार करने के ही बराबर होता है हुजूर...!"

AJ SCAN

“मैं सच कहता हूं...मेरे पास पचास लाख नहीं...।”

“यानी हरि सिंह गहलौत ने आपके पचास लाख नहीं दिये थे?”

“दिये थे।”

फंसे स्वर में बोला कुंवर सिंह रावत।

“फिर...?”

“लेकिन वो पैसा मेरे पास नहीं...बल्कि भरतपुर में है।”

“ओह...!”

“अब इतनी दूर से इतना पैसा लाने के लिये कितना वक्त लगेगा...इसका अंदाजा तुम खुद लगा सकते हो।”

“तब तक तो सी०एम० का काम भी तमाम हो चुका होगा।”

“क्या...?” हड़बड़ाया कुंवर सिंह रावत...।

“और आप भी अपनी नौकरी से बर्खास्त हो चुके होंगे।”

“द...देखो तुम मुझे बता दो...मैं वादा करता हूं कि मैं तुम्हें बाद में ही सही...पचास लाख दे दूंगा...।”

AJ SCAN

“एक पुलिसिये पर भरोसा करने से बेहतर एक पागल पर भरोसा करने वाला कहीं अक्लमंद होता है।”

कुंवर सिंह रावत का चेहरा लाला हो उठा।

“तुम...तुम पुलिस को गाली निकाल रहे हो?” वह भड़के स्वर में बोला।

“किसी भी हिन्दुस्तानी को पकड़ लो और उनसे पुलिस के बारे में पूछो...। अपने आप पता चल जायेगा कि मैं सच कह रहा हूं या गाली दे रहा हूं...।”

“तुम...।”

“छोड़िये इसे एस०पी० साहब...बहस में पड़ेगे तो आखिर में आपको ही नीचा देखना पड़ेगा...। फिलहाल तो मैं उस पचास लाख को

आप पर भरोसा करते हुए भूल रहा हूं कि रुपया भरतपुर में है। अब आप यह बताइये कि आप रहमान खान का पता जानने के लिये इस गुलाम को कहां तक खुश कर सकते हैं!"

कुंवर सिंह रावत ने एक-दो पलों के लिये सोचा...फिर माऊथपीस में बोला-

rcz202016@gmail.com

"ए...एक लाख...।"

"यह तो चिड़िया का चुग्गा भी नहीं...।"

"मगर मेरे लिये एक लाख बहुत बड़ी रकम है।"

"फिर तो पचास लाख मिलने पर आपको पागल हो जाना चाहिये था।"

AJ SCAN

“क...क्या?” हड़बड़ाया कुंवर सिंह रावत।

“दस लाख...। एक पैसा भी कम नहीं होगा...अगर मंजूर हो तो हां बोला- वरना भाड़ में जाओ तुम और भाड़ में जाये सी०एम०।”

“म...मगर मैं...।”

“मैं फोन रख रहा हूं....।”

“न...नहीं फोन मत रखना...मैं तैयार हूं।”

“दस लाख देने को?”

"हां...।" थूक सटकते हुए बोला कुंवर सिंह रावत।

"गुड...।"

"अब बोलो... कहां है रहमान खान?"

z202016@gmail.com

"बेवकूफ समझ रखा है क्या मुझे...पहले दस लाख मेरे पास आयेंगे...फिर उसके बाद जाकर बताऊंगा रहमान खान का पता। पुलिस वालों पर विश्वास नहीं करता मैं...।"

"और अगर तुम ही रुपया लेकर फरार हो गये तो?"

"मुझ पर विश्वास करना तुम्हारी मजबूरी है...। अगर नहीं करोगे तो रहमान खान का पता मिलने की उम्मीद सिरे से ही खत्म हो जायेगी...। वैसे मेरी भी खुन्दक है उससे मैं खुद उसकी मौत का ख्वाहिशमंद हूं।"

AJ SCAN

“मगर...।”

“विश्वास तो तुम्हें करना ही पड़ेगा एस०पी०—वरना सौदा कैंसिल...।”

“ठीक है...।” गहरी सांस छोड़ी कुंवर सिंह रावत ने—“बोलो कहां लेकर आऊं रुपया...?”

“ठीक दो घण्टे बाद मोर्या होटल में अपने एक सिपाही को बजे देना जो कि वर्दी में होगा...मैं रुपया उससे ले लूंगा। फिर एक एक घन्टे बाद फोन द्वारा तुम्हें बता दूंगा कि रहमान खान कहां छुपा है?”

“मैं खुद न आऊं...?”

“नहीं...इतना बड़ा अफसर मुझ नाचीज से एक होटल में मिलेगा तो कईयों की निगाहों में आ जायेगा और मैं तो आपका भला चाहने वालों में हूं हुजूर...।

“ओ०के०....मैं दो घन्टे बाद भेज दूंगा किसी को...।”

cz202016@gmail.com

“मोर्या होटल में...वर्दी के साथ...।”

“मुझे पता है...।”

“आपके बच्चे जियें...।”

“मेरी अभी शादी नहीं हुई...।”

AJ SCAN

"तो आपकी माशूकायें जियें...।"

दूसरी तरफ से आवाज आई और सम्बन्ध विच्छेद हो गया। कुंवर सिंह रावत ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा...गहरी सोचों में डूबते हुए अपनी उंगलियों को चटकाया...फिर एकाएक ही उसके चेहरे पर सख्ती उभर आई। तुरंत उसने रिसीवर उठाया और कोई नम्बर डायल करने लगा।

"हैलो...।" दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह बोला- "एस०पी० कुंवर सिंह रावत बोला रहा हूं...क्या ख्याल है राजस्थान में रहना चाहते हो या ऊपरवाले के दरबार में पहुंचना चाहते हो...मुझे सब पता है...ठीक वक्त पर पहुंच रहे हैं...दस लाख रुपया चाहिये मुझे...हां पूरे दस लाख, वो भी अभी...कोई लेकिन-वेकिन नहीं, जवाब हां या न में दो...कोशिश नहीं करनी आधे घण्टे में रुपया चाहिये...और एक बात और...और एक टाइम बम भी चाहिये...उछलो नहीं, जो कहा है वही करो...तेरे घर में लगाऊंगा समझे...टाइम बम पैन के आकार का होना चाहिये मगर उसकी पावर ऐसी हो कि वह अपने करीब खड़े आदमी के चीथड़े उडा दे।...आधे घण्टे में दोनों चीजें पहुंच जायें...।"

उस ने रिसीवर रखा और कुर्सी की पुश्त से टेक लगा ली। इस वक्त उसकी आंखों में किसी हिंसक जानवर के से भाव थे।

¶¶

cz2020160@gmail.com

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घण्टी घनघनाई। रहमान खान ने चौंकते हुए नूरजहां की तरफ देखा।

"कहीं तुम्हारे आदमियों पर पुलिस की नजर तो नहीं पड़ गई?"

वह बोला। जवाब में नूरजहें कुछ नहीं बोली...उसने आगे को झुककर रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए बोली-

"हैलो...!"

AJ SCAN

"कैसी हो नूरेचश्म...?" दूसरी तरफ से आवाज आई। बुरी तरह से चौंकी नूरजहां...।

"कौन हो तुम...?"

"इतनी जल्दी भूल गईं-अभी कल ही तो हम दोनों ने डेढ़-दो घन्टे इकट्ठे एक ही बैड पर कपड़े उतारकर कुश्ती लड़ते हुए गुजारे थे।"

"राम भरोसे...?"

"बिल्कुल ठीक पहचाना...।"

नूरजहां से राहतभरी सांस छोड़ी.

"खैरियत तो है...?" वह बोली।

राम भरोसे एस०पी० के टेलीफोन ऑपरेटर का नाम था।

"पुलिसिया हूं...।" दूसरी तरफ से आवाज आई—"बात की तह तक बहुत जल्दी पहुंच जाता हूं।"

"क्या मतलब...?" चौकी नूरजहां...।

"कल तूने मुझे यूं ही नहीं बुलाया था...मुझ पर अपनी जवानी फोकट में नहीं लुटाई थी...। तेरी बातों के दरम्यान ही मैं समझ गया था कि तूने मुझे बुलाया ही सिर्फ इसीलिये है कि तू जान सके कि रहमान खान के अड्डे का पता पुलिस को कैसे लगा।"

rcz202016@gmail.com

नूरजहां का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

"यह आप क्या कह रहे हैं हवलदार जी...मुझे भला ऐसी बातों से क्या लेना-देना...मैंने तो यूं ही पूछ लिया था।"

"अगर तू चाहे तो आज भी यूं ही कुछ और पूछ सकती है।"

"क्या मतलब...?"

AJ SCAN

“पूरी रात देनी पड़ेगी तुझे मेरे को।”

“म...मैं कुछ समझी नहीं...।”

“बड़ी फड़कती हुई बात है। लाखों की बात...। हां बोले तो मैं भी जुबान खोलूं...?”

नूरजहां ने रहमान खान की तरफ देखा...जोकि गहरी नजरों से उसे देख रहा था।

“बोलो...।” वह बोली।

“पहले हां तो बोल...।”

“हां...।”

“क्या हां...।”

z202016@gmail.com

“पूरी रात यह नाचीज आपकी खिदमत करती रहेगी।”

“बिना कपडों के?”

“बिना कपड़े के।”

“और सुबह नजराना भी देगी सिर्फ पचास हजार रुपये...।”

AJ SCAN

“रुपया मेरे पास नहीं है...।”

“तो फिर मैं फोन रख रहा हूं...।”

“रख दीजिये...।”

“क...क्या...?” हड़बड़ी से भरी आवाज आई। निश्चय ही दूसरी तरफ से बोलने वाले को नूरजहां से ऐसे जवाब की उम्मीद नहीं थी।

“मैं अपनी लाखों की जवानी लुटा रही हूं आप पर...और आप हैं कि रुपये की बात कर रहे हैं।”

“मगर...।”

“सॉरी जनाब...मैं एक पैसा भी नही दे सकती।”

“ठीक हैं...।” दूसरी तरफ से गहरी सांस छोड़ी गई—“अगर रुपया नहीं दे सकती तो फिर दो रातें मेरे नाम करनी होंगी।”

“हां...यह कर सकती हूं मैं...।”

“तो फिर कल और परसों की रातें मेरे नाम कर दो।”

“कर दीं...अब बोलो कौन-सी फड़कती हुई खबर है जो आप इतना बड़ा मुआवजा मांग रहे हैं?”

“अभी थोड़ी देर पहले ही एस०पी० साहब को एक फोन आया था।”

AJ SCAN

“किसका...?”

“नाम नहीं बताया उसने अपना...।”

“तो...?”

“उसने एस०पी० साहब से दस लाख रुपया यह बताने के लिये मांगा है कि रहमान खान कहां छुपा है।”

बुरी तरह से उछल पड़ी नूरजहां...।

“क्या...?”

“हां...।”

"फिर...?" वह थूक सटकते हुए बोली।

"दो घन्टे बाद एस०पी० का एक सिपाही मोर्या में जायेगा और दस लाख लेकर...।" दूसरी तरफ से सब कुछ बता दिया गया....।

rcz202016@gmail.com

फिर आवाज आई—"कल और परसों की रातें मेरे नाम...?"

"पक्की...।" बोली नूरजहां और रिसीवर रख दिया।

"किसका फोन था?" उसके रिसीवर रखते ही उत्सुकता से बोला रहमान खान। प्रत्युत्तर में नूरजहां ने उसे सारी बाते बता दी। बुरी तरह से चौंक पडा रहमान खान...साथ ही उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

"जरूर वह हरामी सतीश रावण ही होगा...।" वह बोला—"उसी ने फोन किया होगा एस०पी० को...।"

AJ SCAN

“माना...मगर वह यह कैसे जानता है कि आप यहां छुपे हुए हैं? कहीं तुमने उसके सामने इस जगह का जिक्र तो नहीं किया था?”

“नहीं...।”

“तो फिर उसे यहां का पता कैसे लगा?”

“जरूर वह मेरे अड्डे पर नजर रखे हुए होगा और मेरे वहां से निकलने पर मेरा पीछा करते हुए उसने इस जगह का पता लगा लिया होगा।”

“ओह...!”

“मगर एक बात समझ में नहीं आई।”

“क्या...?”

“उसे पुलिस को इन्फार्म करने की क्या जरुरत थी...जब वह मुझ पर निगाह रखे हुए था तो वह आसानी से मुझे खत्म कर सकता था।”

rcz202016@gmail.com

“आप भूल रहे हैं हुजूर...पुलिस से दस लाख कमाया है उसने...।”

“यानी नोट कमाने के चक्कर में उसने पुलिस को सूचित किया।”

“हां...।” नूरजहां ने पहलू बदला—“और अब आपको फौरन से पेश्तर यह जगह छोड़ देनी चाहिये...।”

“वो तो छोड़ूंगा ही...मगर सतीश रावण को नहीं छोड़ूंगा मैं अब....।” कहते हुए रहमान खान का चेहरा सुर्ख हो उठा...।

AJ SCAN

"उस हरामजादे के कारण ही मैं क्या से क्या हो गया। पुलिस से जो दस लाख झटकने के चक्कर में वह है...वह उसे नहीं मिलेंगे...बल्कि उसे सिर्फ मौत ही हासिल होगी। क्या नाम बताया था हवलदार ने होटल का...?"

"मोर्या...।"

"मोर्या....हूं...।" हुंकार भरी रहमान खान ने।

"लेकिन आप बरायमेहरबानी वहां न जायें...।"

"क्यों...?" रहमान खान ने घूर कर उसे देखा।

"फिलहाल आप पहले उस काम की तरफ ध्यान दीजिये जो हमारे आकाओं ने आपको दिया है। सतीश रावण से फिर भी निपटा जा सकता है...मगर अगर

सी०एम० को खत्म करने का मौका हाथ से निकल गया तो फिर शायद ही ऐसा मौका मिले।"

रहमान खान ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया...फिर अपनी घड़ी पर निगाह मारी। पौने बारह बज गये थे।

rcz202016@gmail.com

"बारह बजे तक पहुंच जायेगा न लियाकत अली।" वह बोला।

"हद सवा बारह तक जरूर पहुंच जायेगा।" नूरजहां बोली—"उसके बाद आप दूसरी जगह चले जाइयेगा।"

रहमान खान से सिर हिला दिया।

¶¶

AJ SCAN

ठीक बारह बजे नूरजहां के घर के दरवाजे पर दस्तक हुई।

“खड़...खड़...खड़।”

“लगता है लियाकत अली आ गया है।” नूरजहां खड़ी होकर बोली- “मैं देखती हूं।”

रहमान खान सीधा होकर बैठ गया।

नूरजहां कमरे से बाहर निकल गई। एक मिनट बाद वह वापिस लौटी तो उसके पीछे लियाकत अली था। उसने अपने कंधे पर एक मैला-कुचैला-सा एयरबैग लटका रका था।

“हुजूर को सलाम बोलो...।” नूरजहां लियाकत अली से बोली। लियाकत अली ने रहमान खान की तरफ देखते हुए अपने पीले दांत दिखाये और सिर को

झुकाया।

"आदाब अर्ज करता हूं हुजूर...।" वह माथे पर हाथ लगाते हुए बोला।

रहमान खान ने सिर हिलाया...।

rcz202016@gmail.com

"लियाकत अली हो तुम...?" वह बोला।

"बिल्कुल हूं हुजूर...।"

"नूरजहां ने तुम्हें जो काम कहा था...?"

"आपका बम तैयार है...।"

AJ SCAN

कहते हुए उसने बैग कंधे से उतार कर टेबल पर रखा और स्वयं उसके दाईं तरह लम्बे सोफे के किनारे बैठ गया। उसने बैग की जिप खोली और उसमें से एक चौकोर डिब्बा निकालकर रहमान खान के सामने रखा और बोला-

“यह रहा आपका बम...और यह रहा आपका रिमोट...।”

कहते हुए उसने एक आम टी०वी० रिमोट कंट्रोल जैसा रिमोट निकाल कर टेबल पर रख दिया। रहमान खान ने बम उठाकर उसे उलट-पुलट कर देखा। मजबूत इस्पात का बना हुआ था बम जिसके ऊपर एक स्थान पर काले रंग की मोटी टेप चिपकी हुई थी।

“यह टेप क्यों लगा रखी है?”

उसने पूछा।

"बस यूं समझ लीजिय। जनाब कि यह टेप"...उसने टेप पर उंगली रखी —"बम की सेफ्टी पिन है।"

"क्या मतलब...?"

rcz202016@gmail.com

"मुझे दीजिये...मैंने समझाता हूं आपको...।"

कहते हे उसने बम उससे लिया और टेप पर उंगली रखेत हुए बोला—

"इस टेप के नीचे सैंसर लगा है जो रिमोट से निकली किरणों को लेते ही बम को फटने का हुक्म दे देगा...मगर चूंकि यह टेप सैंसर पर लगी हुई है...इसलिये रिमोट की किरणें सैंसर को छू नहीं पायेंगी...।"

"यानी जब तक टेप सैंसर पर चढ़ी हुई है, बम नहीं फटेगा।"

AJ SCAN

“बिल्कुल ठीक समझे आप...। टेप चढ़ी होने के दौरान आप रिमोट को चाहे कितना ही क्यों न दबा लें...बम नहीं फटेगा...।”

रहमान खान ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया। लियाकत अली ने नाखून से टेप को थोड़ा-सा खुरचा...फिर उसे बम पर से उखाड़ दिया।

“अब बम सक्रिय है...।” वह बोला- “अब बम रिमोट दबाने की देर होगी कि बम फट पड़ेगा।”

रहमान खान ने देखा कि टेप से नीचे वाले स्थान पर एक महीन प्लास्टिक लगा है जिसके नीचे सैंसर लगा हुआ नजर आ रहा था। नूरजहां ने भी उचक कर उस स्थान को देखा। लियाकत अली ने टेप को पुनः सैंसर पर चिपकाया और बम को रहमान खान के सामने टेबल पर रख दिया। उसने रिमोट उठाया और रहमान खान को दिखाते हुए बोला—

"यह इस बम का रिमोट कन्ट्रोल है...इसका यह "ओके" वाला बटन दबते ही फट पड़ेगा...।"

उसने "ओके" वाले बटल पर अंगूठा रखकर उसे दबाया। रहमान खान ने रिमोट कन्ट्रोल लेकर उसे अच्छी तरह से देखा, फिर लियाकत अली की तरफ देखते हुए बोला- "कितनी दूरी से काम कर सकता है यह रिमोट कन्ट्रोल...।"

rcz202016@gmail.com

"ज्यादा से ज्यादा तीन सौ मीटर दूरी से।"

"यानी बम से तीन सौ मीटर दूर रहकर बम को उड़ाया जा सकता है।"

"जी हां...।" लियाकत अली बोला—"यह दूरी आधा किलोमीटर भी हो सकती है...बशर्ते कि बम खुले में पड़ा हो।"

"और अगर जमीन में दबा हो तो?"

AJ SCAN

“तो तीन सौ मीटर...।”

रहमान खान ने रिमोट को बम के ऊपर रख दिया और फिर गहरी सांस छोड़ी...।

“अब उसकी कैपेसिटी के बारे में बताओ।” वह बोला।

“क्या...?” न समझने वाले अंदाज में बोला लियाकत अली.

“मैं यह पूछ रहा हूं कि फटने पर बम कितनी तबाही मचा सकता है...?”

लियाकत अली ने गहरी सांस छोड़ी...पहलू बदला और बोला-

“अगर यह बम यहीं फट पड़े तो यह पूरा घर मलबे में बदल जायेगा।” उसने बांहें ऊपर करके फैलाईं...। रहमान खान के चेहरे पर संतुष्टि उभरी। उसने नूरजहां की तरफ देखा।

“इसे चलता करो...।” वह बोला। लियाकत अली नूरजहां की तरफ देखने लगा।

rcz202016@gmail.com

“कितना खर्च हुआ...?” पूछा नूरजहां ने।

“सिर्फ पचास हजार...।”

उसे दांत दिखाते हुए बोला लियाकत अली। नूरजहां सोफे से उठकर कमरे से बाहर निकल गई। शीघ्र ही वह वापिस लौटी तो उसके हाथ में पांच-पांच सौ के नोटों की गड्डी थी। उसने गड्डी लियाकत अली के सामने टेबल पर रखी और मुस्कुराते हुए बोली-

AJ SCAN

“थैंक्यू लियाकत अली।”

लियाकत अली ने खीसें निपोरते हुए गड्डी उठाई और अपना खाली बैग कंधे पर लटकाये हुए खड़ा हो गया।

¶¶

“ट्रिन...ट्रिन...।”

फोन की घण्टी बजते ही कुंवर सिंह रावत ने रिसीवर उठाया।

“यस...।” वह माऊथपीस में बोला।

“सर...!” दूसरी तरफ से टेलीफोन ऑपरेटर की आवाज आई—“मिस्टर शशिकांत आये हैं....।”

“भेज दो...।” तुरंत बोला कुंवर सिंह रावत और रिसीवर रख दिया। करीब दो मिनट बाद ठिगने कद का घुंघराले बालों वाला करीब चालीस साल का चेहरे से ही धूर्त नजर आने वाला व्यक्ति कुंवर सिंह रावत के ऑफिस में प्रविष्ट हुआ...। उसने अपने दायें हाथ में एक बैग पकड़ा हुआ था।

rcz202016@gmail.com

“नमस्कार साहब बहादुर ...।” करीब आकर वह चापलूसी भरे स्वर में बोला।

“दस लाख लाये हो?” जवाब में कुंवर सिंह रावत ने सीधे सवाल किया।

“बिल्कुल लाया हूं एस०पी० साहब, भला आपकी आज्ञा को कैसे टाल सकता था।”

AJ SCAN

कहते हे उसने बैग वाला हाथ ऊपर उठाया।

“बैठो...।” गम्भीरता से बोला कुंवर सिंह रावत। शशिकांत ने अपनी शर्ट की जेब में टंगा पेन निकालकर उसकी तरफ बढ़ा।

“यह...।”

“बम है हुजूर...!” शशिकांत बोला।

“ओह...!”

कुवंर सिंह रावत मुस्कुराया और उसने पेन लेकर अपनी आंखों के सामने किया। बिल्कुल बालपेन की तरह बना हुआ था वह बम...। बस मोटाई में सामान्य पेन से थोड़ा ज्यादा बड़ा था। उसके ढक्कन वाले हिस्से पर डिजिटल ग्लास लगा हुआ था।

“रिफिल को बाहर निकालने वाल हिस्सा दबाइये...। टाइम वहीं से एडजस्ट होगा जनाब।”

शशिकांत बोला।

rcz2020106@gmail.com

“और यह सक्रिय कैसे होगा?”

“बस ढक्कन को थोड़ा बाईं तरफ घुमा दीजिये...।”

शशिकांत ने ढक्कन के ऊपरी हिस्से को दबाया। तुरंत डिजिटल ग्लास पर नम्बर ऊभरे। उसने पुनः उस हिस्से को दबाया। ग्लास पर एक उभरा। शशिकांत उस हिस्से को बार-बार दबाने लाग और फिर उस पर बाइस घंटे का वक्त फिक्स कर उसके ढक्कन को बाईं तरफ घुमा दिया। हल्की-सी क्लिक की आवाज हुई और बम सक्रिय हो उठा। अब ठीक बाईस घन्टे बाद बम फट जाना था। इतना वक्त उसने इसलिये रखा ता...क्योंकि हो सकता था सी०एम० को खत्म करने की प्लानिंग उसे रहमान खान से पता न लगे और फोनकर्त्ता को पता लग जाये...तब हो सकता है कि वह कुछ कीमत मांग कर वह उसे वह प्लानिंग बता दें।

AJ SCAN

“कितनी पॉवर है बम में...?” उसने जेब थपथपाई।

शशिकांत मुस्कुराया...। बस इतना समझ लीजिये हुजूर कि अगर यह बम अभी फट पड़े तो यह टेबल...मैं, आप और आसपास का थोड़ा-सा हिस्सा उड़ा जायेगा...।”

कुंवर सिंह रावत ने सिर हिलाया और बैग की तरफ देखा।

“बैग खोलो...।”

शशिकांत ने फौरन बैग का ढक्कन खोलकर बैग उसकी तरफ घुमाया...। बैग सौ-सौ की गड्डियों से भरा पड़ा था...। संतुष्टि से उसने सिर हिलाया और बोला—

“थैंक्यू...अब तुम जाओ...।”

शशिकांत ने बैग बंद किया और खड़ा हो गया। उसने हाथ जोड़े और दांत दिखाकर ऑफिस से बाहर निकगल गया। उसके बाहर निकलने के पश्चात् कुंवर सिंह रावत ने हाथ लम्बा करके बैग को हैंडिल से पकड़कर अपने सामने घसीटा। बैग खोलकर जेब से पेन बम निकाल लिया। उसने बम की घड़ी पर निगाह मारी। पांच मिनट बीत चुके थे। कुंवर सिंह रावत ने बम को बैग के कब्जों वाले जोड़ पर लगे कपड़े के सिरे से भीतर की तरफ धकेला। कुछ ही देर में पेन कपड़े के और कब्जों के बीच फंसा पड़ा था। अब गौर से देखने पर भी महसूस नहीं किया जा सकता था कि बैग और ढक्कन को जोड़ने वाले कब्जों को घुमाने के लिये लगे प्लास्टिक के कपड़े के पीछे कोई पेन फंसा हुआ है। हां टटोल कर जरूर भांपा जा सकता था कि वहां कुछ है। उसने बैग को बंद किया और उसे उठाकर अपनी कुर्सी के दाईं तरफ खड़ा करके टेबल पर रखे इंटरकॉम का रिसीवर उठाकर उसका एक बटन दबाया। फिर माऊथपीस में बोला—

"नफे सिंह को भेजो।"

कुछ ही देर में हवलदार रैंक का एक दुबला मगर सख्त चेहरे वाला व्यक्ति उसके सामने अटैन्शन खड़ा था। कुंवर सिंह रावत ने बैग उठाकर टेबल पर रखा और उसकी तरफ खिसकाते हुए बोला-

AJ SCAN

"उठाओ इसे।"

नफे सिंह ने फौरन बैग उठा लिया। कुंवर सिंह रावत ने अपनी कलाई घड़ी पर निगाह मारी और फिर नफे सिंह की तरफ देखते हुए बोला—

"एक घन्टे से पहले तुम्हें मोर्या होटल में पहुंचना है।"

"यस सर...।" तत्परता से बोला नफे सिंह....

"वहां पर जो कोई भी मेरा नाम लेकर तुमसे बैग मांगे...उसे दे देना.... और वापिस आ जाना।"

"यस सर!"

"अब जाओ...।"

नफे सिंह ने बैग वाले हाथ से पकड़ उसे सैल्यूट किया और अबाऊट टर्न हो गया। उसके जाते ही कुंवर सिंह रावत के चेहरे पर दरिंदगी फैल गई...आंखों में क्रूरता उभर आई।

“कुंवर सिंह रावत सिर्फ लेना जानता है...। देने के लिये उसके पास सिर्फ मौत है....” वह बड़बड़ाया—“तूने मुझसे दस लाख नहीं मांगे अपनी मौत मांगी है। तू जो कोई भी है...उसका पता मुझे कल लग जायेगा...मगर लगेगा तेरी मौत के बाद—मैं तेरी लाश के दर्शन करूंगा... और तभी मुझे तेरा पता चलेगा।”

कहते हुए उसके चेहरे पर फैली दरिंदगी में कई गुना इजाफा हो गया। अब उसे उस वक्त का इन्तजार था जब उस रहमान खान का पता लगना था।

¶¶

पचास हजार लेकर लियाकत अली अपने घर वाली गली में प्रविष्ट हुआ। पूरे पचास हजार की कमाई की थी उसने बम से...ऊपर से आधी रात तक वह नूरजहां के हसीन-तरीन जिस्म से खेलता रहा। उसके लिये दोनों ही उपलब्धियां बहुत बड़ी थीं।

AJ SCAN

इतना मोटा पैसा वह एक ही बार में पहली बार कमा रहा था और नूरजहां भी उसे पहली बार हासिल हुई थी। ऐसे में खुशी तो होनी ही थी उसे। इसी खुशी में उसने अपने मकान के दरवाजे के करीब खड़े एक अधेड़ को भी नजरअंदाज कर दिया जो कि कीचड़ से भरी गली में खड़ा था। लियाकत अली ने उससे यह भी नहीं पूछा कि वह कौन है और वहां क्यों खड़ा है?

उसके करीब से निकलकर वह अपने मकान के दरवाजे के सामने आया और जेब से चाबी निकालकर ताला खोला, जैसे ही उसने दरवाजा खोला—

बुरी तरह से चिहुंक उठा वह। उसकी पीठ पर लोहे ही सख्त नाल आ लगी थी। साथ ही एक गुर्राती आवाज उसके कानों में पड़ी।

"कोई चालाकी नहीं...अन्दर चल।"

लियाकत अली का कलेजा जोरों से धड़क उठा। उसकी सारी खुशी पल भर में ही छूमन्तर हो गई।

“क...कौन हो तुम...?” वह थर्राये स्वर में बोला।

“अंदर चल।”

rcz202016@gmail.com

फुंफकार उभरी...साथ ही नाल का दबाव उसकी पीठ पर पड़ा। लियाकत अली ने जोरों से थूक सटकी और कदम आगे बढ़ाया।

उसके पीछे-पीछे वह अधेड़ भी जोकि हकीकत में सतीश रावण था, भीतर प्रवेश कर गया। बिना पीछे मुड़े ही उसने दरवाजे को पैर से बंद किया और गुर्राया—

“आगे बढ़।”

लियाकत अली के गले की घन्टी पुन: उछली। उसका कलेजा धाड़-धाड़ करता उसकी पसलियों से टकरा रहा था। वह यही समझ रहा था कि उस पर रिवॉल्वर

AJ SCAN

तानने वाला कोई लूटेरा है...और उसे उसकी जेब में पड़े पचास हजार रुपयों का पता चल गया है...उन्हीं रुपयों को लूटना चाहता है वह लुटेरा। सतीश रावण उसके पीछे-पीछे उस कमरे में आ गया जिसमें कि रात को लियाकत अली ने नूरजहां को अपनी मर्दानगी के जौहर दिखाये थे।

"बैठ जा...।" वह बोला और उसे बैड की तरफ धकेल दिया। लियाकत अली हल्के से लड़खड़ाया...फिर सम्भला और सतीश रावण की तरफ घूमते हुए बैड पर बैठ गया। तब पहली बार उसने सतीश रावण को देखा।

"कौ...कौन हो तुम?"

वह उसके रिवॉल्वर को देखते हुए बोला। सतीश रावण मुस्कुराया।

"अगर शराफत से रहोगे तो व्यापारी वरना दुश्मन...।"

“क्या मतलब...?” हड़बड़ाया लियाकत अली...।

“मतलब भी समझाता हूं...।” बोला सतीश रावण और जेब से पांच-पांच सौ की गड्डी निकालकर उसकी गोद में फैंक दी। पचास हजार देखकर लियाकत अली का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

rcz202016@gmail.com

“य...यह रुपया...।”

“बस इतना ही दे सकता हूं मैं...।” सतीश रावण गहरी सांस छोड़ते हुए बोला।

“ल...लेकिन करना क्या होगा मुझे?”

सतीश रावण थोड़ी पीछे हट एक कुर्सी खिसका कर उस पर बैठ गया।

AJ SCAN

“मैं नहीं जानता कि तुमने नूरजहां से बम बनाने का कितना पैसा लिया...मुझे बस इतना पता है कि तुम मुझसे पचास हजार ही लोगे...।”

बुरी तरह से उछल पड़ा लियाकत अली।

“नूरजहां...!”

“अब यह मत कहना कि तुम किसी नूरजहां को नहीं जानते...।”

लियाकत अली ने जोरों से थूक सटकी।

“मुझे पता है कि तुमने उसे रिमोट-बम बना कर दिया है और इस वक्त तुम उसे बम देकर ही आ रहे हो।”

लियाकत अली हैरानी से उसे देखने लगा। उसे समझ में नहीं आ रहा कि उसे इस बात नका पता कैसे लगा।

"त...तुम हो कौन...?" वह थूक सटकते हुए बोला।

rcz202016@gmail.com

"कहा न व्यापारी...।"

"ल...लेकिन...।"

"ज्यादा गहरे में मत जाओ लियाकत अली...पचास हजार तुम्हारी गोद में पड़ा है..अगर मेरा काम कर सकते हो तो रुपया उठाकर जेब में रख लो...वरना गोली खाओ...।"

"म...मगर बम बनाने के लिये जो सामान दरकार है....वो मेरे पास नहीं है।"

AJ SCAN

“मुझे बम नहीं चाहिये...।”

लियाकत अली को एक जबरदस्त झटाक लगा।

“क...क्या मतलब...?”

“मुझे रिमोट कन्ट्रोल चाहिये....”

“रिमोट कन्ट्रोल...?” हड़बड़ाया लियाकत अली।

“हां रिमोट कन्ट्रोल...?” और रिमोट कन्ट्रोल उसी बम का होना चाहिये जो तुमने नूरजहां को दिया है। यानी बम को दो रिमोट कन्ट्रोन से फोड़ा जा सके।”

"ओह!"

"और मेरा ख्याल हे कि रिमोट कन्ट्रोल बनाने में तुम्हें ज्यादा देर नहीं लगेगी।"

rcz2020010@gmail.com

"यानी एक ही फ्रीक्वेंसी के दो रिमोट...।"

"हां....। बोलो बना सकते हो?"

"हां...मेंरे पास एक रिमोट कन्ट्रोल एक्स्ट्रा पड़ा है...बस उसमें थोड़ी तब्दीली करनी है।"

"तो करो।"

AJ SCAN

लियाकत अली अपने स्थान से उठा और एक तरफ रखी लोहे की जंग लगी आलमारी की तरफ बढ़ा।

“कोई चालाकी मत दिखाना लियाकत अली...।” तभी गुर्राया सतीश रावण- “वरना मुझे गोली चलाने में कोई हिचक नहीं होगी।”

“बेफिक्र रहो...मैं रिमोट ही निकाल रहा हूं।”

हल्के-से मुस्कुराया लियाकत अली। पचास हजार मिले थे उसे...वो भी सिर्फ रिमोट बनाने के...सिर्फ एक हजार का खर्चा...और पचास हजार की उगाही...भला चालाकी दिखाने की बेवकूफी क्यों करता वह। उसने आलमारी खोलकर उसमें से रिमोट निकाला...साथ ही एक सौल्डरिंग आयरन निकालकर उसका एक तार प्लग में फंसा दिया। और फिर जमीन पर बैठकर उसने रिमोट खोलकर आयरन से अन्दर कुछ टांके उतारे...कुछ लगाये। करीब आधे घन्टे बाद उसने रिमोट को बंद किया और उसमें सैल डालकर सतीश रावण की तरफ देखा।

“हो गया तैयार...?” सतीश रावण बोला।

"हां....अब इस रिमोट से भी उस बम को फाडा जा सकता है।"

"कैसे...?"

लियाकत अली उठा और उसके करीब आकर उसे समझाया कि कौन-सा बटन दबाने से बम फटेगा...।

सतीश रावण ने रिमोट लेकर जेब में डाला और उससे बम के बारे में जानकारी मांगी। बिना किसी हील-हुज्जत के लियाकत अली ने सबकुछ बता दिया। सतीश रावण ने जब यह महसूस किया कि पूछने को और कुछ नहीं रह गया तो सके होठों पर कुटिल मुस्कान फैल गई।

"कभी किसी हरामजादे के दर्शन किये हैं?" वह बोला।

"क्या मतलब...?"

AJ SCAN

बुरी तरह से हड़बड़ाया लियाकत अली।

“मुझे देख...मैं हूं हरामजादा...कोई छोटो-मोटा नहीं...सबसे बड़ा हरामी हूं मैं।”

“त...तुम कहना क्या चाहते हो?”

“बड़े बुजुर्ग कह गये हैं कि बेशक किसी कुत्ते पर भरोसा कर लो...सूअर पर भरोसा कर लो...सांप को आस्तीन में डाल लो..मगर किसी हरामजादे पर भरोसा मत करना...खास तौर पर उसका जिसके सौ से ज्यादा बाप हों....और मेरे तो दो सौ से भी ज्यादा बाप हैं...और तूने मुझ पर भरोसा कर लिया।”

“म...मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा...तुम कहना क्या चाहते हो?”

“यह तुम ऊपरवाले से पूछना कि मेरे कहने का क्या मतलब है।”

कहने के साथ ही सतीश रावण ने रिवॉल्वर बायें हाल में पकड़ी और दायां हाथ ऊपर उठाकर कॉलर में को डाला और आरी निकाल ली। लियाकत अली की रंगत पीली पड़ गई।

rcz202016@gmail.com

“य...यह...!”

“यह आरी है...। लोग तो इसे बेकरी में डबलरोटी काटने के काम में लाते हैं...मगर मैं इससे गर्दनें काटता हूं।”

कहने के साथ ही उसका हाथ तेजी से चला।

“खच्चाक...।”

AJ SCAN

बेचारे को सम्भलने का मौका ही नहीं मिला और उसकी आधी से ज्यादा गर्दन कट गई।

“खच्चाक...।”

सतीश रावण ने पुनः आरी चलाई। लियाकत अली की गर्दन उसके धड़ से अलग हो नीचे गिर पड़ी और धड़ दूसरी तरफ गिरकर झटके लेने लगा। सतीश रावण ने आरी बैड की चादर से साफ की...उसे अपनी पीठ पर चिपकाया और रिवॉल्वर को जेब में डालकर लियाकत अली के धड़ पर झुका जो कि अब स्थिर हो चुका था। उसने उसकी जेबों से अपने पचास हजार के साथ-साथ उसके पचास हजार भी निकाले और उन्हें अपनी जेबों के हवाले कर हौले से हंसा।

“हरामजादों पर विश्वास करने वालों का हमेशा यही हाल होता हैं।” वह बोला और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

¶¶

"बस यहीं रोक दो।"

टैक्सी चालक के कंधे को थपथपाते हुए बोला रहमान खान। टैक्सी चालक ने टैक्सी सड़क किनारे रोक दी। वहां से चौराहा कुछ दूरी पर था। रहमान खान ने टैक्सी का भाड़ा चुकाया और दरवाजा खोलकर बाहर आ गया। उस वक्त उसके कंधे पर एक एयरबैग टंगा हुआ था। टैक्सी के वहां से रवाना होने के बाद रहमान खान ने अपने कदम चौराहे की तरफ बढ़ाये जहां पर कि ट्रक खड़ा हुआ था। ट्रक के करीब खड़े गुलाम अली ने उसे देख लिया था...सो वह सतर्क नजर आने लगा

"खान साहब आ रहे हैं।" वह ट्रक के नीचे बैठे मीर हसन से बोला। मीर हसन ने नीचे बैठे हुए ही झुक कर उधर देखा जिधर से कि रहमान खान आ रहा था। फिर सीधा होकर बैठ गया। रहमान खान गुलाम अली के करीब पहुंचा...।

"कहां तक पहुंचे...?" उसने पूछा।

AJ SCAN

"काम हो गया है खान साहब... पक्की सड़क के नीचे दो फुट तक सुरंग तैयार है।"

तत्परता से बोला गुलाम अली। रहमान खान ने सिर हिलाया और बैठकर ट्रक के नीचे रेंग गया।

"इतनी काफी है या और खोदूं...?" नीचे बैठे मीर हसन ने पूछा। जवाब में रहमान खान ने सुरंग की तरफ देखा जोकि करीब एक फीट गहरी होकर सड़क के नीचे जा रही थी। वह कहीं पड़ी मिट्टी पर लेट गया और अपनी बांह सुंरग में डाल दी। फिर अंदाजा लगाया कि उसकी बांह पक्की सड़क पर कहां तक गई है। आश्वस्त होकर उसने बांह बाहर निकाली और अपने साथ लाये एयरबैग में से बम निकालकर उसके सैंसर के ऊपर लगी टेप उतारकर बम मीर हसन को दिया।

"इसे सुंरग में आखिरी सिरे पर रखो और बंद कर दो।"

मीर हसन ने लेटकर बम को सुंरग में आखिरी सिरे तक पहुंचाया और फिर हाथों से सुंरग के भीतर मिट्टी भरने लगा।

“अच्छी तरह से दबाकर भरना...।” बोला रहमान खान...और बाकी बची मिट्टी को इस तरह बिखेर देना कि किसी को शक न हो कि यहां खुदाई हुई है।”

z202016@gmail.com

मीर हसन ने सिर हिला दिया। रहमान खान रेंग कर बाहर आया और ट्रक का ड्राइविंग गेट खोलकर बैग को सीट पर फेंका और दरवाजा बन्द कर अपने कपडों से मिट्टी झाड़ने लगा। ठीक तभी गुलाम अली के मोबाईल फोन का म्यूजिक बजा.

“ट्रिन...न...न...।”

“देखो...किसका फोन है?” बोला रहमान खान। गुलाम अली ने जेब से मोबाइल फोन निकालकर कर उसे ऑन करके कान से लगाया।

AJ SCAN

“हैलो...!” वह बोला।

“सोहेल बोल रहा हूं...।” गुलाम अली के कान में सोहेल की आवाज पड़ी।

“हां...बोल सोहेल...सब खैरियत से तो हैं न?”

“बब्बर खान नहीं मिल रहा।”

“क्या...?”

“मैंने परेड ग्राऊंड से चौराहे तक के तीन चक्कर लगा लिये...।”

"कहां गया वो...?"

"अब क्या पता...?"

"कामचोर तो वह हरगिज नहीं...फिर गया कहां?"

cz202016@gmail.com

"वही तो मैं सोच रहा हूं।"

"तू आस-पास देख और पता लगा उसका। जैसे ही उसका पता चले मुझे फौरन खबर कर देना।"

"अच्छा...।"

AJ SCAN

दूसरी तरफ से आवाज आई और सम्बन्ध विच्छेद हो गया। गुलाम अली ने फोन जेब में रखा तो रहमान खान बोल पड़ा-

"क्या कह रहा था सोहेल?"

उत्तर में गुलाम अली ने सब कुछ बता दिया।

बुरी तरह से चौंक उठा रहमान खान—"फिर कहां गया?"

"मैंने सोहेल को कह दिया कि वह सड़क के आस-पास के इलाके में उसे ढूंढे...।"

"ढूंढने की बजाय फोन कर उसे...पता लग जायेगा कि वह कहां है?"

"ओह...?" गुलाम अली के मुंह से निकला। "उसके पास फोन है।"...इस तरफ सोचा भी नहीं था उसने। तुरंत उसने जेब से मोबइल फोन निकाला और उसे ऑल कर बब्बर खान का फोन नम्बर मिलाने लगा। दूसरी तरफ से घन्टी बजने की आवाज आई...फिर आवाज उभरी—

"हैलो...!"

cz202016@gmail.com

"बब्बर...!" तुरंत बोला गुलाम अली- "कहां से बोल रहा है तू?"

"बब्बर खान तो ऊपर पहुंच गया बडे मियां...!"

दूसरी तरफ से आई आवाज को सुन बुरी तरह से उछल पड़ा गुलाम अली।

"कौन बोल रहा है तू...?" वह गुर्राया।

AJ SCAN

"वही जिसके हाथों बब्बर खान जन्नतनशीं हुआ है। सतीश रावण...।"

"स...सतीश रावण...!" एक बार फिर चौंका गुलाम अली। उसके मुंह से सतीश रावण का नाम सुन रहमान खान बुरी तरह से चौंका...फिर उसने झपटने वाले से अंदाज में उसने उससे फोन लिया और अपने कान से लगाया....।

"सतीश रावण...।" वह फुफंकारा- "हरामजादे...।"

"वो तो हूं ही।" दूसरी तरफ से हंसी उभरी—"और तूने भी साबित कर दिया है रहमान खान कि तू भी हरामजादा है।"

"हरामखोर....।" गुर्राया रहमान खान।

"थैंक्यू...।" दूसरी तरह से हंसी उभरी।

"एक बार...सिर्फ एक बार मेरे हत्थे चढ़ा जा...फिर बातऊंगा कि मैं क्या हूं...।"

rcz202016@gmail.com

"मुझे पता है तू क्या है...! तू मेरा ही भाई है...तेरी मां भी रंडी थी...थी न?"

"सूअर की औलाद...।"

"कोई नई गाली निकाल भाई...। बढ़िया वाली...। और रही तेरे हत्थे चढ़ने की बात, तो दो बार चढ़ चुका हूं तेरे हत्थे...तू तो मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाया...अब मैं देखता हूं कि तेरा क्या बिगड़ता है।"

AJ SCAN

“तेरी किस्मत अच्छी थी जो तू दो बार बच गया...मगर इस बार किस्मत तेरा साथ नहीं देगी।”

“तू देखता चल, बहुत जल्द तुझे पता चल जायेगा कि कौन मरता है।”

“तू शायद यह सोचकर खुश हो रहा है कि तूने दस लाख में पुलिस को मेरे बारे में बताकर बाजी जीत ली है...। मगर तू भूल रहा है कि मैं क्या बला हूं।”

दूसरी तरफ खामोशी छा गई।

“क्या हुआ? वार खाली जाते देख मां मर गई क्या?”

“मां तो कब की मर गई मेरी...हां पल भर के लिये हैरानी जरूर हुई...मगर जैसे ही यह याद आया कि तू भी तो हरामी है...सारी हैरानी खत्म हो गई।”

तन-बदन सुलग उठा रहमान खान का। सतीश रावण उसे गाली पर गाली दिये जा रहा था...और वह कुछ नहीं कर पा रहा था।

rcz202016@gmail.com

“खैर कोई बात नहीं...”आवाज आई—“मैं तो तेरे हत्थे दो बार चढ़ा था...अब तेरी बारी है। पुलिस से तो तू बच जायेगा...मगर मेरे हाथों से नहीं बच पायेगा तू...क्योंकि मेरा कर्जदार इस जमीन पर किसी भी सूरत में जिंदा नहीं रह सकता...और तू मेरे चार करोड़ का कर्जदार है।”

“आ जा ले जा मुझसे कर्ज...।”

“आऊं तभी न जब मुझे बतायेगा कि तू किस बिल में छुपा हुआ है।”

AJ SCAN

“उसी चौराहे पर खड़ा हूं जहां पर तूने सी०एम० को खत्म करने का प्लान बनाया था...। आजा खत्म कर दे मुझे।”

“मैं आ रहा हूं...बस आधे घन्टे में वही पहुंच जाता हूं...और अगर तू कुत्ते की औलाद न होकर सूअर की औलाद है, तो वहीं इंतजार करना मेरा....।”

उसी के साथ फोन कट गया। यह तो रहमान खान ही जानता था कि वह किस तरह खुद पर काबू पाये हुए था। सतीश रावण उसे गाली दे गया था। और गाली भी ऐसी कि अगर वह वहां रुकता तो वह सूअर की औलाद होता...और अगर जाता तो कुत्ते की। बड़ी मुश्किल से उसने खुद पर काबू पाया और फोन गुलाम अली की तरफ बढ़ते हुए बोला—

“अहसान और सोहेल को फोन पर बोलो कि वे वहां पहुंचे...।”

कहकर उसने ट्रक के नीचे देखा। मीर हसन ट्रक के नीचे से निकल रहा था। बची हुई मिट्टी को उसने एकसार कर दिया था। अब बस आठ-दस व्हीकल वहां से गुजरने की देर थी कि वह जगह पहले जैसी हो जानी थी। ट्रक के नीचे से निकलकर मीर हसन अपने कपड़े झाड़ने लगा।

"सब ठीक है न...?" पूछा रहमान खान ने।

z202016@gmail.com

"जी हां...सब ठीक है।" बोला मीर हसन।

"कुछ और भी आदमी है तुम्हारे पास...?"

"मिल जायेंगे।"

"उन्हें बुलाओ और इस जगह के चारों तरफ इस तरह फैल जाओ कि तुम तो दूसरों को देख लो...मगर कोई और तुम्हें न देख सके।"

AJ SCAN

मीर हसन ने सिर हिला दिया।

“मुझे सतीश रावण मुर्दा चाहिये...किसी भी सूरत में। वह यहीं आ रहा है...।”

मीर हसन ने पुनः सिर हिलाया...।

“बहुत बड़ा हरामी है वह...हो सकता है न भी आये....या आयेगा तो किसी और रूप में आये...।”

“हम तो उसके असली रूप से भी वाकिफ नहीं खान साहब...।” तभी गुलाम अली बोला- “ऐसे में हम उसे पहचानेंगे कैसे?”

"जी हां...हम तो उसे जानते तक नहीं...।" मीर हसन बोला।
रहमान खान ने एक-दो पलों के लिये कुछ सोचा...फिर बोला-

"जिस किसी पर भी तुम्हें शुब्हा हो कि वह सतीश रावण हो सकता है....तुम उसकी पीठ को थपथपाकर देखना।"

cz202016@gmail.com

"उससे क्या होगा...?" मीर हसन बोला।

"क्या उससे हमें पता चल जायेगा कि वह सतीश रावण है?" गुलाम अली बोला।

"हां...।"

"वो कैसे...?" चौंकते हुए बोला मीर हसन।

AJ SCAN

"सतीश रावण हर वक्त अपनी पीठ पर आरी चिपकाये रहता है।"

"आरी...?"

"बेकरी में काम आने वाली आरी जिससे डबलरोटी वगैरह काटे जाते हैं...उस आरी से वह कईयों की गर्दनें काट चुका है।"

"ओह...!"

"जैसे ही तुम्हें अहसास हो कि वहां आरी है...तुम समझ जाना कि वही सतीश रावण है...और उसे बिना वक्त बर्बाद किये गोली से उड़ा देना।"

मीर हसन और गुलाम अली ने एक साथ सिर हिलाये।

“अब तुम ट्रक ले जाओ और फिर अपने आदमियों के साथ चारों तरफ फैल जाओ...।”

दोनों ने पुनः सिर हिलाये।

:202016@gmail.com

“मैं जाऊं?”

उसने सिर पुनः हिले। रहमान खान ने ट्रक का दरवाजा खोलकर अपना एयरबैग निकाला और पैदल ही एक तरफ चलने लगा। थोड़ी ही देर में वह एक थ्री-व्हीलर में बैठा नजर आ रहा था।

¶¶

जिस वक्त सतीश रावण को फोन आया था- उस वक्त वह एक टैक्सी से मोर्या होटल के सामने उतरा था। बब्बर खान की लाश से हथियाये

AJ SCAN

फोन पर उसने रहमान खान का दिल खोलकर अपमान किया और फिर फोन को बंद करके उसे जेब में रख होटल के गहरे रंग के शीशे के गेट की तरफ बढ़ा। शीशे के ऊपर बहुत बड़ा "मोर्या" लिखा हुआ था तथा गेट के करीब ही एक वर्दीधारी दरबान खड़ा था। सतीश रावण के करीब पहुंचते ही उसने दरवाजा खोला और सिर को तनिक झुकाकर उसे सलाम किया। उसके सलाम को नजरअंदाज करते हुए सतीश रावण भीतर दाखिल हुआ और हॉल में आ गया। हॉल में लगी मेजों में से उस वक्त ज्यादातर खाली थीं। सिर्फ बीस-पच्चीस लोग ही बैठे थे वहां। सतीश रावण ने एक उड़ती हुई निगाह हॉल में बैठे लोगों पर डाली जो एक टेबल पर बैठे नफे सिंह पर पल भर को ठिठक कर आगे बढ़ गईं। नफे सिंह के करीब रखे बैग को देख लिया था उसने...सो समझते देर नहीं लगी कि उसका दस लाख आ गया है। मगर उसकी तरफ बढ़ा नहीं वह। रहमान खान को पता चल गया था कि उसने दस लाख में एस०पी० उनको उसका पता बताया है...ऐसे में हो सकता था कि उसके आदमी उसकी ताक में हों।

यह भी हो सकता था कि सादी वर्दी में पुलिसिये भी वहां हों। ऐसे में सावधान जरूरी थी...और वह सावधान था। वह दाईं तरफ कोने वाली टेबल पर पहुंचा और कुर्सी पर बैठ गया। तुरंत वेटर उसके सिर पर आ खड़ा हुआ। सतीश रावण ने उसे अपने लिये लंच का ऑर्डर दे दिया। लंच करते वक्त उसने पूरी तरह से तसल्ली कर ली कि नफे सिंह बस अकेला ही आया है। सो वह हाथ पौंछ कर कुर्सी से उठा और सीधा नफे सिंह की तरफ बढ़ा। नफे सिंह की नजर भी उसे पर पड़ गई थी...सो वह उसे देखने लगा। सतीश

रावण सके सामने वाली कुर्सी पर बैठा और उसके चेहरे पर निगाहें गड़ाते हुए बोला—

"एस०पी० साहब ने भेजा है तुम्हें...?"

cz202016@gmail.com

"हां...तुम...?"

"यह बैग लेने आया हूं मैं।" सतीश रावण ने बैग की तरफ इशारा किया। नफे सिंह ने चुपचाप बैग उठाकर उसकी तरफ बढ़ा दिया। सतीश रावण ने बैग लेकर टेबल पर रखा और उसे थोड़ा-सा खोलकर भीतर झांका...।

नोटों को देख उसने संतुष्टि से गर्दन हिलाई और खड़ा हो गया।

"मेरा बिल दे देना...।"

AJ SCAN

“बिल...?”

“वहां लंच किया था मैंने...।” सतीश रावण ने अपनी टेबल की तरफ इशारा किया।

“ल...लेकिन कप्तान साहब ने तो ऐसा कोई आदेश नहीं दिया था!”

“जाकर पूछ लेना।”

गहरी सांस छोड़ते हुए सिर हिला दिया नफे सिंह ने। सतीश रावण वहां से हटकर काऊंटर पर आया...वहां उसने नफे सिंह से अपना बिल लेने को कहा और होटल से बाहर निकल आया। कुछ ही देर में वह एक थ्री-व्हीलर पर बैठा रोजी के घर की तरफ जा रहा था। इस बात का वह पूरा ख्याल रखे हुए था कि उसका पीछा तो नहीं किया जा रहा। पूरी तरह से

आश्वस्त होने के बाद ही उसने सीधा रास्ता पकड़ा था। रोजी के घर पहुंचकर उसने ताला खोला और बैडरूम में आकर बैग खोलकर बैग को बैड पर पलट दिया। पुलिस वालों पर भरोसा नहीं कर सकता था वह। सो उसने नोटों को गिना और पूरी तसल्ली करके उन्हें वापिसल बैग में रखकर वार्डरोब की तरफ़ बढ़ा। वार्डरोब खोलकर उसने वहां रखे पहले से ही दो बैगों के ऊपर तीसरा बैग रखा और वार्डरोब बन्द कर दिया।

202016@gmail.com

“एक करोड़ दस लाख...। वह मुस्कुराया। कमरे से बाहर आकर उसने दरवाजा बंद किया और मकान से बाहर आ गया। करीब बीस मिनट बाद ही वह एक पब्लिक टेलीफोन बूथ में खड़ा एस०पी० का नम्बर मिला था।

¶¶

“ट्रिन...ट्रिन....।”

फोन की घन्टी घनघनाई।

AJ SCAN

कुंवर सिंह रावत ने तुरंत रिसीवर उठाया।

"यस...।"

"सर कोई आपसे बात करना चाहता है।" टेलीफोन ऑपरेटर की आवाज कान में पड़ी।

"लाइन दो...।" तूरंत बोला कुंवर सिंह रावत।

हल्की-सी क्लिक की आवाज हुई...फिर सतीश रावण की आवाज उसके कान में पड़ी—

"हैलो...!"

"मैं तुम्हारे ही फोन का इंतजार कर रहा था।" बोला कुंवर सिंह रावत।

"मुझे मालूम है...तुम मेरी ही आवाज को सुनने को तरस रहे थे।"

z202016@gmail.com

"पैसा मिल गया तुम्हें...?"

"हां...।"

"गिन लिया...?"

"हां....पूरे दस लाख हैं।"

AJ SCAN

"अब बोलो कहां है रहमान खान...?"

"वही बताने के लिये ही फोन किया है लेकिन उससे पहले मेरी एक बात का उत्तर दो।"

"क्या...?"

"क्या तुमने मेरे फोन की बाबत किसी और से भी बात की थी?"

"नहीं तो...क्यों?" चौंकते हुए बोला कुंवर सिंह रावत।

"फिर अवश्य ही तुम्हारा टेलीफोन टेप होता है।"

"क्या बकते हो...?" भड़क उठा कुंवर सिंह रावत।

“मैं बक नहीं रहा एस०पी० साहब...बल्कि हकीकत कह रहा हूं...। हम दोनों के बीच जो सौदेबाजी हुई थी...उसकी खबर रहमान खान तक पहुंच गई है।”

“क्...या...?” एक तेज झटका लगा कुंवर सिंह रावत को।

z202016@gmail.com

“जी हां...और रहमान खान ने वह जगह भी छोड़ दी है।”

“ल...लेकिन मैंने तो किसी दूसरे के सामने जुबान नहीं खोली...।”

“और आप कह रहे है कि आपका फोन भी टेप नहीं हो रहा।”

“बिल्कुल नहीं...।”

AJ SCAN

“तो अपने टेलीफोन ऑपरेटर को पकड़ो...क्योंकि सिर्फ वही एक शख्स बचता है जो आरपकी फोन पर हुई बातों को सुन सकता है।”

बुरी तरह से उछल पड़ा कुंवर सिंह रावत।

“मैं बात करुंगा उससे।”

“अब पता सुनिये...।” फिर दूसरी तरफ से सतीश रावण ने नूरजहां का पता बताया और बोला-“रहमान खान आई०एस०आई० का एजेंज है, ऐसे में जाहिर है कि नूरजहां भी आई०एस०आई० की एजेंट होगी....। आप उससे पूछताछ कीजिये उस से आपको पता चल जायेगा कि रहमान खान उसके घर से निकलकर कौन-सी बिल में जा छुपा है!”

“मैं पता करता हूं।”

“और एक बात और...।”

“क्या...?”

z202016@gmail.com

“रहमान खान किसी भी सूरत में सी०एम० को खत्म करने पर आमादा है और उसने उन्हें खत्म करने की पूरी तैयारी कर ली है...इसलिये होशियार रहियेगा...।”

उसी के साथ दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया। कुंवर सिंह रावत ने तुरंत टेलीफोन पर एक नम्बर डायल किया।

“य...यस सर...।” दूसरी तरफ से टेलीफोन ऑपरेटर की घबराई आवाज आई।

AJ SCAN

“यहां आओ...।” गुर्राया कुंवर सिंह रावत और रिसीवर रख दिया। कुछ देर बात राम भरोसे ने ऑफिस में कदम रखा। चोर की दाढ़ी में तिनका। राम भरोसे की पीली रंगत ही बता रही ती कि वह खतावार है। वह कुंवर सिंह रावत की टेबल के करीब आकर रुका और थूक सकते हुए बोला-

“य...यस सर!”

कुंवर सिंह रावत ने कहरभ्री निगाहों से उसे देखा...।

“तेरा चेहरा बता रहा है राम भरोसे कि तुझे पता चल गया है कि मैं तेरे बारे में जान गया हूं...।”

“म...मैं कुछ समझा नहीं सर!” हड़बड़ाये स्वर में बोला राम-भरोसे....।

“कितना पैसा खाया दुश्मनों से...?”

राम भरोसे को कोटो तो खून नहीं।

“जवाब दे।”

202016@gmail.com

राम भरोसे ने जोरों से थूक सटकी। कुंवर सिंह रावत ने इंटरकॉम का रिसीवर उठाया और और अपने कान से लगाते हुए बोला—

“नेकचंद...किशोर और राहुल को भेजो तुरन्त..।”

कुछ ही देर में तीनों रामं भरोसे के पीछे खड़े थे।

AJ SCAN

वर्दी उतारों और शुरू हो जाओ।" गुर्राया एस०पी०। एस०पी का ऑर्डर था। भला इन्कार कैसे कर सकते थे वे। तीनों ने जबरदस्ती राम भरोसे की वर्दी उतारी और उस पर टूट पड़े। ऑफिस में राम भरोसे की चीखें गूजने लगीं। आखिर कब तक सहता-टूट ही गया वह।

"म...मैं बताता हूं...।" वह चीखते हुए बोला। कुंवर सिंह रावत ने तीनों को रुकने का इशारा किया और गुर्राया—"बोल...!"

सबकुछ बताता चला गया राम भरोसे...।

"हवालात में डाल दो इसे...।" गुर्राया कुंवर सिंह रावत और सभी मेरे साथ चलने के लिये तैयार हो जाओ।

तीनों राम भरोसे को पकड़कर बाहर ले गये।

¶¶

"खड़...खड़....खड़...।"

दरवाजे पर कुण्डा खड़काने की आवाज सुनते ही नूरजहां के होठों पर मुस्कान आकर लुप्त हो गई। वह समझ गई कि पुलिस आ पहुंची है। मगर क्या मजाल जो उसके कलेजे की घड़कनों में जरा-सा भी उतार-चढ़ाव आया हो। वह सोफे से उठी और सामान्य चाल चलती हुई कमरे से निकल कर मेन डोर की तरफ बढ़ी।

"कौन है...?" वह दरवाजे के करीब पहुंचकर बोली।

"पुलिस...।"बाहर से आवाज आई- "दरवाजा खोलो।"

AJ SCAN

नूरजहां ने दरवाजा खोला। सामने कुंवर सिंह रावत अपने बॉडीगार्डों के साथ खड़ा था।

"कहिये...।" वह कुंवर सिंह रावत की तरफ देखते हुए बोली।

"नूरजहां है तुम्हारा नाम?"

"जी हां...।"

"और कौन-कौन हैं तुम्हारे घर में...?"

"अपने शौहर के साथ रहती हूं मैं...क्यों?"

"कहां है तुम्हारा शौहर...?"

"बाहर गये हैं...।"

"तुम्हार राशन कार्ड...?"

z202016@gmail.com

"नहीं है...।"

"क्यों...?"

"बनवाया ही नहीं...। मगर बात क्या है...?"

"रहमान खान कहां है?"

AJ SCAN

“कौन रहमान खान...मैं किसी रहमान खान को नहीं जानती।”

“मैं उस रहमान खान की बात कर रहा हूं जो थोड़ी देर पहले तक तुम्हारे पास था।”

“देखिये साहब..आप यूं किसी औरत पर छींटाकशी नहीं कर सकते...। आप मेरे घर में पराये मर्द की मौजूदगी का आरोप लगाकर मेरी शराफत की बेइज्जती कर रहे हैं।”

कुंवर सिंह रावत का चेहरा सुर्ख हो उठा।

“मुझे पता है तू काफी खेली-खाई औरत है...इतनी आसानी से नहीं बकेगी...गिरफ्तार कर लो इसे।”

"अ...आप यूं मुझे गिरफ्तार नहीं कर सकते। क्या आपके पास मुझे गिरफ्तार करने के वारंट हैं?"

"तड़ाक...।" कुंवर सिंह रावत का जोरदार थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा।

z202016@gmail.com

"यह है वारंट...पकड़ लो इसे।"

तुरंत गार्डों ने उसे पकड़ लिया। अब तक शोर-गुल सुनकर कई पड़ोसी भी वहीं इकट्ठे हो गये थे....सो नूरजहां औरत होने का फायदा उठाने की गर्ज से चीखी—

"अरे मरदूदो...क्यों मेरी इज्जत से खलना चाहते हो! मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगी। बचाओ...मुझे लोगों....यह पुलिस वाले मेरी इज्जत लूटना चाहते हैं।"

AJ SCAN

नतीजा...वहां की छह-सात औरतें सिपाहियों के सामने आ खड़ी हुईं।

"यह क्या कह रही है साहब...क्यों ले जा रहे हैं आप इसे आपने साथ...?"

एक औरत बोली।

"पाकिस्तान की जासूस है यह...इसलिये कोई भी बीच में आने की कोशिश न करे...वरना उसे भी घर लिया जायेगा...।"

एस०पी० की दहाड़ सुनकर वह औरत पीछे हट गई। बाकी औरतें भी चुपचाप एक तरफ हो गईं....। इस गम्भीर मामले में किसी ने भी बीच में आने की कोशिश नहीं की। और पुलिस सभी के सामने नूरजहां को लेकर वहां से रवाना हो गई।

¶¶

थाने में नूरजहां कुंवर सिंह रावत के सामने खड़ी थी।

"बोल...रहमान खान कहां है?" कुवंर सिंह रावत कहरभरी निगाहों से उसे देखते हुए बोला।

cz2020@gmail.com

"मैं किसी रहमान खान को नहीं जानती।" दृढ़ता से बोली नूरजहां...।

"झूठ बोलकर तुझे कुछ भी हासिल नहीं होगा, नूरजहां...तुझे सच बोलना ही होगा।"

"जब मैं किसी रहमान खान को जानती ही नहीं तो बताऊंगी कैसे?"

AJ SCAN

"मूझे सख्ती करने पर मजबूर मत कर...। तुझे पता चल गया था कि पुलिस रहमान खान को पकड़ने के लिये तेरे पास पहुंच रही है...इसलिये तूने उसे वक्त रहते ही इधर-उधर कर दिया।"

"यह गलत है...मैं न तो रहमान खान को जानती हूं और न ही मुझे पुलिस के आने की खबर थी। भला मुझे कौन बताता कि पुलिस आ रही है।"

"राम भरोसे पकड़ा गया है...और उसने सब कुछ बात भी दिया है।"

सुनकर नूरजहां का कलेजा धक से रह गया...। आंखों में बदहवासी उभर आई। अब से पहले वह यही सोचे हुए थी कि टार्चर होने पर भी वह कुछ नहीं बतायेगी और अन्त में झक मारके एस०पी० को यह सोचने को यह सोचने को मजबूर होना पड़ेगा कि सतीश रावण ने उसके साथ धोखा किया है और एक बेगुनाह को जानबूझकर फंसाया है...। ऐसे में उसके बच पाने के पूरे चांस थे। मगर अब कोई चांस नहीं रहा गया था। राम भरोसे

पकड़ा जाना उसके लिये बहुत बुरा साबित हुआ था...। अब वह चाहकर भी नहीं मुकर सकती थी। उसकी उड़ी रंगत देख मुस्कुरा पड़ा कुंवर सिंह रावत।

"तेरी भलाई इसी में है कि चुपचाप बता दे कि रहमान खान कहां छुपा है?"

z202016@gmail.com

लेकिन जवाब नहीं दिया नूरजहां ने। उसका शरीर जोरों से लहराया और फर्श पर गिर पड़ा। बुरी तरह से चौंकते हुए कुंवर सिंह रावत खड़ा हो गया। वहां मौजूद अन्य सिपाही भी नूरजहां की तरफ लपके। मगर अब वह उनकी पहुंच से दूर हुए चुकी थी। मर चुकी थी वह...। और उसके होठ के कोर से झाग निकल रह थे। कुंवर सिंह रावत के चेहरे पर निराशा फैल गई। उसे समझते देर नहीं लगी कि वह नूरजहां ने पहले से ही मुंह में दबाया जहर खा लिया है। दस लाख भी डूबा...और रहमान खान का पता भी नहीं लगा। कुंवर सिंह रावत के चेहरे पर गहरी निराशा फैल गई।

¶¶

AJ SCAN

शाम को रोजी नौकरी से घर वापिस आई तो सतीश रावण उसे घर में ही मिला।

"तुम कपड़े बदलो...मैं चाय बना देता हूं।"

रोजी के होठों पर प्यारभरी मुस्कान फैल गई। उसने वार्डरोब खोला और कपड़े निकालने लगी। तभी उसकी नजर नीचे रखे दस लाख वाले बैग पर पड़ी। निचला होंठ बाहर निकालते हुए उसने अनभिज्ञता से कंधे उचकायें और वहीं खड़े होकर ही अपने कपड़े उतारने लगी। उस वक्त वह नाइटी पहन रही थी जब सतीश रावण दो प्यालों में चाय लिये भीतर प्रविष्ट हुआ...।

उसने दोनों कप टेबल पर रखे और बड़ी अदा से सिर नवाते हुए बोला-

"चाय हाजिर है मैडम...!"

रोजी खिलखिलाई...और नाईटी की डोरी बांधते हुए कुर्सी की तरफ बढ़ी।

"उस बैग में क्या है?"

z2020160@gmail.com

कुर्सी पर बैठते हुए वह खुले वार्डरोब में रखे बैग की तरफ इशारा करते हुए बोली। सतीश रावण ने बैग की तरफ देखा...मुस्कुराया और आगे बढ़कर बैग निकाला और उसे बैड पर रखकर उसे खोला और रोजी की तरफ घुमा दिया। नोटों से भरे बैग को देख रोजी का कलेजा खुशी से धड़क उठा।

"इतने नोट!"

"पूरे दस लाख है।" मुस्कुराया सतीश रावण।

"ल...लेकिन तुम तो घर में थे...फिर इतना पैसा कहां से आया।"

AJ SCAN

“तुमसे किसने कहा कि मैं घर में था...।”

“यानी बाहर निकले थे।”

“हां...।”

“इसी रूप में...?”

“नहीं...अधेड़ के मेकअप में...।”

“फिर...?”

"मैंने तुमसे कहा था कि मैं व्यापार के सिलसिले में यहां आया था। जब मैं तुमसे मिला तो एक व्यापारी से मेरी बात चल रही थी...मगर मुझे उम्मीद नहीं थी कि वह बात सिरे चढ़ जायेगी। सो मैं ढीला पड़ गया। ऊपर से अपने पीछे लगे आदमियों से भी छुटकारा पाना था।"

"फिर...?"

z202016@gmail.com

"सुबह तुम्हारे जाने के बाद मैंने सोचा...क्यों न एक बार फिर कोशिश की जाये। सो मैंने मेकअप किया और सीधा उस व्यापारी के पास पहुंच गया।"

"और उसने तुम्हें ऑर्डर दे दिया!"

"पूरे पचास लाख का...दस लाख बतौर एडवांस दिया है उसने...। जानती हो पचास लाख में से हमें कितना बचेगा....पूरे पांच लाख...।"

AJ SCAN

"सच...!" खुशी से बोली रोजी। सतीश रावण मुस्कुराया और उठकर उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। "इतना मोटा ऑर्डर मुझे पहले कभी नहीं मिला रोजी...तुम्हारे मिलते ही मुझे इतना बड़ा ऑर्डर मिला...। तुम तो लक्ष्मी का रूप बनकर मुझसे मिली हो।"

रोजी का चेहरा खुशी से लाल हो गया... साथ ही अपनी तारीफ सुनकर उसका सीना गर्व से चौड़ हो गया था।

"तुम मेरे लिये सचमुच बहुत लक्की हो।" सतीश रावण बोला। रोजी मुस्कुराई और अपना कप उठाते हुए बोली-

"यह तुम्हारी मेहनत का फल है।"

सतीश रावण हंसा और अपना कप उठा लिया। चाय पीने के बाद उसने बैग को बंद करके वापिस वार्डरोब में रखा और वार्डरोब बंद करके बैड पर आ बैठा।

"इधर आ जाओ न...।" वह रोजी से बोला।

"कोई शरारत तो नहीं करोगे न?"

202016@gmail.com

रोजी मुस्कुराई...।

"बस थोड़ी-सी छोटी-सी शरारत करूंगा...बड़ी शरारत रात को।"

"नो...।"

"यस...।"

AJ SCAN

"नो....।"

"प्लीज...।"

जिस अंदाज से सतीश रावण ने प्लीज कहा था...उसे इन्कार नहीं कर पाई रोजी। वह उठी और सतीश रावण की गोद मैं आ बैठी। सतीश रावण उसकी नाईटी ऊपर उठा उसके अंगों से खेलने लगा। रोजी की सांसों में तेजी आने लगी। आखिर जब उसकी बर्दाश्त जवाब देने लगी तो वह फिसल कर उसककी गोद से निकल गई।

"बस...।" गहरी सांसे छोड़ते हुए बोली- "और नहीं...।"

"मगर...।"

“अभी डिनर तैयार करना है...डिनर करने के बाद ही अब हाथ लगाना मुझे।”

सतीश रावण गहरी सांस छोड़कर रह गया। अपनी सांसों को दुरुस्त करते हुए रोजी कमरे से निकली और किचन की तरफ बढ़ गई। रात आठ बजे दोनों ने दो-दो पैग लगाये और फिर डिनर करने लगे। डिनर करने के पश्चात् सतीश रावण ने अपनी घड़ी में वक्त देखा और बोला-

z202016@gmail.com

“मैं जाऊं...?”

“कहां...?” चौंकते हुए बोली रोजी।

“उसी व्यापारी के पास जाना है। दो-ढाई घन्टे का काम है।”

गहरी सांस छोड़ते हुए रोजी ने सिर हिला दिया।

AJ SCAN

“मेरा इंतजार करना...दस-ग्यारह बजे तक आ जाऊंगा मैं...और एक बात का पूरा ध्यान रखना।”

“किस बात का?”

“जब मैं आऊं तो तुम्हारे बदन पर नाईटी नहीं होनी चाहिये।”

“क्या मतलब...?” चौंकी रोजी।

“बस दरवाजे पर ही पकड़ लूंगा तुम्हें और वहीं शुरू हो जाऊंगा।”

रोजी खिलखिला उठी। साथ ही उसके भीतर कहीं मीठी-सी गुदगुदी होने लगी। और फिर सतीश रावण ने अपना वही सुबह वाला मेकअप किया और घर से निकल गया।

¶¶

रात ठीक साढ़े आठ बजे रहमान खान चौराहे से कुछ दूर एक थ्री-व्हीलर से उतरा और सड़क के नीचे उतर कर पैदल ही एक तरफ बढ़ने लगा। चारों तरफ घुप्प अंधेरा था। अंधेरे में चलते हुए रहमान खान अभी थोड़ी दूर ही पहुंचा था कि तभी एकाएक ही उसकी पीठ पर कोई ठन्डी नाल आ लगी, साथ ही उसके कानों में फुंफकारा पड़ी।

"हाथ ऊपर।"

z202016@gmail.com

रहमान खान ने बुरी तरह से बौखलाते हुए हाथ ऊपर उठा लिये। तभी किसी का हाथ उसकी पीठ पर फिरा...।

रहमान खान फौरन समझ गया कि उसपर रिवॉल्वर तानने वाला उसका अपना ही आदमी है जो उसे सतीश रावण समझ रहा है तभी वो उसकी पीठ पर हाथ फेरकर तसल्ली कर रहा था कि वहीं आरी है या नहीं...। राहतभरी गहरी सांस छोड़ी उसने और बोला—

"रहमान खान हूं मैं...। मीर हसन कहां हैं, उसे बुलाओ."

AJ SCAN

उसकी पीठ पर लगी रिवॉल्वर एकदम से पीछे हट गई।

"अ...आप खान साहब...माफी चाहता हूं हुजूर, मैंने आपको पहले कभी देखा नहीं था...।"

"कोई बात नहीं...तुम मीर हसन को बुलाओ।"

ठीक तबी उसके दाईं तरफ से एक टार्च की तेज रोशनी उसके मुंह पर पड़ी।

"खान साहब...।"

गुलाम अली की आवाज उसके कानों में पड़ी...साथ ही टार्च बुझ गई। तभी गुलाम अली उसके करीब आया ।

"सतीश रावण आया था यहां...?"

बिना कोई भूमिका बांधे पूछा रहमान खान ने।

202016@gmail.com

"जी नहीं...।"

"हो सकता है वह यहां आया हो और तुम्हें पता न लगा हो।"

"अगर वह आरी के बिना यहां पहुंचा तो हो सकता हैं, वरना वह यहां नहीं पहुंचा...."

"बाकी कहां हैं...?"

AJ SCAN

आखें फाड़कर इधर-उधर देखते हुए बोला रहमान खान।

“मीर हसन और अहसान अहमद चौराहे के परली तरफ छः आदमियों के साथ तैनात है....मैं और सोहेल चार आदमियों के साथ इस तरफ हैं।”

“सोहेल कहां हैं?”

“थोड़ा आगे एक वृक्ष के नीचे खड़ा है।”

“उसे मिला हो सकता है सतीश रावण...या मीर हसन अहसान को मिला हो सकता है।”

“अगहर ऐसा होता तो गोली चलने की आवाज गूंजती यहां...।”

रहमान खान ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया और बोला-

"कोई सिग्लन भी है तुम्हारा इकट्ठे होने का?"

"जी हां...।"

z202016@gmail.com

"क्या...?"

गुलाम अली ने जेब से एक पॉकेट ट्रांजिस्टर के आकार का डिब्बा निकाला।

"यह प्रेशर हॉर्न से भी तेज बजता है...।" बोला- "दो बार छोटा...फिर लम्बा हॉर्न बजाने से सभी को सिगनल मिल जाता है और वे फौरन उधर बढ़ते हैं। ऐसा हॉर्न हम चारों के पास है...ताकि जिसे भी मदद की जरूरत हो...वो दूसरे के बूला ले।"

AJ SCAN

"गुड...!"

और फिर थोड़ी देर और बातें करके रहमान खान वहां से हट गया। ऐसे ही वह सोहेल के पास गया...फिर सड़क पार करके मीर हसन और अहसान के पास गया और पूरी तरह से संतुष्ट होकर उसने सतीश रावण से होशियार रहने को कहा और फिर वहां से रवाना हो गया। थोड़ी दूर चलकर उसे एक टैक्सी आती नजर आई। उसे रुकने के लिये उसने हाथ दिया....और उसी के साथ टैक्सी की गति धीमी होने लगी।

¶¶

रोजी के घर से निकलकर सतीश रावण सड़क पर आया और एक टैक्सी में सवार होकर पहले परेड ग्राउण्ड गया...फिर वहां से गेस्ट हाउस की तरफ रवाना हो गया। अभी चौराहे के करीब पहुंचा ही था कि उसके होठों पर एक भयानक मुस्कान उभर आई। सड़क पर टैक्सी की हैडलाइट में उसे रहमान खान खड़ा नजर आया जो कि उसी की टैक्सी को रुकने का इशारा कर रहा था।

"सवारी ले ले भाई...।" वह टैक्सी चालक के कन्धे पर हाथ मारते हुए बोला। टैक्सी चालक ने तुरन्त ब्रेक पैडल पर पैर दबा दिया। टैक्सी धीमी होती हुई

रहमान खान के करीब जा रुकी। रहमान खान ने पिछला दरवाजा खोला और सीट पर बैठते हुए बोला— "गेस्ट हाऊस चलो।"

कहते हुए उसने दरवाजा बन्द किया। ठीक तभी उसकी नजर सतीश रावण पर पड़ी। चूंकि सतीश रावण मेकअप में था...इसलिये रहमान खान उसे पहचान नहीं पाया। उसने यही समझा कि वह कोई सवारी है। मगर उसकी यह गलतफहमी उस वक्त टूट गई जब एकाएक ही सतीश रावण की रिवाल्वर उसकी पसलियों से आ लगी थी।

rcz202016@gmail.com

"कैसा है रे रहमान मियां...?"

सतीश रावण की आवाज सुन कर बुरी तरह से चौंका रहमान खान...साथ ही उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

"त....तुम...?"

"जब चूहे की मौत आती है तो वह खुद ही पुंजरे में आ फंसता हैं।"

AJ SCAN

रहमान खान ने जोरों से थूक सटकी। मौत से उसका सामना इस तरह होगा...यह सोचा ही नहीं था।

“एक करोड़ चाहिये तुझे...।” सतीश रावण हंसा। रहमान खान के गले की घण्टी जोरों से उछली।

“गाड़ी रोक।”

तभी फुफंकारा सतीश रावण। टैक्सी चालक ने हड़बड़ाते हुए तुरन्त टैक्सी रोक दी।

“नीचे उतर...।” गुर्राया सतीश रावण—“और ध्यान रखना...अगर तूने भागने की कोशिश भी की तो मुझे गोली चलाने में जरा भी देर नहीं लगेगी।”

रहमान खान ने मन-ही-मन खुदा का शुक्र मनाया। वहां पर उसके अपने आदमी चारों तरफ फैले हुए थे...ऐसे में जाहिर था कि उसने दरवाजा खोला और बाहर आ गया। पीछे-पीछे सतीश रावण भी बाहर आ गया। बाहर आते ही उसने उसके गले में बांह पिरोई और रिवाल्वर की नाल उसकी कनपटी से लगा दी। इधर टैक्सी ड्राइवर ने स्थिति को खतरनाक होते देखा तो उसने वहां से फूट लेने में ही अपनी भलाई समझी। सो टैक्सी का किराया भूल उसने फौरन वहां से टैक्सी भगा दी।

“अब बोल पाकिस्तानी कुत्ते...कैसे खत्म किया जाये तुझे?” सतीश रावण गुर्राया।

"मुझे तेरे से ऐसी बेवकूफी की उम्मीद नहीं थी...।" हंसा रहमान खान।

"क्या मतलब...?"

"अगर तू मुझे टैक्सी में ही खत्म कर देता तो बात और थी, मगर तुझे तो खुद को हीरो बनाने की पड़ी थी। किसी ने ठीक ही कहा कि जब बुराई आती है तो अक्ल खुद-ब-खुद मारी जाती है।"

rcz202016@gmail.com

"अच्छा!"

"यहां चारों तरफ मेरे आदमी फैले हैं सतीश रावण...जो मेरा एक इशारा मिलते ही तेरे जिस्म में बारूद भर देंगे।"

सतीश रावण कुटिल हंसी हंसा।

"जब तक रिवाल्वर तेरी कनपटी से लगी है...तेरा कोई कुत्ता मेरे करीब भी नहीं फटक सकता।"

इस बार रहमान खान ने मुंह से बोल नहीं फूटा।

"मैं चाहता तो तुझे टैक्सी में ही खत्म कर सकता था...मगर मुझे तसल्ली नहीं होती। मेरा जो चार करोड़ तूने खाया है...उसका हिसाब भी तो लेना है तुझसे।"

AJ SCAN

"वो हिसाब भूल जा अब...।"

"अच्छा...!"

"बम फिट हो गया है...कहां हुआ है...यह ढूंढने के लिये तुझे सारी रात लग जायेगी।"

"मुझे ढूढंने की जरूरत नहीं बम को...उसे उड़ा दूंगा मैं।" गुर्राया सतीश रावयम—"तब तेरे पाकिस्तानी आकाओं को तुजे यहां भेजने का जो अफसोस होगा...उससे मुझे सकून मिलेगा।"

"बम को फाड़ने के लिए जो रिमोट चाहिये...वो इस वक्त यहां से तीन किलोमीटर दूर पड़ा है। कुल मिलाकर तू सिवाय मुझे खत्म करने के और कुछ भी नहीं कर सकता। रही सी०एम० की मौत की बात तो उसे हर-हाल में मरना है...मैं नहीं मारूंगा तो मेरा साथी उड़ा देगा बम को।"

अभी उसकी बात पूरी ही हुई थी कि तभी सतीश रावण को अपनी बायीं तरफ कुछ हलचल महसूस हुई। झटके से उसने गर्दन उधर मोड़ी। अन्धेरे में कई साये उसे अपनी तरफ बढ़ते नजर आये।

"वहीं रुक जाओ...." दहाड़ा सतीश रावण- "वरना तुम्हारे बॉस की खोपड़ी में सुराख हो जायेगा।"

उसकी तरफ बढ़ते हुए कदम वहीं रुक गये।

“सामने आओ...।”

कुछ ही देर में सतीश रावण के सामने सोहेल...गुलाम अली तता अन्य पांच आदमी खड़े थे।

“खान साहब को छोड़ दो...।” गुलाम अली गुर्राया- “अगर खान साहब का बाल भी बांका हुआ तो तुम्हें बहुत ही दर्दनाक मौत मिलेगी...।”

rcz202016@gmail.com

“मेरी मौत की चिन्ता छोड़ हरामजादे और पीछे हटो...।”

सभी मजबूर थे पीछे हटने को। कुछ ही देर में सभी चौराहे पर खड़े थे।

“अपने बाकी के साथियों को बुला...।” सतीश रावण गुर्राया। हड़बड़ाते हुए रहमान खान ने सतीश रावण का आदेश गुलाम अली तक पहुंचाया। तुरन्त वातावरण में तेज हॉर्न गूंजा...। पहले दो बार छोटा...फिर लम्बा। उसी के साथी मीर हसन...अहसान अहमद तथा उनके छः साथी हथियारों से लैस चौराहे पर पहुंच गये। इधर सतीश रावण रहमान खान को लिये पीछे हटा। करीब डेढ़ सौ मीटर पीछे हटने के बाद उसने रहमान खान की गर्दन छोड़ी और बोलाः

“तू तो अपना रिमोट घर भूल आया...लेकिन मैं अपना रिमोट साथ लाया हूं।”

AJ SCAN

“क्या मतलब...?” हड़बड़ाया रहमान खान। सतीश रावण ने जेब से रिमोट निकाला—“नया रिमोट बनवाया है मैंने...देखता हूं काम करता है या नहीं।”

कहने के साथ ही उसने उसका बटन दबा दिया।

“बड़ाम...।”

चौराहे पर जबरदस्त धमाका हुआ और मलबे के साथ इन्सानी लाशें हवा में चीथड़े-चीथड़े होकर उड़ती नजर आने लगीं। धमाका इतना जबरदस्त था कि इतना दूर होने पर भी सतीश रावण उछल कर एक तरफ जा गिरा था तथा रहमान खान दूसरी तरफ।

“अगर तू कुत्ता है मैं तेरे से बड़ा कुत्ता हूं।” गुर्राया सतीश रावण- “सी०एम० तो बच गया...मगर अब तू नहीं बचेगा।”

कहने के साथ ही उसने ट्रेगर दबा दिया। रहमान खान जो बम फटने के कारण बुरी तरह से बौखला उठा था...ने बचने की कोशिश भी नहीं की। गोली सीधी उसके सीने में जा दफ्न हुई और वह कटे वृक्ष की तरह नीचे गिर पड़ा। मर चुका था वह। सतीश रावण एक पैशाचिक मुस्कान मुस्कुराया और रिवाल्वर को जेब में रख एक तरफ बढ़ गया। वह जानता था कि पुलिस किसी भी वक्त यहां पहुंच सकती है...ऐसे में उसका जल्द-से-जल्द ज्यादा-से-ज्यादा दूर हो जाना ही बेहतर था।

¶¶

“डिंग...डिंग...।”

कॉलबेल बजी।

रोजी बैड से उतरी और कमरे से निकलकर मेन डोर की तरफ बढ़ी। उसने दरवाजा खोला। सामने सतीश रावण को देख वह मुस्कुरायी।

“बात कर आये...?” वह एक तरफ हटते हुए बोली।

rcz202016@gmail.com

“हां...।” सतीश रावण भीतर दाखिल होते हुए बोला। रोजी ने दरवाजा बन्द किया और बैडरूम में आ गई।

“क्या बात हुई...?” वह बोली।

“सुबह दिल्ली जायेंगे हम...।”

“हम...?”

AJ SCAN

“तुम साथ होवोगी तो रास्ता भी बढ़िया कट जायेगा...और माल भी ज्यादा ले आयेंगे...चलोगी न?”

मुस्कुरा पड़ी रोजी।

“अरे...तुमने कपड़े नहीं उतारे अभी तक।”

“क्या कपड़े उतारकर दरवाजा खोलती?”

“हर्ज ही क्या था!”

“हुश्त...।”

सतीश रावण हंसा और उसकी कलाई पकड़कर अपने ऊपर गिरा लिया। और फिर एक-एक करके उनके कपड़े उनके जिस्म का साथ छोड़ते गये। सतीश रावण ने आरी उसकी निगाहों से बचाकर बैड के गद्दे के नीचे छुपा दी थी। कुछ ही देर में दोनों एक-दूसरे में समाने की जी-तोड़ कोशिश कर रहे थे।

¶¶

सुबह सात बजे सतीश रावण की आंख खुली। उसने गर्दन मोड़कर रोजी की तरफ देखा। गहरी नींद में सो रही रही थी वह। रात बुरी तरह से थका दिया था उसने उसे। सतीश रावण मुस्कुराया...उसने उसकी छातियों पर हाथ फेरा। फौरन नींद खुल गई रोजी की।

rcz202016@gmail.com

"अभी दिल नहीं भरा क्या...?" वह मुस्कुराई। जवाब में सतीश रावण कुछ नहीं बोला...बस उसके ऊपर सवार हो गया। थोड़ी ना-नुकर के बाद रोजी भी उसका साथ देने में जुट गई। रात वाला खेल एक बार फिर से शुरू हो गया। करीब बीस मिनट बाद सतीश रावण लम्बी-लम्बी सांस छोड़ता उसकी छातियों पर पड़ा नजर आ रहा था। रोजी ने भी उसे जोरों से अपने साथ भींच रखा था। थोड़ी देर बाद सतीश रावण उसके ऊपर से लूढ़का और उसके पहलू में लेट गया।

"दिल्ली कब चलना है?" रोजी बोली।

"दस बजे।" सतीश रावण मुस्कुराया।

"यानी अभी एक-डेढ़ घण्टा आराम कर सकती हूं।"

AJ SCAN

सतीश रावण हौले से हंसा...फिर बैड पर बैठ गया।

“तुम आराम करो...मैं बाथरूम मैं हो आऊं।”

कहकर वह बैड से नीचे उतरा और बाथरूम में चला गया। कुछ देर बाद वह वापिस आया तो रोजी माथे पर बांह रखे आंखें बन्द किये लेटी नजर आई। एकाएक ही सतीश रावण की आंखों में दरिन्दगी उभर आई। आहिस्ता से उसने गद्दे के नीचे से आरी निकाली और—

“खच्चाक...”

एक ही झटके में रोजी की गर्दन उसके धड़ से अलग हो गई।

“कमाऊं मैं...और हिस्सा तू बांटे...ऐसा कैसे हो सकता है!” सतीस रावण हंसा। बैड पर रोजी झटके खा रही थी। सतीश रावण वहीं से हटा और पुनः बाथरूम में चला गया। वहीं उसने आरी को फ्रैश किया...नहाया और जब वह वापिस कमरे में आया तो रोजी शांत हो चुकी थी।

बेचारी...एक धोखेबाज की दुल्हन बनने का सपना देख रही थी। सतीश रावण ने कपड़े पहने और आरी को अपनी पीठ पर चिपका, बाहर निकल गया। करीब बीस मिनट बाद वह टैक्सी स्टैण्ड पर था।

“कहां चलना है साहब...?” एक ड्राइवर उसके करीब आकर बोला।

“दिल्ली...।” सतीश रावण बोला।

“दो हजार लगेंगे।”

सतीश रावण ने सहमति से सिर हिला दिया। कुछ ही देर में वह टैक्सी में बैठा वापिस रोजी के घर की तरफ बढ़ रहा था। टैक्सी रोजी के घर के सामने रुकी। rcz202016@gmail.com सतीश रावण टैक्सी से उतरा और ड्राइवर से बोला-

“तुम रुको...मैं सामान लेकर आता हूं।”

वह नहीं चाहता था कि बैडरूम में रोजी की लाश पर ड्राइवर की नजर पड़े। ड्राइवर ने सिर हिला दिया। सतीश रावण ने आगे बढ़कर ताला खोला और दरवाजे को धकेलते हुए भीतर प्रवेश कर गया. बैडरूम में खून से सनी रोजी की सिरकटी लाश पड़ी थी। लाश को देख वह हौले से हंसा और वार्डरोब की तरफ बढ़ गया। उसने वार्डरोब खोला और ऊपर के दोनों बैग निकालकर मकान से बाहर आ गया। बैग देखकर ड्राइवर दरवाजा खोलकर बाहर निकला और टैक्सी की डिक्की खोल दी। सतीश रावण ने दोनों बैग उसमें रखे और वापिस मकान में आ गया। उसने तीसरा बैग भी उठाया और बाहर डिक्की में रख दिया।

“बस...इतना ही सामान है।” सतीश रावण बोला और दरवाजे की तरफ बढ़ गया। उसने दरवाजा बन्द किया...ताला लगाया और टैक्सी की तरफ मुड़ा। तब तक

AJ SCAN

ड्राइवर डिक्की बन्द कर ड्राइविंग सीट सम्भाल चुका था। सतीश रावण दरवाजा खोलकर पिछली सीट पर बैठा और बोला-

"चलो...।"

ड्राइवर ने टैक्सी स्टार्ट की और आगे बढ़ा दी। इस वक्त सतीश रावण का दिल बल्लियों उछल रहा था। आज तक उसे हर बार अन्त में कंगाली का ही मुंह देखना पड़ा था। यह पहला मौका था, जब वह एक करोड़ दस लाख से ज्यादा कमाकर गंगानगर से निकल रहा था। खुशी तो होनी ही थी उसे।

¶¶

उस वक्त टैक्सी रोहतक पार करके आगे बढ़ रही थी, जब सतीश रावण के पेट में एकदम से बल पड़ने शुरू हुए। उस ने दायें-बायें देखा। दोनों तरफ खेत थे और उनमें मक्का की फसल खड़ी थी।

"रोकना भाई...!" सतीश रावण बोला- "पेट में प्रेशर बढ़ रहा है।"

ड्राइवर ने टैक्सी सड़क के किनारे रोक दी। सतीश रावण टैक्सी से निकला और फ्रैश होने के लिये तेज-तेज चलता खेतों में घुस गया। ड्राइवर टैक्सी में बैठा उसके लौटने का इन्तजार करने लगा। करीब दस मिनट बाद सतीश रावण फ्रैश होकर खेतों से निकला और सड़क की तरफ बढ़ा। अभी वह सड़क से कुछ दूर ही था कि—

"बड़ाम...।"

एक तेज विस्फोट हुआ और टैक्सी की डिक्की का ढक्कन हवा में उड़ा गया। सतीश रावण का कलेजा जोरों से धड़क उठा। उसने डिक्की की तरफ देखा । उसके तीनों बैगों के चीथड़े उड़े हुए थे तथा नोटों की गड्डियां धूं-धूं करती जल रही थीं। यह सब कैसे हुआ...कुछ भी समझ में नहीं आया उसको। उसने ड्राइवर की तरफ देखा। वह अपनी सीट पर बेहोश पड़ा था। धमाके के वेग को बर्दाश्त नहीं कर पाया था वह और उसका माथा पूरे वेग से स्टेयरिंग पर पड़ा था। इधर सतीश रावण को ऐसा लग रहा था कि वे नोट नहीं...बल्कि उसकी चिता जल रही है। एक बार फिर करोड़पति बनकर वह कंगाल हो गया था।

rcz202016@gmail.com

—समाप्त—

AJ SCAN